CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[बिहार सरकार द्वारा विद्यालय वा पुस्तकालय खातिर स्वीकृत]

अँजोर

[भोजपुरी परिवार (पटना) के त्रैमासिक मुख-पत्र]

जा मे रस कछु होत है, ताहि पढ़त सब कोय।
भाव अनूठो चाहिए, भाषा काहू होय।

प्रधान संपादक
पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

कला—१२
अप्रील—१९७१

किरिनि—१-२
जुलाई—१९७१

भोजपुरी परिवार,
पटना—३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संपादक-मंडल

रासबिहारी राय शर्मा, गणेश चौबे, रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द', डा० वसंतकुमार, डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी', डा० देवसहाय त्रिवेद, प्रो० ब्रजकिशोर मिश्र, धीरेन्द्र प्रसाद सिन्हा 'धवल'

सहायक संपादक
अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

एह अंक में पढ़ीं — पन्ना

१. गजल – पाण्डेय कपिल १
२. भोजपुरी लोक गाथाएँ (हिन्दी निर्बंध) — गणेश चौबे २
३. चाँद के टुकड़ा (कविता) – चन्द्रशेखर मिश्र १०
४. गजल — अशान्त १०
५. रोहतासगढ़ द्वारिका प्रसाद श्रीवास्तव : डा० दे०स० त्रिवेद ११
६. सात बरवै (अवधी) — अवधेश प्रधान १५
७. जेव (ललित निबंध) – प्रो० रामेश्वर नाथ तिवारी १६
८. गजल — रामेश्वर प्रसाद सिन्हा २१
९. जय भोजपुरी : जयहिन्दी — अनिलकुमार राय 'आंजनेय' २२
१० गजल — गंगा प्रसाद 'अरुण' २६
११. ससुराल में हँसी-मजाक — पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह २७
१२. करब तोर पूजा (कविता) – आनन्द कुमार 'संधिदूत' ३१
१३. गाँव के बाबू (कहानी) — रामपदार्थ झा 'निराला' ३२
१४. बउध लीला (२८ वाँ सरग) — स्वामी विमलानन्द सरस्वती ३६
१५. साहित्यकार डा० सलिल – राधा रमन प्रसाद ३९
१६. कतहूँ ना बाटे देस बंगला के सानी (कविता) — जगन्नाथ ४३
१७. रुबाई — हिमांशु रंजन ४६
१८ कुक्कुर कल्याण योजना — डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा) ४४
१९. छलकत चाँद (कविता) — अभय नाथ मिश्र ४७
२०. नयकी पीढ़ी (एकांकी) — राय सच्चिदानन्द ४८
३१. आधा-तीहा (ललित निबंध) — अवधेश प्रधान ५७
२२. असाढ़ के साँझ (मगही कविता) — चन्द्रशेखर प्रसाद ६०
२३. पुस्तक-परिचय ६१
२४. संपादक के विचार ६२
२५. ई अँजोर (कविता) — निभरम ७१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

अँजोर

धरती के लोर बाट जोहि रहल भोर के
पह फाटल, बिहँसी अब किरिनियाँ 'अँजोर' के

कला—१२ | अप्रील : जुलाई १६७१ | किरिनि १—२

गजल

बूँद भर पानी के खातिर मन तरस के रह गइल
उमड़ के आइल घटा हालत पर हँस के रह गइल

जबकि पथरा गइल कबसे ई नजरिया हार के
आज उकठल काठ पर सावन बरस के रह गइल

हर जगह बालू के पसरल बा समुन्दर दूर तक
दूर से आइल ई पातर धार फँस के रह गइल

सोच में बीतत रहल बा जब कि जुग-जुग से समय
जिन्दगी फाँसी बनल गरदन में कस के रह गइल

लोग चारो ओर हमरा पर तरस खाइल बहुत
हाय करइत साँप अइसन लाज डँस के रह गइल

—पाण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी लोक गाथाएँ

—गणेश चौबे

संप्रति हिन्दी में प्रचलित 'गाथा' शब्द को अंग्रेजी के 'बैलेड' का पर्याय-वाची शब्द माना जाता है। लैटिन में एक शब्द है 'बेलारे', जिसका अर्थ होता है 'नाचना'। अंग्रेजी में इस शब्द से उद्भूत दो शब्द 'बैलेड' और 'बैले' व्यवहृत होते हैं। बैलेड से गीत के और बैले से नृत्य के अर्थ का बोध होता है। सम्भव है, कभी नृत्य के साथ ही बैलेड गाया जाता रहा हो, लेकिन अठारहवीं सदी से यह कथात्मक गीतों के अर्थ में प्रयुक्त हो रहा है।

भिन्न-भिन्न विद्वानों ने बैलेड की अलग-अलग परिभाषायें दी हैं। जहाँ एक ओर बैलेड छोटे-छोटे पदों से निर्मित कथात्मक गीतों के लिए आया है, वहाँ दूसरी ओर यह ऐसे सरल और भावपूर्ण गीतों के लिए, जिनका अपना एक खास लय है। लेकिन अधिकांश विद्वान बैलेड में कथा तत्वों की विद्यमानता अनिवार्य मानते हैं। अंग्रेजी में स्थानीय वीरों, ऐतिहासिक और अर्द्ध ऐतिहासिक व्यक्तियों के गुणगान के लिए 'लिजैण्ड' शब्द आया है। इसके लिए भी हिन्दी में गाथा शब्द का ही व्यवहार होता है।

आजकल गाथा शब्द जिस अर्थ में हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त हो रहा है, वह प्राचीन भारतीय साहित्य में इससे कुछ भिन्न अर्थ रखता था। ऋग्वेद में यह गीत या पद्य के अर्थ में आया है। ऐतरेय ब्राह्मण में गाथा को मानुषी माना गया है। अश्वमेध आदि यज्ञों के अवसर पर राजाओं के गुणगान किए जाते थे उन्हें गाथा की संज्ञा दी गयी है। 'निरुक्तकार' ने वैदिक साहित्य में उपलब्ध इतिहास को गाथा माना है। गृह्य सूत्रों में विवाह एवं सीमन्तोन्नयन के अवसर पर देव स्तुति परक गाथाओं के गाने का उल्लेख मिलता है। महाभारत काल में गाथा देवताओं से सम्बन्धित कहानियों के लिए रूढ़ हो गया था। अमर कोश में 'पितरगण', 'परलोक' और ऐसे ही अन्यान्य विषयों से सम्बद्ध अनुश्रुतिओं पर आधारित पद और गीत को गाथा कहा गया है। ईसवी सन् की प्रथम सदी के प्राकृत कवि 'हाल' की, 'गाथा सप्तशती' सरस एवं मधुर गीतों का संग्रह है, जिसके मुक्तक गीतों में उस युग के ग्राम्य जीवन, गोप-गोपियों, खेतों की रखवाली करने वाली ग्राम्य बालाओं, धान कूटने वाली युवतियों तथा प्रेमी-प्रेमिकाओं के मिलन और विरह, उनकी क्रीड़ा एवं हास-विलास का उन्मुक्त चित्रण मिलता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोक गाथा के अर्थ में इस शब्द का प्रथम प्रयोग हिन्दी साहित्य में सम्भवतः आज से तीस पैंतीस वर्ष 'ढोला- मारू रा दूहा' में हुआ है। यद्यपि बैलेड अंग्रेजी साहित्य में छोटे और बड़े सभी प्रकार के कथा गीतों के लिए व्यवहृत होता है, हिन्दी में गाथा शब्दों का प्रयोग लम्बे और बड़े गीतों तक ही सीमित है। हिन्दी में छोटे कथात्मक गीतों को कथा गीत, गीति कथा या प्रबन्ध गीत की संज्ञा दी गयी है।

भोजपुरी क्षेत्र के लोक जीवन में गाथाओं के लिए भी 'गीत' शब्द का ही प्रयोग पाया जाता है। मराठी के पाँवड़ा की भाँति वीर गाथाओं के लिए किसी हद तक पँवाड़ा शब्द भी प्रचलित है। भोजपुरी क्षेत्र में पँवरिया नामक मुसलमानों में एक जाति है जो पुत्र--जन्म के अवसर पर सोहर और ऐसी गाथाओं को गा-गाकर अपनी जीविका चलाती है।

लोक गाथा में मुख्यतः नायक और नायिकाओं के विरह और मिलन की कथा वर्णित रहती है। नायिकाओं को प्राप्त करने, निस्सहायों की रक्षा और मान-मर्यादा के निर्वाह के लिए उनके नायक भीषण युद्ध भी करते हैं। लोक गाथाओं में छल-प्रपंच के प्रयोगों, विश्वासघात की कारुणिक घटनाओं, साहसिकता, द्वन्द्व या युद्ध में जादू-टोने के चमत्कारों, अमानवीय और दैवी शक्तियों द्वारा मानव व्यापारों में हस्तक्षेपों; बल-पौरुष, सौन्दर्य, भोज्य पदार्थ आदि का अतिरंजनापूर्ण और रोचक वर्णन मिलता है।

यूरोपीय विद्वानों ने बैलेड या लोक गाथाओं का विस्तृत अध्ययन कर इनके लक्षणों का निर्धारण किया है। वे लक्षण भोजपुरी लोक गाथाओं पर भी घटित हैं।

लोक गाथाओं का मंगलाचरण या देव स्तुति से प्रारम्भ होता है। इनमें पुनरुक्तियाँ या पुनरावृत्तियाँ भी प्रचुर मात्रा में पायी जाती है जैसाकि सौन्दर्य और युद्ध वर्णन और कथोपकथन से स्पष्ट है। यूरोपीय लोक गाथाओं में टेकों की पुनरावृत्ति है, लेकिन भोजपुरी गाथाओं में यह प्रवृत्ति नहीं पायी जाती। लोक गाथाओं में वर्णित भावनाओं, रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, सिंगार और सजावट में स्थानिकता की स्पष्ट छाप रहती है और उस पर युग का प्रभाव भी रहता है। उदाहरणार्थ, हम आल्हा में तोपें और बन्दूकों का गर्जन भी सुन सकते हैं। लोक गाथायें संगीतात्मक होती हैं और वे अलंकार से बोझिल नहीं रहती हैं। लोक गाथायें परम्परागत और घटना प्रधान होती है और उनमें उपदेशात्मक भावना का अभाव रहता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। जिन गाथाओं को पेशेवर नर्त्तक गाते हैं, उनमें नृत्य का साहचर्य भी रहता है। इधर कुछ वर्षों से भोजपुरी क्षेत्र के नर्त्तक लोक गाथाओं पर आधारित लोक नाट्य भी दिखलाने लगे हैं।

प्रत्येक गाथा का कोई–न-कोई रचयिता अवश्य रहता है, किन्तु उसके साथ वह अपना नाम जोड़ने में संकोच अनुभव करता है। वह अपनी रचना को लोगों को गा–गाकर सुनाता है और लोग उसे अपनाकर उसका गान आरम्भ कर देते हैं। इस प्रकार उसमें रचयिता के व्यक्तित्व का लोप हो जाता है और वह समाज या समुदाय की रचना बन जाती है। एक गायक से किसी गाथा को सुनकर दूसरा उसे सीखता है, इस प्रकार उसकी एक परम्परा बन जाती है। लोक गाथाओं का गायक रचयिता भी होता है। उसे कथा मालूम रहती है और गाते समय गाथा की जिस कड़ी को वह भूल जाता है, उसे अपनी ओर से जोड़ देता है। वह अपनी रुचि के अनुसार उसमें हेर-फेर भी कर देता है। गायकों और श्रोताओं के साथ कोई गाथा एक स्थान दूसरे स्थान को लौर एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में पहुँच जाती है, फलतः उसकी भाषा, वर्ण्य-विषय और उसकी कथा में इतना परिवर्त्तन हो जाता है कि कहीं-कहीं उसके मूल रूप को पहचानना भी कठिन हो जाता है। कुछ गाथाओं का प्रचार क्षेत्र विशेष तक ही सीमित रहता है और कुछ गाथायें प्रान्तीय सीमाओं को लाँघकर दूर–दूर पहुँच जाती है। उदाहरणार्थ, हम सोहनी–माहिवाल की कथा को ले सकते हैं, जिसका प्रचार पंजाब तक ही सीमित है। इसके विपरीत राजा भरथरी के गीत का प्रचार बिहार से गुजरात तक है।

जैसा कि पहले कहा गया है परम्परागत, बड़े और लम्बे कथागीतों को ही हिन्दी में 'गाथा' की संज्ञा दी गयी है। तदनुसार भोजपुरी में आल्हा, लोरिकायन, राजा ढोलन, सारंगा-सदावृज, कुँअर बिजई, सोरठी–वृजभार, सुभनयका, राजा भरथरी और गोपीचन्द के गीत ही लोक गाथाओं की श्रेणी में आते हैं। डाक्टर सत्यव्रत सिन्हा सारंगा-सदावृज और राजा ढोलन-के गीतों को गाथा नहीं मानकर उन्हें लोककथा के अन्तर्गत रखते हैं, क्योंकि वे गद्य-पद्य मिश्रित भाषाओं में हैं। लेकिन इनके गायक इन्हें गीत ही मानते हैं, कथा नहीं। इनके अतिरिक्त पँवरिया के नाच में मान गुजरिया, राजा परसोतिम, मामा-भगिना, कुँअर सिंह, चैन सिंह आदि के गीत और नेटुआ के नाच में राजा विकरम और दुलरा दयाल सिंह के लम्बे-लम्बे गीत गद्य-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पद्य मिश्रित भाषा में गाये जाते हैं और उनमें भी गाथाओं के लक्षण मिलते हैं। अतः उन्हें गाथाओं की पंक्ति में ही स्थान मिलना चाहिए।

कथा गीतों के अन्तर्गत हम उन छोटे-छोटे गीतों को रखते हैं, जिनमें गीतों के माध्यम से कथायें वर्णित हैं। ऐसी कथाएँ सोहरों, जाँत सारियों, झूमरों, बरसातियों, देवी-देवताओं के पचड़ों और भिखमंगों के गीतों में बड़ी संख्या में पायी जाती हैं। यहाँ उन कथा गीतों पर विचार करना हमें अभिप्रेत नहीं है। यहाँ हम केवल भोजपुरी लोक गाथाओं का ही संक्षिप्त परिचय देना चाहते हैं।

आल्हा— यह एक वीर काव्य है. जिसका प्रचार बिहार से ब्रज तक है। कहा जाता है कि बारहवीं सदी के एक कवि जगनिक ने 'परमाल रासो' की रचना की थी और उसका यह परिवर्तित रुप है। इसमें आल्हा और ऊदल नामक महोवा के दो राजकुमारों के शौर्य की कहानी वर्णित है। विद्वानों का अनुमान है कि आल्हा की मूल भाषा बैसवाड़ी रही होगी। लेकिन लोक कंठ पर उतरने के कारण इसमें काफी हेर-फेर हो गया है। कहा जाता है कि आल्हा में बावन गढ़ोंके युद्धका वर्णन किया गया। उन्नीसवीं सदीके अन्तिम चरण में वाटर फिल्ड और इलियट ने अवधी क्षेत्र से और ग्रियर्सन ने भोजपुरी क्षेत्रसे संकलित आल्हा के कुछ अंश को प्रकाशित कराया था। भोजपुरी क्षेत्र में आल्हा का सर्वाधिक प्रचार है। आल्हा का गायक बड़े जोश खरोश के साथ इसे ढोलक पर गाता है। आल्हा का अपना पृथक छन्द भी है।

यथा—

बारह बरिस ले कुत्ता जीये
तेरह जीये सिआर।
बरस अठारह छत्री जीये
आगे जिअला के धिरकार।

लोरिकायन— कहीं-कहीं इसे लोरिकी भी कहते हैं। इस गाथा का प्रचार बिहार. उत्तरप्रदेश और छत्तीस गढ़ में है। इसमें लोरिक और चंदा एवं मंजरी के प्रेम और विरह की कहानी वर्णित है। चौदहवीं सदी के प्रथम चरण के मैथिल पंडित ज्योतिरीश्वर ठाकुर ने अपने 'वर्णरत्नाकर' में लोरिक नाच की चर्चा की है। इसी सदी के तृतीय चरण में मौलाना दाऊद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने लोरिक चंदा की कहानी को दोहा-चौपाइयों में लिखा है । लोरिकायन की विशालता के संबंध में यह उक्ति है :—

सात कांड रामायन ।
अनगनित काँड लोरिकायन ।

इस लोक काव्य के छत्तीस गढ़ी पाठ डा. श्यामाचरण दुबे और डा. एलविन द्वारा प्रकाशित कराये गये हैं । बलिया के डाक्टर श्याम मनोहर पाण्डेय ने उत्तर प्रदेश और बिहार में प्रचलित इस गाथा के सात प्रतिरूपों का टेपरेकार्डिंग किया हैं और उनका अध्ययन कर रहे हैं ।

राजा ढोलन— इस गाथा में राजा नल के पुत्र राजा ढोलन और उसकी विवाहिता पत्नी मोरवा एवं उसकी प्रेयसी रेवा मालिन की कथा वर्णित है । राजा ढोलन का विवाह बालपन में ही मोरवा से हुआ था । नैहर में ही जब मोरवा की जवानी आ गयी तो उसने एक सुग्गे से और फिर बंजारों से राजा ढोलन के पास अपना विरह संदेश भेजा । उसपर ढोलन मोरवा से मिलना चाहता है और रेवा उसमें बाधा उपस्थित करती है । इस गाथा में मोरवा के विरह वर्णन का एक अंश इस प्रकार है :—

तूँ हूँ त झंखत माता अपनी रसोइआ,
देतवाड़ू धुँअवा के दोस ।
हमहूँ त झंखिले ओरी धुरखुंडा,
देतानी करमवा के दोस ।।
अँचरा में फारि-फारि कोरा रे कगदवा,
नयना कजरवा मसिहान ।
आरी-पारी लिखे काना इनती मिनतिआ,
बीचे ठँइआँ बारहो विरोग ।।
ढोलन बाबू छोड़ले अपनी बिअहिआ,
मालिन संग रचेले धमार ।।

इस मनोहारिणी गाथा का उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार और मध्य प्रदेश में काफी प्रचार है । ईसवी सन की बारहवीं सदी में किसी कवि ने "ढोलां मारू रा दोहा, की रचना दोहों में की थी । इसका राजस्थानी और छत्तीसगढ़ी रूप प्रकाशित भी है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारंगा सदावृज— इसमें सारंगा और सदावृज की प्रेमकथा वर्णित है। सारंगा और सदावृज सहपाठी थे। पाठशाला में ही दोनों के हृदय में प्रेम का अंकुर उगा। सारंगा का विवाह किसी अन्य व्यक्ति से हो गया, जब उसके द्विरागमन का दिन आया तो वह एक रात चुपके से सदावृज के साथ भाग गयी। भागने के पूर्व एक रात्रि में सारंगा सदावृज से मिलने जाती है, शोर होने लगता है, किन्तु सदावृज की नींद नहीं टूटती है। इस पर सारंगा कहती है —

सुकवा उगेला भुकभुकवा रे दोसवा
कोइली डोलेली आमाडार जी।
सांझे के आएल यारो भइले भिनुसहरा,
एह पापी का दुआर जी॥

यह सुनकर सदावृज उत्तर देता है :—

कइसे के खोलीं प्यारी वजर केंवरिया
दादुल बाड़े रखवार जी।

सारंगा और सदावृज की कथा का कभी उत्तर भारत में और राजस्थान में व्यापक प्रचार रहा होगा। सोलहवीं और सत्रहवीं सदी के अनेक जैन कवियों द्वारा रचित सदयवत्स-सावलिंगा की कथा इस बात का प्रमाण है। इस हृदय स्पर्शी प्रेम गाथा का प्रामाणिक लोक रूप अभी तक प्रकाश में नहीं आ सका है।

कुँअर विजई— इस गाथा में रोहतास गढ़ के राजा कुसमल के पुत्र विजयमल की कथा वर्णित है। इसे दुर्गा की इष्टसिद्धि है। उन्हीं की कृपा से वह राजा बावन सूबेदार से एक युद्ध में विजयी होता है और उसकी कन्या तिलकी से विवाह करता है। सन् १८८४ ई० में डा० ग्रियर्सन नें बंगाल एशियाटिक सोसायटी कीं पत्रिका में इसका एक अध्ययन प्रकाशित कराया था।

सोरठी बृजभार— सोरठी राजा उदय भानु की पुत्री थी। अशुभ लग्न में जन्म होनें के कारण उसका पिता उसे एक संदूक में बंद कर गंगा में प्रवाहित कर देता है। वह एक कुम्हार द्वारा पाली पोसी जाती है। सोरठी बड़ी होने पर बृजभार नामक एक जोगी पर आसक्त होती है और गुरु गोरखनाथ की कृपा से इन दोनों का मिलन होना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुभनयका— इस गीत को नयका बनजरवा भी कहते हैं। शोभा नामक एक बनजारे का विवाह दसवंती नामक एक कन्या से होता है। द्विरागमन के बाद शोभा परदेश के लिए चल देता है। वह एक हंस की प्रेरणा से रास्ते पर से ही लौट आता है, अकेले में दसवंती से मिलता है और फिर वापस चला जाता है। दसवंती को पुत्र पैदा होता है और उसे कुलटा समझकर घर से निकाल दिया जाता है। अंत में दुर्गा की कृपा से दोनों का पुनर्मिलन होता है। सन् १८८९ ई० में इस गाथा को डाक्टर ग्रियर्सन ने एक जर्मन पत्रिका में प्रकाशित कराया था।

विहुला—चाँद सौदागर के पुत्र वाला लखंदर का विवाह विहुला से होता और उसे कोहबर में ही सर्प डंस लेता है। विहुला अपने सतीत्व के बल से उसे जीवित करती है। इस गाथा का बिहार और बंगाल में बहुत प्रचार है। बंगला के अनेक मध्य युगीन कवियों ने इस गाथा के आधार पर मनसा-मंगल काव्यों की रचना की है।

राजा भरथरी—कहा जाता है कि राजा भरथरी विक्रमादित्य के छोटे भाई थे। राजा भरथरी शिकार खेलने जाते हैं और एक मृग को मारते हैं। मृगी को विलाप करते देख कर उनका हृदय द्रवित हो उठता है और राज-पाट को त्याग कर जोगी हो जाते हैं। राजा भरथरी का प्रचार बिहार से गुजरात तक है और इसे सारंगी या रावणहत्था पर गा-गाकर जोगी जाति के लोग भिक्षा मांगते हैं।

गोपीचन्द—कहा जाता है कि गोपीचंद बंगाल के पालवंशी राजा थे और बारहवीं सदी में हुए थे। उन्होंने राज्य एवं रानियों को त्याग दिया और नाथपंथी जोगी हो गये। डा० ग्रियर्सन ने सन् १८८५ ई० में बंगाल एशियाटिक सोसायटी के जर्नल में इस गाथा का तुलनात्मक अध्ययन उपस्थित किया है।

अब हम पेशेवर नर्तकों द्वारा गायी जानेवाली गाथाओं पर आते हैं। पँवरियों की गाथाओं में मान गुजरिया के गीत का व्यापक प्रचार है। इसमें एक गुजरी की कथा वर्णित है, जो मुगल बाजार जाती है और मुगलों द्वारा रोक ली जाती है। यह समाचार जब उसके पति को मिलता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है तो वह मानगुजरिया को मुगलों से युद्ध कर छुड़ा लाता है। इस गाथा का विभिन्न रूपों में बिहार से लेकर गुजरात तक प्रचार है। शाहाबाद जिले के पँवरियों में कुँअर सिंह की गाथा प्रचलित है और चंपारन के पँवरियों में बेतिया के राजा चैन सिंह की। नटुआ नाच की गाथाओं में दुलरा दयाल सिंह की गाथा सर्वाधिक प्रचलित है। इसमें दुलरा दयाल सिंह नामक एक गोंड़ नर्तक पर बखरी शहर की मरवती (मृणालवती ?) नामक एक महाजन कन्या के मोहित होने की कथा है। इसी नाच का एक अन्य गाथा 'विकरमी' में राजा विक्रम की सात रानियों की सौतियाडाह की कहानी है। पेशेवर नर्तकों की और भी अनेक गाथाएँ हैं, जिनपर स्थान-संकोच के कारण प्रकाश नहीं डाला जा सकता।

इस निबंध में भोजपुरी क्षेत्र में प्रचलित लोक गाथाओं का एक सामान्य परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इन गाथाओं में वर्णित विषयों और इनके आधार पर रचित साहित्यिक ग्रंथों के ऊपर दृष्टि-निक्षेप से पता चलता है कि इन गाथाओं का रचनाकाल ग्यारहवीं सदी से सोलहवीं सदी के बीच हो सकता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में ऐसे युग भी थे, जिनमें अनेक वीर काव्यों और प्रेमाख्यानों की रचना हुई थी। इन गाथाओं का रचना-काल भी वही हो सकता है। शहरों के फुटपाथों पर इन गाथाओं के अनेक संग्रह बिकते है, जिनके पाठ अप्रामाणिक होने के कारण अध्ययन के लिए बेकार से हैं। इन गाथाओं के उद्गम, प्रचार-प्रसार आदि बातों के अध्ययन के लिए यह आवश्यक है कि इनके सभी प्राप्त रूपों का, चाहे वे लिखित हों या मौखिक, संग्रह किया जाय और ऐतिहासिक-भौगोलिक प्रणाली से उनका अनुशीलन किया जाय। फिर इन गाथाओं के सम्बन्ध में अनेक तथ्य प्रकाश में आयेंगे।

सहायक साहित्य सूची

१. डाक्टर कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास, षोडश भाग (वाराणसी १९६० ई०) पृ० १७

२. डाक्टर वासुदेव शरण अग्रवाल, आजकल, लोककथा अंक (दिल्ली मई १९५४ ई०) ,पृ० ९

३. डा० सत्यव्रत सिन्हा, भोजपुरी लोक गाथाएँ (इलाहाबाद १९५८), पृ० २.

४. उपरिवत्, वक्तव्य पृ० थ.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाँद के टुकड़ा

साँझ त बूड़लि ठोर में बा
मुसुकान ज हो त भोर के देइदऽ।

हाथी के दू मन, चींटी के दू कन
बादर ताल के मोर के देइ दऽ।

तू रहऽ भू पर चन्द्रमा ऊपर
जे जहाँ बा तहँ फूलइ-फरइ दऽ।

का करबे ससि के टुकड़ा हम,
ई टुकड़ा तू चकोर के देइ दऽ।

—चन्द्र शेखर मिश्र

गजल

न छेड़ऽ तार सरगम के दरद फिर से उभर जाई
बहुत मोसकिल से जाँतल आग फिर दिल के लहर जाई

जगावऽ जनि, बहुत मिन्नत से अबगे साध सूतल हा
कमल के बन्द अँखियन में किरिन फिर से उतर जाई

बहुत अँखियाँ बचा के हम डगर धइनी मदीना के
फिसल जाई कदम पीछे त दुसमन के सुतर जाई

तनिक हट के इहाँ से जा, सुनावऽ तान बुलबुल के
दहा जाई हमर दुनियाँ अगर दरिया उमड़ जाई

जरत--तिल--तिल, मरत घुल--घुल जहाँ अरमान बिरहा के
उहाँ के गीत जनि गावऽ डगर से मन बहर जाई

—अशान्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोहतासगढ़

द्वारिका प्रसाद श्रीवास्तव
डाक्टर दे० स० त्रिवेद

दुनियाँ के सब लोग जानत बा कि रोहतासगढ़ शाहाबाद जिला में बा। रोहतासगढ़ एही जिला के शोणनद के पच्छिमी घाट पर सासाराम से बारह कोस दखिन में बा। लोग कहेला कि सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के लइका रोहिताश्व या रोहित एह गढ़वा के सत्य युग में बनवले रहलन। राजा हरिश्चन्द्र वरुण के वचन देले रहन कि हमरा लइका होई त हम आपन लइका के बलि चढ़ाइब लेकिन उ पुत्र भइला पर कवनो ना कवनो बहाना कइके टालत गइलन, जब उनकर लइका रोहित के ई बात मालूम भइल तब उ घर से भागि के जंगल में चल गइले अवरू वोहिजा २२ साल तक रहलन। उहवाँ से उ अजीगर्त के पुत्र शुन:शेष के कीन के अपना पिता जी के पास बलि चढ़ावे खातिर भेज दीहलन।

हरिवंश पुराण के मुताबिक (११-३-२६) रोहित रोहितपुर के स्थापना कइलन, जवन स्यात् रोहितास गढ़ ही हो सकता बा। रोहतास के उपत्यका समुन्दरतल से, १५९० फीट ऊँचा बा। एकरा उत्तर में अवसानी नदी अवरू पच्छिम में करियारी खोह बा। पूरब से लेके पच्छिम में दू कोस तथा उत्तर दखिन में अढ़ाई कोस एकर विस्तार बाटे एहसे एकर परिधि २८ मील बा। ई आजकल बहुते घनघोर जंगल से ढँक गइल बा, लेकिल एह पर चढ़े खातिर ८४ रास्ता बा। एकरा के खाली भारत के ही नाहीं बल्कि सारा संसार के सभन किलवन में सबसे निमन कहल जा सकत बा, काहे कि ई दुर्ग अजय बा। 'फरिस्ता' एही के सभन किलवन में अच्छा बतवले बाड़े। शेरशाह शाहजहाँ, आ मीरकासिमो आपन जान बचावे खातिर एकरे शरण लिहले। भारत के सबसे पहिला स्वतंत्रता संग्राम (१८५७ ई०) में जगदीशपुर के बाबू कुंवर सिंह जी के भाई अमर सिंह भी एही किलवा के आपन सुरक्षा स्थान बनवले रहलन जहवाँ से ई फिरंगिन के तबाह कइ दिहले।

ए किला में प्रवेश करे खातिर चार फाटक बाटे, जइसे पूरब में महेन्द्रघाट पच्छिम में कठवतिया घाट, उत्तरमें घोड़ाघाट, अवरू दखिनमें राजघटा बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाकीं बहुते लोग पूरबवारियें फाटकवा से किला में ढुकेलन जा। शोएनद ठीक एकरा अगवे बा, नीचे अकबरपुर गाँव बा। हेले खातिर पत्थर काटि के सीढ़ी बनावल बा अवरू रास्ता कठिन बा। पच्छिममें कठवतिया घाट के नियरे पातर पहाड़ी रोहतास के रेहल पहाड़ी से मिलवले बिया जेकरा से सुरक्षा अवरू बढ़ गइल बा। एह स्थान पर उपत्यका कुल २०० गज चवड़ा बा अवरू एकरा दखिन में गहिड़ा सोन के धारा आ उत्तर में गुलरिया खोह बाटे। एही से पच्छिम एक कीसिम से तीन फाटक लगभग ई किला के रक्षा करत बा। एकरा में कठवतिया दरवाजा मशहूर बा, एकरा पिछवे में सिंहदरवाजा अवरू लाल दरवाजा बा। सिंहदरवजवे प दू सिंहन के चित्र पत्थर काटि के बनल बा। पता लागेला कि अकबर बादशाह के सेनापति राजा मानसिंह जी कठवतिया अवरू सिंहदरवाजा के बनवले रहलन या वोकर मरम्मत करवलन।

उत्तर दिशा में जवन फाटक बा वोकरा प हाथी के चित्र बनल बा। एकरे के घोड़ा दरवाजा चाहे गाजी दरवाजा भी कहल जाला। ई फाटक खाली ६॥ फीट चवड़ा बा अवरू लकड़ी के फाटक भीतर से लागल बा। एकरा पास में कतना राजपूतन के छतरी अवरू कतना मुसलमानन के तुम्बर मुकबरा बनल बा जहाँ ई लोग लड़ाई में मारल गइल रहलन जा। कहेला लोग कि शेरशाह एही रास्ता से किला में ढुकलन। दखिन में राजघाट से प्रवेश कइल आसान बा लेकिन एकर प्रयोग कम कइल जाला काहे कि दखिन दिशा से प्रवेश अशुभ मानल जाला।

एही किला के भीतरे में सराय महल बा जे सबसे विशाल भवन बा। जे २०५ फीट लम्बा अवरू २७४ फीट चवड़ा बाटे। एकर पच्छिम में ढुके वाला दरवाजा तीन अट्टालिका में रहे जेकरा ऊँचका भाग पर नउबत खाना या संगीतालय रहे। एकरा पास में एक पोखरा बा जेकर पानी महलवन में मशीन के जरिए से भेजल जात रहे। एह प्रासाद के भीतर हथिया पोल, बारादरी रंगमहल, राजमहल, जनानामहल, खानामहल, शीशमहल, नाचघर अवरू फूलमहल बनल बा।

एही किलवा में रोहितेश्वर महादेव जी के मन्दिरो भी प्रासाद के पूरब मे किला से एक कोस के दूरी पर बा। मुसलमानन के काल में एकरा के बरबाद कर बिहल गइल अवरू एकरे ईंट गाड़ा से नजदीके में एक सामान्य मस्जिद बनल। राजा मान सिंह भी एही मन्दिरबा के जीर्णो द्धार कइले रहलन हा। ई मन्दिर दू भाग में बाटे। एकत ६॥ फीट लम्बा अवरू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५४ फीट चवड़ा तथा बोकरे जगमोहन ५९'×५०'×४।। बा। मन्दिरवा मे जायें खातिर ८४ सीढ़ियन के पार करेके परेला। एह मन्दिर के दुवरवे पर राजहंस कमल दण्ड पान करत चित्रित कइल बा-दू पहरेदार अवरू गणेश जी के भी चित्र बनल बा। मन्दिर के भीतर शिवलिंग अवरू मण्डल में नन्दी के भग्न मूर्ति बनल बाटे।

रोहितेश्वर चाहे रोहितासन के नियरे में हरिश्चन्द्र मन्दिर वा जवन स्यात् विष्णु मन्दिर रहे अवरू जेकरा के मानसिंह बनवले रहलन जव उ १५८६ ई० अवरू १६०६ ई० के वीच एही किला में रहत रहन। एकरा नियरे मे रोहिताश्व के वइठका बा। गणेश जी के मन्दिर डाक वंगलवा से २०० गज दखिन-पच्छिम बा। अवरू पूरवे में महादेव जी के मन्दिरो बा।

महल के उत्तर में गाजी फाटक के पास में हवशरखाँ मस्जिद, तुम्ब अवरू मदरसा (विद्यालय) बा। ई मस्जिदवा हवशखां वादशाह अकवर के राज्यकाल मे ९८६ हिजरी या १५७८ ई० में वनवले। कहल जाला कि हवशखां शेरशाह के सेनापति अवरू किला के दरोगा रहन। इनकर मकवरा वाहर से ४८।। वर्ग फीट अवरू अन्दर से ३५।।। वर्ग फीट बा तथा एकरा उपर विशाल गुम्बद वा। एकर दीवाले पत्थर के ह वाकी ईदगहवा ईंट से बनाव बा। एकरा नियरे मे ही कनाती मस्जिद वा। एकरा अलावा एहीजा मिर्जा अवुलउशा, जफरशहीद व शामी सुल्तान के मकवरा बनल बाटे।

दखिन में राजघाट के नियरे में पंचमल वा उ सचमुच तीन ही भगवा में बा। लालदरवाजा जाये के रास्ता में जामी मस्जिद मिलेला जहवाँ शुक्रवार के नमाज पढ़ल जात रहे। एकरा के शेरशाह के राज्यकाल में हैवत खाँ ९५० हिजरी १५४३ ई० में बनवले रहलन। किलवा के पच्छिम भूसी खोह में शाह बहावल शहीद के कबरवा। एह खोह के दखिन में दू पत्थर के जाली से अँजोर आवेला जेह से एकर शोभा अवरू अनुपम हो जाला। एही पहाड़ी के उपर भाग में विशाल चीर के पेड़ वा जहवाँ पर शाह बहावल के पीर (गुरु) के कवर बा, जे सदा नंगे रहत रहले तथा एह स्थान के लंगा या नंगा घाटी कहल जाला।

ऐतिहासिक काल में हमनी के सबसे पहले महासामन्त शशांक देव जी मुद्रा रोहतासगढ़ से मिलल बा। उहे हर्षबरधन के बड़ भाई 'राजबरघन के जान से मरले रहलन। उ बउधन के कट्टर दुश्मन और शैव रहलन। समूचे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार अउर उत्कल में इनकर बड़ा धाक रहें। इनकर राजधानी बंगाल में कर्णसुवर्ण रहे। बंगाल में विक्रमपुर के चन्द्र राजा लोग रोहितगिरि से आपन उत्पति बतावेलन अवरू उत्कल के तुंगवंशी राजा भी रोहितगिरि से आपन निकास बतावेलन। अवरू ई लोग महेश्वर के पूजत रहन। एह से साबित होत बा कि रोहितासगढ़ पुराना समय से ही बड़का राजवंश के आश्रय अवरू जन्मदाता रहत आ रहल बा।

खरवार चेरो अवरू ओराँव भी रौहतासगढ़ के आपन आदि स्थान बतावेलन। खरवार लोग अपना के सूरजवंशी कहेलन। ई लोग करुष के वंशज बा। मनुवैवस्त में दस लइकन में से बा लोग। कालान्तर में करुष के ही करवार या खरवार अपभ्रंश रूप हो गइल। चेरों के उल्लेख 'ऐतरेय आरण्यक' में बड़ा आदर के साथ करल गइल बा। ई चेर पलामू विजय के पूर्व रोहितास में ही रहत रहे लोग। ओरावन के कहनाम बा कि उ लोग भी पहिले रोहतासगढ़ में राज करत रहे लेकिन पीछे में लोग उ सब के वोन्हिजा से भगा दिहले। खयरवाल वंश के नायक प्रतापधवल के अभिलेख भी संवत् १२२५ के रोहतास पहाड़ पर फूलवारी घाट में मिलल बा।

एह से साबित होत बा कि रोहतासगढ़ के कालान्तर में जंगली राजा लोग अपना अखतियार में कइ लेले रहे लोग। बाकी शेरशाह के समय चूड़ामणि के हाथ लागल। ई राजपूत नरेश बड़ा धार्मिक अवरू दयालु रहलन। जब शेरशाह आपत्ति में पड़ल रहले त उ दुश्मन से बचे खातिर शरण मँगलन, भला क्षत्री लोक शरण ना दीहें! ईहे शरणवा त हमेशा से हमार देशवा भारत के विनाश होखे के बड़का कारण भइल चल आवत बा। शेरशाह डोली में कुछ वूढ़ अरतन के आगे भेजलन अवरू पीछा से सशस्त्र सरदारन के जेकरा के वीर सिपाही लोग ढोवत रहे। किला में घुसते मातर सेनाके सिपाही सब उनका रक्षक लोगनके निरस्त्र कइ देले तथा बाहर से सजग शेरशाह आक्रमण कइके किलवा पर आपन अधिकार जमा लिहले।

सन् १५८७ ई० मे बादशाह अकबर मानसिंह के रोहतास जागीर में दीहलन तब राजा एकरा के आपन राजधानी बनवले। ग्वालियर के तोमर राजपूत वीरमित्र १६८८ संवत (१६३१ ई०) में एह किला के शेर खाँ से छीन लिहले जेकरा से दिल्ली सम्राट भी चकित हो गइलन जइसे कि—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुर्गोंहि रोहिताश्वे स्वकमक्रत कृति शेरशानं विजित्य
नैतत्कोपि व्यधसीदिति चकित मति वीक्ष्यं दिलीश्वरोऽपि ।

बाकी तुमरन के शासन रोहतासगढ़ पर अधिक दिन तक ना चलल। इखलास खाँ १६३७ ई० में फिर एह किला के छीन लिहले। तब से ई किला मुसलमानन के हाथ में रहे। हिन्दू अवरू अंगरेजन से हारला पर नवाब मीरकासिम अली अपना बीबी-बच्चा सहित एहीजे शरण लिहलन। अंगरेजी राज्य के आरम्भ में कुछ समय तक कुछ सिपाही लोग एकर रक्षा करत रहलन लेकिन अब त ई विरान हो गइल बा।

★

बायन (अवधी)

सात बरवै

नैन पियासल, आल्हर मोर करेज।
सहैं न प्रेम क उदय रूप क .ज॥

दुनियाँ भर में मिललीं हमहिं सपाह।
होखो घर घर मंगल, करब न आह॥

थरिया बजले कऽ मन में बड़ि आस।
हमरी भागीं चउकाँ बिच्छी बास॥

भगल दलिद्दर, घर घर लछिमी बास।
भूखि बुतावे बदे महँग बा आँस॥

जिनिगी गइल बुताइ, हिरिस क अँजोर।
भिनी पराने, बेधी पोरे-पोर॥

सूतत कऽ मन पऽरें मिंत्र पुरान।
बुलुके लोर, न आवे आपन-आन॥

सासु न आवँसु सोझाँ, ना धनि सेज।
रूसल दुलहा चाहे भीखि दहेज॥

—अवधेश प्रधान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ललित निबन्ध

जेब

—प्रो० रामेश्वरनाथ तिवारी

पुराना जमाना में भारत के बासिन्दा मुख्य रूप से दुइएगो वस्त्र धारण करत रहे लोग। एगो अंतरीय आ दोसर उत्तरीय, अंतरीय के माने होला अधोवस्त्र यानी धोती। उत्तरीय के माने होला ऊपर के वस्त्र यानी दुपट्टा, चादर या ओढ़नी। ओह घरी सायद सिलाई के आविष्कार ना भइल रहे; एह से लोग नीचे त धोती (या साड़ी) लपेट लेत रहे आ ऊपर से एगो चादर देहि पर डालि लेत रहे लोग। एह कपड़न में जेब ना रहत रहे। कुरता, कमीज, कोट वगैरह मे रुपया-पैसा, कागज-पत्तर, छड़ी-रूमाल, अंट-संट राखे वाला थैली के जेब कहल जाला। ई फारसी भासा के शब्द ह। एकरा सेदई अंदाज लागता कि भारत के जब फारस देश से सम्पर्क भइल, तबे से एह देश में जेब लगावे के परंपरा सुरू भइल। संस्कृत भासा में, हमरा जाने, जेब के पर्यायवाची कवनो शब्द नइखे। एह से हमरा वक्तव्य के पुष्टि होता।

प्राचीन भारत के निवासी अपना कपड़न में जेब ना लगावत रहले; एह से उनकर चरित्र के एगो खूबी बहुत साफ रंग से सामने आ जाता। ई देश धन-संग्रह के अहमियत ना देत रहे, देत रहे आध्यात्मिक धन-संग्रह के। इहे वजह वा कि एह देश के प्रायः हर सम्प्रदाय आ दर्शन के नारा रहे — अपरिग्रह नतीजा ई भइल कि एहिजा के निवासी ई सोचे लगले कि धन जोगा के होई का। कबीर कहले कि धन ओतने चाहीं, जतना में आपन घर के सब सवांगन के आ कबहीं-कबहीं आ जाए वाला अतिथियन के पेट भरि जाए आ उन्हुका जीए के मामूली सामान मुहय्या हो जाए—'साईं इतना दीजिए, जामे कुटुम समाय; मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाए'। भला बताईं कि जवना देश के जीवन-दर्शन ई होखे, ओकरा जेब के कहाँ जरूरत बा। फारस के लोग एह देश से कुछ लूटि के ले जाए खातिर आइल रहले, एह से उन्हुकरा जेब के जरूरत रहे। अँगरेज त एह देश मे सबसे बड़ आ घुइस लुटेरा के रूप में अइले, ऊ लोग पहिले के हमलावर लोगन नियर तलवारि भाँजत ना आइले, ऊ लोग त एक हाथ में तराजू लेके अइले आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोसरा हाथ के पाकेट यानी जेब में डलले अइले। तरुआरि पीठि के अलोता लुकवले अइले आ मोका पाइके ओकरा के निकलले। उन्हुँकरा हर काम के एके मकसद रहे। ऊ रहे आपन पाकेट भरल। समूचा भारत एह बिदेसियन के हरकत देखि के दंग हो गइल। कहाँ एहिजा के लोग जेब से परिचित तक ना रहले आ कहाँ ई बिदेसी अइलेस जे थोकरी निअर अपना जेबिन में हीरा-जवाहिरात, सोना-चाँदी भरि-भरि के ले जाए लगलेस।

जेब चाहे पाकेट एगो मामूली शब्द भर न हवेस, ई एगो खास संस्कृति, एगो खास विचारधारा के प्रतीक हवेस, ई परिग्रह आ पूंजीवाद के प्रतीक हवेइस, साथे साथ, जहां जेब रही, ओहिजा जेबकट या जेब कतरा, जहाँ पाकेट रही ओहिजा पाकेटमार जरूर आ जइहें स। पुराना भारत में जेब आ पाकेट ना रहे, एह से एह देश में, जाहिर वा कि जेबकतरा आ पाकेटमार भी ना रहलेस। जब एह देश में विदेशी लोग जेब आ पॉकेट लेके आ गइललोग तब जेबकतरा आ पॉकेटमारनके संस्कृति भी साथे साथ आ गइल। तब एह देश के लोग खाली पाकेट मारे के कला ना सीखल लोग, एक चरण आगे बढ़िके ऊ लोग जमा मारे के हुनर भी जानि गइल।

एगो जमाना रहे किएह देश में आदमी के जेब ना दिल आ दिमाग देखल जात रहे, लेकिन अब जेब के अतना महत्व देखल जाता किजेबे आदमी के बड़प्पन के कसौटीहो गइल बा। दिल दिमाग खूँख होखे लेकिन अगर कवनो आदमी के जेब भरल होखे त ओकर खूब इज्जति कइल जाता; बाकिर दिल-दिमाग बुलन्द होखे आ जेब खूँख होखे त ओह आदमी के दुइओ कौड़ी मोल नइखे होत। एहसे आज के समाज में खाली ई जरूरी नइखे कि रवा कपड़न में जेब होखे बल्कि ईहो जरूरी बा कि ऊ जेब खूब भरल होखस, एहिसे आजु एह दुनिया में हर कोई परेसान नजर आवता, सब कोई अइसे भा ओइसे, आपन पाकेट भरल चाहता। बैंक पाकेटके विस्तार ह। जब पाकेट बेतरह भरि जाला तब आदमी ओकर बतुस के बैंक में जमा कइ आवेले आ ओकरा के फेनु खाली कइ देले ताकि फेनु ओकरा के चांदी, ताम्बा आ सोना (आजकल निकेल आ कागजी नोट) से भरल जा सके। समूचा दुनिया में जेब भरे के एगो होड़ लागल बा। अमेरिका के पास सबसे जादा पैसा बा; लेकिन ओहिजा के लोग एही सिद्धांत के साबित करता कि 'जेकरा पास जतने होला, ऊ ओतने कंगाल होला।' अमेरिका-वासिन के पाकेट भरपूर भरल वा लेकिन उन्हुँकरा नींदि नइखे आवत; काहे कि मिस्टर क ई सोचताड़े कि हमरा पास दुगो मोटर गाड़ी बा लेकिन हमरा पड़ोसी मिस्टर ख का पास तीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाड़ी हो गइल बा। मिस्टर ग एह सोच में बाड़ेकि हमरा पास चार गो कार खाना बा लेकिन बाप-रे-बाप, हमरा बगलगीर मिस्टर घके पास पाँच गो हो गइल। जेब के भरे खातिर ओहिजा अइसन होड़ लागल बा कि वेचारी नींद पगहा तुरा के भागि गइल बा। तब ऊ लोग नींद खरीदे खातिर बाजार में दवाई का दोकान पर जाता आ 'नींद के गोली' आ चाहे मादक द्रव्य बिक्रेता कीहां जाके लोग गांजा, भांग, चरस, आ एल. एस.डी. वगैरह खरीदि के खाता। पहिले त एह से उन्हन लोग के थोड़ा-बहुत नींद आइल हा, लेकिन ओकरा बाद मादक द्रव्य के मात्रा बढ़वला पर भी जब ओहनि लोगके नींद ना आइल हा तब ऊ लोग 'हरे राम,हरे राम,राम राम,हरे हरे, हरे कृष्ण,हरे कृष्ण,कृष्ण कृष्ण हरे हरे' के सरन में गइल हा। हम कहि ना सकीं कि जेब आ नींद में का सम्बन्ध बा- लेकिन कवनो ना कवनो सम्बन्ध त जरूर बड़ुए, काहें कि सफर में अगर कबहीं हमरा जेबमें तनिकिओ जादा पइसा ले के जाए के परेला त दिमाग-पर अइसन गरमी चढ़ेला कि नींद गायब हो जाला; समूचा ध्यान जेबे पर बटरा जाला। त हमरा बुझाला कि मये अमेरिका के ध्यान अपना जेब पर केन्द्रित भ गइल बा; जवना वजह से ओहिजा के नींद गायब हो गइल बा। हमरा से कोई पूछे कि एह दुनिया में बादशाह के बा, त हम ई कबो ना कहबि कि टाटा, बिड़ला, फोर्ड आ राकफेलर एह दुनिया के बादशाह बाड़े। हम त कबीर से तनिकी छेमा माँगि के उन्हुँकें शब्दन में कहबि कि 'जेब गई चिन्ता मिटी, मनुआ बेपरवाह; जाको कछू न चाहिए, सोई साहनसाह।'

लेकिन जेब चलि जाई, यानी जेब कटा जाई, के चाही ! अगर बदकिस्मती से जेब पर अस्तुरा, ब्लेड आ कैंची चलि जाला त चेहरा पर बारह बजे लागेला; आ आदमी साहनसाह निअर का दिखाई पड़ी, ओकर चेहरो उलटे रोवनिया कुकुर निअर हो जाला। लेकिन बात ई बा कि जब एक बार जेब कटा जाला तब आदमी दार्शनिक हो जाला, ओकरा परम ज्ञान प्राप्त हो जाला; ऊ स्थूल जेब के चिन्ता से मुक्त होके आध्यात्मिक गगन में कुलाँचा मारे लागेला; आ ओकरा मूँह से धन-वैभव के असारता आ जिन्दगी के क्षणभंगुरता पर अइसन सुन्दर भासन निकले लागेला कि का कहल जाउ ! एक बारपटना जंकशन के प्लैट फार्म पर गाड़ी पर चढ़े बखत एगो सधल पाकेटमार हमरा घड़ी वो कुरता के नीचे के गंजी के पॉकेट से हमर बहुत अजीज पार्कर कलम मारि लीहले आ ई हमरा जिन्दगी के पहिला जेब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारी रहे। पहिले त हमरा बड़ा दुख भइल लेकिन दुइए मिनट के बाद हम दार्शनिक हो गइलीं आ मने में कहलीं कि जिन्दगी में पहिला बार कलाकार से हमरा भेंट भइल हा। अतना सफाई से तीनि तह के भीतर से हमार कलम निकलले कि हमरा एही बात के अफसोस बा कि उन्हुँका कला चातुरी खातिर हम उन्हुँकर हाथ ना चूमि सकलीं। हम मने मन फेनु कहलीं— हे महान् कलाकार, तू जइसे आके अपन हाथ के सफाई देखवल, ओइसहीं तनी आपन रूप के झलक भी देखाव। बकौल कबीर के जब जेब चलि जाला, चिन्ता मिट जाला, मन बेपरवाह हो जाला; तब, जब हमरो पाकेट चलि गइल, हमार चिन्ता मिट गइल, मन बेपरवाह हो गइल आ हम पूरा एक जुग—यानी बारह वरिस—तक दोसर कलम न छुअलीं, ना एको हरूफ लिखलीं। जेब-कट्टी से अइसन चोख बैराग पैदा होला।

एहसे रावा एह बात के विसवास हो गइल होई कि जेब कटाइल खराबे चीज ना ह, एकर एगो अच्छा पहलू भी बा। अंगरेजी के साहित्कार जी० के० चेस्टरटन लिखले बाड़े कि पाकेट मारल भी खराब चीजु ना ह; आ एक बार हमहूँ एगो पाकेट मरले बानीं, (मड़ते दिमाग से) आपने पाकेट।' बात से भइल कि चेस्टरटन साहब एक बार थर्ड क्लास के रेल डब्बा मे बैठिके सफर करत रहले। उन्हुँका पास ओह घरी नु पढ़े खातिर कवनो किताब रहे नु कवनो अखवार; आ नाहीं उन्हुँका पास कागजे कलम रहे कि जवना पर कुछ गोदि-गादि के ऊ आपन वक्त कटिते, समय पहाड़ भइल रहे, त अइसना हालत में उन्हुँकर ध्यान पाँकेट पर गइल आ ऊ ओह दिन आपन पाकेटमारी कइले। उन्हुँकर पाकेटो मामूली पाकेट न रहली स, ऊ सब समुन्दरे रहली स। उहनीं के अतल गहराई में जब कवनों चीजु डला जात रहली स०त हाला हाली निकलत ना रहली स। त ओ दिन अपना पाकेट के पाताल से ऊ चीजन के निकाले लगले। पहिले त ट्राम के एक मोटरी टिकट उहनीं के भीतर से निकलल, हर टिकट के पीछे खूब महीन अक्षर में कवनो गोली त कवनो दवाई के चटक-मटक विज्ञापन लिखल रहे। ऊ उन्हनी के वैज्ञानिक निबन्ध से कम ना समझले आ उन्हनी के ध्यान से पढ़ि के आपन वक्त काटे लगले। उन्हुँका ई बुझाइल कि ई ट्राम के टिकट ना हवे स, वास्तव में ई चुनिन्दा वैज्ञानिक पुस्तकालय हवे स। एही तरी उन्हुँका पाकेट सेएगो जेबी छुरी निकलल उन्हुँका ईहे बुझाइल कि ई छुरी ना तरुआरि ह। एकरा बाद उन्हुँका पाकेट से एगो दियासलाई निकलल। एकरा भीतर उन्हुँका ऊ आगि लउकल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेकरा बल पर मानव सभ्यता के विकास भइल बा। एहतरी उन्हुँका पांकेट से ढेरमानी से चीज-बतुस निकलल; लेकिन एगो चीजु लाख खोजला पर ना निकलल; ऊ रहे रेल के टिकट।'

चेस्टरटन के निबन्ध पढ़ला के बाद हमरो मन में ई इच्छा पैदा भइल कि हमहूँ अपना पाकेट के खाना तलासी लीं, काहें कि हमरा पाकेट में कम अतल गहराई नइखे। अगर चेस्टरटन साहब के जेब मे ब्रिटिस चैनल या अतलांतक महासागर के गहराई रहे, त हमरा जेब में हिन्दमहासागर आ प्रशान्त महासागर के। हमरा कमीज-गंजी, कुरता-कोट में जेबन के संख्या भी कम नइखे, हम कीनुआ गंजी ना पेन्हीं, एकर सबसे बड़ कारण ई बा कि ओकरा में जेब ना रहे। दर्जी से गंजी सिवआईले आ ओकरा में चार-पाँच पाकेट लगवाईले, जवना में कि साधारण पाकेट के अलावा दू-तीन गो चोर पाकेट रहेला। जाड़ा में छोट गंजी के ऊपर एगो औरी बड़ी गंजी लगाई ला जवना में चार पाकेट रहेला। कमीज चाहे कुरता आ शेरवानी में भी ऊपर से छह-सात गो पाकेट रहेला एहतरी हम एक साथ एक दर्जन से अधिक पाकेट लेके चलीलें। हमरा पाकेटन के फौजि के देखि के एक दिन एगो साथी बड़ा बढ़िया बात कहले। कहले कि महाराज, हतना पाकेट राखि के रावा अब तक इहे टीचरिए करतानीं? रावा त अब तक मंत्री हो जाएके चाहत रहल हा। बढ़िया त होइत कि वित्त मंत्री हो जइतीं, लेकिन ऊ ना, त कवनो मंत्री। अपना दोस्त के ई बात सुनि के हमरा एगो मंत्री के इयादि हो आइल। उहाँ का अपना कपड़ा में छप्पन पाकेट लेके चलत रहलीं, जो छप्पन छुरी से कमना रहे। हर पाकेट में, कवनो ना कवनो सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था के चंदा-वही रहत रहली स। रावा से भेंट होते, उहांका एक पाकेट से 'शिशु अनाथालय' के चंदा-वही निकालि के रावा नामे काटे लगितीं। एही बीच रावा कहितीं कि ई हम कटा लेले बानीं त उहाँ का दोसरा जेब से। 'गोरक्षिणी-सभा' के चंदा वही निकालि के रसीद काटे लगितीं। अगर रावा ई खबर दिहितीं कि एकरो रसीद हम कटवले बानीं तब उहां का चेहरा पर कवनो सिकुड़न ना ले आ के, झट से तीसर पाकेट से 'वन्यपशु-रक्षन-परिषद' चंदा वही रावा सामने पटकि दिहतीं आ तब तक एक-एक पाकेट से चंदा-वही निकालत जइतीं, जब तक रावा उन्हुँकर एगो सिकार बनि के उन्हुँका कवनो चंदा-वही के खाता में चंदा ना दिहितीं।

लेकिन हमरा जेबन में नु चंदा-वही मिली, नु बैंक के पास बुक; नु रुपया मिली, नु कौड़ी। हम जब अपना जेब के नंमाझारी लिहलीं त ओकरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भीतर से निकलल, बिजली कंपनी के पैंतीस रुपया के बिल, सेठ झावरमल के कपड़ा के दुकान के एक सौ पचीस रुपया के बिल, स्टैंडर्ड लिटरेचर के सतासी रूपया के वी० पी० पी० के कागज, 'कल्याण', 'कल्पना', 'आलोचना', 'समीक्षा' आदि पत्रन के वार्षिक चंदा के मांग पत्र आ सबसे बढ़ि के इनकम टैक्स के कर-सूचना-पत्र। एहीं तरी के कुल्हि बकाया के देखि के हमार दिमाग अतना बौखलाइल कि हम एह सब कागजन के एगो पाकेट में डालि के खीसि में आके गोपाली चौक पर घूमे चलि दिहलीं। चौक पर साँझि खा तनी भीड़ि हो जाला, ओह दिन चुनाव-प्रचार के चलते मेला निअर भीड़ि रहे। जब भीड़ि से हम बाहर अइलीं त देखलीं कि आज जिनिगी में दोसरा बार पाकेट मरा गइल बाकी आजु हमरा अफसोस एह बातके ना भइल कि हमरा जेब पर ब्लेड चलि गइल, बाकिर एह बात खातिर भइल कि बेचारा पाकेट मार आजु केकर मुँह देखि के उठल रहल हा कि ओकरा माथा पर हमार कर्जा चुकावे के बोझ पड़ि गइली। ऊ हमार बिजल कंपनी के बिल चुकाई कि सेठ झावरमल के कपड़ा के बाकी अदा करी, हमरा कितावन के वी० पी० पी० छोड़ाई कि हमार प्रिय पत्रन के वार्षिक चंदा भेजी। ऊ आजु कइसन आमदनी कइलस कि हमार इनकम टैक्स चुकावे के बोझ भी ओकरे माथ पर गिरि गइल। डबल पेमेन्ट के डर से हम खुद एह जगहन में भुगतान भी करे नइखीं जात। हम का करीं, रवे बताईं।

★

गजल

हिया हिया न हवे, जे कबो पिराइल ना।
नयन नयन ना हवे, जे कबो लोराइल ना।
ऊ न लहरन के लहरा के जवानी दीही,
जे कबो भँवरन का बाँह में समाइल ना
पियत रहल जे हरमेस मधु कटोरी में,
पियल पियल का, जेकर जहर घोंटाइल ना।
मस्त फागुन में हरमेस जे रहल डूबल,
रंग जानी का, जे सावन में रंग आइल ना।
काँट से आँचर हरमेस जे रहल खींचत,
ऊ न जिनिगी, जे काँटन में मुस्कुराइल ना।

—रामेश्वर प्रसाद सिन्हा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जय भोजपुरी : जय हिन्दी

—अनिल कुमार राय 'आँजनेय'

बिसुनाथ जी क मन्दिर होला। ओह मन्दिर भा सिवाला में एगो-दूगो ना, कइगो देवथान आं देवकुर होला। खाली सिवे जी ओह मन्दिर में ना पुजालन। अलगा-अलगा कइगो मंडप होला आ हर मंडप में कहूँ अनपूरना जी, कहूँ गनेस जी, कहूँ राम-लखन अवरी सीता मइया आ रामजी का चरनियाँ में नेंहिया लगवले, दूनों हाथ जोड़ले हनुमान जी, कहूँ अपना किसुन कन्हैया का बंसी क तान पर रीझल रधिका जी त कतहूँ कवनो देवता-पितर त कतो कवनो देवी-देवता होलन। आ सब देब-देवतन क आरती-भजन-कीरतन—पूजन होला। बाकिर ऊ पूरा मन्दिर कहाला बिसुनाथे बाबा क। इहे हाल राम जी, किसुन जी अवरीं महावीरो जी क मन्दिरो के होला।

ठीक एही तरे भारत—भारती हिन्दीओ क एगो बहुत बड़, भरल-पूरल मन्दिर बा। एह मन्दिर में कइगो मंडप बाड़न। कवनों अवधी क, कवनो बिरीजबोली क, कवनो राजस्थानी क, कवनो मैथिली क, कवनो तीसगढ़ी आ बघेली क, कवनो उरदू क त कवनो भोजपुरी क मंडप वा। देखीं न, एह मंडपन में भगत लोगन क केतहत बड़ भीर भरल-ठकचल वा। कवनो मंडप में गोसाईं तुलसी बाबा आ जायसी, कवनो में सूरदास, कवनो में कबीर, मीरा, बिद्यापति, रहीम, रसखान, कतहूँ बूला सायब, रैदास, सिव नारायण जी, कहूँ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रसाद, प्रेमचन्द, निराला अवरी कतहूँ गालिब, जफर, दाग आ अकबर इलाहाबादी अपना-अपना साधना में लवलीन बाड़न। केकर—केकर नाँव-गाँध गिनाईं। गिनती क पार नइखे। मुड़िए मूड़ी त लउकत बा। एहिजा न त छुआछूत बा, न ऊँच—नीच आ जात—पाँत बा आ न त कावा—कासी क मथफोरउवले बा। एहिजा बाँभन तुलसी बाबा बाड़न त चमार रैदासो भगत बाड़न, हिन्दू सूर—मीरा बाड़ी त जोलाहा कबीर, मलिक मोहम्मद जायसी आ रसिया रसखान से ले के सबकर सिरताज 'ताज' भी बाड़ी। एह मुसलमान भगत लोग के देखि के भारतेन्दु जी सिहा गइलें आ माथा नवा दीहलें:—

"इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिक हिन्दुन वारिये।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह चेतना मंडप में साधक-उपासक लोग भेद-जाव भुला के, एक रीत-पिरीत से, एक रस होके बइठल वा। ओ कुल्हि मंडप के मिला के मन्दिर के एगो नाँव ह, ई नाँव ह हिन्दी—मन्दिर। हमनी का सब केहू, अवधी, विरीज, मैथिली, मगही, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी–बघेली, उरदू अवरी भोजपुरी, भाषी एके मन्दिर के उपासक हईं जा। संस्कृत क एगो उक्ति ह जे चाहे कवनो देवता के नमसकार करीं ऊ किसुने भगवान के मिलेला। मतलब ई कि केहू के पूजीं ऊ किसुने के टीसुना ह। एहीं तरे हमनी का कवनो मंडप में गोहार लगावत होखीं जा, कवनो बोली क सिंगार करे में जुटल होखीं जा बाकिर ई हरमेसा अँखियान राखे के चाहीं कि ई आपन-आपन अढ़ाई चाऊर क खिचड़ी ना ह, ई कुल्हि हिन्दीए क सिंगार ह।

भोजपुरी भाषी भाई लोगन का ई गाँठि वान्हि लेवे के चाहीं कि ई तोड़े वाली ना, जोड़े वाली भाषा ह। ई बाड़ा समरथ, सोहटाऊँ, जमाऊँ' गरहू–गम्हीर आ हरपेटा भाखा ह। थोर कहीं आ ढेर बुझीं, अइसन इसारा वाली, चौकस, चुस्त आ पनिगर ई भाषा ह। ई भाषा गाइ ह। ई विचार का बछरू से पेन्हाले। जब सबद का थान में भाव क दुध ओगरि आवेला त सुजान अहीर नेह का नोईं से नोव के मन का घुरुला में अरथ का चूँची से भाव क दूध दूहि लेलन।

ई भासा भारत-भारती क, राष्ट्रभाषा हिन्दी क सिंगार ह। राष्ट्रभाषा हिन्दी का मन्दिर के उजागर करे खातिर ई एगो दीया ह। दीया घर में अँजोर करे खातिर होला, घर क सिंगार होला। जवन दियना घर के गह-गह ना कइके, भभक–भभक के घर में, आँचर में आग लगावे खातिर लपक मारे ओके अँचरा ना देके, बढ़ा देबे के चाहीं। हमहन भोजपुरिहन का अपना मरजदा, धरम आ करतब के बरोबार इयादि रखे के चाही। घर फूँकि के तमासा देखे वालीं नीयत कबो ना होखे के चाहीं। भोजपुरी बोली–सुनि के हमहन का अगराए धधाए के त चाहीं, बाकिर अँगिराए आ धधके के ना चाहीं। ई कबो ना भुलाए के चाहीं कि हिन्दी आपन घर ह आ भोजपुरी ओही घर क अँगना ह। अँगना पर अगरइला के केहू निन्दा ना करी बाकिर अँगना में अँगिरा के, अँड़िच के घर में आगि लगावे खातिर कबिरा क लुआठी लेके जे हरनठि जाई ओके केहू होंसियार आ चाल्हाँक ना कही। अइसना मत बाउर के सभे दुर–दुर करेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई सपनो में ना भुलाए–बिसारे के चाहीं कि भोजपुरिओ भाषा अवधी, बिरीज, मैथिली, राजस्थानी आ मगही मतिन हिन्दी क एगो अंग ह। हिन्दी अंगी ह, ई कुल्हि भासा ओकर अंग हउवन। अंगी से अंग क कवनो अलग सुतन्तर हस्ती ना होला। जे तरे गंगा मइया हिमालय से निकलके हरिद्वार, प्रयाग, कासी आ पटना आदिके असीसत बंगाल का समुन्दर में मिलि के ओंके गंगा सागर क महिमा दे रहल बाड़ी ओही तरे हिन्दी क पगेपग प्रयाग हो रहल बा। अन्तरवाहिनी सरस्वती के दरसन खातिर अन्तर के आँखि चाहीं। 'एहि मानस मानस चख चाही।' गंगा में जे तरे जमुना, गोमती, करमनासा, घाघरा, सरजू आ सोन आदि नदी मिलि के, गंगा के आपन भेंट चढ़ाइ के बड़भागी होत बाड़ीसन ओही तरे हिंन्दी का साथे हमनी का भोजपुरी के बरते के चाहीं।

ई बात हम साफ क दीहल चाहत बानी जे जवन हिन्दी ह तवने भोजपुरी ह, जे राम हउवन से ही भरत हउवन। 'राम भरत मोर दुइ आँखी'। हमनी का हिन्दी का अनभल का नाँव पर भोजपुरी के बढ़न्ती सपनो में ना सोचे के चाहीं। एहमें कवनो राई–रत्ती संका नइखे जे भासा का उन्माद में हिन्दी से अनदेखाइ करेवाला गोड़ काट के नोह रँगलन आ मूड़ी काट के बार क रइछा कइल चाहेलन।

भोजपुरी के 'जय जयकार' सुनि के हम उमगि रहल बानी, रउरो उमड़ीं आ एह जय जयकार का अनगिनित सुर में हमरा साथे अपनो सधल सुर मेराईं। बाकिर भाषायी–उन्माद का अगलगी से हमनी का हमेसा सजग-सचेत रहे के चाहीं। भाषायी उन्माद एह रूप में उभर रहल बा जे जेंही से पूछल जात बा कि कहऽ भइया तोहार मातृभाषा का ह त जेतने मूड़ी ओतने जबाब। केहू अवधी का नाँव पर अगिया बैताल बनल बा, केहू बिरीज बोली खातिर बिसमाधल बा, केहू बघेली खातिर बिथकल बा. केहू छत्तीसगढ़ी खातिर छतिया रहल बा, केहू उरदू खातिर उदासल बा, केहू राजस्थानी खातिर रिरिया रहल बा, रूसल बा. केहू मैथिली खातिर मगज मार रहल बा, केहू मगही खातिर मातल बा; केहू भोजपुरी खातिर भभक रहल बा, त केहू दूसरे भासा बदे-बदी बद रहल बा, लरियाइल बा, लोहा लेबे के ललकार रहल बा। बुझात बा का दो हिन्दी अकास–बबँर ह। ऊ उपरे ऊपर पनफल-पसरल-फफनल आ लहसल बा, जइसे ओकर एह धरती से कवनो लगाव नइखे। हमसे जे केहू पूछे कि कस हो भोजपुरिहा भाई! तोहर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मातृभाषा का ह त हम इहे कहब जे हिन्दी। एकरा बादो जो भलमानस पूछलन कि कवन हिन्दी त फरियाइ देइब कि भोजपुरी हिन्दी।

का ई हो कहे के बात बा जे हिन्दी पेड़ ह त भोजपुरी ओकर गहगह करत पतई ह। हिन्दी पानी ह त भोजपुरी मछरी ह। जे पेड़ काटि के पतों सींचेला आ मछरी के जिए खातिर पानी उचिलेला, ऊ गँवार केहू के, कतो, कवों भलाई ना करेला। ओकरा एह कुकरम से बाड़ा अनरस आ अनरथ होला। तबे त घर-फोरी मनथरा का मंत्र के नीक मानेवाली दुरबुधि कैकेई का बढ़नी बहारे लायक करनी पर भरत का जनम भर पछतावा होला :—

"पेड़ काटि तैं पालउ सींचा। मीन जिअन निति बारि उलीचा।।"

हमरा मन में ई भरोसा बा जे हिन्दी 'प्रसाद जी' का कार्नेलिया क दूबर आह ना ह जे बाहर निकलते ओकरा जग-हँसाई के सीत लाग जाई आ मींआदी हो जाई। ई कोहँड़ा के जनमतुआ बतिया ना ह जे अँगुरी देखते कुम्हिला जाई, आँखि का पानी क ठार लगि जाई, आ टोना क टूँड़ टूभि के ओकर आल्हर जान ले लेई। हिन्दी अछैबट ह। अछैबट का कवनो आन्ही तूफान से निरमूल हो सकेला ? भोजपुरी समेत ई कुल्हि भासा हिन्दी का अछैबट क बरोहि हईसन। बरोहिए से बरगद अछैबट कहाइल। बरोहि जब धरती धइ लेला त ऊ एगो बरियार मजिगर पेड़े हो जाला। आ ना त ऊ आकाश में टँगाइल बकरी का गरे क लर नियर अन्हेरिहे लटकल रहेला, बहेंतुआ मतिन झूलत रहेला। जवन बरोहि धरती धइ के बरियर्रा बन जाला ऊ मूले से सक्ति लेके धधाके धरती धरेला आ फिरू मूले के बरियर्रा आ अछै बनावाला। एहमें अब कवनो संका नइखे जे हिन्दी का अछैबट क भोजपुरी वाली बरोहिओ अवधी, बिरीज आ मैथिली आदि नियर धरती धइ लीहलस। अब अकासे में ई टँगाइल नइखे, धरती क रस सोखि के अपनहूँ पुस्ट आ बरियार हो गइल आ हिन्दी के बरगद के भी अछैबट नाँव सारथक कइ रहल बा।

भोजपुरी क महातिम बाड़ा बड़ बा। एकर बिरवा बाड़ा होनहार बा। एकर भविस हम बाड़ा चौचक आ टहकार चाँदनी नियर सुभग आ धप-धप उजर देखत बानी। भोजपुरी भाषा क कीरतन हम कहवाँ ले करीं। एकर गुन गवले ना ओराई। हम त थोरे में इहे कहब जे ए भोजपुरिया मे हमनी का जिनिगी क मिठास आ सोना नियर सुग्घर सपना सहेजल बा। एही से आसा क बदरी ओनइ आवेले आ मन क मोर लालसा का सतरंगी पाँख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लहरा के थिरक उठेला। एही से नेह क मेह बरसे लागेला, जैसे उकठल मनवा क वनवा हरियरा जाला, लहलहा उठेला। केतना ले कहीं, ई हमनी का जिनिगी क हर साँस में समाइल बा। एही में बियाह बा, उछाह बा, गोरी बारी धनिया क सोरहो सिंगार बा आ एही में दुखवा–विपतिया क आहो बा, कराहो बा।

एह में माई क दुलार बा, बाबू क पियार बा। एहके सुनि के हमरा माई इयादि परे लागेले आ माई के देखते टहटह अँजोरिया नियर एह भासा क रूप परतच्छ हो जाला, आँखि जुड़ा जाले, आदर से माथा नवा देईलाँ। देस में रहीं या परदेस में रहीं एह भासा क दू-बोल सुनि के हमरा हियरा में हुलास आ मन में उछाह जागि जाला। बाकिर ई हम कबो ना बिसारी लाँ कि हिन्दी हमार देस ह आ भोजपुरी भासा हमार गाँव ह। हम अपना गाँव खातिर ललकी लाँ बाकिर देस खातिर हमेसा आपन बलिदान करे बदे हुँकरत रहीलाँ। देस आ गाँव के लेके हमरा हिरदया में कवनो दन्द नइखे, भेव नइखे। एसे हम असक होके कहत बानी :— जय भोजपुरी ! जय हिन्दी !

★

गजल

अइसन बहल बयार कि खोंता उजर गइल ।
साँचल जुगन के, आज ऊ अरमान जर गइल ।।
बहुते गुमान में रहीं भूठा दिखाव पर,
घुमली अनेक बेर हम एके घुमाव पर;
सपना सँवार सकलीं ना, अचके छितर गइल।
रोपली बिरिछ सेमर के कतना हुलास से,
रहलीं हमेस सेवा में बस एक आस से,
बाकिर तनी बतास से जर से कबर गइल।
काँचे कली के लोभ में मतवाल मन भँवर,
घुर फिर के आ रहल बस ओकरे भिरीं नजर,
उहो कुँआर पन में ही चुपके से झर गइल।
जुग जुग से आँख बिछ रहल जेकरा ही राह में,
खोजे दरद के ठाँप ना सिसकी आ आह में;
बइठल ही इन्तजार में अतना उमर गइल।

—गंगा प्रसाद 'अरुण'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ससुराल में हँसी-मजाक

पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह

ससुराल आखिर ससुराले होला। जेतने खातिरदारी होला, ओतनें पुरजोर हँसी-मजाक। ससुरालमें पाहुन आइल ना कि घर के बड़-बूढ़ से लेके पास-पड़ोस के बाहरियो आदमी तक ले, मजाक के गुलदस्ता सजा के पाहुन का खातिरदारी खातिर एकदम तैयार भइल। जहाँ मोका मिलल उहें, आ जेकरा भी मोका मिलल उहे, अपना-अपना नाता आ लूर का मोताबिक मजाक करे से बाज ना आवे।

साला, साली आ सरहज के हँसी-मजाक के बरनन करे के हिमाकत कइल त अपना के 'गिरा अनयन नयन बिनु वानी' वाली स्थिति में डालल बड़ले बा, दोसर-दोसर नाता-गोता वाला लोग के हँसी-मजाक भी बेमिसाले होला। आईं सभे, अलग-अलग रिश्ता आ तबका का लोग के ससुराली हँसी-मजाक के कुछ नमूना सुनल-सुनावल जाय।

एक ठो किस्सा हमरा अपना गाँव के वा। बात बहुत पुरान ह, बाकिर नाता में बड़ लागे वाला लोग का मजाक के बड़ा अच्छा नमूना बा। हमरा गाँव के एगो लड़िका के बियाह हमरा गाँव से चार मील पर दोसरा गाँव में भइल। बियाह का बाद जब बर पहिले-पहिल ससुराल चलले त घर के बूढ़ मेहरारू सब समझवली स कि बबुआ एतना खेयाल जरूर रखिह कि एक बेर थरिया में जे परोसा जाव ओह में दोहरा के कुछ मत मंगिह आ कुछ जूठ जरूर छोड़िह। बात सब समझ-बूझ के आ ससुराल में रहे के तौर-तरीका सीख के दुलहा राम नवरात मनावे ससुराल पहुँचले। रात में खाहीं का बेरा सास समुझ गइली कि समधिन अपना बेटा के पूरा सिखा-पढ़ा के भेजले बाड़ी। अब एगो के सिखावल-पढ़ावल के काटे खातिर दोसर लोहा तैयार। आ मत पूछीं, बीते लागल दुलहा राम का कपार पर। एने थाली में दोहरौनी लीहल मना, आ ओने जूठ छोड़ल जरुरिए रहे, ना त घर के शिकायत हो जाइत। एने दामादके नीचा देखावे खातिर सास दोकछा बाँध के तैयार। नतीजा ई भइल कि एक बेर दामाद जी जेतना जूठ छोड़स, दोसर की बेर सास जी ओतना कम क के परोसस आ कहस कि पाहुन बड़ा कम खाले, तबही नू जूठ छूट जाता, साँचो हमार समधिन बड़ा लमहर घर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाड़ी। लगातार चले वाला एह पैंतराबाजी में दामाद जी के खाना अतना कम परोसाए लागल कि अब परतिष्ठे प्रान गँवावे के नौबत आ गइल। एक दिन भूख से कुलबुलात पेट लेले दामाद जी टहले के बहाने घर के रास्ता धइले। चलत–चलत जब ऊ अपना गाँव का लगे आ गइले त संजोग से उनकर बड़ भाई भेंटा गइले। बड़ भाई छोट भाई के देख के चिहा गइले। छोटा भाई का डाँड़ में पीयर धोती ना रहला से उनका साफे बुझा गइल कि छोट भाई ससुराल से भाग के आवत बाड़े, बिदाई ले के तइखान आवत। अइसे भी बिना नौ दिन बितवले चल आइल भी ओह जुग-जवाना में कम अचरज के बात ना रहे। भूख से बेचैन छोट भाई अपना भैया से रो-बिलख के सब हाल कहले। बड़ भाई केतना दंगल जीते वाला जवान! एगो छूद्दर सास से अपना छोट भाई के कइसे हारे देते। छोट भाई का साथे ओकरा ससुराल में हाजिर। छोट भाई के भागल ऊ छिपा ले ले आ कहले कि बबुआ पहिले पहिले घर छोड़ के बाहर निकलल रहल ह, एह से समाचार जाने खातिर हम चल आवत बानी। शरबत-पानी करत–धरत रात हो गइल आ खाए के बेरा हो गइल। चौका में दूनो भाई के पीढ़ा लागल आ सास जी खुद खिलावे बइठली। बाकिर फेर उहे बात भइल। बड़ भाई के त पूरा खोराक परोसल गइल रहे, बाकिर छोट भाई के ऊहे दू कौर भात। छोटका भाई कनखी से बड़का भाई का ओर देखले। बड़का भाई थोड़की देर तक त चुप रहले बाकिर फेर धीरे से छोटका भाई का थाली का ओर झुकले आ थाली से पूरा भात अपना हाथ में उठा ले ले। खाली थाल सास का ओर सरका देले आ बोलले—माता जी, अतने खाए खातिर अतना बड़ा थाली के कवन जरूरत बा। अतना त हमार बबुआ हमरा हाथे में से खा ली। बेकार थरिया के जूठ काहे के कइल जाई। रउरा बेमतलब के साफ करे में तकलीफे नु होई। अबकी पासा दामाद का ओर पड़ल आ सास जी कट के रह गइली। पहलवान भाई का मदद से दमाद से सास जी से बाजी मार लेलस।

ई क़िस्सा त नाता मे बड़ लोग का साथे हँसी–मजाक के रहे। अब बराबरी के नाता वाला लोग से याने साला-साली का साथ के हँसी-दिलग्गी कें क़िस्सा सुनीं।

हमार एगो दोस्त अपना बियाह का बाद पहिले पहिले ससुराल गइले। एह से दिन में उनका नींद पड़ गइल। साली लोग का मौका मीलल। ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग उनकर माँग सेन्दुर से भर दीहल, माथा पर टिकुली साट दीहल आ पाँव में महावर लगा दीहल। हमरा दोस्त के अइसन गाढ़ नींद आइल रहे कि एतना उतपात का बादो ना टूटल, आ रात हो गइल। एगो दोसर संजोग अइसन जुटल कि ओही दिन ससुर जी अपना दामाद के स्वागत में जलसा के इन्तजाम क दिहले। सहन में शामियाना खड़ा भइल, पेट्रोमैक्स जरावल गइल। गाँव के लोग जुट गइल। सारंगी पर गज फिरे लागल, तबला पर थाप पड़े लागल आ पाँव बँधल घुँघरू झनके लागल। शामियाना का एक ओर बड़-बड़ लोग खातिर कालीन-मसनद लगा दीहल गइल रहे। ससुर जी अपना लड़िका से कहले कि पाहुन के बोला ले आव। साला जब अपना बहनोई का लगे गइल त ऊ ओहू घरी सोंस खींचत रहले। उनकर सूरत देख के पहिले त ऊ भर पेट हँसल, फिर ओकरो नहला पर दहला देवे के सुझल। ऊ बहनोई के झकझोर के उठवलस, जल्दी-जल्ली कुल्ली करवलस आ महफिल में जाए खातिर कपड़ा बदलवावे का नाम पर पर ओह अन्हार घर में धोती का जगह पर साड़ीए धोती अइसन पेन्हा देलस आ उनकर हाथ पकड़ के उनका के लेले देले महफिल में पहुँच गइल। बहनोई राम का अपना एह रूप के कवनो अन्दाज ना रहे। ऊ चुपचाप महफिल में पहुँच गइले। बाकिर उनका पहुँचते हँसी के जें फुहार छूटल त बहनोई राम अवाक हो गइले। ऊ लाल छींट वाली साड़ी के धोती पेन्ह के आइल रहले। पेट्रोमैक्स का रोशनी में अपना एह गलती के जानकारी भइल त घर का ओर भगले। घर में घुसले त देखले कि ओह अन्हार घर में भी पेट्रोमैक्स जल रहल बा आ साली लोग एगो लम्हर ऐनक लेले खड़ा भइल बा। हे भगवान् ! ई का भइल ? माँग में सेन्दुर आ माथ पर टिकुली। लजा के नीचे मूड़ी कइलन त देखले कि गोड़ो में महावर लागल बा। पीछे साला सब थपड़ी पीटत रहस, आगे साली-सरहज लोग खिलखिलात रहे आ अन्हार का ओर छिप के सास जी के बतीसी भी चमकत रहे। बहनोई राम बाजी हार चुकल रहस।

साला, साली आ सरहज लोग के हँसी-दिलग्गी के भला कवनो अन्त हो सकेला ? हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता !

अब एक-दू किस्सा परिवार का बाहरके लोग के भी सुनीं। हमरा पड़ोसी का घरे दामाद अइले। खूब आवभगत होखे लागल। एक दिन भोरे हम चाय पीयत रहीं कि पड़ोसी का घर का ओर कुछ हल्ला सुनाइल। जल्दी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से चाय सुरूक के हम दउड़ल उहाँ गइनीं, त देखत का बानी कि दामाद जी के आधा मोंछ गायब वा आ ससुर जी वहुत बिगड़ के चिल्ला रहल बाड़े कि इहो कवनो मजाक ह ? बोलाव सूअर के, मार के चमड़ी उधेड़ देत बानी। हमरा बुझाइल ना कि का बात ह। पूछताछ कइला पर मालूम भइल कि दामाद जी का साथें गाँव के हजाम मजाक कर गइल बा। मोछ ठीक करे का लाथे मोछ आधा मूड़ के 'खाना जाए का लाथे भाग गइल बा। तब हमरा अपना घरे से सेफ्टी-रेजर मँगवा के दामाद जी के पूरा मोछ साफ करे के पड़ल। बात ई रहे कि दामाद जी अपनहूँ वड़ा हँसोड़ आदमी रहन आ केहू से भी विना हँसी कइले ना मानस।

एक दिन ऊ गाँव का मेहतरानी के लाल साड़ी पर मजाक कइ देलन आ अपना चतुराई से ओकरा के झेंपा देलन। वाकिर गाँव के अइसन लाजबाब सरहज चुपाय कइसे ? ऊ दोसरे दिन वदला सधा लेलस। मैला के बाल्टी लेले ऊ दुआर पर पहुँचल आ लागल चिल्लाए। ओकर चिल्लाहट सुन के जब वहुत लोग जमा हो गइल त ऊ कहे लागल कि हम एतना कम मजूरीं में काम ना करब। लोग पूछल कि अइसन कवन बात एक-ब-एक हो गइल कि तोरा अधिका मजूरी चाहीं आ तें हल्ला मचावे लगले।

मेहतरानी दामाद जी का ओर इशारा क के बोलल कि अइसे त कवनो बात ना रहल ह आ मजूरीओ ठीके रहल ह। वाकिर एह घरी एह घर में एगो अइसन खाबुर पाहुन आइल वा कि हमार काम बढ़ गइल बा, आ जे पइसा मिलत वा ओह से हमरा पोसात नइखे। दामाद जी कट के रह गइले आ गाँव के मेहतरानी बाजी मार लेलस।

भोजपुरी साहित्य का संक्षिप्त परिचय

एवं

भोजपुरी का प्रकाशित साहित्य

सम्पादक—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

भोजपुरी परिवार, पटना—३

दाम एक रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करब तोर पूजा

अरी भूमि भारत, करब तोर पूजा !
सहब बारहो मास हम घाम-पाला
गूँथब खेत में फूल के रोज माला
पसेवा के चन्दन कमाई के मेंवा
से आठो घरी हम करब पाँव सेवा
रकत से रंगी वेदिका जब पुजारी
बनी तोर मन्दिर दुआरी - दुआरी
जनम भर पहरुआ के संकल्प साधत
अरी भूमि भारत, करब तोर पूजा !

गूँजी गीत के संख जा आसमाने
समझ सत्रु भागी कोलाहल के माने
करब पाठ चण्डी नया ढंग-सुर से
असुर के विनासब, निकासब नगर से
प्रलय के भयंकर बजा डमरू नाचब
तीनो लोक के आगि भारत में बाँचब
करब तोर जय-जय दिसा दस गुंजावत
अरी भूमि भारत, करब तोर पूजा !

जुटा पाप-समिधा महा जग्य ठानब !
हवन कुण्ड में आँच को से बारब
अरी लोक में जग्य के धूम पावन
तपल जेठ भूमि रसाई सावन
पड़ोसी बनी दीप में दीप धाई
गरे से मनुज के मनुज जब लगाई
नई सृष्टि तोरा सहारे नेवाघत
अरी भूमि भारत, करब तोर पूजा !

—आनन्द कुमार 'संघिदूत'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

गाँव के बाबू

—रामपदार्थ झा 'निराला'

चारों तरफ टूटल-फाटल झोपड़ी खड़ा बाटे। कवनो कवनो घर में दीआ के रोशनी दिखत बा। अभी सब के घर में दीआ ना जरल ह। गरीबन के मेहरारू अपना-अपना घर से डोल बाल्टी लीहले पानी भरे इनार पर जा तांड़ीन स। कवनो-कवनो अपना-अपना गोदी में लड़िका-फड़िका ले ले बिआ। गोटा पकड़ी मरद सब आवत जात बा। कवनो कुदाल लिहले आवत बा त कवनो हर हेंगा लिहले। सब अपना-अपना उजड़ल अँगना में जाके लड़िका-फड़िका में ओझरा जाता। मेहरारू घर के काम काज करे में बेव न बाड़ीन स। रसोई पानी के इन्तजाम जरूरी बाटे। मोहना कांध पर कुदाल लिहले आवत बा। आवते अपना घर में घुस गइल। कुदाल रख के घर से निकल आइल।

सब गरीबन मिल के एगो दुआरा बनौले बाटे। दुआर पर सब जमा होला। जमा हो गइला पर सब देश दुनिया के बात बतियावेला। आज अभी तक मुसवा, दइरिया, दशंनवा घगड़वा जमा न भइल रहे। मोहना सब के बुला-बुला के जमा कइलख। ई सब एक डमरियाँ बाड़न स। कवनो राय-विचार करे के होला त ई सब जमा होखवे करेला। एकनी के बिना कुछ कहले राय होखवे ना करी।

दइरिया सूरतो मलत आइल। अइला पर मुसवा के न देखलक त मुसवा के बोलावे लागल। मुसवा गोदी में अपन एक बरिस के लड़िका ले ले आइल। दुअरा पर हल्ला सुनि के टोलवा के सब बूढ़ पुरनियाँ भी आ गइलन। सब आ आ के चुपे-चाप बइठलन। घगड़वा के ई चुप्पी अच्छा ना लागल। बोललक—का मोहन भाई, हमनी के काहे जमा कइल ह। बोलले से नू काम परिआय के बा। का कहीं सुने के पड़ गइल ह।

मोहना बोले लागल—आज हम कुदाल ले ले जिरात में जात रहनीं ह। देखनी ह कि मठ पर लोग जमा होखता। हम मठ पर रूक गइनी ह। हमार बिचार भइल ह कि हम कुछि बतियों सुन ली आ ठंढों हो जात बा त जाइब। लेकिन का कहीं? जइसे कुदाल रखनो ह कि छोटका मलिकार हमरा ओर आँख लाल कइले घूर के तकले ह। हम ना बुझनो हा। एतें-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओने देखनी ह त कोई ना रहल हा। तब हमरा बूझत देरी ना भइल ह कि मलिकार हमरे पर रंज बाड़े। हुनकर लाल-लाल आँखि त बइसे लागल रहल ह जइसे लुहार के भाँथी से गरम हो के लोहा निकले ला। हुनकर आँखि ई बताउत रहल ह कि हमनी के उ लोग काँचे-कच-कच चिबा जाई। हम डेरा गइनी ह आ जीरात में जाके दम धइनी ह।

गाँव में कुछ घर गरीवन के बाटे। जवना में कानू, कुरमी, लुहार, बढ़ई, चमार, धोबी,हजाम के जाति बाटे। सब में मोहना पहिला आदमी बाटे जे स्वाभिमानी, कर्तव्यनिष्ठ, धर्म परायण ह। उहे मोहना मठ पर बाबू लोग के बात सुनत रहे। एकरा बाबू लोग कइसे पसन्द करस :

मोहना के बतिया सुनि के कुछ अनुभवी लोग बोललक कि सावन आधा बीत गइल। ऊ दिन भी दूर नइखे जवना दिन मठ पर कृष्णाष्ठमी मनावल जाई। लोग ओही खातिर बइठल होखी। हमनी त गरीब बानी। हमनी पर जेकरा जतना मन करी चन्दा लाद दिहन। ना दीं त गारी सुनीं, मार खाईं।

मोहना के ई सुनते त बिजुलीके करेन्ट छू गइल। ऊ गरज के बोललक- एह साल ई सब ना चलीं। हमरा इयाद पड़त बा कि पर साल रधिकवा के महतारी के पइसा ना जूटल त ओकर बकरी खोला गइल जेकर बेच के कुलि पइसा लोग लगा देहलक। परियार परिछना के मेहरारू के पइसा ना रहल ऊ ना दिहलक त ओकरा घर के फाटक लेहलक लोग। अबकी ई कुलि ना चली। अत्याचार अब ना सहल जाई। बाबू लोग बहुत बढ़ गइल बा। हम जानत बानी कि ई कुलि कइला पर,हमनी के संकट झेले के पड़ी। हमनी के माल-मवेशी, बहू-बेटी भी ना बची। लेकिन हमनी हार ना मानेब। अत्याचार मिटावे के लेल कुछ कहल-सुनल पाप ना होखे ला। अत्याचार सहेवाला आदमी एक-न-एक दिन अत्याचारी हो जाला। अत्याचार सहला में अत्याचार करेवाला से सहेवाला अधिक पापी होखेला। भगवान के विधान के अनुसार लड़ गइल हमार धरम बा। रउनीं त बूढ़-पुरनियां बानी, कहीं कि कतना दूख देवेले ई बाबू लोग हमनी के। रउनी के आसिर-वाद हमनी के चाहीं, भगवान मदद करिहेन।

सब हाँ मे हाँ कइलक। एकता पर जोर दिहलक। कुलि जना के भोजन ठंढा होत रहे ऐसे सब भोजन करे चल गइल। रात भी काफी बीत गइल रहे। सब लोग बतिया सोचत-गुनत सूत गइल।

सुवह भइल। किरन फूट गइल। लोग पैखाना गइल। मुँह-हाथ धोइ-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लक। बाबू लोग मठ पर जामा हो गइल। चन्दा त पहिलहिये बन्हा गइल रहे। लिस्ट के लोग लिखलक। अब लोग गाँव में घर-घर घूमल शुरू कइलक। गरीब सब भी अपन काम करे बइठ गइल रहे। सब राह देखत रहे गिरहत लोग के। ऊ लोग आई, रोपनी, सोहनी कोरनी करे के कही। हमनी बन करे जाइब आ बन लाइब तबे न बाल-बच्चा, मरद मेहरारू, बाप-महतारी के भोजन चली। ना त भूखले रह जायेके पड़ी। तबे लोग चन्दा के लिस्ट लेले अकाल के कउआ अइसन मूँह बइले आ गइल। हाँ! आ गइल लोग चन्दा माँगे।

मोहना बड़ा निडर ह। उहें सबन के नेता ह। ई सब लोग जानत रहे। लोग मोहना के कुछ ना कहलक जे ओहि जगह खड़ा रहे। ऊ बाबू लोग, क्रमशः दहड़िया, धगड़वा दरसनवा के बोलइलक। बाबू लोग फरमावे लगले, कि तोहनी पचीस घर पर पाँच-पाँच रुपइआ होखी कृष्णाष्ठमी के चन्दा। तोहनी जलदी से जलदी जमा क द। समय भी नजदीक आ गइल। अब कुछ ना होखी त कब होखी। मोहना कहलस---मलिकार! हमनी गरीब बानी स। हमनी रउअनीये के खेत में काम करीले तबे एक जून खायेके मिलेला। हमनी खातिर पाँच-पाँच रुपइया त पहाड़ अइसनवा। हमनी के औकाद मोताबिक चन्दा बान्धीं। हमनी देबे करेब। हमार राय मानेब त एक बात कहत बानी कि अब रउनी ना आईं। हमनी अपना में राय करिके जे जूरी मिली रउनी के सेवा में एकाध रोज में जमा करब। पेट काटे के होखी, छीपा लोटा बन्हक धरे के होखी, हमनीं धरम के काम में सहयोग देवे करेब।

रामो बाबू कहले—कारे मोहना! ताहनी से पाँच पाँच रुपेआ ना दिआई? दुनिया भर के माल-मवेशी बाटे नूँ? बेंचि के दें। तोरा देबहीं के होखी।

मोहना बोलल—मलिकार! ऊ हो माल-मवेशी त रउअनीयेके बा। बेचला पर रउअनी के ही पैसा ना दिआई। उबरे के त कवनों बाते नइखे।

दोसर बाबू कहले-हमनी उ सब नइखी जानत। लेन-देन खान पान के बात अलग ह। तोहरा कहीं से देवहीं के पड़ी। ना देबऽ त हमनी कुलि बन करि देब। कहां जइबऽ माल चरावे? कहाँ जइबऽलकड़ी काटे? तोहनी के बहू-बेटी के इज्जत बची?

मोहना—मलिकार! हमनीं कसूर करीं, हमनीं के दंड दीं। बहू-बेटी त कवनो कसूर नइखे करत?

तीसरा बाबू—चुप होखबे कि नारे! तू का चाहत बाड़े? मारत-मारत देह खराब करि देब।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोहना-हम का कहीं मलिकार ! जे रउनी के बुझाला उहें ठींक ना नू ह। हमनीं के ऊपर दया करीं। चौथा बाबू—साला के मारी लोकनी।

ई सुनते बाल मुकुन्द बाबू बढ़ गइले। हुँनका हाथ में बाँस के एगो छड़ी रहे जेकरा पर कहीं कहीं पीतर, चानी, सोना लपेटल रहे। उहे छड़ी मोहन पर गिरे लागल। मोहना त कुछ सहलक। लेकिन जब ना सहल गइल त मोहना गिर गइल। लेकिन छड़ीं गिरते रहे, गिरते रहे, गिरते रहे। तब तक गिरत रहे जबतक मोहना के देह लहू लूहान ना हो गइल। मोहना पानी-पानीं चिल्लाये लागल। तब ओकरा मुँह पर पेशाब करिके लोग छोड़लक।

मोहना के उठाके लोग ओकरा घर में ले गइल। दवा-दारू के इन्तजाम होखे लागल। दहड़िया; दर्शनवाँ, मुसवा लोग के बइठउलक। सब मजदूरन विचार कइलक कि हमनीं चन्दा लगाके मोहना के बँचाई। हमनी मठ में एको पइसा ना देब। जेकरा मन होखी बाबू लोग मारिहेन। हमनी हुँनकर सामना करेब। दोसरा-दोसरा गाँव में जाके खायब कमायब से मंजूर बा।

लोग दोसरा दिन फेर चन्दा ला आइल लोग ना देहलक। माल-जाल ढाठ में गइल लेकिन सब हटले ना।

बहुत दिन से बीमार मोहना आजकुछ बोलत बतिआवत बा। आजे कृष्णाष्ठमी ह। गरीबन सब खुश बा कि हमार नेता मोहना निरोग होखि रहल बा। मुसवा, दरसनवा, दहड़िया, धगड़वा के साथ अउरी लोग घेरले बइठल बा। मोहना सबके समझा रहल वा कि अत्याचार ना सहेके चाहीं। हमनी जी-जान से अत्याचार मिटावें के कोशिश करीं। हमनीं अपना लड़िका फड़िका के स्कूल भेजीं। मोहना कहत बा कि कृष्ण भगवान् एह लेल जनम लेले कि अत्याचारी सबन के नास करीं। हुनका हृदय में 'बाभन, राजपूत, वैश्य, शूद्र से लेके चिउटी, हाथी, कुत्ता, गाय सबन के लेल बराबरे स्थान बा। हमनी के ई कोशिश करीं कि हुनकर भावना अपनाई। दुशमनागत करे खातिर हुँनकर जनमन भइल रहे। ई कहिके मोहना सूत गइल।

शाम से मोहना के तबियत फेर खराब हो गइल। दवा-दारू चलते रहे। एक बेर फेर सब निराश हो गइल। लेकिन ई निराशा आशा में ना बदलल। मोहना १२ बजे रात में, जब कृष्ण के जन्म होत रहे, लोग नाच,-गान में मस्त रहे, परिवार के बिल खबइने, अपना बिरादरी में नेता के कमी कइले, बाबुअन के अत्याचारके भगवान् श्री कृष्ण किहाँ फरियाद करे खातिर सदा के लेल चल गइल। लोग आँसू बहाके रह गइल। करबे का करो ? बाबू लोग इहे चाहत रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"धातु कऽ बँटवारा"

—स्वामी विमलानन्द सरस्वती

बीतत समय देर ना लागे,
गोड़ दबा ई चुप्पे भागे!
सभकर आदि अंत जाने ई,
ए करजानल केहू नाहीं!
कब का होई,
एह भेद के बतलावे के?
मन बानी कऽ जहाँ पहुँचना,
ओह जगहि का अकथ कथा के;
के कवना भाखा में,
कइसे कहे सुनावे?
कुछ दिन समय गइल जब बीति,
महा पुरुष कऽ लीला;
बनलि कहनियाँ गीति,
एही समय बीर मल्लन से;
पूजल जात धातु के उनका,
लेबे खातिर;
पास-परोसे बसल बहादुर,
सात भगत राजन कऽ'
राजदूत पारी-पारी से
ओह जगहि पर अइलन!
मुनि का धातु-खंड में,
बहुत गाढ़ सरधा रहला खे;
दूसर अपना बल 'गौरव से,
मल्ल लोग सोचल कि-
धातु-भाग दिहला लें,
लड़ि के निपटल अच्छा बाटे!
खबरि पावते-
सभा-भवन में;

सभ चउधुर सरदार पहुँचिके,
गुनल-मँथल सोचल बतियावल!
ओही समय देश, दुनियाँ, दिन;
इनके देखे परखे वाला
बोलल एगो चउधुर बूढ़'—
"भारत देश हमनकऽ,
धरती का साकेत नगरिया।
भूमि जहाँ कऽ सोनावाली,
हीरा, मोती, रतन, जवाहिर;
मरकत मनि कऽ खानि जहाँ!
जहाँ सिन्धु गंगा जमुना आ—
सुरसति, सरजू, सोन, गंडकी,
भूमि झमकि गावति लहराति;
सभकर मनवाँ मोहसु सझले,
अपना ओर बुलावसु!
जहँवा बिहरत हँसत पंचनद
पंचामृत बाँटत लोगन के!
जहाँ विन्हाचल का गोदी से,
धावति आवति अमरकंटकी;
गुनी नरवदा माई,
महाकाल से मिलि बतियाके;
डाँटि-डपटि के दूर भगावति,
हमनीं का रोगन के!
जहाँ भगति सेवा में लागलि,
गद्-गद् हो फल-फूल साथ ले,
गोदावरी संत गुन गावति,
दंडकवन में विचरति;
गोड़ लागि मुनियन के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरम-सनेस सुनावे खातिर—
दक्खिन-पूरब का कोना में,
सागर का लहरन से खेलत;
छिट फुट गाड़ि पताका आपन,
बसल बहरवाँसू भाइन के,
जाले पुरुबी सागर तीर !
कावा काटि जहाँ कावेरी,
पच्छिम से पूरब ले धावलि;
रंगनाथ कऽ चरन पखारति,
निरमल चित्त भजनियाँ गावति;
सागर बीच समाधि लगाके,
मधुर ग्यान-अमरित-रस खोजे !
जहाँ उगलि चंदन कऽ वगिया,
लाची-लता लवँगि कऽ झालरि;
सगरे देंहि लपेटले !
कहीं नारियर, कहीं कसइली,
कतहीं सेव, अँगूर, बदाम !
कतहीं काजू, कहीं अनारे,
कहीं चमेली, जूही, चंपा,
कतहीं तेन पियार !
कहीं छोहाड़ा कहीं नरंगी,
कहीं आम अखरोट मुनाका;
मेवा कऽ सञ्जगर भंडार !
गमगमाति ललचावति सभके,
कहीं कियरिया केसरिवाली !
ओही उत्तम देश बीच ई,
सुघर महाजनपद हमनीं कऽ;
नामी मल्ल शूर वीरन कऽ,
जसी दुलरुवी जनम धरतिया !
तहाँ बहुत पहिले ले,
हिरनवती नदिया का तीरे;
इछ्वाकू-कुल-पूत-सपूत,
गाड़ि पताका आपन;
धन-बल-बुद्धि जतन से,
नगरी नई बसवलन;
कुशावती धइ नावँ ।
उहे नगरिया,
कुशी नगर जेकरा के
आजो लोग कहेला,
शोभा शान सिंगार हमनकऽ;
जनपद कऽ रजधानी !
जहाँ चलल ना अबले,
केहू कऽ मनमानी !
धन्नि भाग मानीं कि—
महापुरुस कऽ
भइल परमपद एहिजा
हमनीं का नगरी में !
भूलीं मति गौरव के एकरा
धन धरती कऽ ठीका केकरा ?
जे आइल ऊ गइल टहरि के
पकड़बि रउरो ओइ डहरि के !
आखिर देहियाँ बिनसी,
जस-अपजस रहि जाई ।"
एतना सुनत तमकि के,
बोलल दूसर वीर जवान—
"हमरो बतिया सुनीं सभे कुल,
गिनल सोरहो नामी;
बली महाजनपदन बीचं ई,
मल्ल महाजनपद हमनीं कऽ;
बहुत दिनन ले,
आपन ठोस ठावँ रखले बा !
केकरा के ई सर ना कइलसि,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

के ना एकर लोहा मानल ?
दूतन का अइला के
समरभूमि कऽ नेवता जानीं।
तलवारन के माँजीं अपना,
भाला-बरछा तीर-धनुस के;
सरियायीं चमकायीं।
रंग कुरंगे लउकि रहल बा,
बहल हवा चउवायी !
रन-बदरी किंचराये लागलि,
का ठेकान कि कब केनेले;
झंझटि झटका आयी ?
रउरा सभ कवनो कीमति पर,
धातु भागि जनि देईं !
सबसे कठिन जाति-अपमान,
शान जाति क राखल चाही;
ओकरा रइछा खातिर
जान भले ही देईं !
जिनका भीतर,
शान जाति कऽ नइखे;
उनके जियते मुरदा जानीं,
चाहे मानीं पशुन समान !
छतिरी असल उहे जे,
माँथ देइ मरजादा राखे
करनी करे समय पर,
झूठे नहीं माँखे।"
तब दूतन का मुँह से सुनते,
धातु भाग ना देवेवाली,
शान-गुमान भरल बतियाके,
ऊ सातो राजा खिसियाइल;
सागर लहरि समान,
साथ फउदि का अइलन ओहिजा
सेना का घोड़न का,
हिहिनाहट से;
अउरी हाथिन का चिघार से,
अदँकि डेराके नगर-निवासी;
बहरी से पुर भीतर गइलन !
मगध नरेश अजातशत्रु आ—
वैशाली कऽ शानी लिच्छवि,
कपिलवस्तु कऽ शाकिय वीर;
रामग्राम कऽ कोलिय,
अल्लकप्प कऽ बुली बहादुर;
मल्ल लोग पावा कऽ,
बाभन बेठ दीप कऽ वासी;
ई सातो राजा मिलि,
कुशपुर का बहरा जंगल में;
डेरा दे सलाह से,
सेना का टुकड़िन के;
ठहरे खातिर,
शिविर बना मजबूत;
खोसिन बिरझल हँकड़त
मल्ल लोग के;
सनमुख रन में उतरे खातिर,
बजा नगारा;
बार-बार ललकारे लगलन !

टिप्पणी—भोजपुरी महाकाव्य - 'बउध लीला' जिसमें कुल ३१ सर्ग एवं १५०० पन्ने हैं, उसके अठाइसवें सर्ग से यह अंश उद्धृत है। कुशीनगर में धातु (अस्थि) अवशेष के विभाजन को लेकर जो विवाद उठ खड़ा हुआ था और ६ क्षत्रिय तथा एक वेठ दीपवासी ब्राह्मण राजा-कुल संत ने अपनी सेनायें लेकर चढ़ाई कर दी थी, वहीं मल्लों के आपसी विचार-विमर्श की बातें उपरोक्त पंक्तियों में चित्रित हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहित्यकार डा० सलिल

—राधा रमन प्रसाद

डा० सलिल नई पीढ़ी के एगो जानल मानल हस्ताक्षर बानी। तीन-तीन बार इहाँ का अखिल भारतीय वाक्प्रतियोगिता में प्रथम अइलीं आ सिद्ध कर देलीं कि धारा प्रवाह प्रांजल हिन्दी भाषा बोले में बिहार कवनो प्रान्त से पीछे नइखे। मानवीय सम्नन्ध पर हिन्दी में शोध कइला खातिर इहाँ का पी एच डी० मिलल। ओह ग्रंथ के देखला से इहाँ के अंग्रेजी ज्ञान के अन्दाज हो जाई। राँची, पटना आ दिल्ली आकाशवाणी से त इहाँ के रचना प्रसारित होखबे करेला, बी. बी. सीं. आ मास्को रेडियो भी इनकर रचना प्रसारित कइले स। देश भर के पत्र-पत्रिकन में हिन्दी, अंग्रेजी आ संस्कृत में रचना छपेली,स। 'स्नेह के आँसू' रंजना आ 'धुला आँचल' लेखा हिन्दी में उपन्यास लिखइले स आ हिन्दी सेवा से प्रभावित होके विद्यापरिषद् अजमेर अपने के 'विद्यावाचस्पति' के उपाधि देलस। ई सब भइल, जबकि 'सलिल' जी के उमर अभी बत्तीस या तैंतीस साल से बेसी ना होखी, भोजपुरी भाषाके अपने के सेवा बड़ा लगन आ ऊँच विचार से हो रहल बा।।

'सलिल' जी खाली भोजपुरी के साहित्यकारे ना हईं, बल्कि ओकरा के बढ़ावे में भी इहाँ के नाम बा। १९५५ में जवन जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् बनल ओकर इहाँका संस्थापक रहलीं। दू साल तक मंत्री रहलीं आ अबतक उपाध्यक्ष बानी। ई परिषद् दर्जनन किताब भोजपुरी में छपलस आ 'लुकार' नाम से पत्रिका निकालेले, जवना के संपादन भी प्राय: 'सलिले' जी करीला। ब्रह्मपुर अंचल-साहित्य सम्मेलन के भी इहाँका संस्थापक सदस्य हईं, आ ओसे हिन्दी का साथे भोजपुरियो के प्रचार होला। 'सलिल' जी भोजपुरी के हर बिधा पर लिखींला। भोजपुरी के अधिकतर पत्रिकन में अपने के लेख आ कविता स्थान पवले बा।

'सेमर के फूल' इहाँ के मौलिक भोजपुरी उपन्यास ह। एही उपन्यास पर महेन्द्र शास्त्री कहले कि 'सलिल' जी भोजपुरी के शरत्चन्द्र बानी। भूमिका में मनोरंजन बाबू लिखले कि 'सलिल' लेखा लिखवइया कौनो भाषा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के गौरव हो सकेला। 'नाय' जी के कहनाम रहे कि 'सेमर के फूल' 'गोदान' लेखा मास्टर पीस रचना बा।

कहानियन में 'सलिल' जी देहाती आ शहरी दूनो जगे के बरनन करीले। भोजपुरी लोग खाली गाँवे में ना रहे। इहाँ के भोजपुरी पात्र 'नेफा' में सीमा पर पहरा देता, जमशेदपुर के फैक्टरीमें काम करता, मैसूरके सैर भी। मारीशस आ अमेरिका तक के पृष्ठभूमि मे 'सलिल' जी कहानी लिखलीं। प्रसिद्ध कहानी (छपल) बाड़ी स-हे हमार नीलम परी, सीज फायर; काठ के हाँड़ी, सपना टूटि गइल, बिश्वास घात, अड़हुल के फूल, सतवे भंवरिए ए बाबा इत्यादि।

'सलिल' जी रिपोर्ताज भी लिखलीं—एकदम नया प्रयोग। गॉव गँवई, शहरी राजनीति के साफ फोटो उरेह के। एगो नमूना देखीं : —

"हर परउरी। बुझाता, मेहरारू आजुए गावतारीस। कुल्हि टोला के मेहरारू के जमाव। अहिर टोली, चमर टोली, दुसध टोली आ केहू केहू बभन टोली के भी आइल ह। अब का गवाई? केहू में जोर काबू बा? तिवराइन आ बसावन बो मुअल लोग आ गाँव के ओरे बउसाव उठि गइल।"

—'लुकार' अंक ५—१९६६

'सलिल' जी मूलत: आशुकवि हईं। कवि सम्मेलन-संचालन में कमाल के कौशल बा। पाण्डेय नर्मदेश्वर सहायजी कहले रहीं—"हम देश मे ढेर-ढेर सम्मेलन में गइलीं, बाकिर संचालन कें असली योग्यता या त स्व. ब्रज किशोर नारायण जी में देखलीं या डा० 'सलिल' में।" भोजपुरी सेवा के धुन में, गद्य बढ़ावे आ संपादन करेका फेरमें 'सलिल' जी कविता कमें लिखले बानीं, बाकिर कमाल बा।

खालीं बातन से बहलावे,
गरज परे तलुआ सहलावे,
बात करे जस बजे कनस्टर, के सखि साजन? नाहिं, मिनिस्टर

—मुकरी

हे पुस्पराज कतना पवित्र,
कतना कोमल, कतना सुन्दर?
काहे ना कविता-कामिनि के,
अइलऽ तू नजरी का अन्दर!

—करमी के फूल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सलिल' जी पूरा घुमलहूँ बानी। ओह यात्रा के बरनन अगरा के अपना मात्र भाषा में कइले बानी। ठाकुर भले बिराजो जी (पुरी यात्रा) महिशासुर के नगर में (मैसूर यात्रा), प्रेम नगरी में (आगरा यात्रा), पुरइन पात पर बइठेली गऊरा देई (हिमालय के आंचलिक यात्रा) आदि ईंहा के यात्रा-साहित्य के नमूना बा। यात्रा में खाली जगहन के नाम आ बाजार भाव नइखे, एगो रोमांटिक यवक के, भावुक कवि के तरल निगाह भी बा। एगो नमूना देखीं—

"कोणार्क मंदिर। एगो जवान अमेरिकन अपना हृदय के रानी के, प्रेमिका कें (सन्देह मति करीं, हम पूछले रहीं) फोटो लेता। ऊ अमेरिकन किशोरी अपना प्रीतम खातिर अपना आँखिन में प्रेमके समुन्दर लहरावतिया। आज से दू सौ साल पहिले भी उड़ीसा के राजा लोग के मन के रानी एही भाव से आवत हो इहें। ऊ सुकेशी होइहें, ई कटल बाल वाली; ऊ साड़ी पहिरलें होइहें, ई स्कर्ट; ऊ मेंहदी रचवले होइहें, ई नेल पालिश में, बाकिर भाव एके होई। समय बदलेला, पहिनावा-रहन-सहन बदलेला, आदमी के मिजाज ना बदले।"

— 'ठाकुर भले बिराजो जी'

'सलिल' जी के ज्यादा समय संपादन में आ नवका लेखक लोग के बढ़ावे में लागेला। इहाँका लहालोट (निबंध-संग्रह) आ 'शबरी' के भोजपुरी विशेषांकके संपादन कइलीं। हल्फी (श्रमिक) सुरतिया न बिसरे (निर्भीक) आ उमंग (शाहाबादी) के भूमिका लिखलीं: दर्जनन भोजपुरी किताबन के पांडुलिपि सुधरलीं आ लेखक लोग के परिचय दिहलीं। केकरा मालूम बा कि भोजपुरी पत्रिकन में छपल सैकड़न रचना 'सलिल' जी के निगाह से गुजरला के बाद छपल।

भोजपुर आ भोजपुरी भाषा का एह साहित्यकार पर नाज बा। भगवान इहाँ के जिनगी बढ़ावसु। भोजपुरी में भी ऊ सामरथ आवे कि एह लाल के मान होखे।

टि० हमरा पूरा विश्वास बा कि अगिला बरिस भोजपुरी-परिषद, जमशेदपुर द्वा० 'सलिल' जी के सम्मान-समारोह धूमधाम से मनाई।

—सम्पादक

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कतहूँ ना बाटे देस बंगला के सानी

ओठे-ओठे सगरे बा एक ही कहानी।
कतहूँ ना बाटे देस बंगला के सानी।

मथवा कफनियाँ जवनियाँ का लहरे
हथवा में धाजा देस बंगला के फहरे
पदमा में खिलल पदुम अस पँवरे
टोलिया सहीदवन के जवरे के जवरे
हँसि रहलि मउअत का कोरा जिन्दगानी।
कतहूँ ना बाटे देस बंगला के सानी।

लाख-लाख कोखिया के रतन लुटइले
सजि के सोहाग बलि-वेदी चढ़ि गइले
राहे-बाटे द्रौपदी के चीरवा हरइले
कतने परान बेसहारा बनि गइले
देखि सुनि भरि आवे अँखिया में पानी।
कतहूँ ना बाटे देस बंगला के सानी।

मजहब का मरहम से घाव ना भरइहें
झूठ भाई-चारा के भरम ना भोरइहें
लुतिया भरल आँखि अब ना लोरइहें
जरि के 'नापाम' से जवनियाँ गोरइहें
कवले उपहिया बनल रही थानी।
कतहूँ ना बाटे देस बंगला के सानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घरे-घरे जहाँ 'रोसनारा' के रोसनियाँ
डरिको-पुरनियों में पनके जवनियाँ
मने-मने सभका बा एक ही परनियाँ
जान जाई, जाई बंग भूँइ के ना पनियाँ
अब नाहीं चले पाई चाल पाकिस्तानी।
कतहूँ ना बाटे देस वंगला के सानी।
'याहिया' तोहार बुला जबदलि मतिया
धइलऽ धधाइ के चँगेज के रहतिया
तोप-टैंक लाख झोंके तोहरा जजतिया
ठटबऽ ना जहाँ देस-प्रेम के बा थतिया
कोटि कोटि जहँवा 'मुजीब' आ 'भसानी'।
कतहूँ ना बाटे देस वंगला के सानी।
रतिया अन्हरिया के रहे नाहीं पइहें
खूनवा सहीदबन के भोर लेइ अइहें
आँजि के अँजोर लोगं नयना जुड़इहें
सोनवाँ के धरती निरखि अगरइहें
बिछि जइहें अँगना-बधारे सोना—चानी।
कतहूँ ना बाटे देश वंगला के सानी।
—जगन्नाथ

★

रुबाई

रउँदल जात बानी कवनो जूता से कवनो तल से
पटकल जात बानी कवनो घड़ी से कवनो पल से
केहू कह लेब ए जिस्म के मरियल—
सरकल जात बानी कवनो बूता से, कवनो बल से।
—हिमांशु रंजन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुक्कुर कल्याण योजना

— डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा)

का जाने रउरा सभे का मालूम होखी कि ना, हमरा जवार में पछिला बुढ़वा मंगर के एगो बहुत बड़हन कुक्कुर कानफरेंस भइल रहल हवे। ओमे बहुत दूर दूर के कुक्कुर आइल रहलन हाँ स। अखबार में उन्ही के कानफरेंस के केवनो खबरि ना छपलि हवे एकर बहुत बड़हन ओरहन बाटे। हमरा कुक्कुर का गरदन में एगो बहुत लमहर चाकर एह आशय के चीठी अंगरेजी में लिखल मिलल बाटे। पूरा पूरा मतलब त हमरा नइखे बुझात बाकिर जेतना किछु हमरा समझ में आवत बाटे हम ओके थोरे में लिखे के कोशिश करत बानी। काहें जे ओमें एह बात के साफ साफ धमकियो दीहल गइल बाटे कि अगर हम ओ लोग के समाचार छापे में केवनों कोतहाई करबि त सभे कुक्कुर हमार बिटुराइ के खबरि लीहन स।

कुक्कुर लोगन के कहाव बाटे कि अगर आदमी के भरि पेट खाये के दियाये लागो त ऊ किछु दिन में ढीठ होके धन दौलत के घर दुआर बटवारा करावे खातिर कम्युनिष्ट हो सकेला। विरोधी नारा लगा सकेला। बिद्रोह कइ सकेला। बाकिर रउरा सभे विश्वास मानीं कि अगर कुक्कुर के भरि पेट कवरा दियात रहो त ऊ कट्टर कंगरेसिया जिनिगी भर बनल रहीं। मालिक का आगा बराबर पोंछि डोलावत रही। चाहे रउरा गलती करीं चाहे सही, ओकरा ओसे केवनो मतलब नइखे। भागि आ संयोग के फेरि हवे ना त अगर ई कुक्कुर काशी गइल रहितन स त बाबा भैरीनाथ जी आपन सवारी त कमसे कम जरूर बना लेले रहितन आ रउरा सभे के गाँव नगर वे कुक्कुरे के हो गइल रहित। ऊ त एह बेचारन के मेहरबानी कहीं कि ऊ आपस में विचार कइलन स कि सभे कुक्कुर काशिये चलि जइहन स त हाँड़िओ ढूँढ़े के केहूका चाहीं? केतना पक्षपात बाटे कि आदमी अपना जान माल के फिकिर छोड़िके रात-रात भर टाँग पसारि के सूतल बाटे आ बेचारा कुक्कुर रात रात भर जागि के पहरा देत बाटे। एक दिन कुक्कुर दुआर पर ना रहे त सभकर हुलिया टैट हो जाई। बाकिर जब मौका आवत बा त आदमी कुक्कुर के करनी भुलाइ जात बा।

आजु देश सुतंत्र हो गइल बाटे बाकिर कतहीं स्थिर सरकार काहें नइखे बनि सकत। अगर ए पर इमानदारी से विचार कइल जाउ त ई बात साफ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो जाई कि आजु देश में वफादार आदमी के कमी बा। वफादारी केहू कुक्कुरन से सीखो। सरकार में केहू वफादार आदमी जाउ त कइसे। जब चुनाव आवेला आ उम्मेदवार लोग आपन आपन चुनाव चिन्ह चुनेला त केहू बैल लेला त केहू हाथी, केहू घोड़ा त केहू शेर। बाकिर केहू ई हिम्मत ना करेला कि हम आपन चुनाव चिह्न कुक्कुर लेइबि। कुक्कुर चुनाव चिह्न लिहला में सभे आपन बेइज्जती समुझेला। हमरा देश में हमनीं का कुक्कुर के बड़ा बें आदर राखत बानीं जा। कुक्कुर के कदर बिदेसन में बहुत बाटे। ओइजा त ऊ कार मे चढ़िके हवा खालन स। देखीं एगो अंगरेज के तरे मुअला पर कुक्कुर होखे के कामना करत बाटे :—

"जो पशु हों तो बनौं बुल डाग,
चलौं चढ़ि कार में पूँछ निकारे।"

भारत में लोग बाछी के पोंछि के बड़ा महत्व देलन। ओ लोगन के विश्वास बाटे कि पंच बाछी के पोंछि धइके वैतरनी पार कइ लेई। वैकुण्ठे चलि जाई। बाकिर आजुले ई साँच बा कि झूठ बा एह बात के पता ना चलल। महाराज त्रिशंकु के विश्वामित्र जी लाख कोशिश कइलन बाकिर सरगे नाहीं भेजि सकलन। अगर ऊ आजुका जुगमें होइतन आ रूस में जाके कुक्कुर के पोंछि धइके स्पुतनिक से उड़ि गइल रहितन त निश्चय रहल हवे कि ऊ जीयते सरगे चलि गइल रहितन। हिन्दुस्तानी लोगन के ई बड़हन कमजोरी हवे कि ऊ लोग अपना चीजन कें आदर देवे ना जानसु। लोग विलायती कुक्कुर बड़ा शौक से पोसेलन। ओपर ठीक नइखे कि केतना रुपया फजूल में खरचा होखत बा। चोरन के पकड़े खातिर स्काटलैंड यार्ड से विलायती कुक्कुर मँगावल जात बाड़न स। पुलिस के हजारन रुपया ओकरा देख रेख में पूरा खरच हो रहल बाटे। पुलिस वाला लोगन के ई विश्वास बाटे कि कुक्कुर का नाकि में ई गुन बाटे कि ऊ सूँघि के आसानी से चोर के पता लगा लेई। अब त बैज्ञानिक लोगन का एह बात के खोज करे के चाहीं कि के तरे पुलिस वाला लोगन के कुक्कुर के नाकि लगावल जा सकेला। कुक्कुर कानफरेंस में एगो प्रस्ताव द्वारा एह बात के कड़ा विरोध कइल गइल बा कि जब देश में देशी सरकार बा त काहें विदेशी कुक्कुरन के विलायत से बोलाके नौकरी दीहल जात बा। देशी कुक्कुरनके केहू पूछे वाला नइखे। बेचारा सड़क पर लोटि लोटि के अनशन करत बाड़न स। केहू ओहन के अनशन तुरवावे वाला तक नइखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजु देश में जातिवाद भाई भतीजावाद के बेमारी बड़ा जोर पर चालू बा। एकर केवनों इलाज नइखे। देश रसातल के जा रहल बा। अगर पंच कुक्कुरन से एकर शिक्षा लेइत त देश के ई हालत ना होखित।

अपना बिरादरी के लोगन के देखते एकरा बोखार चढ़ि जाला। कहाँले पानी पीढ़ा के पूछी हउहा के चढ़ि बइठेला। दर्शन शास्त्र का विचार से ई एकेश्वर वादी हवे। ई 'एकोऽहं द्वितीयोनास्ति, के समर्थक हवे, कुक्कुर भाई लोगन के कहाव बाटे कि मालिक का आगा पोंछि हिलावेके कला आजु आदमी कुक्कुरे से सीखले बाटे। चायके चुस्की लेवे के ढंग आदमी कुक्कुरसे सीख लेल। ई बाति नइखे कि पंच कुक्कुर का बारे में बिल्कुल उदासीन बा। अगर ऊ लोग एह बारे में ना सोचले समुझले रहित त बे जनले सुनलें कइसे कहि देहित कि कुक्कुर के पोंछि अगर छः महीना से धरती में गाड़ो दीहल जाउ तबो सोझ ना होखी-टेढ़ के टेढ़े रही। एसे ई बात साफ जाहिर होखत बा कि धरती पर जरूर केहू अइसन खोज करे वाला पुरुष जनम लेले होखी जे कुकुर के पोंछि धरती में गाड़ि के छः महीना ले धीरज का साथ बइठि के अगोरले होखी।

हमरा एतना कहला के मतलब इहे बा कि हमनी का देश के हालत एह घरी खराब एसे बा कि हमनी का कुक्कुरन के आदर कइल छोड़ि देले बानी जा। अगर हमनीके नेता कुक्कुर ब्रांड बोलता होखसु त हमनी के दुख दलीद्दर भगले बाटे। हमनी का ओही नेता के वोट देवेके चाहीं जेकर चुनाव चिह्न कुक्कुर होखो। सरकार का चाहीं कि कुक्कुरन के दशा सुधारे खातिर एगो कमीशन नियुक्त कइ देउ। कमीशन का रिपोर्ट पर विचार कइ के कुक्कुरन के दशा सुधारे के उपाय करे चाहीं। कुक्कुर पालन योजना चालू करे के चाहीं। श्वान सभा औंर कुक्कुर कानफरेंस के–आयोजन होखेके चाहीं। कुक्कुर कल्यान योजना से देश के कल्यान बाटे।

चोरो डकैती आजु होखति मनमाना बा।
थाकि गइल पुलिस ना लागल ठेकाना बा।।
कुकुरे अब चोर धरिहें बनिहें सिपाही सब
कुकुरा से रऽ यार! इनिकर जमाना बा।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा अब उमेदि बा कि एतना गुनगान का बाद अब कुक्कुर भाई लोग हमरा पर नाराज ना होखी। ओ लोग का कुक्कुर कानफरेंस के खबरि त एसे ना छपलि कि ओ घरी हमार अखबार बंद रहल हवे। माफ करी लोग।

छलकत चाँद

झुरुखे बयरिया डोले पीपरा क पतिया।
चँदवा छलकि अइलैं अजुआं की रतिया।

चमचम चमके लागल आजु मोरा अँगना।
खन खन खनके लागल हथवा के कँगना।

हँसि हँसि निरखे लगलीं सन्हके सन्हतिया।
चँदवा छलकि अइलैं अजुवाँ की रतिया।

खिलल कोइलिया उगल अँजोरिया।
छिटकल सफेदी तलवामें चहुँ ओरिया।

नव रंग होइ गइलीं सेजिवा सुवेलिया।
चँदवा छलकि अइलै अजुवाँ की रतिया।

भइल अँजोर जस सुरुज लजइलैं।
निरखि सजनवाँ के जनुछिपि गइलैं।

कतहूँ लखातैं नाहीं एतनी बखतिया।
चँदवा छलकि अइलैं अजुवाँ की रतिया।

विंदिया चमकि गइलीं पाके अँजोराई।
लाली चुँदरिया की बढ़ली ललाई।

भरि-भरि अँखिया निरखब सैयां कै सुरतियां।
चँदवाँ छलकि अइलै अजुवाँ की रतिया।

—अभयनाथ मिश्र 'वाराणसी'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकांकी

नयकी पीढ़ी

—राय सच्चिदानन्द

पुरुष —पात्र :—

जसवन्त—गाँव के एगो धनी आदमी

उदित—जसवन्त के साथी

भीखू—जसवन्त के नौकर

मुनीम—जसवन्त के मुनीम के रूप में सी० आई० डी० इन्सपेक्टर

सागर—गाँव के पढ़ल-लिखल, जागरूक विचार के युवक

बछावन—सागर के साथी

बलीकाका—गाँव के जागरूक विचार के एक किसान

स्त्री पात्र :—

सीता—जसवन्त के बेटी

[ठाकुर जसवन्त सिंह के घर। ठाकुर जसवन्त सिंह अपना संगी उदित सिंह के संगे बइठल बाड़न। सोझा ही टेबुल पर पान के गिलोरी चाँदीं के तस्तरी में राखल बा। हुक्का के नली जसवन्त सिंह के हाथ में बा। हँसे के आवाज होता। पर्दा उठते 'से त बड़ले नु बा' जसवन्त सिंह के मुँह से सुनाई पड़ता। तबे नौकर भीखू अजीब किसिम से माथ पर पगड़ी आ पगड़ीं में एगो चिट्ठी खँसले आवता आ मुँह बनाके ठाढ़ हो जाता।]

जस०—का रे भीखू? का बात बा? गदहा अइसन मुँह बना के काहे ठाढ़ भइल बाड़े?

भीखू—मालिकार जे बा से कि चिट्ठी…हे…हे…हे।

[एकदम बुड़बक नियर दाँत निपोर के ठाढ़ हो जाता।]

जस०—(अनजान भाव से) चिट्ठी? केकर चिट्ठी?

भीखू—सरिता बिटिया के मलिकार! अउरि केकर?

जस०—सरिता बिटिया के? (खुशी से उदित सिंह के ओर देखके) देखीं त का लिखल बा?

भीखू—मलिकार, उ त जे बासे कि (थूक भींतर घोटत) अब का कहीं, पीउन के हाथ में लेके जे कहाँ राख देले बानी, मिलते नइखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जस०—(खिसिया के) का मिलते नइखे ?

उदित - अरे तोरा मथवा पर का ह ?

भीखू—अँ माथ पर ? (माथ छू के) अरे ई मलिकार ! इहे नु सरिता बिटिया के चिट्ठी ह। एकरे के नु कहल जाला गोदी में बेटा आ गाँव में ढिंढोरा। (चिट्ठी जसवन्त सिंह के हाथ में देता।)

जस० – (चिट्ठी पढ़के) उदित भाई ! सरिता सोमार के दिन आ रहल बाड़ी। इम्तहान खतम भ गइल। सँगे ओकर ममो अइहें। अब कह तहार का विचार बा ?

उदित—अरे हमार विचार का पूछले बाड़ ? बिआह-शादी में आजकल लड़का-लड़की के विचार पूछल जाला। हम त जुवान हार चुकल बानी। फेर हमरा कवन एतराज होखी ?

जस०—अरे, लइका-लइकी से का पूछे के बा ? लइका-लइकी के विवाह-शादी के भार त महतारी बाप पर होला।

उदित—जमाना बहुत बदल गइल बा ठाकुर।

जस०—अरे जमाना के मार गोली। इहो कवनो बात में बात भइल। से भाई, हम लड़की वाला ठहरलीं। हम बेसी सबुर ना कर सकब।

उदित हमरा त कवनो एतराज नइखे। सुधीर नया-नया नोकरी पर लागल बाड़न। उनका के आवे द। बिआह उनका करे के बा, हमरा ना।

जस० हँ से त ठीक बा। बाकि............

उदित—बाकि-वाकि किछु ना, सुधीर के आवे द। कुल्हि ठीक हो जाई। अच्छा अब हम चलतानी।

जस० –अरे बइठ, बिजे हो रहल बा, खाके जइह। (भीखू से) भीखुआ ! ते का ठाढ़ बाड़े ? जाके खायेके बनोबस कर।

उदित—ना ! ना ! हमरा शहर जायेके बा। अबेर हो जाई। अब हमरा के चले द।

जस०—आ बइठ। अइसन कवनो अबेर ना होखी।

उदित—ना ! ना ! फेर कबो, अबहीं हम चलतानी।

[उदित चलि जा,ताड़न। पीछे पीछे भीखुओ चलि जाता। मुनीम जी के खाता पत्तर लेले प्रवेश)

जस०—(मुनीम के देखके) का मुनीम जी ? कुल्हि ठीक बा न ?

मुनीम-- हँ सरकार !

जस०—टराक पर माल लदा गइल ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुनीम—जी हँ ।

जस०—समय बड़ा खराब बा मुनीम जी। एक-एक डेग फूँक के चले के काम बा। रहता में कबहीं............

मुनीम—(बीच में टोक के) रउआ निफिक्रिर रहीं सरकार । हम कुल्हि बनोवस क लेले बानी । चेकपोस्ट के साहब से बात भ गइल बा राते रात तीनो टराक पास हो जाई ।

जस०—तब त बड़ा नीक बा ।

मुनीम—(चारो ओर देखके रुपया के थैली देत) ई रुपया मुकुन्दरा रामकुमार किहें से आइल बा. बीस तारीख के दु टराक चाउर गइल रहे पूरा पचास हजार बा ।

जस०— (रुपया राखि के) ई सब त ठीक बा मुनीम जी बाकी ई नयकी सरकार रोज एगो नया-नया खुराफात करतिया । सुने में आइल बा कि के मिनिस्टरी में हमनी के खबर भेज देले बा। सी० आई० डी० पीछे लाग बा । एह से खूब चेत के चले के काम बा ।

मुनीम - हँ, ई सरकार त हमनी के जड़ खोदे पर लागल बिआ, बाकी कवनो बात ना, एगो रहता बन होला त सौ गो रहता खुलि जाला ।

जस०—- (एक एक शब्द उदासी से सानल) काल्ह डीहू अहीर के बे शहर से आइल, उहे कहत रहे कि सागर शहर से पढ़ाई खतम कके आ रह बा, अबकी उ गाँव में बड़हन मीटिंग बोला के ऊल-जलूल हमनी के खिला समझाई ।

मुनीम—सरकार कही त ओकरा के गावे ना चहुँ—

जस०— ना ! ना ! मुनीम जी, कवनो काम में जल्दीबाजी ना करे चाहीं, सागर आजकाल राजनीति के अखाड़ा में सोसलिस्ट पार्टी के धुरि म रहल बाड़न, आ एह अखाड़ा के इनल गिनल पहलवानन में उनकर नाम बा अब तू ही बताव, जवना गाँव के आसमानपर सोसलिस्ट पार्टी के उल्का लउ ओह·गाँव के भविष्य का होखी ? सागर के हाथ में करे के कवनो दोसर उपा सोचे के पड़ी, जहाँ गुड़ से काम बन जाय उहाँ जहर देवे के कवन काम बा।

मुनीम—जी हँ सरकार ! रवा ठीके कहतानी ।

जस०— अब तू जा, खाये के बेर हो गइल ।

(सागर अपना लइकाई के सँगी बछावन आ बलि काका संगे गाल प हाथ धइले बइठल बाड़न, उनकर मुँह उतरल बा, एकदम उदास ।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बछावन—सागर भाई, मुँह लटकवला से काम ना चलि; कवनो रहता निकाल।

सागर—का रहता निकालीं ? हमरा आँखिनमें त सउँसे गाँव आ इलाका में जागरीति ले आवे के सपना नाचत रहें, बाकि इहवाँ आके हम देखतानीं कि गाँव के छाती पर एगो बड़हन घाव भ गइल वा, अइसन घाव, जेकरा से सउँसे गाँव वसा उठल बा, आ ई देखि के हमरा आँखि का सोझा अन्हरिया छा गइल बा, अइसन अन्हरिया जेकरामें भूतला के हमरा कवनो रहता नइखे सूझत।

बछावन—ए भाई ! हमरा अतना कुल्ह बुझाये के बा ना, हम तहरा नियर बी० ए०, एम० ए० नइखीं पास कइले, सतवीं जमात ले पढ़ल बानी, नव-छव त जानी ना, हम सांझि खान गाँव वालन के बिटोरतानी, ओहिजे हमनी के कुल्ह बात खोल के राख दीहींजा।

सागर—ना ! ना ! बछावन, तू समझत काहे नइख, एक ओर जहाँ ठाकुर डाकू बनल दैत्य अइसन ढाढ़ भइल बाड़न ओहिजे दोसरा ओर सरिता आँख में लोर ले ले हमरा के निहार रहल बाड़ी, हम नइखीं चाहत जे सरिता के मन पर कवनो चोट लागो।

बलिकाका—सागर ! राजनीति एगो अइसन अखाड़ा ह, जेकरा में विचारन के युद्ध होला। आ एह युद्ध में रिश्ता-रेवाज, भाव प्रेम-प्यार के कवनो देवाल ना आवे, जब गाँव के जागरीति आ उत्थान के बीड़ा उठवले बाड़ त करेजा कें मजबूत कर, ई छोट-छोट झोंका ना खइब त कहाँ से गाँव समाज आ इलाका के भलाई करब ?

सागर—बलिकाका ! हम चाहतानी कि ठाकुर के समझा–बुझा के रहता पर ले आईं।

बलिकाका—जइसे मांसाहारी जिनावर मांस खइला बिनु ना रह सके, ओइसहीं धन बिटोरेवाला आदमी धन बिटोरला से बाज ना आ सकेला।

बछावन—बलिकाका ! एक किसिम से सागर भाई के कहनाम ठीक बा, ठाकुर मनिहें त नाहिएँ, इनकर त दोष कटि जाई।

बलिकाका—ठीक बा, हमर कवनो ऊजुर नइखे, बाकी ठाकुर कें समझवला के पहिले गाँव के सोझबक किसानन के समुझावे कें पड़ी जेकरा पर ठाकुर के जादू चढ़ल बा। जेकरा के ठाकुर के पोसल कुकुर उल्टा-सीधा समुझा के अनाज कीन ले तारनस, फेर अनाज उपजावे वाला किसान अनाज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिनु विलखत वाड़न । जवले ई किसान आपन अनाज बेंचल ना छोड़िहें तवले हम रउ भा तहरा नियन सउँसे नयकी पीढ़ी किछु ना कर सकी ।

सागरे – अच्छा बछावन ! हम चलतानी, जवले हम ठाकुर से ना मिलव हमरा चैन ना मिली ।

बछावन—ल, सुन वलिकाका, इहो कवनो वात में बात भइल ? छम से भइल आ छनाक से चलि देल । अरे बइठ, तहरा नियर चकलेट-अमलेट कहाँ से पाइव ? दूध के शरबत वनता पीके त जइह ।

(सागर आ वलिकाका हँसे लागताड़न)

पर्दा गिरता

[सागर के घर । केवाड़ी वन्द वा । सरिता आवताड़ी आ केवाड़ी खटखटाव ताड़ी । भीतर से सागर के बोलल सुनाई पड़ता—''के ह भाई ? आवतानी ।'' बटेसर आके केवाड़ी खोल ताड़न । सागर अँगवछी से हाथ पोंछत बहरी आवताड़न ।]

सागर—– अरे, सरिता तू ! वइठ–बइठ ।

बछावन—– तूहूँ कमाल नाड़ सागर भाई ! खटिया–मचिया के पते ना आ बइठे के कहताड़ ? (सरिता से) रह सरिता बहिन । हम खटिया ले आवतानी ।

(बछावन भीतरी जाके खटिया ले आवताड़न)

बछावन – (खटिया विछावत) बइठ सरिता बहिन ।

(सागर आ सरिता खटिया पर बइठ जाताड़न एक ओर बछावनो बइठ जाताड़न)

सरिता—भीतरी का करत रहल हा ?

(सागर वोले चाहताड़न तले बछावन टप से बोल दे ताड़न)

बछावन – वैलन के सानी देत रहलन हां । हम त बरिज के हार गइलीं किं भला एतना पढ़-लिखके वैलन के सानी देव ? द हम काट देतानी बाकी हमरा के लमहर लेक्चर सुना देलन – (सागर के नकल करत) बछावन कवना किताब में लिखल वा कि पढ़ल–लिखल आदमी आपन काम अपने ना करे ? पढ़–लिखके खेती गिरहथी के काम में कवनो लाज के बात नइखे ।'' तू हीं कह सरिता वहिन हम कवनो गलती कइलीं हाँ ?

सरिता – तहार जन कहाँ गइल सागर ?

सागर—अरे ओकरा वहिन के बिआह वा ओहिसे नइखे आइल ।

सरिता बछावन भइया ! सागर के कहनाम ठीके बा । आपन काम करे में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवनो लाज नइखे तनी सोच त, ई का शोभा दीहीं कि जन नइखे त बैल लेहना बिनु रहस।

बछावन—अरे, बहिन, हम त रहलींहा नू ?

सरिता—तू त अपने घर के काम क के थाकल रहेल, फेर जवन काम तू करब उ सागर काहे ना करिहें ? एह से कि सागर तहरा से बेसी पढ़ल-लिखल बाड़न ? इहे त आज के जवानन में गलत विचार समा गइल बा भइया पढ़ल लिखल लोगन के नजर आज आफिस के कुर्सी पर बेसी आ अपना खेत पर कम रहेला। उ कुर्सी कलर्कीए के काहे ना होखो। आज कतने अइसन लोग बाड़न जे नोकरी के मोह में दफ्तर के चक्कर लगावत आपन खून सूखा देताड़न। ऊहे खून यदि अपना खेतन के काम में सुखाइत लोग त उनकर परती पड़ल खेत सोना उगलित - सोना।

बछावन—साचो सरिता बहिन ! आज त तू हमार आँखि खोल देलू। तहार कहनाम सही बा। एकर जीअत-जागत परमान बाड़न लखन चाचा, आपन कुल्ह जमीन लदुआ कुरमी के बटइया पर दे देले बाड़न आ अपने कवनो सेठ किहे मुनीम गीरी करताड़न, साँचों आज यदि उ जमीन अपना हाथ करतन त नून रोटी के जगहाँ दूध रोटीं खइतन, अच्छा दीदी हम चलतानी। बाबू हमार राह देखत होइहें (जात–जात रुक के) सागर ! ओह बात के जइसन विचार होखे, हमरा के खबर दिह, गाँव के नक्शा बदलल जरूरी बा। (कहत बछावन चलि जाताड़न।)

सरिता—बछावन तहार बड़ा खिआल राखेलन।

सागर—हं सरिता, हमार आपन भाई नइखे, बाकि बछावन हमरा के भाई के अभाव कबो ना खटके देस। खैर छोड़ एह बातन के। कह। तू कइसे अइलू हा ?

सरिता—अइसहीं। मन ना लागत रहे, आँखि तहरा के देखे खातिर अफनाइल रहलीस. सोचलीं, एहनी के तहार दरशन करा दीहीं।

सागर—ई शहर ना गाँव ह सरिता। इहाँ कवनों बात हवो से पहिले सउँसे गाँव में चहुँप जाले। तू जानताड़ कि हम बहुत बड़ खतरा मोल ले रहल बानी। हमरा से मिलला-जुलला से तहरों खतरा मोल लेबे के पड़ सकेला जे हम नइखीं चाहत। तहरा के कतना बेर कहलीं बाकी तू समझत नइखू।

सरिता—हम त कुल्ह समझ रहल वानी। बाकी तू नइख समझत कि म उ लड़कीं हईं जे भोजपुर के गाँव में जनमलि। भोजपुरी माटी में बढ़लि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी समाज में पालल-पोसल गइलि। हमरा नस-नस में भोजपुरी संस्कृति बा सागर जे लड़किन के सीता आ सावित्री अस बनावे के सिखावेला। तू ही बताव, जेकरा के हमार मन आपन मान चुकल बा ओह के हम खतरा के डर से छोड़ दीहीं ?

सागर—सरिता !

सरिता ना सागर ना ! (डबडबाइल आँख से सागर के देखत) एक का हजारन-लाखन खतरा आई तबो हम पीछें ना हटब। तू गाँव के सुधारे चाहताड़ ? समाजवाद के नारा बुलन्द करे चाहताड़ ? अवही जाते-जात बछावन कहलन हाँ कि गाँव के नक्शा बदलल जरूरी बा। तहार एह भावना के हम हृदय से आदर करतानी। चल चलके गाँव वालन के जगाईं जा। एह लोगन के कान में समाजवाद के मंत्र फूँकी जा। ओह जोंक से बचाईं जा जे उनका के भीतरे-भीतर चूस रहल बा।

सागर—सरिता ! भावना में बहल ठीक नइखे। तनी दिमाग के ठंढा कके सोच। तू उ काम करे के सोच रहल बाड़ जे तहरा शोभा ना दीहीं।

सरिता—सोच तू, हमरा सोचे के नइखे, करे के बा। मरद हरदम से मेहरारू के अबरू समझत आइल बा। सागर हम देखा देब कि हम एह काम में तहरा से पीछे नइखीं। हम जा रहल बानी। हमरा अवहीं बहुत कुछ करे के बा।

सागर—सरिता—सुन त।

(सीता आवेश में चल जाताड़ी)

सागर—(अपने आप) ओह हो। अइसन जिद्दी लड़की। भगवान जानस ई कवन खुराफात करी। (धम से खटिया पर बइठ जाताड़न)

परदा गीरता

[ठाकुर के घर ठाकुर कुर्सी पर बइठल एकवार पढ़ताड़न। सागर के प्रवेश]

सागर पाँव लागी ठाकुर चाचा !

जस०—(मुड़ी उठा के, देखके) सागर बबुआ ! जीअ-जीअ, आव, बइठ, कइसे अइल हा ?

सागर—रवा से किछु जरूरी बात करे आइल बानीं।

जस०—कह।

सागर—का ई ना हो सकेला कि रवाँ ब्लेक मारकेटिंग के धंधा छोड़ दीहीं ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जस०—ब्लेक मारकेटिंग ! अ हा हा हा ! (हँसताड़न) ई का कहताड़ ? अरे, दु-चार मन अनाज बेंचला के ब्लेक मारकेटिंग कहल जाला ? (सरिता के प्रवेश, ल, सरिता आ गइली। सरिता बेटी, सागर तहार लइकाई के सँगी हवन। तू हीं समुझाव, (हँसके) ई कहताड़न कि हम ब्लेक मारटींग करीला।

सरिता--सागर ठीके त कहताड़न बाबू जी ! टराक के टराक अनाज रात के अन्हरिया में कलकत्ता, बनारस, आसाम आ ना जाने कहां-कहां भेंजल ब्लेक मारकेटिंग ना त का ह ? हमहूँ ढेर दिन से चाहत रहलीं। भगवान हमनी के कथी के कमी देले बाड़न जे हमनी के गरीबन के हक मारींजा।

जस०—(गरजिके) सीता ! चुप रह। तुहूँ हमारा के उपदेश देबे चलल बाड़ ?

सागर—ई उपदेश ना ह ठाकुर, सच्चाई ह। आज यदि देश के धनवान लोग अपना गोदाम के मुँह खोल देस त आज के गरीब अनाज खातिर मुँह ना बवले रहस। एह गाँव में कतने अइसन घर वा जहाँ चूल्हा नइखे जरत। जाईं जाके देखी बुधुआ किहे। राउरे चरवाह ह। तीन-तीन, चार-चार दिन पर ओकरा घर में चूल्हा जरेला। अन्न बिना ओकरा मेहरारू के छाती के दूध सुखा गइल वा। आ आज......आज ओकर सात महीना के लइका दूध बिना छछनि के परान तिआग देलस।

जस०—(खूब खिसिया) के हम केकरो ठीका नइखीं लेले ? बूझलऽ

सागर—सही वा कि रउआ केकरो ठींका नइखीं लेले बाकी, रउआ का हक बा कि एह गरीबन के जेकरा हाड़ पर मांस नइखे ओकर चमड़ी ओदार लीहीं। सस्ता से सस्ता घरमें अनाज कीनके गोदाम भरीं आ महँगाई में दसगुना दाम लेके बेचीं।

(भीखू के प्रवेश)

भीखू—(घवड़ाइल) मलिकार ! मलिकार ! गजब हो गइल।

जस—(खिसिआइले) का भइल ?

भीखू—किसान कुल्ह अनाज देबे से इन्कार क देलन स जेकरा किहें जाता नी उहें लाठी लेके खदेड़ता।

जस—का ! किसान कुल्ह.........ई सब का हो रहल बा ? आरे सागर, इ सब तहरे करढानी ह। तू ही सब के अपना संगे बहावताड़।

सीता—सागर में बहाव कहाँ आइल बाबूजी जे केकरो के अपना संगे वहा सकसु ? ई काम त सरिते कर सकेले। ई हमार करढानी ह। गाँव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वालन के आँख से परदा हटावल जरूरी रहल हा। गाँवे ना आगे बढ़ी त देश का आगे बढ़ी ?

जस— दु:ख से) ओह सरिता......ई तू......... हे भगवान मुनीम जी ! ....(भीखू से) मुनीम जी के बोलाव ; [मुनीम के प्रवेश]

मुनीम - का सरकार।

जस०— मुनीम जी आज ई सब का हा रहल वा ? जे आवता उहे आज हमरा करेजा पर तीर मारता।

मुनीम— पाप के घड़ा जब भर जाला त ओकर फुटल जरूरी हो जाला सरकार ! हजारों लोगन के घर जरावे वाला भला आंच से कइसे बँची ?

जस—मुनीम जी, तहरो दिमाग फिर गइल वा का ? हमरा रोटीपर जियेवाला हमरे के उपदेश देवे चलल वा ? बुझाता कि तू आपन अवकात भुल गइल वाड़।

मुनीम— अवकात ! हूँ ! अवकात देखे चाहताड़ ठाकुर ? 'आपन नकली दाढ़ी मोछ उतारत) हम तहर मुनीम ना हई ठाकुर। हम हई सी० आई० डी० इन्सपेक्टर सुधीर।

जस – (काँपत आवाज में) तु......... तु........., इन्स......... पेक्टर सुधीर। ओह ई हम का देख रहल बानीं ? जेकरा से हम अपना घर के नींव मजबूत करे चाहत रहीले उहे आज ले हमरा घर के खोदत रहे !

सुधीर हं ठाकुर ! जइसे पापी के संहार करे खातिर भगवान के नया नया अवतार लेवे के पड़ेला ओइसहीं कानून के आँख में धूरि देके, देश से गद्दारी करे वालन के पकड़े खातिर हमनी के नया-नया भेष बदले के पड़ेला।

सागर - सुधीर तू !

सुधीर—हं सागर ! अपना कर्त्तव्य से लाचार रहीं एही से हम तहरा से मिल ना सकलीं। [सुधीर सीटी वजावता सिपाही आके ठाकुर के हथकड़ी पहिरा देता।] (जसवन्त से) हमरा अफसोस वा ठाकुर ! एक दामाद बनके राउर पांव ना छू के, एक इन्सपेक्टर बन के हथकड़ी पहिरा रहल बानी। ठाकुर ! सरिता हमेशा से सागर के ह आ ओकरे रही।

सागर—सु......... धी ....र।

सुधीर— हं सागर, सरिता सागरे से मिल के गौरव पावेले (ठाकुर से) चलीं ठाकुर, कानून राउर बाट जोहता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ललित निबंध

आधा-तीहा

अवधेश प्रधान

जे आधा तीहा कवि आ आधा तीहा वैरागी बा, ओकर का हाल होई ? जेवन चाहो। त ऊहे हाल हमार भइल वा आज। आ अजुए काहें के ? कब्बो भविष्य का परमारथ पर सोचीलाँ त इहे फिकिर क देंवका दिमाग में लाग जालन स। भला बताईं त ई हमार चिन्ता महमूली बा ? सारी दुनियाँ में हल्ला क देले बाड़ों कि हम महाकवी हई, आ जो कहीं ई जस नाहीं मीलल त का होई ए दादा ? एही खातिर बार बढ़ा के कब्बो मांग फारे सुरू कइलीं। कब्बो कनटोप पहिरले गली गली घुमलीं। कब्बो बगड़ा नीयर दाढ़ी राखि के पनघट लगाइत मरघट ले चउहद्दी मरलों, बाकिर केहू अइसन ना मीलल जे भुलाऊ के 'बाबा' कह दें। जमघट में अलबत्ता गइलों त अदमी चिहाके तकलें। हाथ लागल किछु ना। हँ, बनारसी साहु कवो भेंटइलँ त जरूर कहलँ —तिवारी जी, पा लागीं। हमहूँ मगन हो के कहलीं जय हो। पनघट-मरघट-जमघट-अवघट क जतरा कइलीं, किछु घट बढ़ ना भइल। सभ त सभ, घटघट बासी राम के का भइल वा आजु ? सहर में का भइल ? मत पूछीं, घाँटी दबावे वाला गर टिप दिहलँ। मत पूछीं—मत पूछीं। अब हम अधिकी मातृभाषा में नाहीं बोल सकीं। अब हमके अपनी भाषा में बोले देईं; अहो दुनियाँ वालो, दाढ़ी ने मेरे को क्या क्या फजीहत करी, सो देखो, हमने एक काव्य लिखा अहै—

> "अवधू दाढ़ी अस करो जस कविहू न करहिं।
> पहिले को सहपाठिनो माओ कहि कहि जाहिं॥"

देखलीं न हमार दुख ? ई त दाढ़ी क हाल ह। जेकरी खातिर ई करत गइलीं, ऊ कबिताइओ साथ छोड़ले चाहतिया। केतना बड़े बड़े दुनियाँ हिलावन कवि अइलन। आजु ऊन्हन लोगन क पते नइखे। त हमार केवन बिसात ? हम जिला हिलावनो नइखीं। भोंपूभट्ट, चियारन चटर्जी, महाचड चड्ढा, बुड्ढा बन्धोपाध्याय, कबिलास कंदहारी, प्रलयंकर बिहारी, मोमिन कुमारी—बाप रे बाप, एक ले एक गजराज कबी रहलन हँ। भोंपू जी गाजीपुर में अफीम का कोठी पर चढ़ि के कविता पढ़त रहलन हँ त पटना में काशी प्रसाद जायसवाल का घर क लोटा थरिया झनझना जात रहल। ऊ िक्का त हमरा नइखे। तब कइसे इतिहास में नाँव कइल जाई ? कूलिह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोड़ के ए रहता पर आइल गइल। किछु ना मीली त केके मुँह देखावल जाई; जेकर मूँहो देखला में पाप, ऊहो कूल्हि ओर ले हारि के हिन्दी क मूँह देखल त उद्धार हो गइल। कबिता देई, हमार का होई ? आ का होई हमार लरिकन क ?

आ हमहीं ए तरे अपना के महाकबियन ले छोट माने लागब त कइसे बनी ? हमके त दुसरा दुसरा नाँव से आपन समीक्षा लिखे के चाही। बस, कल्हि पुजाए लागब। हमके खुद अपनाके गर्व से कवी कहे के चाही। आ तब का ? हम केहू ले कम थोरे बानी ? श्री कमालदास क पिता जो कविवर कबीरदास हमरा पर कविता लिख गइल बानऽ—"अवधू गगन मंडल घर कीजै;' ए पर त एगो सूघर थीसिस लिखा सके ले। हम महाकवी हुईं ई रहस्य लरिका लोगन से दुनियाँ से चले का पहिलही बता देइब। फिर का पूछे के ? बढ़िया थीसिस लिखाई जे कबीर दास जेवना 'अवधू दास' कवि क नाँव लेले बाड़न, उनकर खोज हो गइल। फिर हमार कूल्हि कविता 'भिखारी दास ग्रंथावली', 'भारतेंदु ग्रंथावली' नीयर नागरी प्रचारिणी सभा से छपी। लरिका पी० एच० डी० हो जाई आ हमार नाँव नये दुनियाँ में हरमेसा खातिर अमर हो जाई।

ओइसे त कल्पना में कूल्हि छूट ह बाकिर हमार नइयाँ त सहिए ह। बिदमान लोग कहेला जे अवधू शब्द क मूल 'अवधूत' (सँन्यासी) ह। अवधू क ई अरथ केहू ना लगावे हमरा घरे। फेर कइसे इ नाँव धराइल ? एतना मालुम बा जे हमार नाँव पारसनाथ से जवाहिर आ जवाहिर से अवधेस रखाइल। एसे दुगो नाँव लव-कुश नीयर जनमलन। अवधू आ लदभेस। जबले 'भोजन भीम' रहलीं तब ले कवी-कंचित लदभेस कहल जाय बाकिर अवधू त बहुत दिन ले कहइलीं। अवधू माने सँन्यासी होत होई बाकिर हम त ओकर अरथ अवधेसे जनली आ जे 'अवधू' कहल, ओ से बोललीं।

अब त बड़ हो गइल बानी। केहू रेरी नाहीं पारे। केहू अवधू नाहीं कहे। आ भीम काका के के समझाई ? ऊ त आजुओ कहे लँ—का हो आधा देस ? फेर बोली लरका के कहिहन—भइया, तू देस के बँटवा देहलऽ—एगो हिन्दुस्तान, एगो पाकिस्तान। ए नाँव से दुसर केहूना पुकारे। खाली भीम काका जोर से कहिहँ—आधा देस।

आधा देस। जहिया हमार भारत अधियाइल होई तहिया असमान कँहर के रह गइल होई। बाकिर ओही असमान पर ओ दिन आजादी क सुरजो उगल रहे। तिरंगा लहरल आ सभकर बिहरत करेजा ईहे देखिके हुलसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लागल। एक आँख में हँसी के किरन आ दुसरी आँखि में दुख के लोर। ई हाल रहल। पाकिस्तानो में आज कचर मचर बा आ हिंदुस्तानो में हो हल्ला। न ऊ अधवा सुखी रहल न ई अघवा। हम देखतानी जे हमरे भारत की आरी आरी ले काधार प्रदेश, नेपाल, तिब्बत आ भूटान छटकि गइल। जहिया पूर्वी बंगाल आ पश्चिमी पाकिस्तान भारत से अलगाइल होई तहियो महमूली बजर ना गिरल होई बाकिर आजादी खातिर छछाइल नेता कइसहूँ ईहा दुख सही लेहलन। खैर, छोड़ीं ए बात के।

आ आजु बंगाल, पंजाब, तमिल प्रदेश, नागालैंड का दुवरे नसा छैले बा। कश्मीर बिचबिचवे में ह। उत्तर प्रदेश आ बिहार क दलिदरे नइखे भागत। हमनी के सिखावल गइल कि आजाद हईं जा भारत, क हईं जा। भाषण आ गाना में ऊहे दोहरवलीं जा। बाकिर उत्तर प्रदेश आ बिहार का अदमी के बंगाल में हिन्दुतानो कहल जाला—बुझा ऊ लोग हिंदुस्तान से बहरीं बा। एके का कहल जाई? मीलल आपन देस बाकिर आधा। त भीम काका क बात सही बा।

आ आजादी मिलला पर का भइल? एकर गवाही साफ बा। अपनाके आ अपना समाज के देखके हमके इहे बुझात बा जे आजादिओ आधा—तीहा मीलल बा। आजादी क मतलब किछु-किछु बुझाला, जब देखोलाँ कि रामसुख साहु आ बनारसी साहु में झलफलाहे गंगा नहाये क हाराहूँसी लागल बा, आ हमार मइया तोरिथ नहाये खातिर बेकल बाड़ी।

आ जेवना के आजादी कहल जाता ओकर पोल खूलेला जब देखोलाँ जे अपनी जानकारी में प्रिंसिपल, महटर आ वाइस चांसलर गुंडा पालतान, सँड़ही कहतो बाड़न कि गुंडागर्दी का खिलाफ कदम उठावल जाता। जानतानी जे फलाने इसमगलिङ करेलन, लरिकी चोरा के बेचेलन बाकिर हम कह नइखीं सकत। पहिले ब्रिटिश सरकार क कुक्कुर काटँ स आ केहू ना बोले। आजुओ केहू नइखे बोलत बाकिर कुकुरा अपने सरकार क बाड़ स। अजुओ ई बात सभ जानता कि कुछ महापुरुष चोरी करेलन आ छातो तानके पनहा लेलन—ई पुलिस जानतिया बाकिर कूल्हि झूठ. कूल्हि झूठ आ ईहो मालुम बा जे निदोंसिक अदमी का चुत्तर पर डंडा बाजता। गरीबन का छातो पर मूँग दर-दरके कबलें बेसन पाकी? हम इहोजानतानी कि लिख लोढ़ा पढ़ पत्थर नेतन का पाछे-पाछे फर्स्ट क्लास एम०ए०, पी०एच०डी० घूमतान। आ ईहो कहल चाहतानी कि दोस केहू क नइखे। आ दोस सभकर बा। हमनीका कूल्हि जाना पापी बाड़ीं जा। हमनीका देखतानीं जा आ गंडा का तीरे तीरे चाउर चीन नेपाल चलि जाता। हमनी क जीयल अकारथ बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

मनीका कूल्हि जाना अपना देस पर पंचलत्ती बोल देले बाड़ीं जा। सभ आपन निसाना देख-देख के अपने देसके लाल पनही मार रहलवा। जे थोरी बहादुरी कइल, चहल-पहल कइल ओके नोट क निकियावल आ पइसा क पछोरल अफसर दबा दिहलन स। आ इहे बतिया एक्को पुलिया आ बान्ह के एक बरसात से अधिकी ना चले देति ह। त ईहो सही जनाता कि आजादी आधा-तीहा मीलल, भा अइसे कहीं कि हमनी का आजादी के आधा तीहा क दिहलीं जा।

हम सपना देखतानी जे भारत क जनता बउखला गइल बा। अपने लगावल आग, अपने बुतावे के बेकल होके जनता उठ खड़ा भइल बा। एक बेर गुलामी का मार से हथियार उठवले रहे। आज आजादी का मार से छनमनाके लोहा लेतीया। शिक्षा, राजनीति, सहित्य आ जनता क माने

(शेष पृष्ठ ६१ पर)

बायन मगही

असाढ़ के साँझ

साँझ असाढ़ के घना अएलई
बीत गेलई दिन ढल के।
झूम के बरखे बरखा-धारा
झरा झरर थम्ह थम्ह के।
बइठल अकेले घर के कोनवें
का सोचइथ अप्पन मन में?
हवा सजल हे जूही बन में
चल जाहे का कह के।
जियरा में हिलकोर उठऽ हे
पावे न कूल किनारा
बन के भीगल फूल सुरभि से
काँदऽ हे प्रान बेचारा।
अँधार रात के पहर परब
कउना सुरे जे जा के भरब?
उना भूल से सभे भुलायल
जिया वेआकुल कुहँके।
झूम के बरखे बरखा-धारा
झरर झरर थम्ह थम्ह के॥

—चन्द्रशेखर प्रसाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक परिचय

भीष्म (काव्य) हिन्दी ले० डा० स्वर्णकिरण, प्र० का० १९७० प्र० मिथिलेश प्रकाशन, आरा (बिहार) पृ० सं० ४८, मू० १. ५० छपाई सफाई सुन्दर।

परम्परा में प्रयोग और प्रयोग में परम्परा में निष्ठा राखे वाला डा० स्वर्णकिरण के ई नया कृति ह। 'भीष्म' में महाभारत कालीन भीष्म के चित्र पूरा नइखे उतरल। घुटन के वातावरण में उतरात मानव जीवन के एगो चित्र भीष्म काव्य में उतरल बा जे मनन करे जोग बा।

पुस्तक में सात सर्ग बा। पांचवाँ सर्ग तनी ढेर प्रभावपूर्ण बुझाता। नारी का बारे में कुछ सवाल उठल बा, खासकर के द्रौपदी का बारे में। अपना प्रश्न के हल अपने कवि करतारे, बहुत अंश तक उनका सफलता भी मिलल बा अइसन हमार बिचार बा काहें से कि परम्परा से आवत विचार के एगो नया मोड़ एह खंड काव्य में मिलता।

जय बंगला (भोजपुरी) ले० श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी प्र० भोजपुरी परिवार, पटना-३ प्र० का० १९७१ पन्ना १६ दाम ३५ पैसा।

जय बंगला का नाँवें से पढ़निहार लोग एह किताब में का बा समझ जाई। बंगला देश के आजु के दुर्दशा पर १६ पन्ना में सवैया छंद में लिखल ई छोट मोट किताब पाकिस्तानी अत्याचार, अनाचार, उत्पात, गुण्डा गर्दी, बेशर्मी, अमानुषिकता के पूरा चित्र थोरहीं में घींचि देता। आजु ले इतिहास में एह तरह के बर्बरता आ जुल्म के तसवीर ना मिलल, जे याहिया खाँ बंगला देश पर कर रहल बा। आज काल का जुग में इन्सान का प्रति इन्सान के अइसन अमानवीय व्यवहार ओकर चर्चा, इचिका 'जय बंगला' में पढ़ीं। विद्यार्थी जो अपना भाव प्रकाशन खातिर समस्त समाज के धन्यवाद के पात्र बाड़े।

(पृष्ठ ६२ के शेषांश)

भारत आ भारत क निर्माण बा। भारत जागल बा। विश्व जागता। सभकर लड़ाई अपनो कमजोरी का खिलाफ बा। बाकिर ई त सपना ह। आ ई सपनवाँ हम हरमेशा देखब। कबीर दास कहतान न—'अवधू गगनमंडल घर कीजै।' अर्थात् अवधू, असमान में घर बनावऽ।[1] हम जानतानी कि ई हवाई क़िला ना ह। ई सपना ह आ बड़ा साबित सपना। आवा-तोहा त साँच होई?

---

१. ए अरथ खातिर बिदमानन क सर्टिफिकेट क परवाह नइखे। हम कबीरदास क आपन अदमी हईं। अवधूदास के का लेबे देवे के अरथ—अनरथ से?

—अवधेश प्रधान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संपादक के विचार

एह अंक से 'अँजोर' के बारहवाँ बरिस शुरू होई। बारह बरिस का अपना जिनिगी में 'अँजोर' भोजपुरी साहित्य के का सेवा कइलस ऊ अपने सभे का सामने बा। कतने भोजपुरी के पत्र पत्रिका निकलली बाकिर ढेर दिन आ नियमित रूप से ना चले पवली। एकरा में दोस पत्र-पत्रिकन के नइखे। दोस बा भोजपुरी भाइन के, जिनका ओर से भोजपुरी के ओतना नेह सनेह ना मिलल जे मिले के चाहीं। ओकरो बाद डूबत उतरात अवहीं कतने पत्र पत्रिका निकलि रहल बाड़ी सन। आजु ले भोजपुरी भाई लोगन से भोजपुरी के बढ़ावे आ सजावे खातिर हम बराबर अरज करत अइलीं बाकिर अवहीं ले कौनों सुनवाई नइखे होत। अनेक जनपदीय भाषा के लोग अपना के बढ़ावे आ सजावे खातिर एड़ी चोटी के पसेना एक कइले बा, लेकिन भोजपुरी भाई लोग तनिको कान नइखे देत।

हम घूमि घूमि के सत्र जगह भोजपुरी भाइन से निहोरा कइलीं कि भोजपुरी के बढ़ती खातिर लोग कुछ करे। ओकर नतीजा कुछ नजरि नइखे आवत।

भोजपुरी भाषा के मान्यता के सवाल

भोजपुरी के मान्यता खातिर कई वरिस से 'साहित्य अकादेमी', नई दिल्ली का चौखट पर माथ पटकल जाता लेकिन ओकर कौनो सुनवाई नइखे। 'अँजोर' का कला-११, किरन-१२ में 'नागार्जुन' जी के एगो चिट्ठी छपल रहे। वोह चिट्ठी से ई जाहिर होता कि 'साहित्य अकादेमी' के अध्यक्ष महोदय, श्री चाटुर्ज्या साहब, उनुका से कहले रहीं कि भोजपुरी के मान्यता खातिर उहों के तैयार बानी बाकिर केहू एकर दावेदार नइखे। ओकरा बाद कई जगह से दरखास्त परल, कई गो पोस्टकार्ड लिफाफा लिखइले। भोजपुरी परिवार, पटना से 'भोजपुरी का संक्षिप्त इतिहास और भोजपुरी के प्रकाशित ग्रन्थ, नामक पुस्तक पूरा एक स्मार पत्र का साथ, श्री सत्यनारायण लाल जी का हाथे भेजल गइल। सब दियाइल बाकिर 'साहित्य अकादेमी' का पदाधिकारी भाई लोग से एगो मामूली औपचारिक शिष्टता के निर्वाह ना भइल कि पवला के बुरा चाहे भला कौनो जबावो देसु लोग। डा० प्रभाकर माचवे जी, सुमन जी आ चाटुर्ज्या जी के कई गो चिट्ठी लिखाइल। 'अँजोर' का सम्पादकीय में एह पर कई बेर विचार भइल, लेकिन ओकर कुछ असर ना भइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह साल डा० उदयनारायण तिवारी जी पटना आइल रहलीं। हम त ना जा पवलीं लेकिन श्री गणेश चौवे जी के भोजपुरी परिवार का ओर से भेजल गइल रहे। डा० तिवारी जी वचन दिहलीं, जइसन कि चौवे जी का जवानी मालूम भइल कि भोजपुरी के मान्यता दियावे खातिर उहां का भरपूर कोशिश करवि। सुनि के वहुत कुछ ढाढ़स वन्हाइल।

अप्रिल का महीना में चौवे जी का काशी जाये के रहे। हम ऊहों से कहलीं कि तनों डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी जी से भी मिलि के भोजपुरी के मान्यता पर जोर दियवाईं। चौवे जी गइलीं। मोतीहारी से उहाँ का हमरा के एगो चिट्ठी लिखलीं जे हम हूवहू इहां दे तानी।

पो० वंगरी भाया पीपरा कोठी,
(चम्पारन) ११-४-

श्रद्धेय श्री पांडेय जी,

मैं ता० ७-४ को पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी से मिला। आधे घंटे तक बातें होती रहीं। वे भोजपुरी की मान्यता के पक्ष में नहीं हैं। उन्हें मगही भी मंजूर नहीं है। अन्त में उन्होंने यही कहा कि अगर मगही को मान्यता मिलने लगेगी तो उससे पहले भोजपुरी को मान्यता मिल जायगी। सानन्द होंगे।

चिटठी पढ़ि के हमरा मर्म पर कुछ चोट लागल। जे द्विवेदी जी, मैथिली के मान्यता दियवले, ऊ अपना भोजपुरी के मान्यता का वारे मे अइसन विचार रखिहें ई सुनि के घोर कष्ट भइल। विगत २५ वर्ष में भोजपुरी साहित्य अपना हर दिशा में कतना उन्नति कइले वा एह बात के जानि के भी उहां का अनजान वनल वानी। भोजपुरी के अलावे मैथिली पर अपने का कतना नेह वा इहो पंच देखे। एही साल २७ मई के उदय प्रताप कॉलेज वाराणसी में मैथिली के महासम्मेलन भइल। उद्घाटन कइलीं डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी जी। कहलीं "मैथिली भाषा स्वतंत्र भाषा है। पूर्व में इसमें विद्यापति एवं ज्यातिरीश्वर की रचनाएँ मिलती हैं जिनमें प्राचीन ज्ञान भरा पड़ा है।" उहाँका ईहो कहलीं कि किसी भाषा को और समृद्धशाली वनाने के हेतु केवल यह काफी नहीं है कि उसमें पूर्व में श्रेष्ठ साहित्य था, वरन् यह भी जरूरी है कि नया साहित्य लिखा जाय।' भोजपुरी का पक्ष में अपने के ई सुझाव लागू वा कि ना पंच विचार करे। मैथिली से अपने का नेह वा एकरा पर केहू का कौनों उजुर ना हो सके। वाकी संगे सगे भोजपुरी के भी नेह मिले। उहां के कहला से बुझाता कि भोजपुरी का मान्यता से हिन्दी के हानि होई। कई गो लोक भाषन के मान्यता मिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइल; भोजपुरीये के बेर ई संकट कइसे सामने आइल हा, बुझात नइखे। केकरा से कहल जाय कि भोजपुरी भाषा से राष्ट्रभाषा हिन्दी के बढ़ंती होई। भोजपुरी हिन्दी के कभी उपेक्षा ना कइ सके, जइसे कि पहिलहूँ कहि चुकल बानी कि राष्ट्रभाषा के दामन छोड़ि के कौनों लोक भाषा पनपि ना सके।

साहित्य अकादेमी आ भोजपुरी के मान्यता

'साहित्य अकादेमी' के पदाधिकारी से भोजपुरी के मान्यता के बार-बार माँग हो रहल बा। उहाँ सभे निवेदन पत्र, पत्र या तार तक के कुछ जवाब नइखीं देत। आज काल का जमाना में बिना हलचल हंगामा के कुछ होत जात नइखे। ना हमनीं का प्रधान मन्त्री का फाटक पर धरना दीहलीं ना साहित्य अकादेमी का फाटक पर अपना माँग के फरियाद कइलीं। भोजपुरी के क्षेत्र के मन्त्री चाहे संसदीय सदस्य भाइन के एने ध्याने नइखे जात। भोजपुरी भाषा का सहारे बीसो बिद्वान पी० एच० डी० होके आनन्द लाभ लेता। कुछ विद्वान के विश्वविद्यालय में भोजपुरी पाठय क्रम में रखाइल बा। हर विषय के साहित्य तैयार बा आ हो रहल बा। समस्त भोजपुरी क्षेत्र के जनता दिल्ली पहुँच के आपन माँग करे लागी त एगो समाँ बँध जायी। हमनी का भरसक नइखीं चाहत कि दल बल का साथ दिल्ली पहुँचि के भोजपुरी के मान्यता खातिर हंगामा करीं बाकिर चलार हो गइल पर के बाते दोसर बा। आजु कल्ह हड़ताल, आन्दोलन, घेराव, अनशन बिना कइले कौनों दिशा में कुछ हासिल नइखे होत। भोजपुरियन का भी भोजपुरी माई खातिर ई सब करे के पड़ी।

एने खबर मिलल हा कि डा० उदय नारायण तिवारी जी भोजपुरी के मान्यता खातिर जीव जान से कोशिश कर रहल बानी।

'अँजोर' के सपादक मंडल

'अँजोर' के १२ वाँ वरिस के श्री गणेश दूगो अइसन सुधी सज्जन के सहयोग से हो रहल बा जिनका के संपादक-मण्डल में पाके हम अपनाके धन्य समझत बानी। इहाँ सभे अपना क्षेत्र के सुप्रसिद्ध आ समर्थ स्तंभ हईं। डा० देवसहाय त्रिवेद, पटना विश्वविद्यालय के ओह जुग-जमाना के विभूति हइँ जब पी. एच. डी. पावल असम्भव ना त अत्यंत कठिन जरूर रहे। डिग्री डिप्लोमा अपना जगह पर रहे, डाक्टर साहेब के गुन-गरिमा के आगे के ना मस्तक झुकावल? १९६[illegible] ई० मे 'अँजोर' के पाठक भाई लोग अपने के 'कुतुब मीनार' के विष्णुध्वज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहल सुनले रहे। सादगी, सच्चरिता, आत्मीयता के अवतार 'त्रिवेद' जी हमरा पर हरमेसे अपार छोह देखावत अइलीं। एह अंक में रोहतासगढ़ पर उहाँ के निर्देशन में लिखल ऐतिहासिक गवेषणात्मक निबंध जा रहल बा, जेकर सगरे समादर होइवे करी। संपादक-मण्डल के दोसर नया सदस्य हईं प्रो० ब्रजकिशोर मिश्र जी। वाराणसी के 'भोजपुरी कहानियाँ', 'अँजोर' आ पटना के साप्ताहिक 'योगी' के पाठक लोग से ई नाँव के चिन्हार करावल जरूरी नइखे। अपना अतना नगिचाह आ लगनमान सनेही सँवाँग के 'अँजोर' के संपादन में सामिल कइके हम अघात नइखीं। कविता, कहानी, एकांकी, आलोचना, साहित्य के कवनो विधा पर मिश्र जी के कलम के करामात देखहीं लायक होला। एह दूनों सँवाँगन के हाथ लगवला से, बुझाता जे 'अँजोर' के ऊँचाई आसमान थाही। हम दूनों जने के हार्दिक स्वागत करतानी।

—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

भोजपुरी साहित्य मंडल, बक्सर के २०वाँ अधिवेशन

भोजपुरी साहित्य मंडल, बक्सर का ओर से एहसाल २१ मार्च के चार भोजपुरी साहित्य सेवी के सम्मानित कइल गइल। श्री रघुवंशनारायण सिंह ('भोजपुरी' के संपादक) आ श्री महेन्द्र शास्त्री के स्व० सन्त खाकी बाबा का जिनिगिये में सम्मान कइल गइल रहे बाकी कवनो वजह से 'मानपत्र' सम्मानित विद्वान के ना दियाइल। एह साल श्री रासबिहारी राय शर्मा आ 'अँजोर' के प्रधान संपादक पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय जी मंडल का ओर से अपना भोजपुरी सेवा खातिर सम्मानित कइल गइलीं। मंडल के समारोह के सभापति रहलीं डा० रामविचार पाण्डेय जी।

एह मोका पर एगो कवि सम्मेलन भी भइल जवना में उत्तर प्रदेश आ बिहार के मानल जानल कवि लोग भाग लिहले। सम्मेलन के सफल बनावे में श्री कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र', प्रो० शालिग्राम उपाध्याय, प्राचार्य डा० जितराम पाठक, नोखा मिल के मालिक जगन्नाथ कुमार वर्मा, बक्सर हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री रामाशीष सिंह जी के खास हाथ रहे। आशा बा कि मंडल बक्सर का जन जीवन में भोजपुरी भाषा के प्रति अनुराग भरे में किछुओ उठा ना राखी—बक्सर भोजपुरी क्षेत्र के एगो प्रबल आ पुरान गढ़ जे ह।

—विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रधान संपादक अस्पताल में

पाण्डेय जी का संगे रहत बारह बरिस से अधिका भइल। 'भोजपुरी परिवार' के संचालक आ संयोजक का रूप में सन् १९५६ से आ 'अँजोर' के प्रधान संपादक आ सहकारी का जगह पर सन् १९६० से उहाँ के आ हमार साथ निबहत आइल बा। पहिले पहिल उहाँ से देखादेखी भइल रहे अगस्त १९५८ में। बाहर–भीतर के बुलंदी वाला एह बेमिसाल व्यक्तित्व के संपर्क पावे के सौभाग्य हमरा ना जाने कवना कमाई के सुफल रहे। उमिर का हिसाब से कम से कम पनरह–सोरह साल के फरक रहलो पर बेवहारमें बरोबर के कहो, अधिकतर हमहीं बूढ़ आ पाण्डेय जी नवही लेखा रहत अइलीं हाँ। योगासन से साधल–साजल उहाँ के देहि-धाजा एहू घरी अपना असली उमिर से दस-बारह बरिस कमे के लउकेला। फाइलेरिया, टांसिलाइटिस आ कूल्हा के दर्द उहाँके कबो-कबो सतावत आइल, बाकी दुइए चार दिन तक। एने करीब एक महीना से छाती के बाँयाँ ओर खुजलाहट आ बाथा के बात हमरा मालूम रहे। पटना के एगो नामी जर्राह से कवनो मलहमो लगावल गइल, होमियोपैथिक दवाई आजमावल गइल, पर आराम कहाँ ले होइत तकलीफे बढ़त गइल। २ जुलाई के 'हुंकार' प्रेस में 'अँजोर' के प्रूफ देखत रहीं कि उहाँ के आत्मज पाण्डेय समीर कुमार हड़बड़ाइले पहुंचले आ कहले कि रउवा के 'काका' तुरत बोलवले हा। राति के ८ बजत रहे। बातचीत से हमरा अचके मे आइल कवनों संकट के आभास मिलल। 'शांतिकुटीर' (सालिमपुर अहरा) में पइसते वातावरण गंभीर जनाइल। घर में कवनों आवाज ना, सभे चुप। पाण्डेय जी हमरा के अपना शयन-कक्ष में आराम कुर्सी पर बइठा के अपने से सहज, स्वाभाविक ढंग में बतावे लगलीं। "काल्हु बबुआ (उहाँके रिश्तेमन्द नगर के नामी डाक्टर स्वामीनन्दन,प्रसाद) से छाती के घाव देखावे गइल रहीं त ऊ तुरते 'वीर' जी (मशहूर सर्जन डा. आर. भी. पी. सिन्हा) कीहाँ पेठवले। ए भाई, डा. आर. भी. पी. देखते मातर लगले कहे जे अतना दिन से पांसले रहलीं हाँ, कई बेर भेंटो भइल होई बाकी एकर जिकिर ना कइले होखबि कबो ? जाईं, काल्हु खून, पेशाब के जाँच कराके आईं। जवन भइल तवन भइल, अब देरी करेके काम नइखे।" पाण्डेय जी ई हो बतवलीं कि डा. नरेन्द्र प्रसाद, डा. यादव आ डा. यू. एन. शाही जी के भी कहनाम से कैन्सर के सुबहा बुझाता। सभे तुरंते आपरेशन के सलाह देता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम का कहितीं। लागल जइसे गोड़ तर के धरती धसति होखे। तरह-तरह के रोगी के लगे-पँजरा रहि के जथा जोग सेवाके मोका मिलत आइल बा, कैन्सर के नाँवें सुनत करेज काँपि जाला। छन भर के वाद 'राम तपस्वी राजा' के 'सकल काज' साजनिहार के सुमिरन से बुझाइल कि घवड़ाए के कवनो काम नइखे। अँगवाई-पँगवाई ह। एके परिवार ना, हजारन-हजार लोग के आसरा-भरोसा पाण्डेय जी वानीं। का सभे करमजरुए वा? ना-ना, अइसन ना हो सके। अपने दू-दू बार के 'एनेस्थीसिया' के अनुभव का आधार पर हम उहाँके आश्वस्त करत विहने जाके अस्पताल में भरती हो जाए के आग्रह कइके घरे लवटलीं। सोमार ५ जुलाई के पाण्डेयजी के घाव के सफल आपरेशन भइल 'राजेन्द्र सर्जिकल वार्ड' में डा. आर. भी. पी. सिनहा का सधल हाथ से। बाँयाँ काँख से लेके बाँयाँ छाती तक करीव एक फुट लंवा एह दू घंटा के आपरेशन में सात गो गिल्टी निकालल गइल। डाक्टर साहेव के कहनाम वा कि अव कवनो डर नइखे। 'वायोप्सी टेस्ट' के रिपोर्ट से सुवहाँ साँच निकसल — रोग के सुरुआत रहल हा।

भारत प्रसिद्ध सर्जन, पटना मेडिकल कालेज आ पटना विश्वविद्यालय के सर्जरी विभाग के अध्यक्ष डा. श्री रामवीरेन्द्र प्रसाद सिनहा के जतने धन्यवाद दिया सकी, कमे होई। ई वतावे के नइखे कि डाक्टर साहेब शाहावाद जिला के सुप्रसिद्ध स्थान सूर्यपुरा के वंशधर हईं। अपने के मिलनसार आ अपनइती भरल सुभाव से के ना निहाल भइल? 'भोजपुरी परिवार, पटना' के मुँहें सँउसे भोजपुरी जगत अपने के पाण्डेय जी के एह भयंकर संकट से उबारि लेला खातिर कोटि-कोटि धन्यवाद देता। उहाँ के नीके तरे देखरेख खातिर डा. प्रधान, डा. पाण्डेय एस. के. सहाय, डा. पाल, डा. मुरलीधर आ 'एच' वार्ड के 'नर्स सिस्टर' लोग भी अनेक धन्यवाद के पात्र वानी। पाण्डेय जी के स्वास्थ्य में सुधार हो रहल बा। शारीरिक कष्ट त केकरो अपने अँगजे के होला वाकी आन केहू के भी कुछ वाँटे के परेला। पाण्डेयजी के मित्र-मंडल आ शुभाकांक्षी अनगिनित लोग वा। हमनी का तीन-चार दिन ले उहाँ के रोग का वारे में एह डरे चरचा ना चलवलीं जा कि अस्पताल में तिल धरे के जगह ना मिली। लोगन का ताँता लगवला से रोगी के आराम के जगहा तकलीफ के अनेसा रहेला। तवहूँ भाई प्रो. व्रजकिशोर जी से ना ठटाइल। उहाँ का साप्ताहिक 'योगी' मे पाण्डेयजी के "कैन्सर के चंगुल में" से निकसला के समाचार का साथे सँउसे भोजपुरी समाज के शुभकामना जनाइए दिहलीं अपना भावुक, मोहक शैली में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'संपादक के विचार' वाला स्तंभ प्रेस में देला के बाद पाण्डेयजी अस्पताल में भरती भइलीं । एह अंक के करीब-करीब सभे जोगाड़ जुटा चुकल बानी उहाँ का अपने हाथे । कहे के त ना चाहीं (वाकी महटिअवलो से अकाज होला), उहाँका अस्पतालो में रहि के 'अँजोर' के तेल में कमी नइखों होखे देत । नाहीं त हमनी में केकर अइसन बूता वा कि ओकरा बुड़ला-उतरइला के फिकिर करो ! भूत भावन भगवान शंकर भोजपुरी भवानी के एह सपूत के निर्विघ्न 'शतायु' करसु हमनी के ईहे खखन बा ।

—विद्यार्थी

विश्वविद्यालय में भोजपुरी

ई अंक छपत-छपत श्री गणेश चौवे जी के चिट्ठी से एगो शुभ समाचार मिलल हा जे सुनि के 'अँजोर' के पाठक भाई लोग के वहुत खुशी होई। विहार विश्वविद्यालय में एगो प्रमुख भाषा आ आधुनिक भारतीय भाषा का रूप में इंटरमीडिएट आ डिग्री कोर्स में भोजपुरी के पढ़ाई खातिर मान्यता मिल गइल । इंटरमीडिएट में एही सत्र से पढ़ाई चालू हो जाई । सिलेबस तइयार करे खातिर एगो कमिटी वनल हा जे आपन काम शुरू कर देलसि । कालेजन में भोजपुरी परिषद स्थापित हो रहल बाड़ी स । विश्वविद्यालय स्तर पर डा. लल्लन प्रसाद सिंह जी के अध्यक्षता में एगो भोजपुरी विकास परिषद के भी स्थापना भइल हा । मोतिहारी के मुंशी सिंह कालेज के प्राचार्य श्री भोलानाथ सिंह जी एह काम में वहुत दिलचस्पी ले रहल वानी आ अपना इहाँ भोजपुरी विभाग खोलवा देनी ।

विहारके आउर विश्वविद्यालयनके आ साथे साथे पूरबी उत्तर प्रदेश के विश्व-विद्यालय खासकर काशी विश्वविद्यालय आ गोरखपुर विश्वविद्यालयके एह काम में देरी ना कइके लगले यश के भागी बने के चाहीं । 'पटना आ मगध विश्वविद्यालय में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के-एक-से एक दिग्गज विद्वान बाड़े जिनिका ठाढ़ हो गइला से भोजपुरी के आपन वाजिब जगह मिले में कवनों अड़चन ना होई । मुंशी सिंह कालेज, मोतिहारी एह शुभ काम में सबसे आगे वा । तिरहुत कमिश्नरी के आउर कालेज भी ओकर उदाहरन के अनुकरन करिहें, ई विश्वास वा ।

—विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भिखारी ठाकुर

'अँजोर' के आखिरी फरमा छपत-छपत ई खबर सुनाइल कि भिखारी ठाकुर के सरग-वास हो गइल। पहिले 'आकाशवाणी' से साँझ के समाचार मिलल ओकरा बाद बिहने अखबारन के पहिला पन्ना पर छपल खबर पढ़ल गइल। भिखारी ठाकुर के मन कामना रहे कि उनुकर चोला छूटो त गंगा के तिरवाहीं, अपना गाँवे में। 'रखिहऽ चरन के सरन ! ए मोर गंगा जी हो ! ईहे अतना भरोस, जनम-भूँइ बा परोस, ए मोर गंगा जी हो, कवनो विधि हो जाई तरन !' से ही भइल। सनीचर ता० १० जुलाई १९७१ के कुतुपर में भिखारी ठाकुर के गंगा लाभ हो गइल।

भिखारी ठाकुर एह धरती पर उतरल रहले आजु से करीब ८४ वरिस पहिले—विक्रम संवत १९४३ (ईसवी सन् १८८७) के पूस के अँजोरा पंचमी दिन सोमार के दुपहरिया में 'आरे' जिला के उत्तर-पूरव 'छपरा' के सीवान पर गंगा के किनारे 'कुतुपुर' गाँव मे। सन् १९६४ ई० में भोजपुरी परिवार, से प्रकाशित श्री महेश्वर प्रसाद के लिखल 'जनकवि भिखारी ठाकुर' ग्रंथ मे उनुकर पुरहर परिचय दीहल गइल बा। काल्हु तक ऊ वर्तमान रहले अब इतिहास के बात हो गइले। उनुका बारे मे कतने जने आहे पर, सुनल-सुनावल कथ के बिना सोचले-समुझले कहि के पत्र-पत्रिकन में भा 'रेडियो' स्टेशन के स्टूडियो में आदर के जगह बना लेले बाड़े ई हमरा मालूम बा। ऊ लोग भिखारीए ठाकुर ना, कवनो बड़ से बड़ महापुरुष के नाँव लेके आपन काम बनावे के लूरि-ढंग में माहिर होला, चाहे केहू कबीर-तुलसी के नाँव ले चाहे केहू मार्क्स भा गाँधी के। अबहीं चलती ओही लोगन के बो।

एगो ऊहो दिन आई जब हो-हल्ला पटिआई, आ हँड़ोराइल पानी थिराई तब बुझाई कि 'भिखारी ठाकुर' का रहले हा, का कहल हा। उनुका उठि गइला से महफिल सून हो गइल ई बात बतावे के नइखे। तबहूँ पचास बरिस ले जन-मानस पर चढ़ल तसवीर हालाहाली ना उतरी। 'भोजपुर' आ 'भिखारी' दूनों के आपन-आपन गौरव-गरिमा रहलो पर एक-दोसरा से एक-दोसरा के नाँव निसानी उजागर भइल हा। भोजपुरी के भिखारी ओह घरी तक बहुत कुछ दे चुकल रहले जब पहिले-पहिल महापंडित राहुल साँकृत्यायन उनुका के 'भोजपुरी के सेक्सपियर' कहि के लोगन के चिहा दिहले। कहनाम के गम्भिरापन के तउले के ताकत जेकरा ना रहे ऊ हे सुनते मातर ठहाका लगा देला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भिखारी ठाकुर के ऐतिहासिक महत्व लोग के मानहीं के परी। आजु से २४ वरिस पहिले भिखारी कहले रहन—

अबहीं नाम भइल वा थोरा। जन ई छूट जाई तन मोरा।
तेकरा बाद पचास वरीसा। तेकरा बाद बीस दस तीसा।
तेकरा वाद नाम हो जइहन। पंडित कवि सज्जन जस गइहन।

अपढ़ भिखारी ठाकुर के भविष्यवाणी साँच भइल देखे खातिर का सचहूँ हमनी के ५० वरिस ले ठहरे के परी? भोजपुरी के भाग कवले जागी ई ओह जनकवि के का अगतहीं भाँसल रहे? बंगला, उड़िया, महाराष्ट्री आ पंजावी रंगमंच एही शताब्दी में कहाँ से कहाँ पहुँचल बा ई हो का कहे के होई? विदेसी हाकिमन के गइला का वादे नूँ रेडियो आ नृत्य-कला-मंदिरन के माध्यम से लोक गीत आ नृत्य के प्रचार-प्रसार खातिर सरकारी सहायता मिले लागल हा? ओकरा पहिले से अपना किरती के जरिए भिखारी ठाकुर देसादेसी में भोजपुरी के धाजा गड़ले। वड़-बूढ़, लरिका-सेयान, मरद-मेहरारू, राजा-रंक सवके सराहना पवले। अइसन एकवाली आदमी हरदम ना होखसु। भोजपुरी महतारी के एह सपूत का करनी से कतने लोग फायदा उठावल। सभे जिनिकर मुँह जोहत रहे, ऊ आजु एह लोक के कमाई पूरा कइके भगवान का दुअरा आपन वयान सुनावे चलि गइले। हमनी के उनुकर 'शतायु' होखे के कामना करत रहीं जा। 'भोजपुरी परिधार', पटना के संचालक पाण्डे जी कवना-कवना तरह से उनुका के "जनकवि भिखारी ठाकुर' किताव खातिर आपन फोटो खिंचवावे के तइयार कइले रहीं ई एह घरी कहे के नइखे। ओकरा वाद त ऊ पाण्डेयजी कीहाँ कई वेर अइले गइले। उड़ंतू पंछी के पिंजड़ा कवो वान्हि ना सकल। नाच-तमासा, रोजगार-धंधा में लागल रहलो पर भिखारी ठाकुर के भक्त-हृदय भगवान के भुलवले ना रहे। उनुका के अक्षर-ज्ञान देवे वाला पहिला आदमीके नाँव रहे भगवान "वनियाँ गुरू नाम भगवाना"। भगवान, भोजपुरी आ भिखारी एह तीनो नाँव के महिमा केकरो कहला विना कम थोरे होई? आपन 'जन' के अपना लगे वोलाके भगवान परम शांति देवे करिहें। 'भोजपुरी परिवार' उनुका आत्मज श्री शिलानाथ ठाकुर भिरी आपन सोग आ उनुकर सांत्वना के सनेस लेके पुछार में शामिल वा।

—विद्यार्थी

☆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई अँजोर

दियरी के तन-मन-धन हवे रे!
ई अँजोर आँखि के खखन हवे रे!
हीरा हवे, मोती हवे
जगमग जोती हवे
अनमोल सचहूँ रतन हवे रे!
लागल धेयान हवे
जागल गेयान हवे
तपसी के कवनो जतन हवे रे!
रतिया के भोर हवे
किरिनि के कोर हवे
सुदिन के सुभ ई लगन हवे रे!
ठानल परन हवे
जागरन छन हवे
निभरम बढ़त चरन हवे रे!

—निभरम—

घोषणा-पत्र

१. प्रकाशन स्थान—पटना

२. प्रकाशन की नियतकालिका—त्रैमासिक

३. मुद्रक का नाम – पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय
राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—सालिमपुर अहरा, पटना-३

४. प्रकाशक का नाम—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय
राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—संचालक, भोजपुरी परिवार, पटना-३

५. समाचार पत्र के मालिकों और कुल पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक शेयरवालों का नाम और पता—पाण्डेय नर्मदेश्वर, सहाय, सालिमपुर अहरा, पटना--३

६. मैं, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, इसके द्वारा घोषित करता हूँ कि ऊपर दिये गये व्योरे जहाँ तक मेरी जानकारी तथा विश्वास है, सही हैं।

(ह०) पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रगति के पथ-चिह्न

बिहार ने १६५१-६६ की अवधि में तीन पंचवर्षीय एवं तीन वार्षिक योजनाओं के माध्यम से विकास कार्यों में लगभग ७८४ करोड़ ६७ लाख रुपये लगाये गये हैं।

१८ वर्षों की इस अवधि में हमारी खाद्यान्न उत्पादन की वार्षिक क्षमता ५१ लाख टन से बढ़कर ८५ लाख टन से भी ऊपर पहुँच गयी है।

वृहत् और मध्यम श्रेणी की सिंचाई योजनाओं द्वारा साढ़े ४६ लाख एकड़ खेत की पक्की सिंचाई का प्रबन्ध हुआ है, जिसमें करीब ३१ लाख एकड़ खेत में पटवन हो रहा है।

आहर, पईन, बांध, कुएं और नलकूपों और पम्पिंगसेटों के जरिये भी लगभग २६ लाख एकड़ खेत के लिए पटवन का प्रबन्ध है।

प्राथमिक स्कूलों की संख्या १६५२ में २३६६६ थी जो आज ४४,५०० है। छात्र-छात्राओं की संख्या साढ़े १४ लाख से बढ़कर करीब ४४ लाख हो गयी है। माध्यमिक स्कूलों की संख्या, जो १६५१ में ६४३ थी, आज २,२७५ है और छात्र-छात्राओं की संख्या भी २ लाख से बढ़कर ५ लाख हो गयी है।

—बिहार सरकार के जनसम्पर्क विभाग द्वारा प्रसारित—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार की जन संख्या में २० लाख की कमी

१९७१ की जनगणना के अनुसार बिहार की आबादी में लगभग १ करोड़ की वृद्धि हुई है जो जन संख्या वृद्धि की दर के आधार पर किये गये पूर्व अनुमान से लगभग २० लाख कम है।

बिहार में जन संख्या वृद्धि २१.३ प्रतिशत हुई है जबकि राष्ट्रीय दर २४.५ है।

१९६६-६७ से १९७०-७१ तक बिहार में ४६७४८५ नस-बंदी आपरेशन तथा १९१३७३ लूप प्रविष्टि हुई है। १९७०-७१ में लगभग ५० लाख निरोध का वितरण हुआ है।

कल्याण योजना

मातृ-शिशु कल्याण केन्द्रों तथा प्रसूति-अस्पतालों में गर्भवती महिलाओं को टेटनस निरोध सूई तथा खून की कमी रोकने के लिए फोलिक एसिड की गोलियां दी जाती हैं। छोटे बच्चों को घातक रोगों से बचाव के लिए मातृ-शिशु अस्पतालों में ट्रिपल एंटिजन को सूई तथा विटामिन 'ए' दिये जाते हैं।

परिवार नियोजन वास्तव में परिवार-कल्याण योजना है।

—राज्य परिवार नियोजन व्यूरो द्वारा प्रसारित।

'अँजोर' के सालाना चन्दा —चार रुपया
एह अंक के —दू रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर्यटकों का आकर्षण केन्द्र : बिहार

पाटलीपुत्र के प्राचीन राजनगर, नालंदा के विश्ववि-
विद्यालय तथा राजगृह के भव्य दीवारों के भग्नाव-
सासाराम स्थित शेरशाह का मकबरा, लौरियानन्दनगढ़
अशोक स्तम्भ, बोधगया, देवघर, पारसनाथ और पावा
के प्राचीन मन्दिर और पटना सिटी के सिख गुरुद्वारा
अवश्य देखें।

राजगृह के गर्म जल झरनों में स्नान करना तथा छो-
नागपुर के जलप्रपात, मनोरम पहाड़ियों, झीलों और जं-
के प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन करना न भूलें।

जमशेदपुर, हटिया (रांची), धनबाद, पंचेत, मैथन, सिं-
तथा बरौनी के सुविख्यात औद्योगिक केन्द्रों का परिदर्शन
पटना, राजगृह, गया, रांची और मुजफ्फरपुर में टुरिस्ट
तथा उत्तम कोटि की आरामदेह मोटरगाड़ियाँ भी सुलभ
राजगृह, वैशाली, नेतरहाट (पलामू), और हजारीबाग
पर्यटकों के आवास की सुविधा के लिए उत्तम कोटि
आरामदेह टुरिस्ट बंगलों की स्थापना पर्यटन विभाग
की गयी है। राजगृह में, जापान-भारत सर्वोदय मित्रता
जापान के सहयोग से रत्नागिरि के शिखर पर निर्मित
स्तूप के परिदर्शन के लिए पर्यटन विभाग द्वारा
राज्जुपथ का संचालन किया गया है। मात्र एक
प्रति व्यक्ति की दर से शुल्क देकर रज्जुमार्ग की यात्रा की
सकती है। विशेष जानकारी के लिए पर्यटक सूचना
मजहरुलहक पथ, पटना-१ (दूरभाष संख्या—२५२१५
सम्पर्क स्थापित करें।

पर्यटन विभाग, बिहार

मुद्रक—हुंकार प्रेस, न्यू मार्केट, पटना—१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[बिहार सरकार द्वारा विद्यालय आ पुस्तकालय खातिर स्वीकृत]

अँजोर

[भोजपुरी परिवार (पटना) के त्रैमासिक मुख-पत्र]

जा में रस कछु होत है, ताहि पढ़त सब कोय ।
भाव अनूठो चाहिए, भाषा काहू होय ।

प्रधान सम्पादक

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

कला—१२
अक्तूबर—१९७१

किरिनि—३-४
जनवरी—१९७२

भोजपुरी परिवार,

पटना—३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह अंक में पढ़ीं

पृष्ठ

१. सॉनेट (कविता)—अशोक द्विवेदी — १

२. हिन्दी का व्यवहार क्षेत्र: बोलियों का प्रश्न (हिन्दीनिबंध) —डा० गोपाल राय — ३

३. जीरादेई (कविता)— अनिरुद्ध — १०

४. मौलिक एकता आ भाषा (निबंध)—अवधेश प्रधान — ११

५. लागल (गजल)—आचार्य महेन्द्र शास्त्री — १८

६ रउवा राजा बाबू हउवा—डा० विवेकी राय — १६

७ गजल—सिद्धेश्वर नाथ सिंह — २[illegible]

८. सीख (कहानी)—राम वृक्ष राय 'विधुर' — २[illegible]

९. गजल— सीताराम चन्द्र शरण 'राम' — २[illegible]

१०. भूत से भिड़न्त (कहानी)—अध्यापक 'अचल' — २[illegible]

११. सोनार बांगला (कविता)—धीरेन्द्र प्रसाद सिन्हा 'धवल' — २[illegible]

१२. आज के शिक्षा के सरूप—महंथ मिश्र — ३[illegible]

१३. बरात-जतरा (हास्य-कथा)—उमाशंकर सहाय — ३[illegible]

१४. बउधाव के भरोस (कविता)— विश्वनाथ— — ३[illegible]

१५. धांधली (कहानी— अरुण मोहन 'भारवी' — ३[illegible]

१६. चेतावनी (कविता)—विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' — ४[illegible]

१७. चिट्ठी-पत्री—दण्डीस्वामी विमलानन्द सरस्वती — ४[illegible]

१८. आवे दऽ (कविता)—अविनाशचन्द्र विद्यार्थी — ४[illegible]

१९. फुलइहऽ जनि बतिया (गीत)—सत्यनारायण 'सौरभ' — ४[illegible]

२०. भोजपुरी के प्रकाशित साहित्य के सूची — ४[illegible]

२१. पिया मोर थोरे बोलऽ—प्रो० प्रभुनाथ सिंह — ५[illegible]

२२. परिवर्तन (कहानी)—डा० 'स्वर्ण किरण' — ५[illegible]

२३. मंगनी के बासन (ललित निबंध)—ब० उ० 'असीम' — ५[illegible]

२४. पुस्तक-परिचय — ५[illegible]

२५. संपादक के विचार — ५[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

अँजोर

धरती के लोर बाट जोहि रहल भोर के
पह फाटल, बिहँसी अब किरनियाँ 'अँजोर' के

कला—१२ | अक्तूबर १९७१ : जनवरी १९७२ | किरिनि ३—४

सॉनेट

खोंखर बानी हम । हमार हालत बा ओइसे
जइसे बरखा में दियँका कऽ खाइल बाँस ।
हमरे सँग कऽ टेढ़-मेढ़ मेटखुनियों गँव से
फरत-फुलात आज बाड़न सऽ । कइसे साँस
निकालीं, कसल जात बा मउवत होके फाँस ।
केतनो जोर लगावत बानी नइखे छूटत;
इहे लचारी रोवा रहल बा सौ-सौ आँस ।
हमरे सोझा हमरे के छिन-छिन बा लूटत
जिनिगी के बिसवास । तबहियों नइखे फूटत
आस कऽ किरिन केवनो । बड़ जालिम अन्हार बा:—
काल क डंडा मारत बाटे, नइखे टूटत—
सरबस उभिरि लूटि के छाती पर सवार बा ।
भय हमरा पेटे में घुसि के चूसत बा रस ।
जिनिगी खरच होत बाटे गरीब के धन अस ।

—अशोक द्विवेदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी का व्यवहार क्षेत्र : बोलियों का प्रश्न

—डा० गोपाल राय

[त्रैमासिक 'समीक्षा' से सभार]

अब तक यह प्राय: मानकर चला जाता रहा है कि कमसे कम सात राज्य बिहार, 'उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली—'हिन्दी' भाषी हैं। दक्षिण के अहिन्दी भाषाभाषियों के मन में यह आशंका बराबर बनी रहती है कि इतने बड़े क्षेत्र की भाषा 'हिन्दी' हमा अस्तित्व को संकट में डालना चाह रही है। उनका हिन्दी विरोध इ अकारण और तथ्यरहित आशंका का भी परिणाम है। वे नहीं जान कि इन सात राज्यों में 'हिन्दी' अपने वर्तमान रूप में सर्वत्र नहीं बोली जाती बिहार में मुख्य नगरों के पाँच दस प्रतिशत (इसका बहुत सही आँकड़ा कि के पास नहीं है) प्रतिष्ठित लोगों को छोड़कर 'हिन्दी' (आधुनिक हिन्दी अन्यत्र कहीं नहीं बोली जाती। उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि की भी लगभग यही स्थिति है। केवल दिल्ल और उसके आसपास 'हिन्दी' मातृभाषा और कामकाज की भाषा के रूप प्रयुक्त होती है। इस 'तथाकथित हिन्दी क्षेत्र' में व्यापक रूप से बोल जानेवाली भाषाएँ भोजपुरी, मैथिली, मगही, अवधी, ब्रजभाषा, माल छत्तीसगढ़ी, कौरवी, राजस्थानी, बुन्देलखंडी आदि हैं। इनमें राजस्थान अवधी और ब्रजभाषा का तो साहित्य भी बहुत समृद्ध है। बिहार में मैथि का साहित्य भी समृद्ध कहा जा सकता है, क्योंकि इसमें विद्यापति का साहि शामिल है। अब तक, गलत या सही, इन भाषा क्षेत्रों के निवासी यानी, यहाँ के प्रबुद्ध जन—साधारण जनता आज भी भाषा चेतना से रहित है—अपने को 'हिन्दी' भाषी घोषि करते रहे हैं। इन क्षेत्रों के साहित्यकार अपनी 'मातृभाषाओं' छोड़कर 'हिन्दी' में कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना आदि लिख रहे हैं। भोजपुरी भाषी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और प्रेमचन्द, अवधी भाषी महावीर प्रसाद द्विवेदी और सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', गढ़वाली भाषी सुमित्रानन्दन पन्त, ब्रजभाषाभाषी नगेन्द्र, राजस्थानी भाषी अगरचन्द नाहटा और मोतीलाल मेनारिया, छत्तीसगढ़ी भाषी माखनलाल चतुर्वेदी, बुन्देलखंडी भाषी वृन्दावन लाल वर्मा, मगही भाषी रामधारी सिंह 'दिनकर' और हं कुमार तिवारी, मैथिली भाषी नागार्जुन और फणीश्वर नाथ 'रेणु'—कितने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाम गिनाएं जाएं' सबने 'हिन्दी' में रचनाएँ कीं। प्रश्न उठ सकता है, क्या 'हिन्दी' इन लेखकों की भाषा नहीं है? क्या इन्हें पढ़ने वालों की भाषा 'हिन्दी' नहीं है? क्या इन लेखकों की रचनाएँ केवल दिल्ली के आसपास पढ़ी जाती हैं? इन प्रश्नों का उत्तर देने की जरूरत नहीं। निस्सन्देह 'हिन्दी' समस्त मध्यदेश की भाषा है। पर यह दुष्ट किन्तु सच्चा सवाल फिर पैदा हो जाता है : इस क्षेत्र की अन्य भाषाएँ क्या हैं?

कुछ लोग बहुत सतही ढंग से जवाब देकर निकल जाना चाहते हैं कि 'ये हिन्दी की बोलियाँ हैं, इन्हें अधिक महत्त्व देने की जरूरत नहीं।' वे नहीं जानते कि इस जवाब से हिन्दी का कितना अनिष्ट कर रहे हैं। वस्तुतः भाषा-विज्ञान की प्रारम्भिक जानकारी रखनेवाला भी जानता है कि 'भाषा' और 'बोली' में कोई तात्त्विक अन्तर नहीं होता और किसी क्षेत्रविशेष के आर्थिक राजनीतिक, साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध होते ही उस क्षेत्र की 'बोली' 'भाषा' में बदल जाती है। भारत में गणतन्त्र की स्थापना के बाद सभी क्षेत्रों में राजनीतिक चेतना दिनोदिन बढ़ती जा रही है और समृद्धि की दिशा में भी थोड़ी बहुत प्रगति हो रही है। परिणामतः भाषाई चेतना बहुत उग्रता से विकसित होने लगी है। बिहार के मैथिली क्षेत्र में मैथिली 'बोली' से 'भाषा' बन गयी है। स्कूलों और कॉलेजों में मैथिली विधिवत् पढ़ाई जाती है और अब तो साहित्य अकादमी ने उसे मान्यता भी प्रदान कर दी है। मैथिली भाषियों की जागरूक और सक्रिय संस्था 'चेतना समिति' ने, जो पटना में अवस्थित है, बड़े पैमाने पर इसी महीने विद्यापति पर्व मनाया है और दो ढाई लाख की लागत पर विद्यापति भवन का निर्माण होने जा रहा है। मैथिली को संविधान की आठवीं सूची में सम्मिलित कराने का आन्दोलन भी चल रहा है। कुछ दिनों में अलग मिथिला प्रान्त बनाने का आन्दोलन चलेगा ही। इससे एक विचित्र स्थिति पैदा हो गयी है। 'हिंदी' वाले विद्यापति को हिंदी का कवि मानते रहे हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास में विद्यापति का सम्मानपूर्ण स्थान है। हिंदी की पाठ्य पुस्तकों में विद्यापति के पद अनिवार्य रूप से सम्मिलित किये जाते हैं। हिंदी एम० ए० की कक्षाओं में विद्यापति उसी प्रकार पढ़ाये जाते हैं जिस प्रकार सूर, तुलसी और कबीर। पर अब मैथिली वाले कहते हैं कि विद्यापति हिंदी के कवि नहीं हैं! विद्यापति पर्व हिंदी वाले नहीं, मैथिली वाले मना रहे हैं! नागार्जुन हिंदी के नहीं, मैथिली के लेखक हैं! साहित्य अकादमी उन्हें मैथिली के प्रतिनिधि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के रूप में रूसभ्रमण के लिए भेजती है। वह हिन्दी कवि नागार्जुन को नहीं मैथिली कवि 'यात्री' को (मैथिली में नागार्जुन का ही नाम यात्री' है) पुरस्कृत करती है। नागार्जुन मैथिली के प्रतिनिधि के रूप में साहित्य अकादमी के सदस्य हैं।

और यदि मैथिली 'बोली' से 'भाषा' में बदल जा सकती है तो राजस्थानी, ब्रजभाषा और अवधी को कौन रोक सकता है? राजस्थानी का प्राचीन साहित्य ही नहीं आधुनिक साहित्य भी मैथिली की तुलना में अधिक समृद्ध है। अवधी में गोस्वामी तुलसीदास और मलिक मुहम्मद जायसी जैसे महाकवि हो गये हैं. जिनकी तुलना में विद्यापति बौने हैं। ब्रजभाषा में सूरदास, नन्ददास, मीरा, बिहारी, देव, पदमाकर, घनानन्द जैसे उच्च कोटि के कवि हो गये हैं। साहित्यिक समृद्धि की दृष्टि से ये 'भाषाएँ' अग्रणी हैं। फिर उन्हें 'बोली' कह कर कैसे टाल दें? कल को इन भाषाओं के क्षेत्रों के लोग साहित्य अकादमी से मान्यता की मांग करें---मांग शुरू हो गयी है-- तो इन्हें कौन रोक सकता है? फिर भोजपुरी को ही कौन रोक सकता है जिसके बोलने वाले पांच करोड़ हैं! भोजपुरी साहित्य! वह भी हिन्दी साहित्य में से ही निकल आयेगा कबीर भोजपुरी के सबसे बड़े कवि होंगे! उसमान, दरियादास, धरनी दास-अनेक कवि और लेखक 'हिन्दी साहित्य' से दल बदल कर भोजपुरी परिवार में सम्मिलित हो जाएंगें! आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डा० उदय नारायण तिवारी, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा आदि रातोरात भोजपुरी के लेखक बन जाएंगें! प्रेमचन्द तक भोजपुरी के उपन्यासकार बना दिये जाएगें! हम सब हिन्दी में लिखना छोड़ राजस्थानी, ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी या अपनी अन्य 'मातृभाषाओं में लिखना शुरू कर देंगे। हम आन्दोलन करेंगे और साहित्य अकादमी को झख मार कर मान्यता देनी पड़ेगी! मैथिली को जब मान्यता मिल चुकी है तो औरों को क्यों न मिलेगी? भारतीय हिन्दी परिषद के प्रस्ताव पास करने से क्या होता है[1]? जब इसके लाभ स्पष्ट हैं, तो उनसे इन 'भाषाओं को वंचित करने का अधिकार किसको है?

समस्या चक्कर में डालनेवाली है। हम कल्पना करें कि आजसे बीस या तीस साल बाद हिन्दी क्षेत्र की सभी 'भाषाओं' को साहित्य अकादमी की मान्यता मिल चुकी है; उनके आधार पर राज्य भी बन चुके हैं; स्वभावतः उन राज्य

१. भारतीय हिन्दी परिषद के ग्वालियर अधिवेशन में प्रस्ताव पास कर साहित्य अकादमी से अनुरोध किया गया कि वह हिन्दी क्षेत्र भाषाओं को मान्यता न प्रदान करे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की राजभाषाएँ भी वे भाषाएँ बन चुकी हैं। तब हिन्दी का व्यवहार क्षेत्र क्या होगा? उसका साहित्येतिहास कैसा होगा? उसके लेखक कौन होंगे? पाठक कौन होगें? हिन्दी के सामने यह संकट, यह समस्या, इस रूप में इसके पहले नहीं आयी थी। आज इस समस्या पर गहराई से सोचने की जरूरत है। पहले हम 'हिन्दी' वाले (भोजपुरीभाषी होते हुए भी अपने को 'हिन्दी' वाला मानता हूँ) इस पर सोचें। हिन्दी के आचार्यों और पीठाधीशों ने इस पर सोचना बन्द कर दिया है। उन्हें संकट का ज्ञान नहीं है। संकट का थोड़ा बहुत आभास तो उन्हें है, पर वे उसे गुर्राकर दूर कर देने का सपना देख रहे हैं। डॉ० रामविलास शर्मा अपने भाषण में[1] मराठीभाषियों का उदाहरण देते हुए कहते है कि जब कोई महाराष्ट्री 'कोंकणी' का प्रश्न उठाता है तो वह वरिष्ठ मराठीभाषियों द्वारा डाँट कर चुप कर दिया जाता है। गरज कि हिन्दी में भी यही होना चाहिए। यह समाधान तब तक तो ठीक है जब तक कि डाँट दिया जाने वाला व्यक्ति चुप रहता है, पर यदि उसने भी जवाब देना शुरू कर दिया तब क्या हो? हिन्दी में यही हो गया है, जिसे डॉ० रामविलास शर्मा और हिन्दी के अन्य विद्वान नहीं समझ रहे हैं। मैथिलीभाषी इस डाँट से अब चुप नहीं हो सकते। भोजपुरी, राजस्थानी ब्रजभाषा आदि भाषाओं के बोलने वाले अभी इस डाँट को पीते जा रहें हैं, पर भीतर ही भीतर असन्तोष बढ़ता जा रहा है। साहित्य अकादमी और विश्वविद्यालयों में मैथिली को मान्यता मिल जाने के बाद भोजपुरी आदि भाषाएँ भी विक्षुब्ध होने लगी हैं। साहित्य अकादमी द्वारा राजस्थानी. ब्रजभाषा, और भोजपुरी की मान्यता दिये जाने का प्रस्ताव कुछ दिन पहले संसद् में उठ चुका है। विहार विश्वविद्यालय ने मैथिली के साथ भोजपुरी को भी आइ० ए० और बी० ए० कक्षाओं में पाठ्यविषय के रूप में मान्यता दे दी है। बिहार के अन्य विश्वविद्यालयों में भी भोजपुरी और मगही को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाए. इस सम्बन्ध में कानाफूसी शुरू हो गयी है। जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् ने एक पीतपत्र निकालकर आन्दोलन करने का आह्वान किया है। मतलब कि आँधी उठने वाली है। यदि उसके पहले ही ठोस ढंग से कुछ नहीं सोचा गया, तो भावी अनिष्ट को रोकना कत्तई सम्भव नहीं होगा।

---

१. भारतीय हिन्दी परिषद् के ग्वालियर अधिवेशन अक्टूबर, १९७१) में डा० रामबिलास शर्मा का मौखिक भाषण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तो क्या किया जाए ? मेरे विचार से साहित्य अकादमी द्वारा इन सभी भाषाओं को मान्यता मिल जानी चाहिये। साहित्य अकादमी इन भाषाओं के श्रेष्ठ रचनाकारों को पुरस्कृत करे, उन्हें अकादमी का सदस्य मनोनीत करे, उन्हें प्रतिनिधि के रूप में विदेश भेजे, इसमें क्या नुकसान है ? इससे श्रेष्ठ साहित्य को प्रोत्साहन मिलेगा और हिन्दी क्षेत्र के अन्तर्गत मैथिली आदि भाषाभाषियों को इस बात का गिला नहीं रह जाएगा कि 'हिन्दी' न जानने के कारण उनकी प्रतिभा कुंठित हो रही है। जहां तक पाठकों का प्रश्न है, श्रेष्ठ साहित्य स्वयं अपने पाठक खोज लेता है। तुलसीदास को यह चिन्ता कभी नहीं व्यापी होगी कि काशी से लेकर देवघर तक की जनता उनकी चौपाइयों को कैसे समझेगी, जबकि इस क्षेत्र की भाषा अवधी नहीं है। सूरदास और मीरा के पद ब्रजप्रदेश तक सीमित नहीं रहे। विद्यापति के पदों का आनन्द लेनेवाले केवल मिथिला क्षेत्र के लोग नहीं है, सारा हिन्दी भाषी क्षेत्र उनकी मधुरता का रसास्वादन करता रहा है। वस्तुतः मध्यदेश की भाषाओं में इतनी समानता है कि एक भाषाभाषी को अन्य भाषाओं के समझने में कोई कठिनाई नहीं होती। इतना ही नहीं दूसरी भाषा को सीखने में भी बहुत कम समय लगता है। यह दुर्भाग्य की बात है कि इस समानता को वैज्ञानिक तथ्य के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास भाषा वैज्ञानिकों ने नहीं किया है। अब तक के सारे वैज्ञानिकों ने —ग्रियर्सन से लेकर सुनीति कुमार चाटुर्ज्या तक ने—मध्यदेश की भाषाओं के भेद को ही अधिक महत्व दिया है, उनकी समानता को नहीं। हिन्दी क्षेत्र की भाषाओं की समानता सिद्ध करने का दायित्व हिन्दी के भाषा वैज्ञानिकों का था, जिसे वे पूरा नहीं कर रहे हैं। सचाई हमें मालूम है, केवल उसे सिद्ध करना है ताकि फूट डालनेवालों को जवाब दिया जा सके और मध्य देश की जनता को विश्वास दिलाया जा सके कि हिन्दी विदेशी भाषा नहीं है, वह उनकी अपनी ही भाषा है

'हिन्दी' को अपने क्षेत्र की अन्य भाषाओं से 'भिन्न' और अलग करने में सबसे अधिक हाथ हिन्दी के लेखकों और इतिहासकारों को है। इस बात में क्या तुक है कि आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक के अन्तर्गत तो राजस्थानी, मैथिली, अवधी, ब्रजभाषा, सभी भाषाओं में लिखित साहित्य को स्थान दिया जाए— यहाँ तक कि आधुनिक काल में भी भारतेन्दु, रत्नाकर और कविवर सत्यनारायण की ब्रजभाषा की रचनाओं का विवेचन किया जाय — पर उसके बाद और उस समय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी रचित मैथिली आदि अन्य भाषाओं के कवियों और रचनाओं को एकदम भुला दिया जाए। आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल के अन्तर्गत हिन्दी क्षेत्र की सभी भाषाओं के साहित्य को स्थान दिया जाता है तो आधुनिक काल में भी उन्हें तर्कतः स्थान मिलना चाहिए था। यहाँ तक कि मीर, वली जैसे कवियों को भी, जिनकी रचनाएँ हिन्दी से अभिन्न हैं, हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों ने छोड़ दिया है। यह जरूरी है कि एक ऐसे 'हिन्दी साहित्य के बृहद् इतिहास' की योजना बनायी जाए जिसमें हिन्दी क्षेत्र की सभी भाषाओं में उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण और मूल्यांकन हो और 'हिन्दी साहित्य के मानक इतिहास' में 'हिन्दी' के साथ इस क्षेत्र की सभी भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य का विवेचन-मूल्यांकन रहे। इससे हिन्दी क्षेत्र की भाषाओं को यह नहीं लगेगा कि वे हिन्दी से भिन्न हैं, और उन्हें स्वतन्त्र मंच की आवश्यकता है।

'हिन्दी' को लोकजीवन से अलग करने का काम हिन्दी के आधुनिक लेखकों ने भी किया है। यह सुपरिचित तथ्य है कि हिन्दी के पंचानवे प्रतिशत लेखक नगरों में रहते हैं। कहानियों और नाटकों में नागरिक और मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण होता है। उनका कथ्य, शिल्प और भाषा हिन्दी क्षेत्र के साधारण जनों के लिए दुर्बोध होता है। वे सार्त्र, कामू और काफ्का का अनुकरण करते हैं और महानगरीय जीवन की विसंगतियों का चित्रण करते हैं। अधिक से अधिक विषय मध्यवर्गीय जीवन तक सीमित रहता है। इस साहित्य को भोजपुरी या मैथिली भाषी अपना साहित्य कैसे समझें? यह साहित्य उनकी समझ में नहीं आता। 'हिन्दी' के लेखकों का सम्बन्ध अपने व्यापक क्षेत्र से कट गया है। वे शिकायत करते हैं कि उनकी पुस्तकें पढ़ी नहीं जातीं. स्कूलों और कॉलेजों के पाठ्यक्रम में नहीं लगतीं। पर हिन्दी पुस्तकें कौन पढ़े? जो पढ़ सकते थे, उनसे 'हिन्दी' दूर हटती जा रही है। तब वे भोजपुरी आदि अपनी भाषाओं में साहित्य रचना को प्रश्रय और प्रोत्साहन क्यों न दें? हिन्दी के लेखक अपने स्वनिर्मित हाथी दाँत की मीनार में अकड़ कर बैठे हैं। इसका परिणाम क्या होगा, अनुमान लगाया जा सकता है।

हिन्दी क्षेत्र के निवासियों के बीच यह भ्रम सामान्य रूप से व्याप्त है कि 'हिन्दी' का मतलब 'खड़ी बोली' है और 'हिन्दी साहित्य' का तात्पर्य है 'खड़ी बोली का साहित्य'। पर सचाई यह है कि 'हिन्दी' 'खड़ी बोली' से जन्मना सम्बद्ध होने पर भी आज उससे नितान्त भिन्न हो गयी है। अतः उसमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

लिखित साहित्य को न भोजपुरीभाषियों को पराया समझना चाहिए, न मैथिलीभाषियों को; दूसरी तरफ हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखकों तथा अन्य लेखकों को कभी भी यह भ्रम नहीं पैदा होने देना चाहिए कि भोजपुरी, मैथिली, ब्रजभाषा और अवधी में लिखना हिन्दी में लिखना नहीं है। आज इस तथ्य को समझने-समझाने की जरूरत है कि जब तक हिन्दीभाषी क्षेत्र में यह भावना नहीं पैदा की जाती, तब तक विघटन की प्रक्रिया को रोकना असम्भव है।

इस सम्बन्ध में एक यह सवाल पैदा हो सकता है कि अहिन्दीभाषियों के लिए कौन सी हिंदी मानक' समझी जाएगी? निश्चय ही वह 'राजभाषा हिंदी' होगी, जो अहिंदीभाषियों के लिए ही नहीं समस्त हिंदीभाषियों के लिए भी 'मानक भाषा' का काम देगी। उसी में ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें लिखी जाएँगी। वही शिक्षा, शासन, न्याय और परस्पर सम्पर्क-स्थापन की भाषा होगी। अहिंदीभाषी केवल इसी मानक हिंदी का साहित्य पढ़ें (यों यह दूसरी बात है कि वे स्वेच्छा से हिंदी के अन्य रूपों में लिखित साहित्य का भी अध्ययन करें।) हिंदीभाषी इस 'मानक हिंदी' के अतिरिक्त, चाहें तो अपनी 'मातृभाषा' के साहित्य का अध्ययन कर सकते हैं। इस बात की उन्हें पूरी छूट होनी चाहिए। साहित्यिक कृतियों और लेखकों को पुरस्कृत करते समय सभी भाषाओं की कृतियों पर विचार होना चाहिए और सरकारी संस्थाओं द्वारा किसी भी हिंदी क्षेत्र की भाषा में लिखित श्रेष्ठ ग्रन्थ प्रकाशित करने की व्यवस्था होनी चाहिए।

'हिन्दी' ऐतिहासिक कारणों से व्यापक क्षेत्र की भाषा बन गयी है और समस्त बाधाओं के बावजूद उसके विस्तार में दिनोदिन वृद्धि ही होती जाएगी। मैथिली, भोजपुरी आदि भाषाओं का क्षेत्र सीमित है। जो लेखक अपने को इन भाषाओं तक सीमित करेंगे, उन्हें वह यश और अर्थलाभ नहीं होगा जो 'हिन्दी' में लिखने से मिलेगा। नागार्जुन और रेणु मैथिली में लिखकर कभी उतना यश नहीं प्राप्त कर सकते थे जितना उन्होंने हिन्दी में लिखकर प्राप्त किया है। अपवादों की बात अलग है और अपवादों को इस बात की पूरी छूट है कि वे चाहें जिस भाषा में लिखें। यह बात इसलिए और भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि हिन्दी क्षेत्र के किसी भी भाषाभाषी के लिए 'हिन्दी' भिन्न भाषा नहीं है। जो भिन्नता दिखाई पड़ती है, वह ऊपरी है, असानी से पार करने योग्य है।

प्रसन्नता की बात है कि कम से कम भोजपुरी भाषाभाषियों का दृष्टिकोण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यही है। भोजपुरी के एक उदीयमान लेखक श्री अनिल कुमार राय हिन्दी को 'अक्षयवट' की संज्ञा देना पसन्द करते हैं, जिसकी बरोह के रूप में मैथिली, भोजपुरी, मगही आदि भाषाएँ हैं। ये बरोहें धरती में प्रवेश कर उससे रस खींचें और स्वयं भी पुष्ट हों तथा पूरे वृक्ष को पुष्ट बनाएं, यही उचित है। जिस दिन ये बरोहें अपने को मूल वृक्ष से काटकर अलग विकास करने की भूल करेंगी, उस दिन दुश्मनों की बन आएगी और पूरे वृक्ष का ही नहीं, इनका विकास भी रुक जाएगा। सरकार को इस सम्बन्ध में बहुत ही सोच-विचार कर कोई निर्णय लेना चाहिए। इन पंक्तियों के लेखक को ज्ञात हुआ है कि राज्यपाल महोदय की सलाह पर बिहार सरकार ने हिन्दी, उर्दू और मैथिली भाषाओं के लेखकों की सहायता के लिए सम्भवतः डेढ़ लाख रुपयों की राशि की व्यवस्था की है। यह बिलकुल गलत निर्णय है। यदि हिन्दी के साथ मैथिली और उर्दू के लेखकों को आर्थिक सहायता दी जाने की बात सोची जा रही है तो भोजपुरी और मगही ने क्या अपराध किया है? इन भाषाओं में भी साहित्य लिखा जा रहा है जो लेखकों की आर्थिक कठिनाई के कारण प्रकाशित नहीं हो पाता है। पुस्तकालयों में भोजपुरी और मगही की किताबें नहीं खरीदी जातीं, इसलिए कि उन्हें मैथिली और उर्दू की तरह सरकार से मान्यता प्राप्त नहीं हो पायी है। यह सौतेला व्यवहार विघटन की प्रवृति को बढ़ावा देने वाला है, इसे अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए।

यदि तथाकथित 'हिन्दी' वाले, साहित्य अकादमी तथा सरकार समय रहते अपनी भूल पहचान लें और हिन्दी-क्षेत्र की भाषाओं की आशा-आकांक्षा तथा अस्मिता को कुचल डालने के संकल्प के बजाय उसे सही दिशा में निकलने का मार्ग दे दें, तो इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दी क्षेत्र में भाषाओं के विघटन का जो भयंकर सवाल पैदा होने जा रहा है, वह अपना उचित समाधान पाकर दब जाएगा। अन्यथा ईश्वर ही मालिक है।

[एह निबन्ध में उठावल प्रश्न पर पाठक लोग के निस्संकोच विचार आमंत्रित बा। —सम्पादक]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जीरादेई

जीरादेई हीरादेई गाँव जसोदा माई बा
जेकर गोदी में खेलल राजिन्नर किसुन कन्हाई बा।

देस रतन जे रखे गरभ में धन्य-धन्य भारत भुँइया
भरल गोदि परसाद मिलल जब धन्य भइल भारत मइया
गउतम के ई कपिलबस्तु बा तीरथ देस बड़ाई बा॥

करम भूमि, ई धरम भूमि हऽ जनम भूमि हऽ बाब के
माटी के चन्नन कार देखऽ मिले जोति बल काबू के
मन सीतल होये सुसुता लऽ छाँह सघन अमराई बा॥

जन-जन के नेता जनमे ऊ सौ-सौ बेर नमन धरती
जनम सफल होये दरसन से जनमे जँहवा संत जती
धूरा देस भगति के भभुती जनमल ग्यान सचाई बा॥

त्याग तपसेआ फल आजादी हँसे फूल ई बगिया के
ई सपूत मइया रखेआ ला कइल पान बिख अगिया के
मह-मह जस महकत माटी बा पवन लेत अँगड़ाई बा॥

करतब अमर रहे धरती पर गंगा भरल लहरिया बा
पड़े न मद्धिम, उड़े रंग ना अइसन रँगल चदरिया बा
कन-कन खेत चमक सँवराई गाँव देस गदराई बा॥

—अनिरुद्ध

—★—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मौलिक एकता आ भाषा

—अवधेश प्रधान

पं० जवाहर लाल नेहरू अपनी सुविख्यात पुस्तक 'हिंदुस्तान की कहानी' का 'हृदय मंथन' खंड में लिखतान--"यद्यपि ऊपरी ढंग से हमारे देश के लोगों में विविधता और विभिन्नता दिखाई देती थी, लेकिन सभी जगह वह समानता और एकरूपता भी मिलती थी, जिसने कि, हमारे दिन चाहे जैसे भी बीते हों, हमें एक साथ रखा।" आगे नेहरू जी कहतान—"सभ्यता के उषाकाल से लेकर आजतक हिंदुस्तान के मस्तिष्क में एकता का एक स्वप्न बराबर रहा है।" सचहूँ। जाति, वर्ण, भाषा, रीतिरिवाज का नाँव पर भारत के देखले ना जा सके, ए कूल्हि के एक साथ-एक सूता में जब देखल जाई तब भारत क समग्र रूप क कुछ अनुभव होई। एक सूता क माने का? एक सूता माने एक पर एक, एक से एक। हिंदुस्तान क एगो कोनो खड़बड़ाई त ओकर असर तमाम देश पर होई। अगर उत्तर प्रदेश-विहार क इतिहास जाने के होखे त ओकरा पहिले पंजाब, बंगाल आ राजस्थान क इतिहास जाने के परी। देखतानी, पंजाब आ बंगाल में जाति वर्ण, भाषा आ जन संस्कृति क केतना अंतर बा? बाकी ईहो देखीं जे इन्हन क इतिहास एक सूता में बा। एक से एक बा। ईहे हाल मये हिंदुस्तान क ह। हिंदुस्तान में भूगोल, जाति आ भाषा क विषम भेद होते हुए एगो सूता बा, जेवन ओके एक करता। ओ सूता विना कूल्हि हिस्सा अधूरा बान स। ऊन्हन क कवनो आपन महत्व नइखे। बाकी कुल्हिन के जोर देईं सब मिला के हिंदुस्तान बनी यानी पूर्ण एक।

उपनिषद् में भी एगो पूर्ण क चर्चा बा। उपनिषद् कहऽता---जगत पूर्ण ह, ईश्वर पूर्ण ह। पूर्ण (ईश्वर) से पूर्ण (जगत) क उत्पत्ति होले। पूर्ण (ईश्वर) क पूर्ण (जगत) निकाल लेहला पर बाकी बची पूर्ण। ई दार्शनिक गहराई ह। एकर कवनो थाहे नइखे। ई पूर्ण एतना पूर्ण बा जेतना एगो सोन्ना (०)। सोन्ना (०) में ले सोन्ना जाई, बाकी बची सोन्ना (०)। ए पूर्ण में आ हिंदुस्तान क पूर्ण में ईहे अंतर बा। ए पूर्ण माने सोन्ना (०), हिंदुस्तान क पूर्ण माने एक (१)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दुनियाँ क एकएगों सत्ता ईश्वर का कारन सत्तावान बा । या ईश्वर स्वयं टुकड़े-टुकड़ा होके ई लीला कर रहल बा। फिर भी ई कूल्हि टुकड़ा एक बानऽ स। अकथ अनीह अभेद अद्वैत ब्रह्म। ए ब्रह्म के जाने खातिर अगर ओकरा टुकड़ने में अँझुरा जाइल जाई, त ना बनी। जरूरी ई बा कि ए टुकड़ने में रहते हुए जानल जाव कि ई कूल्हि एक ह। अनेक में एक क दर्शन कइल जाव। द्वन्द्व में निर्द्वन्द्व क अनुभव कइल जाव। हम कवनो आचार्य ना हईं, बाकी मन क बात कहतानी। हमरा बुझाला जे असल में ईहे सगुन पथ ह। दुनियाँ में ईश्वर, के भेद में अभेद के देखल। हिंदुस्तानो क ईहे भाँति ह। एतना अदमी जन, एतना जाति, एतना भेदभाव, बाकी कूल्हि के मिलाके हिंदुस्तान क कल्पना ! ई कल्पना बड़ी दिव्य ह। एमें बड़ा मजा आवेला। ए कल्पना के एगो झलक मिल जाव त ब्रह्म सुख ले तनिये मनी कम आनन्द मीली, काहें कि भेद में अभेद क दर्शन एहूवाँ कइल जाता।

हिंदुस्तान क इतिहास नीअर विषम इतिहास शायदे कवनो देश क होय। कालक एतना थपेड़न का बीच भी हिंदुस्तान जीअत रहल। एकर जीवनी शक्ति का कम रोमांचक बा ? हिंदुस्तान एगो धरा हऽ, बड़ी तेज आ सनातन, ओतने, जेतना गंगा क जलधारा, सूर्य क ज्योतिर्धारा, हिमालय क हिमराशि ! देश आ काल क भेद भी हिंदुस्तान के ना तोरल। ई एक रहल, एक बा। एही के आजुकाल्ह विभिन्नता में एकता कहल जाता। ई एकता विभिन्नता में एतना मिलि गइल बा, जे एकर आजु ले केहू पूरा पता ना पावल। कबो कबो ई हो मन में अवेला जे कहीं विभिन्नते त एकता ना ह! ई सनातन आ बड़ी जीवंत ह, एही से एके मौलिक एकता कहल जाला।

भारत में भौगोलिक, सांस्कृतिक विभिन्नता का अलावे एतना भाषा बाड़ी स (आ कूल्हि एक ले एक) जे ई सोच के बड़ा अचरज होला जे भारत आजु ले एक कइसे बा ? स्वतंत्रता खातिर लड़े वाला सिपाही आपुस में अपना साथिन क बोली की ओर खियाल ना कइलन। उनका सामने भारत माता लउके आ वन्दे मातरम् सुनाय। ध्यान एतने क दियात जे हमरा साथी क उद्देश्य भारत बा कि ना ? सब सबका बोली क आदर कइल आपन बोली के सम्हारल आ भारत माता क मुँह ताकल। सब का सामने भारत माता रहली, एसे ओ उद्देश्य में जेवना चीज से सुविधा पहुँचे, ओकर उपयोग भी कइल जाव। एही से अमृत लाल चक्रवर्ती आ माधवराव सप्रे आपन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुविधा क खियाल क के हिंदी में आपन बात कहलन। न कबो तिलक जी गांधी जी की हिंदी क विरोध कइलन, न कबो मालवीय जी तिलक की मराठी क; काहें कि सबकर उद्देश्य एक रहे। ऊ उद्देश्य बड़ा महान रहे। भारते नीअर महान, जेवना में हर तरफ क आदमी लागल रहलन।

भारत में अजुओं ऊहे भाषा बाड़ी बाकी उन्हनमें "क्षुद्र आ विध्वंसक क्षेत्रीय स्वर" उठऽता काहें ?। ई बात इस-उस में उड़ावे लायक नइखे। विचारक-महंथ लोग क कहनाम बा जे प्रांतीय लोकभाषन के बढ़ावा देहला क ई परिणाम ह। हम काल्ह क इतिहास पर आ आजुक भाषए पर सँच्हीं सोचतानी। का स्वतंत्रता की लड़ाई में लोकभाषन के दावल रहे ? ना फिर काहें प्रांतीय क्षुद्रता ओ घरी ना रहे ? बड़ा घपला बा। एगो ऊ राजनीति रहे जे नाना भाषाभाषी ओमाँ एक संङे रह के जीव-परान से लागल रहलन आ एगो आज क राजनीति बा जे जनता क बोली के आदर देहला पर जनता क एकता टूटतीया। तेवना पर अपना महंथ जी लोगन क ई चिंतन ! हमके बुझाता जे भाषा, अदमी आ भूगोल क विभिन्नवा के अगर एक उद्देश्यमें जोर देहल जाव, त ऊहे एकता हो जाई। आज भारत में, भारत क एकता में आस्था क अभाव का कारन ई प्रान्तीय क्षुद्रता भइल बीया। ई आस्था काहें नइखे ? एहक जहर देश में आज क राजनीति बोवले ह। ईहे एक प्रांत से दुसरा प्रांत के एक भाषा भाषी के दूसरे भाषाभाषी से भिड़ावतीया, जनता में अखंड भारत का प्रति शंका उपजावत बया।

पता ना, केवना आधार पर भाषन के सरकार की ओर से रजिस्टर्ड करे शुरू भइल ? एकत भाषा के मान्यता देहले झूठबा। तुलसी, रवीन्द्र का भाषाके के मान्यता देले रहे ? उन्हन लोगन क भाषा जनता क मुँह तकलसि जनता की ओर से ओके मान्यता दीहल रहे। ओ पर कागजा घोड़ा ना दउरावल गइल। हमार सरकार जनतंत्र क बिल्ला त लगवलसि, बाकी भाषा के मान्यता देहलसि कानूनी न्याय का मोताबिक। आ ई त जाहिरे बा जे जनतंत्र में कानूनी न्याय क नाँव होला 'लाचारी'। एसे ओही भाषन के रकखल गइल, जेवना में ढ़ेर खतरा लउकल। राजस्थानी में कवनो हल्ला मचे क संभावना ना रहे, एसे कानूनी न्याय क लाचारी ओकरा खातिर दया ना कइलसि। एने कई साल से जब कई ओर से हूँ-हूँ भइल ह त फिर कानून क दिल पसिजल ह आ मैथिली, मणिपुरी, डोंगरी के मान्यता मीलल ह। अब बतावल जात, जे अउरी वोलीवाला अदमी विद्रोह करिहन कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

-ना ? ऊ अगर हल्ला करें त आ। ई कहिके वलवन बनें क अधिकारी नइखीं जे ए बोलिन के बढ़ावा दीहल खतरनाक बा। अगर वढ़ावा दिहे खतरनाक बा त ई धन्धे ना शुरू करे के रहे। पहिले जइसे रहे, ओइसही रहे देवे के चाहत रहे। सरकार क मोहरी का बिना भाषा वढ़ेले, विकसित होले। कानून भाषा के जन्म ना देला। भाषा जनता क जरूरत ह आ ओकरे मोताबिक ओमाँ उलटफेर होला। आज क राजनीति जनता क मुँहपर जूता मरले बा। वङ्ला, तमिल, मैथिली के मान्यता देके भोजपुरी, व्रज, अवधी, राजस्थानी के विचाराधीन कइल गइल बा। का ई करोड़-करोड़ जनता क उपेक्षा ना ह ? का ई अखंड भारत के तोरे क सुरूआत ना ह ? अगर हर प्रदेश पर समान औसत से खर्च ना कइल जाई, समान ईज्जत ना दीहल जाई, कवनो तरह क पक्षपात होई त विरोधी स्वर उठबे करिहन ज कलकत्ता में उठते बा। पहिले ओही कलकत्ता पर सरकार खियाल न कइलसि आ आजु कइसे थोक पइसा लागता त बुझाता। त कमसेकम हालत सारा भारत में आवे का पहिले ई कूलिह सोच लीहल वड़ा जरूरी बा पाछे ले पछता के कुछ ना कइल जा सके। जे सुभावे से भारत क चिन्ता करे वाला बा, ओके चाही कि ए पर गंभीरता से विचारे।

तब एकर उपाय का बा ? ईहे, जे हर भाषा, हर अदमी के समान आदर देके अखंड भारत का प्रति विश्वास दीहल जाव। विश्वास दीहल स रकावां, वड़े वड़े बुद्धिजीवीं, जिनकर जिम्मेवारी ढेर बा, मान्यताप्राप्त भाषन का अलावे अउरी भाषन के गारी देता। गारी देवेवालन से हम पूछतानी कि का ए लोकभाषन क शब्दराशि, भावराशि, परंपरा, संस्कार दुसरा भाषा में पावल जा सकेला भा बदलल जा सकेला ? एगो मनोरंजक उदाहरण देतानी—हिंदी में डंडा खातिर दंड, यष्टि, डंडा, लाठी, छड़ी जइसन कुछ शब्दवान। भोजपुरी में डंडा क भेद— उपभेद का मोताबिक दसन शब्द देख सकीला—डंड, सटहा, झटहरा, लउर, गोजी, पटकन, छड़ी लाठी, ठेङा, सोटा, पैना, लविदा, लकड़ा। अबहीं सिटकुन छाकुन बकिये बा। गुमुसाईन, अंइठाइन, लमेरा जइसन लब्ज क का अनुवाद कइल जाई ? ए कूलिह के बचावे खातिर सरकार के चिन्ता करे के चाही। बाकि इहवां त बतिये उल्टा बा। का त लोक भाषन से क्षेत्रीयता जोर पकड़तीया मैथिली से राष्ट्रीयता बढ़तीया आ भोजपुरी, राजस्थानी, व्रज, अवधी से उल्टा प्रभाव पड़ता। अगर चीनी में किताब लिखके कुमारजीव चीन में बौद्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फइला सकेलें त भोजपुरी से अखंड भारत क भाव काहें नाहीं जोर पकड़ा ? असल बात त ई बा कि राजनीति आ स्वार्थ में अखंड भारत हेरा गइल बा, खाली बोल सुनाता—अखंड भारत, अखंड भारत। तनिको लउ..ला जे स्वार्थ क पर्दा उठल चाहता तब कउवारार मचि जाला—हमार भारत, अखंड भारत। आ अखंड भारत ई कुल्हि देखत रहेला।

साहित्य में भी राजनीति क ई हे महातम बा। भारतीय संस्कृति क समथ-कुसमय जापक के विद्वता क भूत उतारेवाला लोगन क धनुहीं चढ़ल बा। मर्यादा पुरुषोत्तम क ध्यान कके लखपती से करोड़पती बने खातिर भारत क मरजाद धोवेला ऊहे लोग। सरस्वती का दरबार में ऊ लोंग भ्रष्ठ लक्ष्मी क रतिबीलवा उरुवा ह। एकाध जाना अघोरी नाहीं, अध-जोगी होलन। ऊ जब ए दरबार अइहें त सुरु करिहें सँड़सा पीटे। रात-दिन त्रिया के अनर्थ-व्यर्थ करिहें। बुद्धी का पाछे सोटा लेके टेढ़-सोझ बोलिहें। अइसने एगो विख्यात विद्यावारिधिके जानतानी। ऊ हिंदी-दिवस का अवसरपर भाखन रोवत रहलें कि हिंदी क नया साहित्यकार संस्कार भ्रष्ट हो गइल बा। संस्कृत में एतना छंद, बाकी आजुकाल्ह हिंदी में गजल लिखात बा। बड़ा दुखी रहलें ऊ। पदवे रहे। बाकी उठिके केहू उनसे ई ना पूछल जे ई जयशंकर प्रसाद का हरिगीतिका लिखले हउवन ?

"विमल इंदु की विशाल किरनें प्रकाश तेरा बता रही हैं"

भा केहू उनके निराला जी क 'बेला' क चेतना धरावल, नाहीं त हरिऔध आ मैथिलीशरण गुप्त के भी इयाद क के अउरो रोवल रहतन। चोंकरि के कहतन—नवके नाहीं, हिन्दी क मये लेखक संस्कार भ्रष्ट बान स, हिंदी क साहित्य भ्रष्ट बा। ओदिन द्विवेदीयुग क मर्यादावाद लजा गइल रहित। बाकी ई बात भइल ना। ऊ खूभि के कहलन जे उर्दू का छंद में हिंदी क कविता लिखात बा ! छिः छिः ? जेवना उर्दू में मुसल्लम सहर क नर्क भठाइल बा। हम आज निडर होके कहल चाहतानी कि जे संस्कृत भा कवनो भाषा क कवच बान्हि के दुसरा भाषा के गारी देला ऊ सरस्ती क दरबार क दरबान नाहीं, गुंडा ह। ई बात फरकाँ बा जे एगो भाषा दुसरा तरह क बा, त दूसर भाषा दुसरा तरह क। दुनियाँ में जेतना ध्वनि उठि रहल बाड़ी स, जेतना शब्द हो रहल बा, ऊ कूल्हि माँ सरस्वती क स्तुति क टुकड़ा हउवन स। हम कवना टुकड़ा के ठुकराईं आ कवना टुकड़ा के पूर्ण कहीं ? जे एगो कोना पर कबुजा क के अभिमान में मातल बा, सरस्वती माँ, तू ओके माफ क दऽ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ई सूने में आइल ह कि आचार्य जी लोगन क रोष क अखंड भारते एगो कारन नइखे, ऊन्हन लोगन के हिंदी क बहुमत क चिंता बा। कुछ हिंदी विरोधी सज्जन लोगन क ई कूटनीति व्या कि लोकभाषन के मान्यता दे के ई सिद्ध क दीहल जाव जे हिंदी बोले वालन क संख्या खाली अस्सी लाख वा यानी खड़ी बोली क क्षेत्र। अगर ई बात सही बा, त बहुत जरूरी बा कि लोकभाषन खातिर हल्ला करेवाला लोग भी हिंदी क बहुमत क चिंता करो। हिंदी त राष्ट्रभाषा रहबे करी बङ्ला, गुजराती, भोजपुरी बोल के भारत भर में काम ना चलावल जा सके। भारत क अखिल भाषायी काया हिंदी क बनल व्या आ ओमें प्राण क काम करत व्या संस्कृत भाषा। हिंदी संस्कृत क अहित कके कवनो भाषा भारत में जी ना सकेले। आ एने लोकभाषन के भी बच ना बा। जरुरी वा कि राजनीति क मामला में सावधान रहल जाव आ आपन भाषा भोजपुरी हिंदी (ई बात अनिल कुमार राय 'आंजनेय' 'अंजोर' अप्रिल-जुलाई ७१ में कह चुकलबान) अवधी हिंदी, बङ्ला हिंदी लिखल-बतावल जाव। बहुत अइसन तमिल परिवार बान जेवन घर में आपन मातृभाषा, आ बाहर हिंदीं बोलतान। ऊ लोग आपन भाषा तमिल आ हिंदी दूनों लिखे, ईहे उचित आ सही बा।

ए हालत में साहित्यकार का करो? ऊ अपनी भाषा में अइसन निर्माण करो जे ओमें अधिका से अधिका रुचि लें। भोजपुरी के ऊ शक्ति दीहल जाव। जेवन आधुनिक बङ्ला अ हिं दी के दीहल गइल। जेकरा जरूरत होई ऊ खुद भोजपुरी पढ़ो। रवींन्द्र का कवीर के पढ़े क जरूरत कइसे भइल? आज संस्कृत राष्ट्रभाषा नइखे वाकी मेघदूत खातिर संस्कृत सीखे वाला अदमी बान। का हम आशा करीं कि भोजपुरी में भी स्व० महाकवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा (नेपाली) होइहन? ए कूल्हि का मोताविक भाषा आ लेखन क रुख घुमावल जरूरी बा। छापाखाना तुलसी का जमाना में ना रहे, आज ओकर त्याग कइल मुखंता होई। ओही तरे जब मान्यमा, क रिवाज भइल बा जरूरी वा जे ओकर नीति स्पष्ट कइल जाव। लोकतांत्रिक सरकार से जेतना सुविधा सभके मिले के चाही, ओतना कूल्हि उचित हिस्सा क माँङ कइल, ओकरो खाशिर जवाबतलबी कइल, कर्त्तव्य ह। ओही कर्त्तव्य क विनम्र पालन कइल जाता त अखंड भारत आ राष्ट्रभाषा हिंदी क चिंता में अज्ञानक न्याय क हत्या मत कइल जाव। अखंड भारत, राष्ट्रभाषा हिंदी आ भारतीय जनता क हितोषी कहाइल तबे नीक लागी, जब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुद्धिजीवी लोग एक बेर न्याय से अपना इतिहास के जांच के आ फेर आपन वर्तमान समस्या पर निर्णय देईं।

ओइसे त बड़-बड़े विदमान लोग मौलिक एकता आ भाषा के लेके आपन जबान खूब फेटल ह आ केहू का समझ में अइला की जगह पर अउरी भ्रम भइल ह बाकी अखंड भारत क मौलिक एकता क अरथ हमरा सोझां साफ हो जाला, जब भारतीय जनता मे से एगो अदमी, भोजपुरी भाषी घुरवा नट के देखीलां, जेवन मुसलमान होते हुए गंङा माई क किरिया खाला। आजु कुल्हि परिभाषा, कुल्हि चिंतन जनता से चेतना दूर हो गइल बा, जबकि जनता क प्रतिनिधिन में दिन-दिन बढ़ंतिए होता। घुरवा नीअर करोड़-करोड़ जनता क देश हिंदुस्तान के नमस्कार करतानीं, भोजपुरी नीअर एक से एक भाषन क देश हिंदुस्तान के पालोगतानीं!

बंगला देश पर दूगो अनमोल प्रकाशन।

'जय बंगला'—ले०—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

दाम ३५ पइसा

'बंगबत्तीसी'—ले० धीरेन्द्र प्रसाद सिन्हा 'धवल'

दाम ५० पइसा

प्रकाशक

भोजपुरी परिवार, सालिमपुर अहरा,

पटना—३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

लागल

(गजल)

उमिरिया ई झंझट बेवाहे में लागल
विविध लोग के चित्त थाहे में लागल

रहीं एक नोकर मिलल खूब ठोकर
भले दुष्ट लोके सराहे में लागल

सभा अउर संस्था में बीतल अवस्था
जिनिगिया ई चंदा उगाहे में लागल

सफलता-विफलता कुछो ना बुझाइल
समय किन्तु काफी कराहे में लागल

मदत के भरोसा दिआइल खुशी से
मगर कुछ भला लोग डाहे में लागल

रहल चाह लेकिन ई कमजोर जीवन
बहुत विघ्न के बान्ह ढाहे में लागल

फकत जोस में काम जे-जे नधाइल
फँसे से ही से-से निबाहे में लागल

चलल एक ई बैल कोल्हू के जब से
ठहर ना सकल जन्म राहे में लागल

—आचार्य महेन्द्र शास्त्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रउवा राजा बाबू हउवा

—डा० विवेकी राय

एक दिन आकाशवाणी वाराणसी में रेकार्डिंग रहलि। गइलीं त भइया हरि राम द्विवेदी मिललन। रेकार्डिंग का बाद साँझ बेरा एगो चाहखाना में घइ ले गइलन आ भरि पेट कविता सुनवलन। बड़ा सुख मिलल। ऊ सुख हम रउवा सभ के बाँटल चाहत बानी। 'रउवा राजा बाबू हउवा!' कवना कोना से ओह सुख के उठाईं। धन्य हो रामजियावन दास! के तोहके 'बावला' कहेला? तू त सभ के बावला बना देत हउआ। भइया हरि राम द्विवेदी का मुँहे तू अतना नीक लगला कि मन में चुभि गइला! सुनीं ला कि मिलला पर मारे प्रेम के धधवा देलऽ, बाकी छोड़ऽ, द्विवेदी भइया का कहत बाड़न, सुनि-सुनि के घधा जात बानी।

हमके ओह दिन मालूम भइल कि रामजियावन दास 'बावला' एगो सच्चा जनकवि क जिनिगी जी रहल बाड़न। भगती का गीतन में सराबोर रामचरित मानस में सबसे जियादा बुड़की मरले बाड़न। राम वनबास पर उनकर गीति सुनि के झरझर लोर झरे लागेला।

रामजियावन दास क गाँव चकिया क्षेत्र में नांव—भीषमपुर ह जहाँ एगो लोहार परिवार में ऊ पैदा भइलन। घरे खेती-बारी बा। शिक्षा त कमे भइलि बाकी भीतर से ढेर अँजोर जनमते लउकल। भँइसि चरावत में तुलसी क मनिया गरहाये लागे या भगती के गीति जोराये लागे। आगे चलि के ई सुभाव अइसना भजनानन्दी का रूप में निखरल कि बनारस आ बनारसी बोली दूनों धन्य भइल। आज 'बावला' जी का पास पूरा गवनई पार्टी बा, ढोल-झाल आ करताल बाजत बा, लोग झूमत बाड़न, लोकोत्तर आनन्द क बरखा होत बा, सुर लहरात बा, 'रउआ राजा बाबू हउवा!'

जब से हरिराम द्विवेदी सुनवलन, मन एक-एक सबदन पर लहालोट हो गइल बा! अइसन सहज आ प्रभावशाली अभिव्यक्ति अइसन साफ शब्दावली में हमरा सामने आजु तलक ले ना आइलि रहलि ह। बड़े-बड़े कविन क गुरु गंभीर तेवर एह सहजता का मिठास का सोझा पानी भरो! द्विवेदी जी हमार ध्यान एह कविता का तुक्कन का ओरि खींचलन। रामजिआवन दास पहिलहीं एगो बहुत कोमल आ मीठि 'हउवा' खड़ा कइ दीहलन। अब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

आगे का-का आई ? गजब बा ई भोजपुरी का जादू आ एकरा एगो क कमाल। त तनी पूरा जायजा एह लोकगीत क ले लीं—

हम बनबासी कोल भील कें बेटउवा

रउवा राजा बाबू हउवा !

करीं सेवा का खिआईं ?

कहां आसनीं बिछाईं ?

इहाँ बनवा में बाय कन्द मूल फल पतउवा !

रउवा राजा बाबू हउवा !

तोरे बाबू - माई हउवैं ?

घरे अउरन भाई हउवैं ?

बाबू तपसी कै भेस ई बुझात बा बनउवा !

रउवा राजा बाबू हउवा !

आजु मोरे घरे रहा

रहबा कि नाहीं कहा

बाटे मरजी तोहार नहीं कउनों वा दबउवा !

रउवा राजा बाबू हउवा !

बनबासी हम लोग

नाहीं सेवा करे जोग

लोग 'बावला' भयल बा देखि-देखि के सुभउवा !

रउवा राजा बाबू हउवा !

हम ए गीत के लोकगीत कहत बानी। हालाँकि एकरा के रचे जनकवि के अता-पता सूरुजनरायन नियर प्रत्यक्ष बा। लोकगीत व हाला जेकरा के रचे वाला का बारे में केहू कुछु ना जाने ला आ से ओकरा मिठास में लोग बूड़त आवेलन। लोकगीतन के अइसन जना केहू बनावेला ना, ऊ अपन ही बनि जाले, जइसे फूल बनि जाला, चू जाले या टिकोरा लाग जाला। एही से ओह में गजब क परान अइसही परान ऊपर वाला गीत में बा। एही से हम एकरा के कहत बानी। भावुकता चोटी पर चढ़ति जाति बा। केतना निगिचा जात बा, कइसे अगरा के मन के बाति कहलि जाति बा, एक-एक एक-एक गो बाति धड़कनि नियरि खुलति बा। जिज्ञासा, आग्रह, आशंका, असमर्थता, निरपेक्षता, आदर, श्रद्धा, प्रभाव, विनोद, औत्सुक्य उपेक्षा से लेके मान-मनउअल तक के केतना भाव ओ संचारी भाव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...थाइल बाड़न। जंगली कोल भील का लइकन का भीतर मन में भाव के उहे ...मृत झरना बा जवन सभका मन में बा आ बहुत जल्दी एह लोकगीत में ...इसन सुइया जुटान हो जात बा जे मजा आ जात बा। जनपदन में बिखरल ...इसना सत्कविन क खोज होखे के चाहीं।

गजल

—सिंहेश्वर नाथ सिंह

ओस दरकल त देहिया सिहर जाए द ऽ।
फूल बन इयाद आएल बिसर जाए द ऽ॥
रात पहरू बोले मोरा धरके जिया।
साँप ठनके पहर के गुजर जाए द ऽ॥
चोट लागे दऽ पंछी बोले 'पी कहाँ'।
इयाद सुरता से कवनो उतर जाए दऽ॥
जिन्नगी थरथरी ह ई कुछ ना कहे।
ओठ काँपे दऽ दियरा के जर जाए द ऽ॥
नेह अइसन कि आन्हीं बनल जाँन में।
हँस के जिनगी के गँइया उजर जाए दऽ॥
लोर बहला से पोंछी जे ऊ का कही।
आम लहके दह ऽ जियरा सम्हर जाए दऽ॥
साँझहीं से भइल आज चुपचाप मन।
बतकही कवनो चुप से उतर जाए दऽ॥
ठूँठ पर चान ठहरल त बगिया हँसे।
खोल नयना करेजवा के भर जाए दऽ॥
प्रीत गहिरे तलइया में पानी जरे।
रोज झँउसे कमल रूप झर जाए दऽ॥

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कहानी

सोखा

रामवृक्ष राय 'विधुर'

सोखा के नॉव त कुछु दूसर ह बाकिर गाँव के मरद-मेहरारू सभ उनुका 'सोखा' कहेलनि। सोखा बड़ा हँसमुख आदमी हउवनि। गाँव के मरद-मेहरारू सभ उनुका के आछो-आछो कइले रहेला। लइकन के त उ खेलवाड़े हउवनि। न कवनो काम न धन्धा! काम धाम के उनुका कवनो जरूरतो रहे। उनुकर सोखइती एतना चलति ह कि खाए-पिए के काम ओही ठरकि जाला।

सोखा का दुआरे पर बरम बाबा के चउरि ह। ओइँजा हर अतवार मंगर के बरामि लागे ले। पाँच-पाँच कोस के आदमी आवेलनि। सोखा बाबा भभूत परोरि के दे देलनि बस, चंगा।

सोखा बाबा के नहाए खाए तक के फुरसत ना मिलेले। हरि आदमिन के भीड़ि लागलि रहे ले।

एक दिन के बाति हवे। हमहूँ बाबा के दरसन करे चलि गइलीं। 'ई सरीर का ह? पानी के बुलबुला ह। छने में नष्ट हो जाए वाला बा। एह से घरी दू घरी समय निकालि के ईश्वर के जरूर भजीं। कवनो जरूरी नइखे कि घर दुआर गाँव-गिराव छोड़ि के संन्यास ले लीं। तुलसी दास जी कहले बानीं, एको घरी आधोघरी आधो में पुनिआध; तुलसी संगति साधु की करे कोटि अपराध। बाकिर ई होत कहाँ बा? हमहन के कइला ले पहिलही फल का आसा में परि जात बानीं। विषयी मन आकास में धुँआ देखि के चातक नीयर पानी बरिसे वाला बादर जानि के बराबर चोंच ऊपर उठवले रहत बा। एके काबू में करीं काम में लगाईं। जवले मन अहथिर ना होई सिद्धि ना मिली। देस के, समाज के, गाँव-घर के जवन सेवा के काम करीं, फलके आसा केहु दूसरा पर छोड़ि के करीं। गीता में कृष्ण भगवान कहले बानीं—

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"

सोखा बाबा के प्रवचन जइसहीं खतम भइल कि एगो बाबू साहब आइलनि। उनुकरि उमिरि गिरि गइलि रहे। लरिका-फरिका केहूँ ना। बेचारू अरुअइला भात नीयर मुँह बनवले बाबा का गोड़ पर पगरी धइ बइठि गइलनि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हँ-हँ-हँ ई का' भला रउआँ ?" बाबा बाबू साहब के हाथ धइ के कहलनि ।' "एमें कवनों बाति नइखे सोखा बाबा। रउवाँ अब अदमी ना देवता हो गइल बानीं । रउवाँ गांव का पजरे बानीं आ हमनीं का एतना दुख सहत बानीं जा ।''

"सब भगवान के मरजी बा । अच्छा, कुछु जल जलपान—।''

"बस राउर किरिपा । रउवाँ छोह से कवनो बाति के हरज नइखे। हँ. एगो राम बिना अयोध्या सूनि भइलि बा । केतनो ओझा सोखा अइलनि। बाकिर.......।''

बाबू साहब के आँखि सावन- भादो का बदरी नीयर बरिसे लगलीस। सोखा बाबा आकास का ओर ताकि के, "अच्छा, सवा गो रुपया आ अच्छति धरीं । राउर काम सुफल हो जाई ।''

बाबू साहब सवागो रुपया आ अच्छति ध के, हाथ जोरि के बइठि गइलनि ।

सोखा बाबा एक बेर फेनु अकास का ओर तकलनि आ सुसुकारी दे के कहलनि, "चलु हिरिया-झिरिया दूनो बहिनि ।''

बाबा के देहि में लागलि । आँख खून नीयर लाल-लाल हो गइली स। तड़पि के कहलनि, "बोलु, तोर काम हो जाई त हमरा के का पूजा देबे ?''

"बाबा राउर जेवन हुकुम ?'' बाबू साहब माथ नवा के कहलनि। "जेवन कहबि तेवन ?''

"हँ, बाबा, रउवा हुकुम के दलील बा ।''

"अच्छा त बरम बाबा का नाँव पर पाँचि बिगहा जमीनि आ सइ गो रुपया.......।''

बाबू साहब खुसी मन से सइगो रुपया दे दीहलनि । एको बेर हँ-नाही ना कहलनि ।

"मास्टर साहब, देखीं ई एक घन्टा के कमाई ह । पांच बिगहा खेत आ सइ गो रुपया अइसन अइसन दिन भर में न जाने कईगो मुअकिल जूटत होई सन । हमरा त उमेद बा कि सोखा बाबा का इजलास पर जतना मुअकिल आवत होइहें ओतना मुअकिलो की लोमुख्तार कीहें ना जूटत होइहें। हम त राइ देइबि कि जेतना आदमी नोकरी का फेर में घूमत बाड़न ऊ सभ सोखइती के ट्रेनिंग क लेसु त भारत सरकार के नोकरी देबे वाला काम बहुत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हलुक हो जा आ बेकारी के समस्या भी हल हो जाई।" नदीस सूट कुछ अउरी ऊपर सरकावत हमरा ओर मुँह क के खड़ा हो के कहलन, राउर का बिचार बा हम बड़ा असमंजस में परि गइलीं। का कहीं? कुछ समुझ में ना आवे। तबले बीचे में बाति लोकि के नरेश कहलन, "हँ, तोरा के......!" गीला, सोखइती का अभ मा ओकिली-मुखतारी? कहाँ राजा भोज आ कहा भोजवा तेली? आजु का जमाना में जेके सोखइती के ट्रेनिंग मिलि जा ओके भगवाने समुझीं।"

इहे कुल्हि कानाफूसी करत् आदमी चलि जात रहलन। बाबा कहलन, हमरा धन से का मतलब बा? बाकिर कवनो काम करे खातिर धन जरूरी होला। अपना मने जेवन आ जाता ओ के काहे के ठुकराईं? हँ, केहूपर दबाव डेलिके, सता के आ देरवा-धमका के कुछु ना लेवेके चाहीं। कालिह डिग्री कालेज के नींव बाबू साहब वाली जमीनि में परि जा त का हरज होई। अबहीं गाँवन में सिच्छा के कमी बा। बिना सिच्छा के गाँवन के विकास मुसकिल बा। 'एह'ले उत्तम काम कवन होई?' एतना कहि के बाबा के प्रणाम कके हम आगे बढ़लीं त सांझि के पाँचि बजि गइल रहे आ बाबा का देवालय के घन्टा कान में गूँजत रहे टन! टन! टन!

गजल

निहरलीं जब कबो जियरा हहरि-हहरि जाला,
कि फिर निहारिलीं मनवा ठहरि-ठहरि जाला।
कि रूप फूल के देखलीं, न आँखि भरि पावल,
गड़ल करेज में कँटवो बहरि - बहरि जाला।
धरीं उसारीं कहाँ चाँद सुरुज के जोतवा?
भरल इयाद बा तोहरे छहरि - छहरि जाला।
बहुत जोगाइ के धइलीं पिरीत छतिया में
कपूत छोरे बा भरि-भरि के कबहूँ ढरि जाला

—सीताराम चन्द्र शरण 'राम'

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूत से भिड़न्त

प्राध्यापक 'अचल'

चढ़ल जवानी, बनल शरीर आ बढ़ल मन ई तीनों क जब संजोग बइठ जाला तब आदमी अपनहीं भूत बन जाला। फिर ओके भूत से डर का? ऊ चाहे पानी में आग लगावे, ऊ चाहे फेड़न क पुलुईं-पुलुईं घूमे। ओके रात दिन बराबर। ओके न वन बीहड़, न खंड़हर-भकसावन। ऊ भइंसन क सींघ पकड़ेला, ऊ साँढ़न क पीछा करेला। ऊ आकास-पाताल एक क देला। ऊ बावन भगवान ह। ओकरा पाव तरे के ना आई? ओकर तीनों लोक में गमि ह।

एगो दिन रहे जब हमरो सरीर बनल रहे। जवानी क जोम आ मन में उमंग रहे। भूत से भिड़न्त लेवे बड़की भुतहिया बारी का बर-तरे आधी राति क जाके सूति रहीं। सुना कि ऊ भूतन क गढ़ ह। ओपर भूतन क राजा दइत्तर बाबा रहेलन। हमरा केत्नो गमि ना। हमार कवचो बड़ा अचूक रहे—"भूत परेत निकट नहिं आवे। हनूमान जब नाम सुनावे।" हनुमान चलीसा हमरा पूरा इयाद रहे। एकर बचपने ले मन पर संस्कार रहे। इहे नाहीं; बाबा जी क जंतर गर में मोटका करिआ धागा में लटकति रहे आ साईं बाबा क तबीज दाहिनी बाँह में बँधलि रहे। मरघट आ कब्रिस्तान हमरी खातिर झूठ रहे। राति में अकेले ओं जग टहरे लागीं। घर क आदमी मना करँसु लेकिन उनका लुका-छिपी भूत से भिड़े चलि जाईं। ओनका हमार बड़ीं मोह रहे। हम घर क पहलवान रहलीं। माल बाबू कहायीं। जइसे आज कालिह लइकन के पढ़ावे क सउख लउकता ओइसहीं ओघरी पहलवान बनावे क सउख रहे। के रहे, जेकरा घरे एगो जवान जमिके ना मेहनत करे? ओ तरे त सबही गदहपचीसी क बेरियाँ दस-पाँच गो मेहनत करेला आ लँगोट सिआवेला।

हमरा पर घर क पूरा धियान रहे। हमरी खातिर दूध क मेटा आ घीव का भँड़ा बरोबर भरल रहे। हमरा ले बांचे तब केहू पावे। हमरा के खिअवला में लाभो रहे। हम घर क कप्तान रहलीं। हमरा आतंक से केहू हमरा घर का प्रानीन की ओर ना ताके, न जगह-जमीन का कगरीं आये।

हमार अखाड़ा रात में चले। साँझ क मर-मैदान होके हमन का अखाड़ा पर पहुँच जाईंजा। अखाड़ा का छप्पर में लँगोट-जँघिया टंगल रहे। लँगोट चढ़ाके डण्ड-बैठकी लागे। एक-एक हजार बैठकी आ पाँच

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पांच सौ दण्ड खींचल जा। जँघिया चढ़ाके जोर होखे। हम उस्ताद रहलीं। दस पट्ठन के जोर कराईं। जोर करावला पर देंह पर लागल आखाड़ा क माटी पसेना से भींज के बनई हो जा। ओके सुखावत घंटन लागे।

अखाड़ा गाँव से सौ गज आ हमरा घर से दो सौ गज दूर रहे। ओंजग ले हमरा घर के दुगो रास्ता जां स। एगो दू महीना क आ एगो एक महीना क। एक महीना वाला में एगो बड़ भकसावन खंड़हर रहे। ऊ ओरइबे ना करे। सावन क महीना रहे। घनघोर बादरि घेरले रहे। रहि रहि के पानी परे लागे आ 'दामिनि दमकि रही घन माहीं। खल कै प्रीति यथा थिर नाहीं।' बिजुली चमके त आंखि चोन्हिया जा। ना चमके त लउके ना। ऊ अन्हरिया रहे कि आपन हाथ पाँव ना लउके। अन्दाजही डहरि पर पांव पड़े। जोर कसदार हो गइल रहे। देंह क पसेना सुखावत ग्यारह बज गइल। पानी परे लागल। कुछु पट्ठन क घरे जाये क हिम्मत छूटि गइलि। ओजें सुति रहलन। कुछ दुआर के घरे पहुँचे क संकल्प लिहलन। एहि संकल्प धारिन में हमहूं रहलीं।

जल्दी में एक महीना क रास्ता पकड़ लीहलीं। एही में खंड़हर पड़े। सिर आ देंह पर गमछा ओढ़िके बेसुध घर के भगलीं। खड़हर के पार करत करत छाती पर दू हाथन क प्रहार का रहे, वज्र-पात रहे। आँखि से लुती छटकि गइलि। बेसुध होके धरती पर एकबार गिर गइलीं। होस सँभार के उठलीं। दूनो हाथ आगे बढ़ाके केहू बाजे के तयार रहे। देखते रोवां फूट गइल। बजरंग बली क नांवें लेके हम हूं आगे हाथ बढ़ा के उठ गइलीं। आगे-पीछे अविचल पाँव जमवले रहलीं, हाथ आगे डँटल रहलनस आ आंख अपना जोड़ का हाथन पर जड़ल रहली स। न हमरा प्रतिद्वन्दी का हिम्मत पड़े चढ़ाई करे क आ न हमार साहस होखे धावा करे क। हमार हिरदै धक-धक करत रहे आ जांध हिलति रहली स। बस चलित त हम पाछे मुड़ि के भागि जइती; लेकिन डर रहे कि ऊ हमरा करिहांय पर पड़ि जाई आ उठा के ऊ पटकी कि जान निकल जाई। हम खाली अपना रक्षा क मोरचा बन्हले रहलीं। लाख जोर मारीं, गोहराऊ ना पाईं। मुँह ले बाहर आवाजे ना होखे। संजोग अइसन कि केहू ओ रास्ता से जहू वाला ना रहे। अकेले हम भूत से भिड़ल रहलीं। केतनो देखल चाहीं कुछ ना लउके। केवल दोनों हाथे लउकं स।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हनुमान चलीसा भुला गइल खाली बजरंगबली क अनहदनाद चलत रहे आ दिल धड़कत रहे। हमरा अपना बल पर बिसास ना रहि गइल रहे। बिबसता में बीर बनल रहलीं। ई शेर क बीरता ना रहे, ई सियार क बीरता रहे। हम देख ना पाईं, नाहीं त हमार दाँत चिअरा गइल रहल होई। जइसे हम अपना सत्रु के देख ना पाईं ओइसहीं ऊहो हमके देख ना पावत रहल होई। नाहीं त ओकर लाभ उठा लेइत आ हम चारू खाना चित आ जइतीं। जानो चलि जाइति। हमें बीर गति थोड़े मिलित ? अन्हरिया हमार माई-बाप बनिके हमें छुपले रहें। जनाता कि हम हूँ अपना सत्रु के बहुत भक्कशावन लागीं। हमरा आगे भूत खड़ा रहे आ भूत का आगे हम। हम भूत से डेराईं। लेकिन भूतो हमरा से डेरा। हम भूत क भूत रहलीं। वाह रे कमजोर आदमी! तूं अपना कमजोरियो में एतना मजबूत बाड़े कि तोसे भूतो डेरात वा। आदमी आपन भेद न खुले देई त भूतो एकर का करी।

नाहीं, नाहीं, हम कमजोर ना रहलीं ना त भूतो हमरा पर परि गइल रहित। ओहू का हमरा के देखि के धुकधुकी चलति रहलि होई। ई हमके पता ना रहे। अगर पता चलि जाइत त हम कूदि के उनका मलपट पर परि जइतीं। दूनो दूनो के शेर समझत रहलँ। सचमुच रहलँ दूनो सियार। जुद्ध क मोरचा अनुमान वा कि आधा घन्टा जरूर बान्हल रहे। हमें त ऊ कई घन्टा जनाइल।

जेवन भगवान द्रौपदी क लाज बचवलन आ गज के ग्राह से बचवलन, ओनका से हमार दुख ना देखाइल। भूत से हमार जान बचावे खातिर ऊ तड़पि उठलन, गरजि उठलन। बिजुली का रूप में ओनकर चमक हमरा आँखिन से सूझि गइलि। चारू ओर प्रकास छा गइल। छन भर खातिर अन्हरिया मिट गइलि। ओतने अँजोर में हमार उद्धार हो गइल। हमके बड़ा अजरज लागल, भूत क हाथ गायब रहे। आगे देखीं त एगो भइँस मस्ती से पगुरी करति ह। देंह पर माँस क नाँव नाहीं। हड्डिये खड़ा ह। भइंस पिछहुँड़ रहे। चूतर क हड्डी निकल आइल रहली स। हमार जान मारे खातिर ऊहे दूनों भूत से हाथ रहलन। करिया भइँस क अउरी अंग करिया अन्हरिया में हेरा गइल रहे। हमार भ्रम भुत बनि के हमार जान मारत रहे। भुत से लड़त-लड़त हमार एको गति बाकी ना रहै। सोझ खड़ा भइलीं आ हाँफत घर के चलि दिहलीं।

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोनार बाँगला

—धीरेंद्र प्रसाद सिन्हा 'धवल'

उजरि गइल बा जवन नगरिया
फिनु सें आजु बसाईं जा,
आजु मुरुदघटिया में मिलजुल
बंगला नया बनाईं जा।
राख शहीदन के सिरमिट,
चूना, बालू के कार करी,
अउर गिलावा पानी के
बदले लोहू तइयार करी।
अब तक जे बलिदान दियाइल
उहे ईंट बइठाईं जा।
जहाँ शहीदन के समाधि बा
नंव दियाईं ओही ठाँव,
अउर मुजीब, भसानी के
गोदल जाई गुम्बद पर नाँव।
रोशन-आरा के कुरबानी
रोशनदान लगाईं जा।
दाब न लागल एक रावनी
सेना के नर-बन्दर पर,
आजु दुबारा बिजयी भइलन
रामचन्द्र दसकन्धर पर।
होली काल्हु मनवलीं
बिजयादसमी आजु मनाईं जा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नास बहुत हो चुकल, आजु
नव-सिरजन के तइआरी बा,
संकर के माया फाटलि
बरम्हा, बिसनू के पारी बा।
खून बहुत बह चुकल, पसीना
आवऽ आजु बहाईं जा।
धधकि धधकि जवना धरती पर
चिता जरल अभिलाषा के
भभकि-भभकि के बरल-बुताइल
जहाँ अगिनिया आशा के,
ओह आँगन में आजादी के
मंगल-दीप जराईं जा।।
जवना माटी खातिर कतने
बीर कटवलन आपन माथ,
जवन स्वर्ग खातिर चलि दिहलन
छोड़ि-छाड़ि हमनो के साथ,
उहे स्वर्ग अब आसमान से
एह धरती पर लाईं जा।।
देसन में सोना अस चमचम
चमकि रहल बा आपन देस,
केहू के ना कबो भुलाईं
आपन भाषा, आपन भेसा
आवऽ, हिलिमिलि के 'आमार
सोनार बाँगला' गाईं जा।।

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज के शिक्षा के सरूप

—महंथ मिश्र

आज काल शिक्षा के जे सरूप बा ओकरा के देख के त मन में इहे बुझाला कि अब सरसती जी के मन्दिल भी गुण्डन और समाज-विरोधी तत्वन के अड्डा हो गइल बा। एगो जबाना रहे जब कि पढ़ला-लिखला के बाद आदमी आदमी बनत रहे और अब जबाना अइसन हो गइल बा कि इन्सान हैवान बन रहल बा। गाँव-गाँव में शहरी हवा घुस गइल और लड़िका सब के भी पढ़े से जादे लोफरई में समय बीतता। ओही में नाम बा और सब शिक्षा के जड़ में गुंडागर्दी के बोलबाला हो गइल बा। का कहल जाव, समय के अइसन हिसाब देख के तो मन करेला, कि सब गुंडन के एक साथ खड़ा कराके सूट कर दीं बाकिर सगरो हवा के रोखे अइसन हो गइल बा कि कुछ कहल ना जा सके, कइल तो अलग बतत बा।

एगो बहुत छोट गाँव बा। ओह गाँव के अटल देहात कहल जा सकेला। उहाँ पर मध्यम और तीसरा वर्ग के लोग रहेला। उँहई एक मध्यम परिवार के लड़िका अभी दसवाँ क्लास में पढ़ेला। ओकरा के देखला पर तो इहे बुझाला कि कम से कम बी० ए० में जरूर पढ़त होई। चाल-ढाल देखला पर तो राजकुमारे अइसन बुझाला लेकिन पढ़ाई-लिखाई में तो एकदम "जीरो"। नाम के खाली-दसवां क्लास के विद्यार्थी कहाला, ओकर साधारण परीक्षा लेला पर पता चलल कि चौठा-पाँचवाँ के भी पूरा गेयान नइखे। देख के मन में सोंचनी कि कुछ समझवला-बुझवला से शायद रास्ता पर आ जाए। हम कहनी —"बबुआ, ठाट-बाट से तूं अपना के दूर राखऽ। जतना खर्चा और मेहनत तूं अपना चेहरा के बनावे में करेलऽ ओतने में तोहार अन्तरात्मो के विकास हो सकेला। तूं अब सेयान भइलऽ, दाढ़ी-मोंछ आ गइल, दू-चार बरिस में शादी-बिआह हो जाई, बोझा सिर पर बढ़ जाई और धीरे-धीरे ई बोझा आउर भारी हो जाई, तब तूं नाको रगरबऽ तो जिनिगी ना सुधरी। अभी से चेतऽ ना तो बाद में पछतावे के पड़ी।" बात तो ऊ बहुत धेयान से सुनलस लेकिन असर कुछ ना भइल। बस उहे हाल भइल—'भइँस के आगे बीन बजावे भइंस चलल पगुराई।' ऊ तुरत जबाब देलस—"बड़ा हितोपदेश सुनावे चलल बानीं, ई गेयान के मोटरी अपने पास राखीं। हम जे भी करतानी, जहाँ जातानी अच्छा बा, रउरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा बारे में बोलला के जरूरत नइखे। आजकाल तो पढ़ला के मतलब बा बाबरी झाड़ के लोफर बन के जवान लड़की सब के पाछे-पाछे घूमल। जे ई काम में डिग्री ले लेलस ओकरे पढ़ाई सार्थक बा। रउरा तो सतजुग के शिक्षा के बात करतानी और ई तो कलजुग ह। जुग बदल गइल तो का शिक्षा के रूप ना बदली ?"

ऊ लड़िका के अइसन बात सुन के तो मन करे कि ओकरा के काँचे चबा जाईं, लेकिन करेजा में फेर कुछ ताकत बटोर के कहनी—"जुग तो बदलबे करी लेकिन उ जुग के अच्छाई के साथ में लेके चले के पड़ी और बुराई के उहँई छोड़ के आगे बढ़े के पड़ी। सवख से रहबऽ तो चेहरा तो जरूर सुनर लागी बाकिर उहो सुनरई खातिर पेट में दाना के जरूरत बा। ई दाना कइसे आई, कहाँ से आई एकरा बारे में भी कभी सोचेलऽ कि ना। जदि ना तो सुनऽ—–पढ़-लिख के जदि आदमी बनबऽ तो दू-चार पइसा कमइबऽ और कमा के आपन, आउर आपन बाप मतारी, बाल बच्चा के पेट भरबऽ। अइसने कइला पर लोग तोहार बड़ाई करी और कही कि लड़िका खूब कमाल देखवलस।"

"छोड़ीं, महाराज ! आपन उपदेस। ई सब सुन के तो हमरा करेजा में आग लाग जाता। हम तो इस्कूल में जाईले। मास्टर साहेब बकर-बकर बकेले और हमार दिमाग तो जवानी में मस्त ऊ सब छोकड़ियन पर रहेला जे हाथ में खुरपी-छइँटी लेके चँवर में घास गढ़े जाली सन् और हमरा के देख के मनें में का दो बुदबुदाली सन्। ओकनी के रूप-रंग देख के त हमार मन करेला कि पढ़ाई-लिखाई छोड़ के इहे तितलियन के पाछे घूमीं और आपन मन बहलाईं। इहे सब सोचत-समझत, रमत-झमत दू-तीन घंटीं बीतला पर इस्कूल में पहुँचीले। इहे तों हमार रोज के नियम बा अब एकरा के रउरा सब जे समझीं लेकिन हमरा तो इही में दुनिया के सब मजा बुझाता।"

ऊ लड़िका के अइसन बात सुन के हम कहनीं-"बबुआ, अभी तो तूं देहात में पढ़ताड़ऽ तो अइसन हाल बा। इहाँ से जब तूं शहर में जइबऽ तब तो तूं आसमाने में आग लगइबऽ। शहर के हवा जब तोहरा लागी और चारों ओर रंगीन दुनियां देखबऽ तब तो तोहार दिमागे चन्हराये लागी। उहाँ पहुँचते-पहुँचते दसो डेग खातिर साइकिल आउर रिक्शा खोजबऽ, मुँह में सिगरेट राख के थुकबऽ और सिनेमा के चाट भीं पड़ी। रोज-रोज इहे सब करम करबऽ और बाप मतारी के पइसा गील करबऽ। हम तो जानते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बानी कि तूं पढ़बऽ ना, इमतिहान होई तो मास्टर साहेब के आँखि सामने किताब पलट के लिखबऽ और बिरोध कइला पर अपना गुरुए के देखइबऽ। का कहीं — ई तोहार दोस नइखे-जबाना के हवे खराब हो बा। चारों ओर त इहे बाजार बा। हमनीं अपना के भी ए से अलग ना राख सकीं। इमतिहान में चोरी करावे में समाज के भीं सहयोग करेला। गठरी-मोटरी बान्ह के घूम-घूम के नम्बर बढ़ा पास करवावेला। ई सबसे डिग्री तो मिलवे करी लेकिन रोजी-रोटी नोकरी ना मिल सके। बेकारी तो अतना बढ़ गइल बा कि एगो खातिर हजारो आदमी दरखास्त देता, तब तो अइसन हालत में ओकरे जगह मिली जे इमानदारी से पढ़ी और पढ़के अपना गेयान के बढ़ावे खा हमेशा जागल रही। तब तो हम इहे कहब कि अपना समाज के खातिर और देश के शान राखे खातिर तूं सब नवजवान जागऽ, सोंचऽ और सोंचके कवनों अइसन ठोस कदम उठावऽ जेमें अइसन विरोधी दोष के समूल विनास हो जाव और चारों ओर सुख-चैंन के बाजो।"

ई सब बात सुन के ऊ लड़िका कुछ फड़फड़ाइल और टकटकी ल हमरा के उपर से नींचे तक देखे लागल।.......

★

स्वर्गीय भिखारी ठाकुर के जीवन आ कृति
पर
हिन्दी में प्रकाशित एकमात्र ग्रन्थ
जनकवि भिखारी ठाकुर
लेखक--महेश्वर प्रसाद
मूल्य—चार रुपया
मँगावे के पता—
भोजपुरी परिवार, पटना--३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हास्य कथा

बरात-जतरा

—उमाशंकर सहाय

कुँअर बाबू के बेटा लल्लू बाबू के वियाह में बरात जाये खातिर टोला-महल्ला के सभ नवहन में कपड़ा-कँपटीसन लागि गइल रहे। केहू शूट बेसह के ले आवत रहे, त केहू बढ़िया से बढ़िया कपड़े कीनि के शूट सिआवत रहे! केहू केहू त मँगनिये-चुँगनी से आपन काम चलावे के जोगाड़ में लागल रहे। हमरा से जब भउजीं कहली कि लल्लू बाबू के बरात करे रउए जाए के परी त हमरा त पसीना छूट लागल। हम साफ साफ कहि देनी कि उनकरा बरात में जाये लायेक हमरा पास शूट नइखे, हम फटीचर नीयर बरात करे ना जाइब। जहवाँ बरात जाये वाला सभ नवछटिया नौशा के भी मात करे के फिराक में होखसु ओइसन जमात में हम नक्कू बने काहें के जाईं? भउजी ई बात सुन के मुसकाये लगली। उनकर कहन म रहे कि केहू कतनो बनि ठनि के आ सज-सँवर के जाय, मगर दुलहिन त मिली दुलहे के। बराती लोग त धूर फाँकत जाला, आ धूरे फाँकत आवेला। लड़की वाला तनी खातिर-बात क देलस त ठीक टेम पर जर-जलपान आ भोजन मीलल, आ नाहीं त पेटो में मुसरिये डण्ड पेलेले। भउजी के बात हमरा तनिको ना सोहाइल। हम उनका के आपन आखिरी फैसला सुना दिहलीं, चाहे जे होखे, हम त अपना संगी-साथिन के बीच बुरिबक बने ना जाइब। जाइब तब्बे जब हमरो खातिर शूट के इन्तजाम हो जाई। नाहीं त भइए जा के बरात क आवसु। ऊ ठेहुनो पर धोती पहिरिहें त उनका के ना केहू हँसी दूसी।

भइया गर गिरहस्ती में बेतरह अँझुराइल रहलन। उनका दमो मारे के सँवस ना रहे। भउजी आखिर लड़-झगड़ के उनका से डेढ़ सव रुपइया झारिये लिहली। रुपया हाथ में आवते हम गते बजार कवर सरकि गइलीं आ शूट, जूता, मोजा, पालिस, नकटाई, रूमाल, साबुन पानी सब जरूरी सामान कीन के ले अइलीं। अब त अपना साथिन में हमरो अपना पाम्ही पर ताव देके बोले के हियाव हो गइल रहे। मगर आउर लोगनि नीयर हम आपन ई शूट-बूट केहूके देखवलीं ना, सभ से ईहे कह दिहलीं कि हमार जीजा फरट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किलास के कपड़ा ले आवे वाला बाड़न, ले अइहें त देखा देव। भउजी हमार कपड़ा-लत्ता देखि के खुस त बहुते भइली, मगर ऊ फेरु आपन फिलसफी बघारे से बाज ना अइली। कहली, "चीज त ई बहुते बढ़िमा बा, मगर ओहिजा केहू रउआ के ना देखे आई। जे आई से दुलहे के देखी आ ओकरे गुन गाई। देखे वाला रउओ के देखी, मगर रउए बियाह में।"

हमार शूट-बूट हमार कवनो सँघतिया ना देखले रहे। बाकिर हम सभ कर देख चुकल रहलीं। हमरा मन में ई परतीत हो गइल रहे कि कपड़ा-कंपटीसन में सेसर हमहीं रहब। आउर लोग हमरा से ओनइसे रही।

बरात जाये के एक रोज पहिले भउजी के छोट बहिन शान्ती इन्टर के इम्तहान देबे खातिर हमरा किहाँ आइल। शहर के रहनिहार रहे, एसे शूट-बूट के मोल आ मरम जानत रहे। हमार कपड़ा देखि के ऊहो बहुत घघाइल। बाकिर हमार बकसवा, जवना में हमार शूट धइल रहे, के देखि के ऊ भ्रवान हो गइल। कहलसि, "ई त अइसने बुझाता जइसे हरिन के बुतरू सूअर के खोभार में चलि गइल होखे। अइसन बढ़िमा शूट खातिर एगो सुन्नर सूटकेस भा अटइची चाहत रहे। ना होखे त हमार अटइचिया तू ले लिह आ दू दिन वास्ते हम आपन कपड़ा-लत्ता तोहर बकसवा में राखबि।

शान्ती के सुभाव त हमरा पसन्द रहबे कइल ओकर सुझाव भी हमरा पसन्द आ गइल, आ हम अपना शूट के अटइची में रखे के काम ओकरा के सँउपि के धोबी किहाँ से लूंगी ले आवे खातिर लपकि गइलीं।

धोबी किहाँ से लवटनी त घर में सन्नाटा रहे। भउजी आ शान्ती बुझला कुँवर बाबू किहाँ चलि गइल रहे लोग। भइया बइठका में बइसल रहलन। हमरा पर नजर परल त कहलन, "तू अभी ले एहिजे बाड़? ओने बरात जाए वाला लोग बस में सवार होखे लागल। का मजाल कि कवनो काम फुरती से कर सकस?" अब त हमहूँ, हड़बड़ा गइलीं। झट दे दू चार कवर खा के उठलीं आ अटइची हाथ में ले के बस पर सवार हो गइलीं।

बस ठचाठच ठकचल रहे। तील धरे के जगहा ना रहे। देहात के उबड़-खाबड़ रस्ता। एक-दोसरा पर ढहत ढिमलात कवनो तरे बराती लोग बेटिहा के गाँव में चहुंपल। बस रुकते सभ भरभरा के उतरि गइल, जइसे कैदी जेल में से छूटत होखे। जनवासा में चहुंपते शरबत के झड़ी लागि गइल। केवड़ा जल आ गुलाब जल के सुगन्ध से शराबोर शरबत चढ़ा के लोग मात गइल। एकरा बाद लोग लेट के करिहाँव सोझ करे लागल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थोड़िकियें देर में बेटिहा किहाँ से कहाव आइल कि बरात सर-सेकराहे दुआर पर लाग जाये के चाहीं। अब त सभ केहू उठि के आपन आपन सामान सँभारे लागल। एक से एक घराऊ पोशाक लोगन के शूटकेस में से निकसे लागल। सभ कर ईहे सलाह भइल कि नदी में नहाइ धोइ के बरात दुआरे लगावल जाव। हमहूँ झट दे आपन अटइची खोलनी। मगर अटइची खोलते हमार माथाघूमे लागल। शूट के जगहा पर शान्तो के सलवार फराक, तौलिया के बदला में ओकर ओढ़नी, लूँगी के एवज में ओकर साड़ी-साया आ बूशट के बदला में ब्लाउज देखि के हमरा आँखि तरे अन्हार हो गइल। एकरा अलावे रीबन, चोटी, नखून-पालिस, ऐना-ककही, पफ-पाउडर आलता आ लिपस्टिक देखि के त हमार खूने सूखि गइल। हम माथा पकड़ि के बइस गइलीं। ओहिजे रमेश ठाढ़ रहें जवन हमरा साथे नदी नहाये जाये खातिर तइयार रहे। ई तमाशा देखि के ऊ ठठा के हँसत भागल। हम ओकरा साथे नदी पर ना जा सकलीं।

रमेश अपना छुछुरपन से बाज ना आइल। नदिये पर सभका से ई कुल्हि बात बता देलसि। नहा धो के अइला पर सभ लोग हमरा के देखि देखि के हँसे आ ठठ्ठा करे लागल। हम अपना अइसन मुँह ले के एगो कोना में चुपचाप बइस गइलीं। सभलोग आपन आपन शूट-बूट पहिन के बरात दुआरी लगावे गइल, आ लवटि के जनवासा में जमि गइल। बनारस से तवाइफ आइल रहे। नाच-गाना के महफिल जमि गइल, बाकिर हम ओइसहीं कोना में दुबकि के बइठल रहलीं।

हमरा के एह जमात में कुजात लेखा अकसरुआ बइसल देखि के रमेश हमरा भीरी आइल आ हमार हाथ धइ के खींचत महफिल में सभका आगे बइसा देलस। अब त तवाइफ भी, जिनकरा सभ बात मालूम हो गइल रहे, हमरा के देखि के ओठे ओठ में मुसकाए लगली आ कहली, "घबराए के कवनो बात नइखे। हम त अपना के अकसरुए बूझत रहलीहाँ, लेकिन जब रउआ बानी, त हमरो तनी दम मारे के फुरसत जरूर मिली। रउआ पासे जवना सामान के कमी होई ऊ हम पूरा क देब।" अब त महफिल में ठहाका लागे लागल आ हम कटि के रहि गइलीं। रमेश हमरा कान में कहे लगलन कि मरदे, तोहार जीजा जी ई कइसन कपड़ा-लत्ता तोहरा खातिर ले अइलेहों? उनका हँसी दिलगी करे खातिर कवनो दोसर दवर ना मिलल हा?

चारों तरफ से नक्कू बनि के हम महफिल से भागि के बहरसी आ गइलीं। अतने में सामने सड़क पर एगो बस आके लागल आ ओ में से एगो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदमी उतर के जनवासा कवर आवे लागल। नीयरा अइला पर देखनी कि भइया हाथ में एगो सूटकेस लेले डुगरत आ रहल बाड़न। उनकरो डाँट हमरा नीमन तरे सुने के परल। हम कहनी कि शान्ती के गलती से अइसन दुरघटना हो गइल हा। बाकिर ऊ मनबे ना करसु। उनकर कहनाम रहे कि शान्ती कपड़ा के फेरबदल करे के काम अपना दिदिया पर ढार देलस आ बाद में हड़बड़ में सभ केहू कुँअर बाबू किहाँ चलि गइल, जवना से बकसा आ अटइची के कपड़ा बदला ना सकल। उनकरा समझ में सबसे बड़ गलती हमार रहे काहें से कि हम बिना देखले-भलले शान्ती के अटैची उठाई के चलि देले रहलीं।

खैर, भइया ऊ सूटकेस छोड़ि गइलन आ शान्ती के अटइची लेले गइलन। हम आपन शूट-बूट पहिन के महफिल में बइठनी त हमरा बुझा कि महफिल के रंगे बदलि गइल बा।

अपना छोट साली पर भइया चाहे जेतना बिसवास करसु, मगर हम ई समुझे से बाकी ना रहलीं कि शान्ती जान-बूझ के हमरा के बरात में नक्कू बनावे खातिर ई खड्जन्तर रचलसिहा। एकरा में भउजी के कतना हाथ रहे, ई हम ना कहि सकीं।

★

बारहे रुपया में आठ किताब

(डाक खर्च अलग)

भोजपुरी परिवार, पटना--३ से मंगाईं

१. जिनगी के परछाहीं (कहानी-संग्रह) ले० श्रीमती रूपश्री —एक रुपया
२. पाँख सतरंगी (कविता-संग्रह) ले० जगन्नाथ —दू ,,
३. भोर हो गइल (,,) ले० पाण्डेय कपिल —दू ,,
४. लहर-लहर में सावन (,,) ले० डा. वसंतकुमार—अढ़ाई ,,
५. पुरइन (,,) ले० शारदानंद प्रसाद —दू ,,
६. चारो ओर अन्हरिया (,,) ले० डा. स्वर्ण किरण —एक ,,
७. सुर पंछी (,,) ले० रामेश्वर प्र. सिन्हा—डेढ़ ,,
८. जनकवि भिखारी ठाकुर (आलोचना) ले० महेश्वर प्रसाद —चार ,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउसाव के भरोस

—विश्वनाथ

तिनका चुनि-ए-चुनि सजलों जे खोंतवा
अरमान पनपे ला मोर
सुरुजो से पहिले दइब से मनाईं ले
गोहराईं ले भोरे-भोर
फेंड़वा के डढ़िया बसेईंवा के जरिया
खएर मनाईं पोरे-पोर
पछेया के अन्हिया बँडेरवा के जोरवा
लागे ना तनिको झकझोर
फेंड़वा के डढ़िया पर चिरई के खोंतवा
खोंढ़रा में सुनुगे ला आग
जरिया त एक ओरि ऊँच दियकाँड़वा
एक ओरि भाँभीं में नाग
हलफा उठाइ दरिआव जइसे कइ दीही
सोरिए खन्हारि के वेलाग
तबहूँ ना कान करे, केहू ना बिचारे भल
एकरा से बड़ का अभाग ?
परलय आन्ही पानी पथल बँड़ेरवा
बनडढ़वा के का मजाल ?
बेरि-बेरि सोंचत - विचारत ठमकि जाई
डेग ना बढ़ावे पाई काल
सजग रहेला जले घर के सवाँग सभ
गले ना कहू के कबो दाल
अपने हियाव-बउसाव के भरोस बड़
ईसरो काटे ले भँवजाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

धाँधली

—अरुण मोहन 'भारवी'

प्रो० महेन्द्र कुसि के कपार के झटकरलन। गरदन घुमा के अगल-बगल तकलन। सब शान्त रहे। सबकर नजर अपना पत्रिका पर जमल रहे।

राष्ट्रीय पुस्तकालय के हाल। साँझ के बेरा। ऊपर 'ऊषा' के जोर से हनहनात पंखा। महेन्द्र कंधा उचका के आपन नजर फेनु पत्रिका पर ढललन। उनकर नजर गीत पर गइल आ छुटक के नाम पर रुक गइल। नाम सोरह प्वाइण्ट के इटैलिक में छपल रहे—'कुमारी रेखा।' कुमारी रेखा' पढ़ते उनका लिलार पर रेखा उभरि आइल। ऊ सोंचे लगलन...। "रेखा !....कौन हियऽ.. कहाँ रहेले ?... उहे त ना जवन हमरा कालेज में पढ़ेले ? जवना के उमिर अठारह के बा।" उनका दिमाग में एगो फोटो झाँके लागल—जइसे दिमाग फोटो के एलबम होखे। गोर रंग। गदराइल देह। छलकत जवानी। मुसकराहट जेकर ओठ के थाती ह। कजरौटी अस आँख—ऊपर से चश्मा। देखे में कतना सुधुआ लागेले। बाकिर जब मुस्कुरा देले त ....कइएक बेरि अइसन घटना हो गइल बा। प्रिंसपल किहाँ ओकर रिपोट अनेक बेरि ऊ लिखवा चुकली। भला फतिंगा दीया से कबों आपन रिस्ता तूर सकेला ? असम्भव बा। ओसही लइकनो के हाल बा। कवनो जवान लइकी लउकल, चाहें ऊ मुंह में मैदा काहें ना लपेटले होखे, उजर चाहीं, बस, मड़राए लगलन ओकरा आगे-पीछे। सुरू हो जाई छेड़खानी। अइसन एगो घटना हमरो क्लास में हो चुकल बा। पहिली घण्टी रहे। हम क्लास में गइनी। रजिस्टर खोलनी आ हाजिरी लेवे सुरु कइनी। तले हल्ला होखे सुरु हो गइल। हम नजर रजिस्टर से हटा के लइकन प ले गइनी। कुछ विद्यार्थी सकपका के चुपा गइल। कुछ अपना धुन में मस्त रहन।

'सर' रेखा बोलली—'देखीं' त ई का बदतमीजी बा।'—रेखा हमरा ओर एगो कागज बढ़ा देलीं। देखनी, एगो प्रेम-पत्री रहे। कवनो अइसन प्रेमी के, जेकरा में अतना हिम्मत ना रहे कि ऊ सामने आके कुछ कहो। रेखा के पारा एक सौ सात डिगिरी पर रहे। हम डाँट-फटकार सुरू-कइनी। एह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काम खातिर बुरा-भला कहनी, समुझवनी ऊँच-नीच आ क्लास 'सस्पेण्ड' क के चल देनी।''

प्रो० महेन्द्र एक बेरि फेनु कप र के झटकरलन। उनकर धेआन फेनु नाम पर गइल-कुमारी रेखा। ई गीत जवन, पत्रिका में छपल बा ओके प्रोफेसर साहेब आपन 'सर्वश्रेष्ठ कृति' मानतरहन। उहे गीत के आज रेखा चोरा के अपना नामे छपवा देले रहीं। महेन्द्र तवे से इहे सोचत रहन। उठि के ऊ राष्ट्रीय पुस्तकालय के बाहर आ गइलन। अब साँझ होत रहे। प्रो० महेन्द्र स्थानीय कालेज में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर बाड़न। महेन्द्र कालेज से लवटत थोड़े देर खातिर पुस्तकालय में जरूरे ठहरेलन। ओकरा बाद घरे जालन। आज ऊ कुछ पहिलही चल देले रहन। सड़क पर भीड़ अभी ना शुरू भइल रहे। महेन्द्र के गोड़ साइकिल के पायडिल पर तेजी से नाचत रहे। दिमाग मे ई बात नाचत रहे कि हिन्दी साहित्य में कतना धाँधली बा। कतना मेहनत से त एगो बढ़िया गीत लिखाता। ओहू पर चोरी। केतना हिम्मत बा अइसन लोगन के। हम कइएक गो कवि-सम्मेलन में ई गीत सुना चुकल बानी। खूब जमल बा। सराहना करत करत सभापति लोग अधा गइल बाड़न। ताली बजावत-बजावत श्रोता लोग थाकि गइल बाड़न। कइसे रेखा के हिम्मत भइल हा ई गीत के अपना नाम से छपवाए के।......सम्पादको लोग त ओइसने बा। कुछ बुझाव भा ना, सम्पादके बनि जात बा लोग। हिन्दी साहित्य कइसे तरक्की करी? कुछ दिन पहिले 'निराला' के एगो कविता रमेन्द्र के नाम से छपल देखले रहीं। वाह रे साहित्य साधना।....'' इहे सोंचत-सोंचत ऊ कई एक बेरि टकराए से बचलन। घरे पहुँचलन। पाकिट से रूमाल निकाल के लिलार के पसीना पोछलन। साइकिल रखलन। कपड़ा बदले खातिर चललन तले उनकर श्रीमती जी सामने आ गइली। बड़ा खुश रही। —''एह बेरा हम अपना पड़ोसिन लोगन के पार्टी देले रहनी हा।''—ऊ कहली।

—'ऊ कवना खुशी में? महेन्द्र पूछलन।

—'हम राउर एगो गीत अपना नाम से भेज देले रहनी हा, छप गइल बा, एही खुशी में।'

महेन्द्र अपना श्रीमती रेखा के बाति सुनि के मुस्कुराए लगलन।

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चेतावनी

विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा'

पाक, तुहूँ बाड़ऽ एके पवाई ।
खिच-खिच के सभ दिन बँगाला से खइलऽ,
आन दियानत के ताखा प धइलऽ,
नोमन करत बाड़ऽ जग में कमई ।

दुनिया में चाहेला के ना अजादी,
काहें बँगाला के हो गइलऽ बादी ?
जुलुम तहार अब तहरे के खाई

तहरा नियन जे भइल अततार्इ,
भारत कइल गुम ओकर हवाई,
होइए गइल आखिर तहरो दवाई ।

मँगनो के कूकुर ले बनलऽ सिकारी,
बैरी से हमरा लगवलऽ इयारी,
अपनेसे घरवा में खोदलऽ हा खाई ।

पाक हवऽ की नापाक हवऽ तूं ?
की कवनो भाठा के खाक हवऽ तूं ?
कोमत तहार बाइ एको ना पाई ।

तहरा कपारे जे घेरले बा सामत,
कसिके तहार बनी लगले हजामत,
'शैदा' के दुभरा तुं देबऽ दोहाई ।

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिट्ठी-पत्री

दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती

(भोजपुरी कवि एवं साहित्यकार)

अध्यक्ष, राजगुरु मठ, बी—३।१७५
शिवालाघाट, वाराणसी

२८-१०-७१

ॐ

'इहचेद वेदीदथ सत्य मस्ति ।
न चेदिहा वेदिन्महती विनष्टिः ॥'

—केनोप (१-६-१४)

प्रिय नरवदेश्वर सहाय जी;

नारायण ।

भगवान काशी विश्वनाथ का दया से रउरा परिवार सहित सुखी-सलतंत आ निरोग होइबि । राउर साधना-सेवा,आचार-विचार एरो निपुन करम योगी संत नियर बा । हम 'अंजोर' का जरिये एगारह बरिस ले राउर भोजपुरी-भाषा कऽ सेवा देखि के दग बानीं । नामवरी लूटे खातिर आज बहुत लोग तइयार बा । मोरचा पर केहू कऽ पता ना लागल । किसिम-किसिम कऽ पचड़ा कइके दल-गिरोह आ गुट कायम होता कि हम अगिली कतार में गना जाईं ! एतने नाहीं अब बहुत लोग भाषा के भरभहट करे का ओर दउरि परल बा । पाठशाला-महाविद्यालय कऽ लीकि पर चले वाला विदमान, एह तरह का कारज में अगहर बाड़न । भोजपुरी भाषा क फूले-फरे का जुग में एह किसिम कऽ किरवना जो जरिये में लागल तऽ गाँछ लहसी ना मँकुड़ि के रहि जाई । भोजपुरी शुद्ध आ खाँटी लिखल जाय । हम ई मानत बानीं कि अबे नयी हालति बा, एने ओने बायें-दहिने लत्ती लगबे करी; बाकी खिचड़ी के रोके खातिर नेम कनून रीति-कायदा बनावल जाय-आ ओकर पालन होखे । भोजपुरी-भासा का खजाना में शबदन कऽ कमी नइखे । अपना मेहनति चतुराई आ बेवहार का निपुनता कऽ जरूरति बा । 'अंजोर' का अपरिल-जुलाई ७१ का अंक में 'जेब' लेख में "अंतरीय, उत्तरीय, आविष्कार, सम्पर्क, पर्यायवाची, पुष्टि, आध्यात्मिक, अहमियत, मुहय्या. हमलावर, मकसद, प्रतीक, परिग्रह, होड़, महत्व, बगलगीर, विक्रेता-मादक, बदकिस्मती, कुलाँचा, क्षणभंगुरता, अजीज,पहलू, चुनिन्दा, अतल, चोखलाइल)" शबद इहे बतावत बाड़न कि एह शबदन का भाव के परगट करे वाला शबद हमरा खजाना में नइखन । बाकी हमरा पास एह कुल्हिये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शबदन का भाव कऽ, एह, सभन ले नीमन शबद बाड़न। जेकरा रेशमी बहतर होखे ऊ टाट क टूक लपेटे? एह शबदन के टाट पर रेशम कऽ बखिया कहल जा सकेला। हमरा केहू का विरोध से मतलब नइँखे बाकी अपना भासा के डा० जाकिर हुसेन भा अउरी राजनीतिक मंशा वाला नेतन कऽ हिनुसतानी बने से रोके क बा। 'राम बादशाह' आ 'बेगम' सीता कऽ डहरि मति पकड़ल जाय। एतने नाही 'रोहतासगढ़' लेख में—"उपत्यका, स्यात्, परिधि, सुरक्षा, अट्टालिका प्रासाद, चित्रित, महासामन्त, कालान्तर, निरस्त्र, आरंभ, सशस्त्र" शबद ओही पगडडी के धइके वढ़त लउकत वाड़न। भासा कऽ गाड़ी हाँके वाला गड़िवान भा रथ का सारथी, चाहे घोड़ा कऽ असवार कहीं—ओकरा कोड़ा-चाभुकि राखे के परी तबे ऊ असल निशाना पर पहुँचि सकत बा! वे लगामि, बे नथ-पगहा का घोड़ा, चाहे गाड़ी सवारी पर चढ़ले, हमन का ठीक जगहि पर ना पहुँचि सकीं। जनता के सुबहित डहरि तबे धरावलि जा सकेले जब अपने सोभ चिक्कनि डहरि पकड़ि के चलल जाय। सुरसती के पुरान सवाँरक आचारज महावीर परसाद जी दुवेदी जवन पुरुसारथ आ तप साधना कइलन, अब रउरा जिम्मे ओइसने कठिन कारज आइल वा। रउरा लेखन के देखीं, सवाँरी-साजीं; भासा के डहरि धरावे खातिर काटी-छाँटी। माँथ आ दाढ़ी कऽ बार छाँटल ना जासु तऽ उनकर का हालि होई? भले माँथ मति मुँड़ाईं, बाकी बारन के साजीं-सँवारी तवे न ऊ नीमन लगिहन। जइसे आज का विदेशी हिप्पी लोग आ सिनेमा का कलाकारन के देखि के खउँजाइल-अझुरल वेढगा केश राखलो एगो फैशन वा; भासा का बारे में ओइसन मति कइल जाय। रउरा जिम्मा एतना काम आ किसिम-किसिम कऽ बोझ बा कि एह भारी महिमा वाला कारज के सम्हारे खातिर कुछ साहसी जवान, विदमानन कऽ जरूरति बा जिनका अकिलि कऽ अपच न होखे आ ऊ सवकरकऽ बान्ह आ चीन कऽ देवालि बनावे खातिर जुटि परसु। रउरा जानत बानीं कि काशपमातंग, धरमफल, बोधिरुचि, शिच्छानंद, परग्या-करमति, बउधजश, नरेन्दरजस नियर हमार भारतवासी विदमन् नालंदा-विकरमशीला-उदंतपुरी आ तच्छशिला से चलि के पहिली, दूसरी तीसरी से छठवीं सइवरखी तक का बीच में कइसे पामीर पर चढ़लन आ तकलामकान आ गोवी का हजारन कोस लमहर मरुभूइँ के पार करत चीन पहुँलन। ओहिजा जा के चीनी भासा-लिखावट सीखि, संसकीरित का अनमोल गरंथन कऽ चीनी में उलथा कइलन। आज हमन का आगा ओतना कठिनाई नइँखे, बाकी ओइसन साहस पुरुसारथ आ ईमानदारी कऽ जरूरति बा तबे बेड़ापार हो सकेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहता सउदा नीमन ना होखे। महँग दाम देके ठगाईं मति बाकी दाम बचावे आ पइसा का कोताही से सरलो गलल चीज मति कीनीं। अलम-गलम बटोरि के का होई ? बंचपारी अनाज कऽ खरीद करेलनि तऽ कई किसिम कऽ झरना राखेंलनि। तीली भें कऽ चउरी झारेवाला, लतरी-हुँड़फोर कऽ इंकटी अलगावे वाला। गहूँ आ चाउर झारेवाला। चना-जव फरका करे वाला। अगर झरना ना रहसु तऽ अनाजन कऽ का दशा होई ? झरला-बनवला से अनाज कऽ मोल बढ़ेला, कबे घटे ना। बस भाषा के सवँरि-साजे, सरियावे-तहियावे का बारे में सवाँरक के एतने इशारा बहुत बा। ऊ पारखी कलाकार हऽ ! पटना से लवटि के हम कई कामन में लागि गइलीं। आजु-काल हमरा सभ समय आ मेहनति भोजपुरी-भासा के धनी बनावे आ पोढ़ करे में लागि रहल बा। दसखति करावे वाला जवन कागज ले अइली-एही से ओमें कुछ देरी भइलि। बाकी जवन दसखति भइलि ऊ चुनल-चुनावल कऽ जिनकर ओजन बा।

हम आपन नव पन्ना कऽ लमहर भोजपुरी चिट्ठी आ भोजपुरी-पद में डा० सुनीति कुमार चटरजी के लिखल खुली चिट्ठी डा० उदय नरायम तिवारी जी के भेजले रहलीं हूँ। उहाँ का ओरसे बहुत परभावित बानीं। उहाँ कऽ जवाब आइल बा। हमार भोजपुरी चिट्ठी आ डा० सुनीति बाबू वाली पतिरी उहाँ का अपना 'महत्वपूर्ण फाइल'' में रखले बानीं। उहाँ कऽ बेवरा-चिट्ठा (रिपोट) साहित्त-अकादमी में भेजल जा चुकल बा। आशा बा कि भोजपुरी के मानिता मिली। डा० सुनीति जी वाला जवन टाइपकइल पद वाली चिट्ठी हम रउरा के दे अइलीं— ओकरा में कुछ कमी जानि शोधलीं सवँरलो हूँ। एहसे अगर जो ऊ छपलि न होखे तऽ नया शोधल रूप "अंजोर'' खातिर भेजि रहल बानीं। रउर दया ई होखे कि ओके सज से पूरा कऽ पूरा छापि दीं। तिवारी जी कऽ भी राइ बा जइसन कि उनका चिट्ठी से झलकत बा कि ओह पदवाली चिट्ठी कऽ पंडित सुनीति बाबू आ माचवे जी पर जरूर अच्छा असर परो। एह से भोजपुरी का हित खातिर ओके पूरा कऽ पूरा छापीं। रउरा के भोजपुरी के मरजादा दियवावे कऽ सुजश मिलले चाहत बा। एकरा बाद हम गद्य लेखन कऽ पोथी आ नया कहनिन कऽ संगरह तइयार करे में जुटल बानीं। कारज मेहनति कऽ बा बाकी होइबे तऽ करी। उहो एह किसिम कऽ कि केहू अंगुरी न उठावे। ए तरे त दहीं म खइँचि बीनेवालन कऽ कमी कहाँ बा ?

रउरा परिवार सहित सुखी आ जीव-जाँगर से रहीं, सइ बरिस कऽ बरदुवाई पाईं कि भोजपुरी भासा का माँथे सोना कऽ मुकुट चढ़ा सकीं। माई-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का सेवा ले बढ़ि के दूसर धरमे का बा ? लरिकाईं में जइसे लइकन खातिर महँतारी कऽ दूध जरूरी होला·ओइसहीं अपना उन्नति-तरक्की आ आगे पुहुट बने सयान होखे खातिर महँतारी का गोदी में ले जवन भासा बोली सीखत आवत बानीं जा ओकरे मर्दाति लेके हमन का अपना समाज के ऊँचा उठावल जरूरी बा। एहीसे कयलान आ सुगति बा। 'वउध-लीला' ईशर का मरजी से समय अइला पर छपवे करी। हम ओकरा भूमिका लिखे का तइयारी में बानीं जवना में, भारतीय आ वउध-दरशन, आचार-विचार, इतिहास कथा-आ पुरानी कला कारिगरी आ भासा का सवालन पर विचार कइल जाई। हम हरदम रउरे दया भरल नजरि कऽ आशा राखि के कुल्हि काम करत बानीं। रउरा बगडोरि के अपना मजबूत हाथन में लेके रथ के सिजिल डहरि से हाँकीं।

['सरस्वतीजी' के एह चिट्ठी में उठावल सवालन पर पाठक लोग आपन राय देउ।
—सम्पादक]

आवे दऽ

आवे दऽ आवे दऽ आजु आवे दऽ
आवे बाउर भला जे, आवे दऽ

राह आपन बनाईं, रोकऽ जनि
आजु कहँवाँ ई जाई, टोकऽ जनि
धार ई दम धरी ना, धावे दऽ
बात बूझे के बा, जहुआवऽ जनि
आन केहू भिरी पहुँचावऽ जनि
जोह जेकर बा ऊहे पावे दऽ
आँखि में तूं अन्हरिया पोसऽ जनि
दूपहर के अनेरे कोसऽ जनि
जोतिया ई नयन के भावे दऽ
नाक मोरऽ भँहू सिकुरावऽ जनि
कंठ खोलऽ गते बतिआवऽ जनि
गीत हमरा सोहा जे गावे दऽ
भाव आखर इहाँ बा, रूसऽ जनि
रूप रूखर भले बा, दूसऽ जनि
रंग माटी के निखरी, तावे दऽ

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भुलइहऽ जनि बतिया

नदि रेतिआ का तीरे मोर डेरा, भुलइह ऽ जनि बतिया।
कहँवा के धरती ई, कहँवा के पनियाँ ?
येही बलुरेतिया प, छन के मिलनियाँ।
तुरते अजान कवना सागर का ओरिया।
बहवा ले जाली, समझ्या के गतिआ ?
नइया उतान जालीपाल पतवार से,
बिना नेह-पाल हम, लड़ी कइसे धार से ?
लहर से भँवर से लड़ेके बवन्डर से।
नइआ के मोरा पतवार बा पिरितिआ।
एक दिन उमड़ि के आई बरसतिया,
डेरा डन्डा संगे बहिजाई बलुरेतिया,
कहँवा रहबि हम, कहँवा रहब ऽ तूँ ?
रहि जाई कहनी, हमार तोहार बतिया।
उपर अकास नीचे नदिया ई रेतिआ ?
सब बहुरूपिया ई बड़ा उतपतिया।
हमरा के चैन लेबे देला दिन रात
दिअवा जराके सँगे जारीं सारी रतिआ।

सत्यनारायण "सौरभ"

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के प्रकाशित साहित्य के सूची

(१) बिसरल जिनिगिया के गान (भोज-कविता संग्रह) रचयिता—विमल कुमार सिंह 'विमलेश', प्रफुल्लचन्द्र द्विवेदी 'ददन जी', ब्रजकिशोर दीक्षित, व्रजेश। प्रका० भोजपुरी समाज, विहार बाणिज्य प्रशिक्षण केन्द्र, सीवान (सारण), प्र० का० दिसम्बर, १९७० ई०। पृष्ठ संख्या २९, मूल्य ७५ पैसा।

(२) भोजपुरी बिगुल (कविता संग्रह), सम्पादक, राधामोहन राधेश। प्रका० भोजपुरी साहित्य-मन्दिर, जगतगंज, वाराणसी-२, छपरा, बिहार। प्रका० २३ अप्रैल, १९७१। पृष्ठ संख्या २४, मूल्य ३० पइसा।

(३) जय बंगला (बंगला देश पर २८ सवैया), ले० अविनाशचन्द्र विद्यार्थी। प्रकाशक, भोजपुरी परिवार, पटना-३, प्र० का० ३० अप्रिल १९७१, पृष्ठ संख्या कवर लगाकर २०, मूल्य ३५ पैसे।

(४) विवाह गीत (गीत-संग्रह)—ले० विश्वनाथ प्रसाद 'चन्दन'। प्रका० विश्वनाथ प्रसाद, द्वारा शम्भूशरण श्रीवास्ताव (पोस्टल एकाउन्टेन्ट), पोस्टल हेड आफिस, मोतीहारी, चम्पारण, प्रकाशन काल १९७१ जुलाई पृष्ठ संख्या ४०, मूल्य १ रु०।

(५) पुरइन (कविता संग्रह), ले० शारदानन्द प्रसाद, बी० काम, डीप-ईन-एड०। प्रका० ग्रन्थरत्नम् २ ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना १। पृष्ठ संख्या ४८, मूल्य दू रुपया; प्रकाशन काल १५ सितम्वर, १९७१।

(६) जिनिगी के परछाहीं (भोज० कहानी संग्रह), लेखिका रूपश्री। प्रका० रुप प्रकाशन, पटना-४ प्र० का० अक्टूबर, १९७१। पृष्ठ संख्या ५५, मूल्य एक रुपया।

(७) हिलकोरा (काव्य संग्रह) ले० श्रद्धानन्द पाण्डेय, प्रकाशक, रचना प्रकाशन, चन्द्रपुरा, हजारीबाग, बिहार। प्रकाशन काल—पृष्ठ संख्या ४४, मूल्य १ रु० ५० पैसा।

(८) लहर लहर में सावन (कविता संग्रह) ले० डा० वसन्त कुमार प्रकाशन—अरुणोदय, लखनचन्द कोठो, महेन्द्रु, पटना-६, वितरक भोजपुरी परिवार, सालीमपुर अहरा, पटना-३। प्रका० २१ अगस्त, १९७१, पृष्ठ संख्या ४६, मूल्य २-५० पैसा।

(९) भोर हो गइल (कविता संग्रह) ले० पाण्डेय कपिल, एम० ए०,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रका० ग्रन्थ रत्नम् २, ईस्ट गार्डिनर रोड. पटना-१, प्र० का० १५ अगस्त, १९७१। पृष्ठ संख्या ५६, मूल्य २ रुपया।

(१०) मनवा के साध (भोज० नाटक) नाटककार—विमल कुमार सिंह 'विमलेश' बी० ए०। प्रकाशक—विहार वाणिज्य प्रशिक्षण केन्द्र, सीवान (सारण)। प्रका० अक्टूबर, १९७० पृष्ठ सं० ६५, मूल्य १.५० पैसा।

(११) बन बन बोलेले कोइलिया (लोक संगीतिका संग्रह) ले० मोती, बी० ए०। प्रकाशक—भोजपुरी संसद, प्र० का० १९७१, मूल्य ४ रु०।

(१२) चारो ओर अन्हरिया (कविता संग्रह) ले० डा० स्वर्ण किरण, प्र० का० मिथिलेश प्रकाशन, आरा। प्र० का० अक्टूबर, १९७१, पृष्ठ संख्या ३२, दाम १ रुपया।

(१४) बैरिन्ह-बँसुरिया (कहानी) गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश'। लोक संगम प्रकाशन। (भोजपुरी कहानियाँ में छापल विज्ञापन से।)

(१५) हल्फी (कविता संग्रह) ले० मृगेन्द्र प्रताप सिंह 'श्रमिक'। प्र० भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर, मूल्य १ रुपया। (तमाचा का पकाशित पुस्तकन का सूची से।)

(१६) तमाचा (बाल एकांकी संग्रह) ले० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' प्र० जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर द्वारा रोड ए, क्वार्टर टी।६ टेल्को कालोनी, जमशेदपुर-४ (बिहार), प्रका० १९७१, पन्ना ५४ मूल्य १ रुपया।

(१७) क्ष त्र ज्ञ (काव्य संग्रह) ले० परमेश्वर दुबे, शाहाबादी। प्र का० भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर, दाम १ रुपया। (तमाचा का प्रकाशित पुस्तकन का सूची से।)

(१८) बंग-बत्तीसी (बंगला देश पर ३२ गो कवित) लेखक-धीरेन्द्र प्रसाद सिन्हा 'धवल', प्रकाशक—भोजपुरी परिवार, पटना-३, प्र० का० सितम्बर '७१ पृष्ठ स० २४ मूल्य ५० पइसा।

(१९) हीरा—मोती (कविता-संकलन) पाँचकवि यन के दस-दस गो कविता प्रकाशक—बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी साहित्य परिषद, मुजफ्फरपुर प्रकाशन काल अक्तूबर १९७१, पन्ना ११४ दाम पाँच रुपया।

—प्रधान सम्पादक

ऊपर के लिखल कुल्हि किताब, लिखनिहार भाई लोग से समीक्षा खातिर 'अँजोर' कार्यालय में मिलल। न० ७ आ १४ अबहीं ले ना मिलल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिया मोर धीरे बोलऽ

मातल फगुनवा के सुहागिन ई रतिया
पिया मोर धीरे बोल ऽ
सुनिहें पड़ोसिन चोर, पिया मोर धीर बोल ऽ ।

बदरा का घुँघटा से झाँके चन्दनियाँ
बेरि-बेरि चाँद के, बोलावे सिरहनियाँ ।
करे सौतिन पुरवा जे शोर, पिया मोर धीरे बोल ऽ ।

तूँ परदेसिया बनवलऽ जोगिनियाँ,
मारेले रोज ताना ई छोटकी गोतिनियाँ,
सासु मोरा कठिन कठोर, पिया मोर धीरे बोल ऽ ।

ई सनसार हवे एगो मेला,
खोजीले प्यार, मिले ला झमेला ।
बिकल जवनिया वे मोल, पिया मोर धीरे बोल ऽ ।

दिल दरिआव, दरद बहे धारा
जिनगी के नइया ना पावे किनारा,
प्रीत पतवार पिया हाेर, पिया मोर धीरे बोल ऽ ।

प्रो० प्रभुनाथ सिंह

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

परिवर्तन

—डा० स्वर्णकिरण

चित्र प्रदर्शनी के संयोजक महोदय के धन्यवाद के साथ चित्रकार अनिल के चित्र जब वापस आ गइल त अनिल के अपना पर आ आपन मित्र श्याम मोहन पर कुछ क्षोभ आ कुछ क्रोध भइल— क्षोभ एह से कि चित्र सम्मिलित तक ना कइल गइल, क्रोध एह से कि चित्र, श्याम मोहन के कहे से, आखिरकार, भेजे के निर्णय काहे कइलस। श्याम मोहन अंतरंग हवन, दृष्टिसंपन्न बाड़न, बढ़िया आलोचक आ मीमांसको हवन बाकिर लागत बा कि अपमानित करे खातिर ऊ अनिल के कह देलन कि चित्र, प्रदर्शनी में पुरस्कृत होई आ अनिल के नाम देखते देखते सामने आ जाई, अनिल चित्र जगत में सम्मानित होई आ ओकर दुःख दरिद्दर भी मिट जाई; पत्नी के ताना मारल खतम हो जाई, लइको सब घी आ दूध खातिर तरसिहें स ना।

अनिल अपमानित भइल बाकिर चित्र बनावे के काम के ऊ तिलांजलि ना देलस। पत्नी के ताना रहल। लइका सब घी आ दूध खातिर तरसत रहलन।

दोगिना उत्साह के साथ अनिल उषाकाल के एगो चित्र बनवलस एगो कुमारिका के प्रतीक के रूप में जवन स्वर्णाभा से मंडित आ आशालोकन के संवाहक हो सके आ नगर के प्रतिष्ठित पत्र में छपावे खातिर भेजलस बाकिर इहो पत्र संपादक के स्वीकार ना भइल आ अनिल के पास लौट आइल। एह बार अनिल चूंकि अपने से चित्र भेजले रहे एह से संपादक के कवनो तरह के टिप्पणी भा धन्यवाद के अभाव ओकरा ना अखरल। चित्रकार अनिल के साधना जारी रहल।

थोड़ही दिन के बाद एगो नवोदित चित्र-पत्रिका के संपादक महोदय अनिल के नाम से एगो पत्र भेजलन जेह में कवनो आस्थापरक नया चित्र के ऊ माँग कइलन। पत्र से अनिल के बल मिलल आ अनिल ई महसूस कइलस कि चित्र-पत्रिका के संपादक ओकर प्रतिभा के स्वीकार त कइलस। अनिल तीन रात आ तीन दिन लगातार मेहनत कर के एगो मृग के चित्र बनवलस आ ओकरा के भेज देलस। संपादक महोदय के पावे के खबर पाके ऊ धन्य हो उठल आ नया-नया कल्पना में विभोर हो गइल; आपन साधना के सफलता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर ओकरा कुछ गर्वो भइल। अनिल चित्र-पत्रिका के संपादक महोदय के अनेमन धन्यवाद देलस बाकिर एक बरिस तक चित्र-पत्रिका में चित्र ना छप सकल; आ अनिल जब स्मृति-पत्र भेजलस त ओकर चित्र वापसी डाक से लौट के चल आइल।

अनिल सिर पीट लेलस; आ चित्र-पत्रिका के संपादक महोदय के छल, व्यवहार-कौशल के प्रति मानसिक वितृष्णा भी प्रगट कइलस। पत्नी अनिल के आउर जरल-कटल बात सुनवलसी; चित्रकार अनिल थान के गरम-गरम दूध के अइसन बातन के पी गइल। साधना जारी रहल। देखते-देखत ढेर चित्र बन गइलन स।

अनिल आपन चित्रन के विहगावलोकन कइलस आ वर्गीकरण करके प्रत्येक के शीर्षक आपन कापी में अँकित कर देलस। ओकरा भीतरी संतोष भइल कि सौ से ढेर बढ़िया चित्र ऊ बना डललस। दरिद्रता के उपहार ना भइल ई दोसर बात समझीं।

अनिल के मन में आइल कि चित्रन के विज्ञापन करो बाकिर ओकरा पास पैसा कहाँ बा? श्याममोहन के हियां अनिल के आइल-गइल घट गइल रहे से एह बार जब अचानक श्याममोहन से भेंट भइल त अनिल पूछलस, अब का करे के चाहीं?

श्याममोहन राय देलन कि आपन खर्चा से चित्र के विज्ञापन आ प्रकाशन होखे के चाहीं। अपना पास पइसा ना होय त चंदा के सहारा लेल जा सकेला बाकिर ई अनिल के स्वीकार ना रहे।

बेचारा अनिल लाचार रहे। ऊ आपन चित्रन के अपना पासे सुरक्षित रखत जात रहे, कहीं भेजे खातिर तइयार ना होखे; लइका सब ओकरा के लेके खेले के चाहऽस त ऊ डांट देलें आ पत्नी बिगड़े त कह बइठे कि अबहीं कुछ बिगड़ल नइखे।

अनिल के मन छोटा भइल त ऊ ख्याली पोलाव पका लेलस सोचे। दिल के अभिरुचि लोगन में घट गइल बा, कबहीं हीन भाव ओकरा मन में उठे कि बेकार चित्र-निर्माण के प्रति ऊ प्रतिश्रुत भइल; ओकरा चित्र-निर्माण के काम छोड़ के कुछ दोसर काम करे के चाहीं, लइकन के पढ़ावे के चाहीं आ कवनो सेठ आ महाजन के दोकान आ कारखाना में नौकरो कर लेवे के चहीं। बाकिर कुछ भी ना हो सकल। बेचारा के पिता के सब सँचल धन खतम हो गइल आ अनिल देखते-देखते मृत्यु के प्राप्त हो गइल अचानक एगो कार से धक्का खा जाय के कारण। कारवाला अनिल के अस्पताल पहुँचवलस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाकिर बेचारा बचावल ना जा सकल आ ओहो अनिल के पत्नी आ लइकन के धरे आ के आपन अनजान गलती के बारे में बतलवलस। अनिल के पत्नी दहाड़ मार के रो उठल; लइका सब पिता खातिर बेचैन भइलन स बाकिर अनिल के श्राद्धकर्म के अवसर पर आगंतुक लोगन में से एगो आगंतुक अनिल के दीवार पर टाँगल एगो चित्र के अकस्मात् देखलस आ ओह में अंकित अनुभूतियन पर मंत्रमुग्ध हो गइल। ऊ अनिल के पत्नी से चित्र के खरीदे के संबंध में पूछलस त अनिल के पत्नी कहलस—एह तरह के त ढेर चित्र पड़ल बाड़न स।

आगंतुक व्यवसाय के खोज में रहे बाकिर कवनो मन लायक व्यवसाय मिलल ना। असल में ई चित्र-पारखी रहे आ चित्र-व्यवसाय के एगो नया मोड़ देवे के चाहत रहे से अनिल के निर्मित चित्रत के देख के आश्वस्त भइल कि एह से लाखन के प्राप्ति हो सकेला।

आगंतुक महोदय अनिल के पत्नी से कहलस–ई चित्र बिक सकेलन स ?

पत्नी कहलस—काहे, चित्रन में कवनो बात बा का ?

आगंतुक—बात काहे नइखे, सब चित्रन के अपने के केतना में दे सकीला ?

पत्नी—अपनही के बतलाईं, कवन हजार-दू हजार एकर मूल्य होखी ?

आगंतुक—हजार दू हजार; अतना कम मूल्य में ई चित्र मिल सकेलन स ? हम त सोचले रहीं कि पचास-साठ हजार भी एकर मूल्य कमे होखी। पत्नी आश्चर्यमग्न हो गइल ! अतना अधिक मूल्य बा एह चित्रन के त ईसबन के एहिजे रहे दी। मन में समझलस कि आगंतुक महोदय व्यंग्य से अइसन कह रहल बाड़न।

आ आखिरकार बात दोसर लोगन के हस्तक्षेप से ई तय भइल कि चित्र के आगंतुक महोदय अइसही ले जास आ फेरु रायल्टी के आधार पर खुदे जवन उचित समझस, दे दीहें।

श्राद्ध के बाद चित्र-पारखी आगंतुक अनिल के चित्रन के अपना साथे ले गइलन आ कहल जात बा कि पहिल का बरिस के आखिर में अस्सी हजार रुपया थोक के रूप में भेजलन ई आशय के पत्र के साथ कि रायल्टी के हिसाब बाद में हो जाई।

अनिल के पत्नी अतना रुपया ना देखले रहे, आपन दिवंगत पति के साधना-क्षमता आ कुशलता के अनुमान कर के विस्मय विमुग्ध हो गइल आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकरा पश्चात्ताप भइल कि ऊ जीवन काल में आपन पति के काहे ताना दे रहे।

बात ई भइल कि चित्र-पारखी आगन्तुक अनिल के कुछ चित्रन के फोटो के मुद्रित करा देलस आ ओकरा के फ्रांस के चित्र प्रदर्शनी के संयोजक के पास भेजलस त ऊ चित्र पसंद आ गइलन स आ फ्रांस के राजा ओकरा एक मौलिक चित्र के एक-एक लाख रुपया पर खरीदे के तइयार हो गइल से अनिल के पाँचे गो मौलिक चित्रन के पाँच लाख ओकरा मिल गइल, फेरू ऊ अस्सी हजार अनिल के पत्नी के पास भेज ही देलस त एकरा से का, अबही सैकड़न चित्र अनिल के सुरक्षित रहे। दोसर देशन में त ओकर फोटो प्रिंट्स ही कई एक हजार में बिका गइल आ कई एक हजार आगे भी ओकरा मिली।

अनिल के पत्नी अनिल के चित्रन के संबंध में एह प्रकार के कल्पना सपनो में ना कइले रही। ओकरा सामने मरल स्वामी के बात बिजली के समान नाच गइल। समय सबसे सच्चा चिकित्सक ह।

अनिल के लइका अब कुछ बड़ा हो गइल रहन स। अनिल के पत्नी चित्र-जन्य वितृष्णा के अब दूर कर देले रहे आ सोचत रहे, आपन लइकन के चित्रकला में ही दक्ष करे। चित्रकार अनिल मृत होके भी अमृत के समान विद्यमान रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विशाल नसबंदी शिविर

१ फरवरी से २० फरवरी १९७२ तक

—प्रत्येक आपरेशन कराने वाले पुरुष को ६० रुपया नक़द

—आपरेशन के दिन भोजन की व्यवस्था

—टाँका काटने के दिन एक-एक धोती

—सवारी की मुफ्त सुविधा

—आपरेशन के बाद देखभाल की व्यवस्था

—उत्प्रेरकों (मोटिभेटर) के लिये भी पुरस्कार

—प्रखण्डों एवं पंचायतों के लिये भी पुरस्कार

स्थान :—१—मुख्य शिविर—मुजफ्फरपुर तथा मुंगेर

२—उप शिविर—पटना, नवादा, सीतामढ़ी, गोपालगंज, बेगूसराय, खगड़िया एवं जमुई

ऐसा मौका बार-बार नहीं आयेगा, इन शिविरों में आपरेशन का लाभ उठाएं।

—राज्य परिवार नियोजन ब्यूरो, बिहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मँगनी के बासन

—ज० स० 'असोम'

एक दिन हमार पड़ोसी हमरा केवांड़ी के पल्ला के मुकवसे लगले, चार-पाँच बेर घड़-घड़ आवाज हो चुकल त हड़बड़ा के खोलनीं। रात के दस बजत रहे, सभे खा-पीके सुते खातिर तइयार रहे।

—"का जी, का बात बा ?" अनसइले पूछलीं।

—"एजी, पानी घइले बानी ?" उहाँ के भी अंदेशा से ही आपन परोजन कहलीं। लीं सुभे, एहीजा दूतल्ला के क्वार्टर में इहो बड़हन दिक्कत बा। रात में आठ बजते पानी बन्द हो जाला। आ कहीं नीचेवाला भाई-बहिन, लरिका-फड़िका आपन कल साढ़े सात बजे खोल देलन त अउरी आफत। ओही घरी राउर छुट्टी। हमार तीन बेकत के परिवार रहेला-एहसे एगो बल्टी रखले बानी, राम के नाँव लेके दू-तीन लोटा पानी बंचल रहे-दे देलों। मगर, एक बजे राते में लरिकवा बिछवना गंदा कइ देलस। मत पूछीं-ओकर गद्दी पूरा चफना गइल। आ घर मे एको बूंद पानी ना। मेहरारू फरके भनकस आ हमार मिआज फरके भड़के (गलती छिपाईं कइसे ?)। खैर, जइसे-तइसे 'लैट्रिन' के कल से पानी लेके सफाई-धुलाई कइल गइल।

एक बार आपन एगो दोस्त दोस्ती के हवाला देके हमार छाता के गइले। कहले कि दू मिनट के बात बा बाजार से अ के दे जाइब, का करीं, दे दिआइल। साँझ तक आसरा देखनी-बाकिर, उहाँ के अइलीं ना। आ ओह पर मुसीबत ई कि बरसा कहे-आज छोड़ काल्ह बरसब ना। अब का होखो ? अबेर हो गइल त भींजत-तींतत ओरी-अंटारी के छांह धइके घर से निकलनीं। सवाल रहे-बिहान काम पर जाए के। अगर मेंह खुलल ना त बिना छाता निकलल परेशानिए मोल लीहल होई। मतलब, बड़ सकेता। परके घर छोड़नीं। लुकात-बंचत दोस्त के घर भिरी पहुंचिके गोहरवनीं। हमरा त महसूस ना भइल-लेकिन हमार आवाज जरूर बेतरहे करुण हो गइल रहे। काहे कि, मड़ई में तनिकी जमीन खानके बइठल एगो लंगड़ कुकुर हमरा स्वर में स्वर मिलावे लागल। हम अऊरी ऊँच गोहार लगवनीं। तबे उहांके घरेवाला पूछली—"के ह ?"

—'परसाद जी बानी ?' हमार आवाज साँचो काँपत रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन में बड़ा फतूर उठे। आदमी-जनावर के नाम पर एगो कुकुरे भर लउके आ नाहीं त' खाली पानी-ठहऽ,ठहऽ, पता चलल कि उहां के लवटल नइखीं। अभी त साते बजता। अइला पर तुरंत हमरा घरे पेठावल जाइब। मन मारके चल देलीं। घर मे घुसत घुसत नीकहा देहि गरमा चुकल रहे। सबेरे के फिकिर में रातिखान ठीक से नीनो भइल आ जूड़ी-ताप फरके तबाह कइलस। मजा देखीं कि रात में बरखो बिला गइल आ होते भोर ऊ भेयानक कि मिनट भर भी बन्द ना होखे। हम त छुट्टी ले लेलीं बाकी, हमार दोस्त काम पर गइल रहले, हमरे छाता के भरोस पर। मगर, भइल का कि हवा लागि के छाता उलट गइल आ दू गो कमानी एकदम नव गइलीन स। ई सब हमरा साँझ के मालूम भइल आ इहो कि एह घरी छाता मरम्मत करेवाली दोकान मे दीहल बा। अब रावा से का कहीं? आजतक ऊ बेमरम्मत छाता उहां के काम मे लाईना आ हम गरीब इहो ना कहि सकीं कि हम अपने करा लेब, छतवा दे दीहल जाव।

त हमार हथजोरी कि मँगनी के चक्कर में ना अपने रहीं लेकिन, ना एह मामिला में केहू के तनिको बढ़ावा दीं। हम त मुँहदूबर आदिमी-कचोट सहि के रह गइलीं। बाकिर, अब कवनो चीज-बतुस हालाहाली न माँगत बनेला न केहू के देत बनेला। अउरी-सब छोड़ीं। अबकी पारी अमेरिका से माँगल हथियारन के घाव देखीं जवन पाकिस्तान का पीठ में अँगुरी भर गँहिर हो गइल बा। आ तय बा कि ई सएन बनके जिनिगी भर पसात रही कवनो करे चैन ना भेंटाई।

आ बात से बात निकल गइल त इयाद परता—मोपासाँ के एगो विश्व-विख्यात कहनी 'कंठहार'। कहनी के हीरोइन एगो पार्टी में जाए खातिर अपना सखी से एगो कंठहार मंगनी लेली। पार्टी से लवटली त हार गाएब। अब दूनो बेकत आपन सब इजत, अदकात बेच के ओकर कीमत जोगाड़ कइले आ सखीके ओइसने हार कीन के दी आइल। बाकी उमर भिखमंगा बनके करजी उतारे के फिकिर मे पिफिरनी बनल बीते लागल। अन्त मे मालूम का भइल कि सखी के हार नकली रहे आ ई लोग असली लवटा देले रहे। अपनहीं बूझि सकीला कि मँगनी के हार दू गो प्रानी के जीवन कइसे तबाह करके राख देलस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

पुस्तक परिचय

भोर हो गइल— (कविता-संग्रह) ले० पाण्डेय कपिल, प्रकाशक—ग्रंथ रत्नम, २ ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-१ पन्ना ५६, दाम दू रुपया, प्रकाशन काल अगस्त ७१। पांडेय कपिल, एम- ए. हिन्दी आ भोजपुरी के जानल मानल साहित्यकार हवे। गद्य आ पद्य दूनों में उनुका कलम के करामात देखे लायक होला। उनुका एह प्रथम भोजपुरी कविता-संग्रह के नामकरने से सुरुचि-संपन्नता के परिचय मिलता। सजधज से सँवारल 'गेट अप' का भीतर संचल कविता के संख्या भी समहुती बा—एकावन। कवि के अपना कहनाम का मोताबिक भोजपुरी कविता के अब अखोर-बखोर के जरूरत नइखे। उनुका बीस बरिस के साधना के सुफल का रूपमें एह संग्रह में किसिम-किसिम के चीज लउकता, गीत, गजल, मुक्तक व्यंग्य आ मुक्त छन्द के कविता जवना में अनुभूति के गहराई बड़ा स्वाभाविक ढंग से झलकता। मुक्तकन में सूक्ति के क्षमता आ गजल भा गीतन में सजीव कसक के सम्मोहन भरल बा। भोजपुरी मुक्तक-काव्य के इतिहास में ई संग्रह आपन अमिट चरण-चिह्न ले के आइल बा। छपाई-सफाई में कलाकारिता के निखार भरल ई संग्रह हर घर आ पुस्तकालय के शोभा बढ़ाई।

लहर लहर में सावन (कविता संग्रह) ले० डा० वसन्त कुमार, प्रकाशक अरुणोदय, लखनचन्द कोठी, महेन्द्रू, पटना-६ पन्ना ४६ दाम अढ़ाई रुपया प्रकाशन काल सितम्बर ७१।

भोजपुरी के आधुनिक परिवेश सँवारे-सँभारे खातिर ठाढ़ भइल अङुरी पर गिनाये जोग बिहार के कवियन में वसन्त कुमार जी हईं। एह संग्रह में उहाँ के छत्तीस गो रंग बिरंग के कविता बाड़ी स। हरेक रचना का नीचे ओकर सृजन-काल के सूचना ऐतिहासिक महत्व-बोध करावता। बाइस बरिस का भीतर उनुका हाथे गाहे-बेगाहे जे कुछ उतरल ऊ समय का लमहर पसार के देखते भले गिनती में कम लउके बाकी एह विद्वान लेखक के अपना मातृभाषा का ओर भक्ति-भाव में कवो कवनो कोर-कसर नइखे आइल एकर प्रमाण बा। कवि का कहनाम से कुछ अपवाद छोड़िके संग्रह के सब गीत लोक धुन पर आधारित बाड़े स। तबहूं ई कहे में इचिको हिचक नइखे कि अधिकतर गीतन में कला के सँवार अपना ढंग से भइल बा। संग्रह का साथे छव पन्ना के भूमिका में भोजपुरी भाषा आ साहित्य का बारे में मजगर विचार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइल-गइल बा जेह से एह किताब के महत्त्व बहुत बढ़ि जाता। छपाई-सफाई का लेहाज से पुस्तक अत्यंत सुन्दर बा।

जिनगी के परछाहीं—(कहानी-संग्रह) लेखिका-रूपश्री। प्रकाशक, रूप प्रकाशन, पटना—४, प्रकाशन-काल—अक्टूबर ७१. पन्ना-५६ दाम—एक रुपया गेट-आप सहित छपाई सफाई नयनाभिराम।

संग्रह में लेखिका के छवगो कहानी बा। हर कहानी में जिनिगी के जीअत-जागत तसबीर उरेहल बा। सुन्दर, सुकोमल भाव भरल सुरुचि पूर्ण शैली में लेखिका रंग-बिरंगी समस्या के समाधान पावे के प्रयास में सफल बाड़ी। विश्वास बा एह संग्रह के सभे आदर के साथ स्वागत करी। रूपश्री जी से भोजपुरी भाषा-साहित्य का अबहीं बहुत उम्मीद बा।

तमाचा—(भोजपुरी बाल एकांकी संग्रह) —ले० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' प्रकाशक—जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर ४. प्रकाशन-काल अक्टूबर ७१. पन्ना ५०. दाम-एक रुपया। छपाई सफाई-नीक। भोजपुरी में बचपन खातिर साहित्य के सृजन कमे भइल बा। 'निर्भीक' जी एह दिशा में भी एगो नया प्रयोग कइले। संग्रह में आठ गो एकांकी बा जवना में महापुरुष लोग के बचपन के शिक्षाप्रद झलक देखावल गइल बा। कथानक कल्पित ना होके वास्तविक आ ऐतिहासिक बा जवना के नया ढंग से प्रस्तुत कइल गइल बा। छोट-छोट लइकन का मंच पर खेले जोग एह एकांकी-संग्रह के सभे दुलारी, अइसन आशा कइल जात।

चारो ओर अन्हरिया—(कविता-संग्रह)—ले० डॉ० स्वर्ण किरण, प्रकाशक-मिथिलेश प्रकाशन, आरा प्रकाशन काल-अक्टूबर ७१. पन्ना ३२, दाम एक रुपया।

'स्वर्णकिरण' जी के ई पहिला भोजपुरी कविता-संग्रह ह। एह में २३ गो तुकांत आ अतुकांत कविता बाड़ी स। संग्रह के नाँव तनी खटकल। कवि का कहनाम से कुंठा, घुटन, पीड़न आ बेचैनी के सहज-सुन्दर नमूना संग्रह में मिलता। सभ कविता अपने आप में अनूठा आ मन-मस्तिष्क के झकझोरे वाली बाड़ी स। अपना ढंग के एह पहिला संग्रह से भोजपुरी साहित्य के भंडार भरे खातिर कवि के बधाई।

हीरा मोती—(भोजपुरी-कविता-संकलन) प्रकाशक-बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी साहित्य-परिषद, मुजफ्फरपुर—, प्रकाशन काल कातिक-पुरनवासी १९७१ ई०। पन्ना ११४ दाम-पाँच रुपया। छपाई-सफाई सुन्दर। बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी साहित्य-परिषद् मुजफ्फरपुर का ओर से प्रकाशित एह संकलन में भोजपुरी के जानल-मानल पाँच कबियन (सर्वश्री सिपाही सिंह

(शेष पृष्ठ ६४ पर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक के विचार

एही अंक से अँजोर' के बारहवाँ बरिस पूरा होता। कवनो पत्रिका खातिर बेरोकटोक के बारह बरिस के जिनिगी कवनो कम ना कहाई। हमनी का जे दुख तकलीफ आ अभाव में एह पत्रिका के निकालतानी ऊहो लोग का मालूम बा। 'अँजोर' कतने लेखक आ कवि के अपना अँजोरा ले आइल। एकर एकरा खुशी बा। बाकी भोजपुरी जनपद पर, भोजपुरी भाई लोग पर 'अँजोर' के किरिन के कवनो पुरहर असर परत नइखे बुझात। का जाने ई उंघाई कबले टूटी। भोजपुरी खातिर ऊ निसा नइखे चढ़त जे निसा मैथिली खातिर मैथिल भाई लोग का कपारे चढ़लि बा। अतना दिन से गोहरावतानी बाकी केहू सिवाना लाँघि के आगे बढ़े के चाहते नइखे। थोर कहाता, ढेर लोग समुझो। अधिका का कहाउ ?

'अँजोर' के अँजोर बनवले रहे में जे लेखक, कवि पाठक आ गाँहक भाई लोग हाथ बँटवलेवा, ओह कुल्ह जाना के हम हिरदया से धन्यवाद देतानी। हमरा आपन उमेदि बा कि अगर 'अँजोर' आगे चलि के अँजोर करी त हमरा अइसहीं अपनइती के सहयोग आ बढ़ावा मिलत रही।

हमरा बेमारी के खबर पाइ के अनेक भाई लोग अस्पताल में देखे गइल आ आपन शुभ कामना हमरा निरोग होखे खातिर जाहिर कइल। चीठी पत्र से भी अनेक मित्र लोग, हमरा खातिर शुभ कामना भेजल। रोग त बहुते खराब रहे। भगवान के दया से आ अपने सभे के शुभ कामना से हम निरोग हो रहल बानी आ भोजपुरी आ हिन्दी के सेवा करे के आ भगवत भजन करे के कुछ मोका अउरी मिलल। हमरा कीहाँ सैकड़न चीठी आइल। अलगा-अलगा जबाब दीहल तनी मुश्किल बा। एह से अपने सभे के दया, स्नेह आ अपनैती से आत्म विभोर हमार मन-प्राण अपने सभे के ता जिनिगी आभार मानी। हम कवना लायक बानी कि कुछ अउरी कहि भा करि सकीला। अपने सभे दुलार, स्नेह आ किरपा मिलत रही त कुछ दिन अउर जीयबि अइसन मन में विश्वास होता।

स्व० प्रि० मनोरंजन प्रसाद सिनहा

एह साल भोजपुरी भवन के दूगो बड़ा पुरान आ मजबूत पाया ढहि गइल। ओने साल का सुरू में जनकवि भिखारी ठाकुर के गंगालाभ भइल आ एने प्रि. मनोरंजन जी के ६ नवम्बर के भोर में ७३ बरिसका उमिरि में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राँची में बैकुंठ बास हो गइल। अपने का देहि में पुरान बेमारी रहे बाकिर ओकर कवनो असर अपने पर ना बुझात रहे।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अपने अंग्रेजी के प्राध्यापक सात बरिस तक रहीं। सन् १९२८ ई० में अपने राजेन्द्र कालेज छपरा में प्राचार्य भइलीं आ १९६० में नौकरी से अवकाश लिहलीं। बाद में अपने देवघर हिन्दी विद्यापीठ में उपकुलपति का पद पर रहलीं।

भोजपुरी के 'बटोहिया' अबहीं लोग के ओठ पर रहे तबले, स्वतंत्रता 'संग्राम' का हलचल में 'फिरंगिया' लोगन का कण्ठ-कण्ठ से सुनाये लागल। एक गीत लिख के भी केहू अतना मशहूर हो सकेला ई मनोरंजन बाबू का 'फिरंगिया' में बुझाइल। सभे का मालूम बा कि मनोरंजन बाबू अँगरेजी, भोजपुरी आ हिन्दी के मानल जानल विद्वान रहलीं हाँ। भोजपुरी के उनकर अनेकन गीत लोग पत्र पत्रिकन में पढ़ले होई। भासा आ भाव पर कमाल के अधिकार रहल हा। हमरा से कई तरह के सम्बन्ध रहे। कुटुमतारे भी रहल। कई साहित्यिक संस्थन से अपने के सम्मान भी भइल। एह उमिर में भी जब सस्वर कविता पाठ करे लागवि त हजारन के जुटाव भी झूमि उठी। अपनेका निधन से साहित्य के, खास कइके भोजपुरी के बड़ा भारी छति भइल। अपने के परिवार में सवाँग लोग बड़े बड़े सरकारी ओहदा पर बाड़े। केहू जज बा, केहू पुलिस सुपेरिण्टेडेंट आ केहू आन पद पर। अपने आरे जिला के मशहूर नगर डुमराँव के वाशिन्दा रहली हाँ। भोजपुरी परिवार, पटना के सदस्य होखला का नाते अपने के 'अँजोर' पर बड़ा नेह रहत रहे। जब कभी पटना आइवि, आपन सुझाव जरूर देवि। अपने वृन्दावन के प्रसिद्ध महात्मा श्री १०८ शरणानन्द जी के शिष्य रहली हाँ। अपने भगवद्‌भक्ति में बराबर निष्ठावान रहलीं। अपने के परिवार में और लोग के अलावे अपने के विधवा पत्नी आ एगो बिआहल लड़की बाड़ी। प्रभु से इहे बिनती बा कि अपने के स्वर्गवासी आत्मा के शान्ति देसु।

स्व० राजकिशोरी देवी

पटना के सुप्रसिद्ध वकील श्री नागेश्वर प्रसाद 'भोजपुरी परिवार' के पिता तुल्य बानी। अपने के नेह से भोजपुरी परिवार फूलि फरि रहल बा। १० अक्टूबर ७१ के अपने के धर्मपत्नी राजकिशोरी देवी के लगभग ७० बरिस का उमिर में गोलोक बास हो गइल। अपने के पिता स्व० बख्शी जी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पटना के मानल जनल लोग में रहली हां। बिआह का बाद नागेश्वर बाबू जिनिगो का हर क्षेत्र में जे उन्नति कइले ऊ केह से छिपल नइखे। हाइ कोर्ट के जज, भारत प्रसिद्ध वकीली, आ नागेश्वर बाबू क आगे बढ़ावे मे राकिशोरी देवी जो एगो प्रेरणा स्रोत रहलीं हां। परिवार में सबका ओर नेह, प्यार दुलार, पति खातिर अपार सरधा, भगवान में भक्ति ई सब गुण देवी जो में रहल हा। एह उमिर में पत्नी के वियोग से दुखी नागेश्वर बाबू के आ उनका संतप्त परिवार के ढाढ़स खातिर हमनी का आपन सद्भावना भेजतानी। दिवंगत आत्मा का शान्ति लाभ खातिर प्रार्थना बा।

भोजपुरी के मान्यता के सवाले

जहाँ तक भोजपुरी के मान्यता के सवाल बा हमनी का अपना भर बउसाइ कोसिस में लागल बानी जा। पटना में भोजपुरी मान्यता' मोर्चा कायम भइल, जेकरा जरिये हजारन लोगन के हस्ताक्षर कराके, साहित्य अकादमी का अध्यक्ष कीहां भेजल गइल। श्री ब्रह्मानन्द मिश्र, सम्पादक, भोजपुरी संवाद, पटना आ पाण्डेय कपिल जी एह में अगुआ बनि के हमार हाथ बंटावल लोग। अइसने एगो भोजपुरी मान्यता अभियान श्री राधेश्याम राधेश, सम्पादक, भोजपुरी जनपद, वाराणसी, भो चलवलीं। दण्डी स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती जी करीब १२ पन्ना में कविते में डा० सुनीति कुमार चटर्जी, अध्यक्ष साहित्य अकादेमी का नाँवें एगो खुली चीठी लिखले बानी जेकर जवाब चटर्जी साहब अंग्रेजी में देले बानी। पटना में भी कुछ विद्वानन से एकरा बारे में दिल्ली से पूछताछ भइल बा। डा० उदयनारायण तिवारी जी भी भरपूर कोशिस कर रहल बानी। एह साल ग्वालियर में भारतीय हिन्दी साहित्य परिषद के अधिवेशन अक्टूबर १९७१ में भइल। एह में प्रस्ताव पास कइ के साहित्य अकादमी से अनुरोध कइल गइल कि ऊ हिन्दी के क्षेत्रीय भाषन के मान्यता प्रदान ना करे। एह सम्बन्ध में एह अंक के पहिला ल० डा० गोपाल राय जी के समीक्षा पत्रिका, अक्टूबर सन् १९७१ के सम्पादकीय में "हिन्दी का व्यवहार क्षेत्र; बोलियों का प्रश्न", पढ़े लायक बा। डा० राय जी के विचार बहुत सामयिक, गम्भीर आ समस्यात्मक बा। हर विद्वान के ओह पर विचार करे के चाहीं।

बंगला देश

बंगला देश पूर्वी पाकिस्तान का नांव से मशहूर रहल हा। आम चुनाव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का बाद शेख मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व में अवामी लीग के सदस्य लोग अधिका मत से चुनाइल। उन कर मांग ठुकरा के पाकिस्तान के प्रेसिडेन्ट जे० याहिया जबरदस्ती बंगाल पर अपना विचार के लादे के चहले। बंगला देश के लोग उनका सामने ना झुकले। फेरू त आपन सेना उतारके ओह देश में याहिया खाँ जे खून-खराबी, अत्याचार, नरसंहार के लीला कइले ऊ केहू से छिपल नइखे। जवान, बूढ, बच्चा, मरद मेहरारू आ विद्वाननो के खोजि के मउअत का घाटे उतारल गइल। दुनियां के इतिहास में एह हत्याकांड के सानी ना मिली। लाखन शरणार्थी भागि के भारत में अइले। ३ दिसंबर ७१ के शाम में पाकिस्तान भारत पर चढ़ाई कइ दिहलस। भारतीय जवान एह बहादुरी आ खूबी से लड़ले कि बंगला देश में पाकिस्तान का घुटना टेकि देवे के परल। बगला देश स्वतन्त्र भइल। हारि मानि के पाकिस्तान लड़ाई बन कइलसि ना त अबकी ओकर सर्वनाश रहल हा। याहिया खां का जगह पर जनाब जुल्फिकार अली भुट्टो प्रेसिडन्ट भइले। मुजीबुर्रहमान के शुरुए में कैद में राखि के पच्छिमी पाकिस्तान में लेगइलन स। भुट्टो आ अमेरिका के रूख बराबर भारत का खिलाफ रहल। हाले उनकर छुटकारा भइल। रूस के मदत आ मिताई के व्यवहार भारत कबो ना भूलि सके। अगर भारत का पीठि पर रूस अइसन महान देश खड़ा ना होइत त आजु देस के नक्शा कुछ अउरिए होइत। भारत रूस के बड़ा कृतज्ञ बा। आशा बा भारत रूस के ई इयारी आगे भी बनल रही। भारत शान्तिपूर्वक रहे के चाहेला ही, केहू से छेड़ छाड़ करे के ना चाहे। बाकिर जब केहू आँखि तरेरि देला तो ओकर आँखियों निकाले में कवनो कसरि ना उठा राखे।

—प्रधान सम्पादक

सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के १२वाँ अधिवेशन

सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के बारहवाँ अधिवेशन ३१-१२-७१ के डा० रामबिहारी सिंह उच्च विद्यालय, गौरा-विष्णुपुरा (सारन) का आँगन में श्री अर्जुन कुमार सिंह 'अशान्त' का सभापतित्व में भइल। उद्घाटन भाषण कइलीं डा० लल्लन प्रसाद सिंह एम० ए० पी० एच० डी० (लंदन)। अपना विद्वत्तापूर्ण भाषण में अपने भोजपुरी भाषा, साहित्य पर अंकरा समस्या पर बहुत सुन्दर ढंग से प्रकाश डललीं। प्राचार्य भोलानाथ सिंह,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुंशी सिंह कालेज मोतीहारी, श्री सिपाही सिंह, श्रीमन्त जी के भी भाषण भइल। 'अशान्त' जी भोजपुरी के वर्तमान समस्या पर आ ओकर समाधान पर सारगर्भित भाषण दिहलीं। भोजपुरी के मान्यता आ भोजपुरी साहित्य के प्रकाशन इत्यादि पर कई गो प्रस्ताव पास भइल।

रात में ७ बजे से पटना के प्रमुख अधिवक्ता आ 'अँजोर' के प्रधान सम्पादक पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय जी का सभापतित्व में कवि सम्मेलन भइल। उद्घाटनकर्त्ता रहले डा० श्यामनन्दन 'किशोर', एम० ए०, डी० लिट, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, बिहार विश्व विद्यालय। भोजपुरी भाषाके मान्यता आ भोजपुरी साहित्य के गौरव पर अपने बड़ सुन्दर ढंग से प्रकाश डललीं। कवि सम्मेलन में अनेक स्थानीय आ बाहर के कवि लोग भाग लिहले। सम्मेलन के सफल बनावे में प्रो० प्रभुनाथ सिंह आ स्थानीय विद्यालय के शिक्षक लोग के प्रमुख हाथ रहे।

भोजपुरी परिवार गया आ साहित्य संगम गया के वार्षिकोत्सव

आदरणीय महेन्द्र शास्त्री, श्री अनुग्रहनारायण सिंह कालेज के प्राचार्य श्री विश्वनाथ सिंह जी आ गया के भोजपुरीं भाई लोग का करतब से, मगध के केन्द्र गया में भोजपुरी-परिवार के स्थापना भइल। १५-१-७२ के गया का टाउन हाल में बड़ा धूमधाम से वार्षिकोत्सव मनावल गइल। श्री रमावल्लभ सिंह जी (कोषपाल, मगध विद्यालय) उद्घाटन कइलीं। प्राचार्य, रामेश्वर सिंह काश्यप (लोहा सिंह के निर्माता) सभापति रहलीं जिनका ना अइला से, उनुके लिखल भाषण, डा० वसन्त कुमार, सभापति, का आदेश से प्रो० व्रजकिशोर पढ़ि के सुनवलीं। भाषण नीक रहे बाकी वर्त्तमान कई समस्यन पर विचार के अभाव खटकल। विद्वान सभापतिजी पटना भोजपुरी परिवार के ढेर निगिचाह रहलीं। 'अँजोर' के अब तक के कुल्हि प्रकाशित अंक भी उहाँ के हाथ में वा। उहाँ के समूचा भाषण में बहुत साहित्य आ भोजपुरी साहित्य सेविनय के चर्चा कइले बानी। बाकी भोजपुरी परिवार, पटना, 'अंजोर' आ पाण्डेय जी के कहीं चर्चा नइखे। भोजपुरी परिवार, गया का ओर से पाण्डेय जी के दूगो अभिनन्दन-पत्र दिआइल जवना में एगो अभिनन्दन-पत्र पढ़ लीं आचार्य महेन्द्र शास्त्री जी।

ओही दिन शाम के ७॥ बजे से 'टाउन हाल' में शुरू भइल भोजपुरी कवि सम्मेलन भी। सभापति रहीं पाण्डे नर्मदेश्वर सहाय जी। कवि सम्मेलन में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कई जगह के कवि भाग लिहले। १ बजे तक कविता पाठ भइल। सम्मेलन बहुत सफल रहल आ जनता पर एकर बड़ा प्रभाव परल।

दोसर दिन साहित्य-संगम, गया के वार्षिक अधिवेशन आचार्य महेन्द्र शास्त्रीं आ उनका शिष्य का मंगल गान से शुरू भइल। उद्‌घाटन कइलीं श्री गोपाल प्रसाद जी (उप-कुलपति मगध विश्वविद्यालय)। सभापति रहलीं प्रो० केसरी कुमार (पटना विश्वविद्यालय) आ कवि सम्मेलन के अध्यक्ष रहीं, महाकवि श्री केदार नाथ मिश्र 'प्रभात'। 'प्रभात' जी के संगम का सदस्यन का ओर से लिखित अभिनन्दन पत्र समर्पित कइल गईल। प्राचार्य विश्वनाथ प्र० सिंह आ कविवर श्री गुलाब खण्डेलवाल के देखरेख में ई आयोजन बहुत सफल भइल। खण्डेलवाल जी, प्राचार्य विश्वनाथ सिंह जी आ अउरी कार्य-कर्त्ता (जेकर नाँव हमरा नइखे मालूम), बहुत धन्यवाद के पात्र बानी।

सन्त धरणी दास जी का जन्म-भूमि आ साधना भूमि माँझी (सारन) में साहित्य-समारोह

वसंत पंचमी के दिन श्री दलन सिंह उच्च-विद्यालय, पर्षद-माध्यमिक विद्यालय, माँझी (सारन) के सरस्वती पूजा के अवसर पर हिन्दी भोजपुरी साहित्य सम्मेलन विद्यालय का प्राङ्गण में मनावल गइल। उद्‌घाटनकर्त्ता रहीं महाकवि श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' जी आ सभापति रहलीं पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय जी। सभा के कार्यवाही शेख वाजिद हुसेन प्रधानाध्यापक के बनावल हिन्दी स्वागत-गान से शुरू भइल। शेख साहब को तुलसी आ सूर-साहित्य के विशेष अध्ययन बा। अपनेके देखला से मध्य युग के मुसलमान हिन्दी सेवकन के इयादि परि जाला। स्वागताध्यक्ष श्री एस० एस० हक, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी रहीं। कवि सम्मेलन में बिहार आ उत्तर प्रदेश के पचासन कवि भाग लिहले। भोजपुरी हिन्दीं दूनों के कविता सुनि के जनता अघा गइलि।

सम्मेलन के सफल बनावे में श्रीं हक, अरुण कुमार श्रीवास्तव (अंचल पदाधिकारी, माँझी), श्री नगनारायण सिंह, सचिव, द० सि० उ० विद्यालय, शेख वाजिद हुसैन, श्री लालदीप सिंह प्रधानाध्यापक, डा. राजनारायण राय, चिकित्सा पदाधिकारी, माँझी आ श्री विश्वनाथ सिंह, संस्थापक उ० विद्यालय, माँझी के विशेष हाथ रहे। दूनो विद्यालय के शिक्षक भाई लोग के अतिथि सत्कार अदभुत रहे। उमेद बा कि माँझी के जनता अगिला साल भी दूसरा साहित्य समारोह मनाई आ परम सन्त धरणी दास जो के नाँव पर एगो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहित्यक संस्था के स्थापना करीं। पुण्यतोया सरयू का सुरम्य तट पर बसल माँझी गाँव, एगो पुण्य तीर्थ ह जइसे दरभगा जिला में विद्यापति जी के जन्म स्थान बिसफी। माँझी मे 'सन्त धरणी दास-साहित्य-संगम' नाँव के संस्था के स्थापना होखो आ वृन्धाम से ओकर समारोह मनावल जाय। सन्त धरणी दास के कृति पर अनुसन्धान हो आ उनुकर साहित्य के प्रकाशन हो। भोजपुरी आ हिन्दी दूनों मे उहाँ का 'शब्द-प्रकाश' आ 'प्रेम-प्रकाश' नामके ग्रन्थ लिखलीं। 'शब्द-प्रकाश' प्रकाशित बा आ 'प्रेम-प्रकाश' अप्रकाशित। बिहार सरकार के धेयान एने दियावल जाव कि 'सन्त' के साहित्य आ साधना भूमि के उचित संरक्षण हो।

माँझी के महत्ता एह से भी बढ़ि जाता कि हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान, सम्पादक स्व० श्री राजवल्लभ सहाय जी के जनम-स्थान भी माँझिये रहे। उहाँ के हाथ के लिखल साहित्य के कई अंग पर अनमोल कृति अबहीं अप्रकाशित बा। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् आ हिन्दी साहित्य सम्मेलन अइसन संस्थन के उहाँ के साहित्य के प्रकाशन करा देवे के चाहीं।

—*विद्यार्थी*

(पृष्ठ ५७ के शेषांश)

'श्रीमन्त', अनिरुद्ध, सतीश्वर सहाय वर्मा सतीश', प्रो० प्रभुनाथ सिंह, डा० रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव) के दस-दस गो चुनल कविता बाड़ी स। हरेक कवि अपना-अपना क्षेत्र में आपन-आपन कला-किरिन झलकवले बाड़े। डा० ललन प्र० सिंह, के प्रकाशकीय विचार में बखानल एह पाँचों कवियन के गुन-गरिमा से सभे सहमत होखी। उहाँ का "श्रीमन्त" जी के वीर रस में बोरल बानी, अनिरुद्ध जी के रूपक रचावल गीत, सतीश जी के संगीतात्मक लय भी लहरावल पाँती, प्रभुनाथ जी के मधुवर्षी शृंगारी उड़ान आ रिपुसूदन जीके कल्पना प्रधान गीत अउर नवीन प्रयोग" के चर्चा कइले बानी। पाठक लोग एह संकलन के अपनाके भोजपुरी साहित्य के बढ़न्ती खातिर होसिला बढ़ाई।

—पां० न० स०

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में उदारतापूर्वक दान दें

बिहार के राज्यपाल

श्री देवकान्त बरुआ की अपील

जैसा कि सर्वविदित है, पाकिस्तान के साथ हमारे देश का जो युद्ध चल रहा था, वह रुक गया है। युद्ध-विराम की घोषणा तो हो गयी है, किन्तु पाकिस्तान के साथ स्थायी शांति की शर्तें जबतक तय नहीं हो जातीं और वे शर्तें अमल में नहीं आती हैं, तबतक हमें समझना चाहिये कि भारत पर से संकट के बादल छँटे नहीं हैं। इसलिए हमें अभी सब प्रकार से चौकस रहना है। देश की सीमा सुरक्षा के लिए हमारे जवान एक ओर तो युद्ध-विराम-रेखा पर सन्नद्ध हैं, दूसरी ओर बंगला देश में भी वे युद्ध-बन्दियों के प्रति भी अपना कर्तव्य पालन कर रहे हैं। यह सब व्ययसाध्य प्रयास है, और इसके लिए साधन मुहैय्या करना प्रत्येक भारतीय का पुनीत कर्तव्य होता है।

इसलिए मैं देश के, विशेष कर बिहार के, प्रत्येक नागरिक से अपील करता हूँ कि वे राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में उदारतापूर्वक दान दें। यह दान नकद और स्वर्णाभूषण के रूप में बैंकों, पोस्ट-आफिसों तथा सरकार द्वारा अधिकृत अन्य संग्रह-केन्द्रों में जमा किया जा सकता है। राष्ट्रीय संकट की घड़ी में बिहार हमेशा राष्ट्रीय मोर्चा की अगली पांत में रहा है। मेरा विश्वास है कि बिहारवासी अपनी गौरवपूर्ण परम्परा के अनुरूप इस बार भी राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में दिल खोलकर दान देंगे।

—देवकान्त बरुआ

राज्यपाल, बिहार।

जन-सम्पर्क विभाग, बिहार सरकार द्वारा प्रसारित।

'अँजोर' के सालाना चंदा—चार रुपया

(डाक खर्च अलग)

छः माह के—दू रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर्यटकों का आकर्षण केन्द्र : बिहार

पाटलिपुत्र के प्राचीन राजनगर, नालन्दा के विश्व-विख्यात विद्यालय तथा राजगृह की भव्य दीवारों के भग्नावशेष, ससराम स्थित शेरशाह का मकबरा, वैशाली, अरेराज और लौरियानन्दनगढ़ के अशोक स्तम्भ, बोधगया, देवघर, पारसनाथ और पावापुरी के प्राचीन मन्दिर और पटना सिटी के सिख गुरूद्वारा को आवश्य देखें।

राजगृह के गर्मजल झरनों में स्नान करना तथा छोटानागपुर के जलप्रपात, मनोरम पहाड़ियों, झीलों और जंगलों के प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन करना न भूलें।

जमशेदपुर, हटिया (रांची), सिन्दरी, धनबाद, पंचेत, मैथन तिलैया तथा बरौनी के सुविख्यात औद्योगिक केन्द्रों का परिदर्शन करें।

पटना, राजगृह, गया, रांची और मुजफ्फरपुर में टुरिस्ट बस, टुरिस्ट यान उत्तम कोटि की आरामदेह मोटर गाड़ियां भी सुलभ हैं।

राजगृह, वैशाली, नेतरहाट (पालामू) और हजारीबाग में पर्यटकों के आवास की सुविधा के लिए उत्तम कोटी के आरामदेह टुरिस्ट बंगलों की स्थापना पर्यटन विभाग द्वारा की गई है। राजगृह में, जापान-भारत-सर्वोदय मित्रता-संघ जापान के सहयोग से रत्नगिरि के शिखर पर निर्मित विश्व शांति स्तूप के परिदर्शन के लिए पर्यटन विभाग द्वारा आकाशीय रज्जुपथ का संचालन किया गया है। मात्र एक रुपया प्रतिव्यक्ति की दर से शुल्क देकर रज्जुमार्ग की यात्रा की जा सकती है। विशेष जानकारी के लिए पर्यटन सूचना केन्द्र, मजहरुलहक पथ, पटना—१ (दूरभाष यंत्र संख्या—२५३६५) से सम्पर्क स्थापित करें।

पर्यटन विभाग, पटना

हुंकार प्रेस, न्यू मार्केट, पटना—१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[बिहार सरकार द्वारा विद्यालय आ पुस्तकालय खातिर स्वीकृत]

अँजोर

[भोजपुरी परिवार (पटना) के त्रैमासिक मुख-पत्र]

जा में रस कछु होत है, ताहि पढ़त सब कोय।
भाव अनूठो चाहिए, भाषा काहू होय।

प्रधान सम्पादक

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

कला—१३ | किरिन—१-२
अप्रिल—१९७२ | जुलाई—१९७२

भोजपुरी परिवार, पटना—३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संपादक मंडल

रासबिहारी राय शर्मा, रामबचन द्विवेदी, 'अरविन्द', गणेश चौबे, डा० वसन्त कुमार, डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी', प्रो० ब्रजकिशोर, धीरेन्द्र प्रसाद सिनहा 'धवल'

सहायक संपादक—

अविनाशचन्द्र विद्यार्थी

एह अंक में पढ़ीं

पन्ना

१. गीत—अवधेश प्रधान १

२. भोजपुरी व्याकरण और बोली-कोश:
एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण (हिन्दी निबंध)—हरिश्चन्द्र प्रसाद २

३. बिहार के मुख्य मंत्री : एक संक्षिप्त परिचय
—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय —१४

४. जमीन-आसमान—महेन्द्र शास्त्री १८

५. सालारजंग-अजायबघर—कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य' १९

६. होखे तनी छूटिके (व्यंग-कविता)—लछमण पाठक 'प्रदीप' २२

७. आम्हर प्रेम (ऐतिहासिक कहानी)—तैयब हुसैन 'पीड़ित' २३

८. बरखा-बुन्नी के रात (कविता)—बुद्धदेव नारायण २५

९. अँकोर (कहानी)—चतुरी चाचा २७

१०. उगिहें कँवलवा के फूल (कविता)—
—आनन्द कुमार 'सन्धिदूत' ३०

११. चार गो मुक्तक—हिमांशु रंजन ३१

१२. कबाला (कहानी)—धीरेन्द्र प्रसाद सिन्हा 'धवल' ३२

१३. अँखिया बिसुरल जाय (कविता)—उमाकान्त वर्मा ३७

१४. भोजपुरी आ कुछ दोसर भाषा के तुलनात्मक कहावति
—डा० सत्यदेव ओझा ३८

१५. कहाँ चलल ऽ (कविता)—रामबचन द्विवेदी 'अरविन्द' ४१

१६. महँगू—(एगो तस्वीर)—लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी ४२

१७. चिट्ठी-पत्री— ४८

१८ पुस्तक परिचय— ५६

१९. सम्पादक के विचार ६२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तमसो मा ज्योतिर्गमय

अँजोर

धरती के लोर बाट जोहि रहल भोर के
पह फाटल, बिहँसी अब किरिनियाँ 'अँजोर' के

कला—१२	अप्रिल---जुलाई १९७८	किरिनि—१-२

गीत

हमरा खेतवा में सोना के बहार बरिसे।
गोंहू जउवा बधरिया में कहीं थिरके
मारे अँखिया केराय कहीं घूमि फिर के
बदरा बरखा में अमरित के धार बरिसे ।
छोटकी मड़ई में रात के कऊड़ बारिके
हम अगोरिया करीलां नींदिया सँभारिके
जब जजतियन पर करिया अन्हार बरिसे ।
शिव के नन्दी जस हँकेड़तन मोर बरधा
खेत में उपजेली सीता, करऽपूजा बरधा
जब पाथर जस भुइँ पर कोहार बरिसे।
तनी ऊँची अटरिया से झाँकऽ बाबू
तनी घमवा में, आँखि खोल ताकऽ बाबू
देखऽ, भुइँ पर पसेनवाँ अपार बरिसे ।

[सुलतानपुर, पो० औसपुर (गाजीपुर)]

— अवधेश प्रधान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी व्याकरण और बोली-कोश—

एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण

—हरिश्चन्द्र प्रसाद

भोजपुरी आर्य-भाषा-परिवारकी की एक सशक्त भाषा है। अन्य बिहारी भाषाओं—मैथिली, मगही अंगिका और बज्जिका की अपेक्षा इसका सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र है। यह क्षेत्र उत्तर में नेपाली, दक्षिण में उड़ीसा, पूर्व में बज्जिका और मगही तथा पश्चिम में हिन्दी की मध्यदेशीय उपभाषाओं—छत्तीसगढ़ी, बघेली और अवधी से घिरा हुआ है। इस प्रकार भोजपुरी बिहार राज्य के चम्पारन, सारन, शाहाबाद, राँची, पलामू मुजफ्फरपुर जिले के दक्षिणी-पश्चिमी भाग (बरूराज और साहबगंज थानों के कुछ पश्चिमी गाँवों में) तथा उत्तर प्रदेश के बलिया, गाजीपुर, बस्ती, गोरखपुर देवरिया तथा बनारस जिलों में एवं मिर्जापुर, जौनपुर और आजमगढ़ जिलों के अधिकांश भागों तथा फैजाबाद-जिले के एक सीमित क्षेत्र में बोली जाती है। बहराइच-जिले से लेकर चम्पारन जिले की उत्तरी सीमा पर नेपाल की तराई के निवासियों तथा वन्य प्रदेशों में वास करने वाले थारुओं की भाषा भोजपुरी ही है। (१) स्व० आचार्य मनोरंजन प्रसाद सिंह ने भोजपुरी-भाषा भाषी-जिलों का उल्लेख करते हुए लोरीछन्द की एक कविता में इस प्रकार लिखा है:—

आरे आवऽ छपरा आवऽ बलियाऽ मोतीहारी आवऽ
राँची अउर पलामू आवऽ गोरखपुर देवरिया आवऽ
गाजीपुर आजमगढ़ आवऽ बस्ती अउरी जौनपुर आवऽ
मिर्जापुर बनारस आवऽ सोने के कटोरिया में
दूध भात लेले आवऽ बबुआ के मुँह में घुटुक २

भाषा विज्ञान की दृष्टि से इस कविता द्वारा भोजपुरी क्षेत्र का शुद्ध मान चित्र तो सामने नहीं आता, किन्तु इससे मोटे तौर पर भोजपुरी प्रदेश का परिज्ञान हो जाता है।

इसके अतिरिक्त, कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली, जमशेदपुर आदि औद्योगिक नगरों तथा दार्जिलिंग और आसाम के चाय-बगानों में जीविकोपार्जन के

---

(१) डा० ग्रियर्सन: लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इन्डिया, भाग-५ खंड-२ पृ०४०।
(२) मासिक भोजपुरी (आरा), वर्ष-?, अंक-४, नवम्बर, १६५२ ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिये गये भोजपुरियों की संख्या कुछ कम नहीं है। फिजी ट्रिनीडाड, मारिशस, दक्षिण अफ्रिका, केनिया, बर्मा—जैसे विदेशी राष्ट्रों में भी कृषि, मजदूरी तथा अन्य व्यवसाय—व्यापार करने के लिये प्रवासित भोजपुरी भाषा—भाषियों के अनेक गाँव बस गये हैं जिन्होंने आज भी अपनी भाषा और संस्कृति को अक्षुण्ण रखा है।

इस प्रकार बिहार और उत्तर-प्रदेश के लगभग पचास हजार वर्गमील की परिधि में भोजपुरी बोली जाती है और देश तथा विदेश में उसके बोलने वालों की संख्या इस समय न्यूनाधिक पाँच करोड़ है। बिहारी भाषाओं में, तुलना से मैथिली भाषा—भाषियों की संख्या उससे पंचांश और मगही—भाषा—भाषियों की तो और कम है।

डा० ग्रियर्सन के मतानुसार भोजपुरी को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है - उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी और नागपुरिया। पश्चिमी भोजपुरी फैजाबाद, आजमगढ़, जौनपुर, पश्चिमी गाजीपुर तथा मिर्जापुर में और दक्षिणी भोजपुरी शाहाबाद, सारन, बलिया तथा पूर्वी गाजीपुर में बोली जाती है। इसी दक्षिणी भोजपुरी को स्टैंडर्ड या आदर्श भोजपुरी भी कहा जाता है। गोरखपुर, देवरिया और बस्ती जिलों में बोली जाने वाली भोजपुरी उत्तरी भोजपुरी के नाम से अभिहित होती है। नागपुरिया मुख्य रूप से छोटानागपुर के रांची और पलामू जिलों में बोली जाती है। प्रो० केसरी कुमार सिंह इसका विस्तार—क्षेत्र बिहार राज्य के राँची, पलामू सिंहभूम तथा हजारीबाग जिले के चतरा और रामगढ़ अनुमंडल, मध्य प्रदेश के सरगुजा और यशपुर, उड़ीसा के सुन्दरगढ़, क्यूँझर और मयूरभंज तथा बंगाल के पुरुलिया और मिदनापुर तक, जो बिहार को सीमा से सटे हैं, मानते हैं।[१] इसे 'सदानी' या 'सदरी' भी कहा जाता है। आदिवासी मुंडा इसे 'दिक्काजी' अर्थात 'दिक करने वालों की भाषा' कहते हैं। इधर कुछ विद्वान बनारस की बोली को 'काशिका' बलिया की बोली की 'बलिआका' तथा गोरखपुर की बोली को 'मल्लिका' नाम से अभिहित करने लगे हैं। भाषा—विभेद

---

(१) बिहार—राष्ट्रभाषा-परिषद् (पटना) के एक वार्षिकोत्सव के अवसर पर पठित मुद्रित-निबन्ध (३० मार्च, १९५८), पृ०—१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होने के कारण कुछ भाषा—वैज्ञानिक पश्चिमी गोरखपुर तथा बस्ती जिले की भाषा को 'सरवरिया' तथा पूर्वी गोरखपुर की भाषा को 'गोरखपुरी' नाम देते हैं।

इसके अतिरिक्त, भोजपुरी की दो और उपबोलियां भी हैं—(१) मधेसी और (२) थारु। मधेसी चम्पारन—जिले में बोली जाती है। पूर्व में मुजफ्फरपुर—जिले की पश्चिमी मैथिली (आधुनिक नाम बज्जिका) और पश्चिम में पूर्वी गोरखपुर जिले की गोरखपुरी भोजपुरी के बीच बोली जाने के कारण डा० ग्रियर्सन ने इसका 'मधेसी' नामकरण किया था। उनके अनुसार 'मधेसी' संस्कृत के 'मध्यदेशीय' का विकृत रूप है। इस नामकरण के पक्ष में उन्होंने दूसरा तर्क भी दिया है। उनके अनुसार चम्पारन वासी द्वारा अपनी भाषा के लिए 'मधेसी' नामकरण दिये जाने के कारण ही उन्होंने भी उसका 'मधेसी नाम दिया गया है। डा० उदय नारायण तिवारी, डा० कृष्ण देव उपाध्याय, डा० विश्वनाथ प्रसाद प्रभृत भाषा शास्त्रियों ने भी डा० ग्रियर्सन द्वारा दिए गए इसी तर्क के आधार पर चम्पारन की भोजपुरी का नाम 'मधेसी' स्वीकार किया है। किन्तु चम्पारन की बोली के लिए 'मधेसी' नाम दिया जाना युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता। वस्तुतः चम्पारनवासी कभी भी अपनी बोली को 'मधेसी' नाम से अभिहित नहीं करते। केवल बज्जिका और गोरखपुरी भोजपुरी के बीच बोली जाने के कारण इसका नामकरण 'मधेसी' कर दिया जाय, यह भी भ्रामक होगा, क्योंकि भारत में आर्य—भाषा—परिवार तथा अन्य भाषा परिवारों की अनेक ऐसी भाषाएँ हैं जो दो या अधिक भाषाओं के बीच बोली जाती हैं, किन्तु उनके नाम वे ही हैं, जिनका उनपर अधिक प्रभाव है। अतः पूर्वी क्षेत्र में बोली जाने के कारण चम्पारन की बोली को 'पूर्वी भोजपुरी' ही कहा जाना उपयुक्त होगा। लोक—साहित्य—मर्मज्ञ पं० गणेश चौबे के इस विचार का मैं समर्थन करता हूँ।१ थारू भोजपुरी उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले से लेकर बिहार राज्य के चम्पारन जिले के सीमावर्ती क्षेत्रों में वास करने वाली थारु—जाति द्वारा प्रयुक्त होती है। नैपाल की तराई के थारुओं की अपनी कोई भाषा नहीं है। वे जहां रहते हैं, उस स्थान की स्थानीय बोली को अपना लेते हैं।

(१) "भोजपुरी भाषा और साहित्य"—बिहार—राष्ट्रभाषा--परिषद् पटना के एक वार्षिकोत्सव के अवसर पर पठित पं० गणेश चौबे का मुद्रित भाषण (५ अक्तूबर, १९५९ ई०), पृ० ४-५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब तक हमने भोजपुरी—भाषा के क्षेत्र-विस्तार तथा उसकी जन-संख्या और विभाषाओं पर विचार किया है, अब हम उसके भाषा-वैशिष्ट्य तथा उसके बोली कोश के सम्बन्ध में हुए शोध-कार्यों का सिंहावलोकन कर लें।

जिस प्रकार अन्य भारतीय भाषाओं के वैज्ञानिक अध्ययन का इतिहास पुराना नहीं है, वही बात भोजपुरी के सम्बन्ध में भी प्रवृत होती है। आज से लगभग १०० वर्ष पूर्व अंगरेज सिविलियनों तथा मिशन-पादरियों द्वारा इसका श्री गणेश किया गया था। अंगरेज सिविलियन भारतीय भाषाओं का अध्ययन कर अपना शासन-सूत्र सुदृढ़ करना चाहते थे और मिशन-पादरी ईसाई-धर्म के प्रचारार्थ इसे अपना एक साधन बनाना। इसमें उन्हें बहुत अंशों में सफलता भी मिली। इस प्रकार के वैज्ञानिक अध्ययन से भारतीय जनता का भी बड़ा उपकार हुआ। इससे उन्हें नई प्रेरणा मिली। उनके हृदय में अपनी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने की उत्कट अभिलाषा जगी।

डा० जे० बीम्स प्रथम विदेशी विद्वान थे जिन्होंने सन् १८६७ ई० में सर्वप्रथम रोआयल एशियाटिक सोसाइटी की एक गोष्ठी में 'नोट्स ऑन दि भोजपुरी डाइलेक्ट ऑफ हिन्दी स्पोकेन इन वेस्टर्न बिहार' शीर्षक एक निबन्ध का पाठकर आदर्श भोजपुरी का एक संक्षिप्त व्याकरण प्रस्तुत किया था। विवेचन के क्रम में उन्होंने उसमें भोजपुरी लोक गीतों के अनेक उदाहरण भी उद्धृत किये थे। वही निबन्ध दूसरे वर्ष उसी सोसाइटी की मुख-पत्रिका (जरनल) में प्रकाशित हुआ था।[१] भोजपुरी व्याकरण पर संक्षिप्त, किन्तु प्रामाणिक प्रकाश डालने वाले दूसरे अंगरेजी सिविलियन हैं, एम० एच० केलॉग। उन्होंने अपनी अविस्मरणीय कृति 'ए ग्रामर ऑफ दि हिन्दी लैंगवेज' में इस भाषा की भाषा-विज्ञान की दृष्टि से विस्तृत विवेचना की है।[२] यदि इसे ही हिन्दी का प्रथम व्याकरण कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस व्याकरण का आधार भाषा-भूमि है, हिन्दी प्रदेश का कुमाऊं, अवध, रीवां, भोजपुर मगध, मिथिला आदि। भोजपुरी-भाषा के व्याकरण पर विस्तार में प्रकाश

(१) जरनल ऑफ दि रोआयल एशिआटिक सोसाइटी भाग-३, न्यू सीरीज (१८६८ ई०) पृ० ४८३-५०८।

(२) प्रकाशक—राटलेज एंड केगन पाल लि०, लंदन, १८७५ ई० द्वि० सं० १८९३ ई०, पुनर्मुद्रण—१९५६ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डालने वाले तीसरे अंगरेज विद्वान हैं जे० आर० डो०। सन् १८७७ में उन्होंने आजमगढ़ जिले के परिमाप और बन्दोबस्ती पदाधिकारी की हैसियत से अपनी 'सर्वे रिपोर्ट' में आजमगढ़-जिले की पश्चिमी भोजपुरी को आधार मानकर 'नोट्स औन दि डाइलेक्ट करेन्ट इन आजमगढ़' नामक एक प्रामाणिक व्याकरण लिखा है।१ डा० ए० एफ० आर० हार्नले ने सन् १८८० ई० में ए ग्रामर औफ ईस्टर्न हिन्दी कम्पेयर्ड विथ दि अदर गौडियन लैंग्वेजेज' शीर्षक अपनी अमर कृति प्रकाशित कराकर पश्चिमी भोजपुरी का एक श्रेष्ठ व्याकरण प्रस्तुत किया।२ उन्होंने इसमें पूर्वी भोजपुरी की तुलना अन्य गौड़ीय प्राकृत (मागधी) प्रसूत भाषाओं से की है। इस व्याकरण के अन्तिम पृष्ठों पर बनारसी भोजपुरी का स्वरूप प्रकट करने के लिए अनेक लोक-कथाएँ मूल रूप में संगृहीत की गई हैं। यहाँ यह स्मरणीय है कि डा० होर्नले ने पश्चिमी भोजपुरी का ही 'पूर्वी हिन्दी' नामकरण किया है।

सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डा० जी० ए० ग्रियर्सन द्वारा भोजपुरी भाषा और उसके लोक साहित्य के क्षेत्र में किए गए अनुसंधान कार्य अत्यन्त ही श्लाघ्य हैं। भाषा-विज्ञान सम्बन्धी उनकी पहली कृति है सेवेन ग्रामर्स आफ दि डायलेक्टस एण्ड सब-डाइलेक्टस औफ दि बिहारी लैंग्वेजेज'। यह व्याकरण आठ भागों में प्रकाशित है। इसका प्रथम भाग 'भूमिका' मात्र है और शेष सात भागों में बिहारी भाषाओं का ठोस व्याकरण लिखा गया है। इसका द्वितीय भाग शाहाबाद, सारन, चम्पारन, उत्तरी मुजफ्फरपुर और पश्चिमोत्तर प्रान्त (आजमगढ़' बनारस और जौनपुर) का बोलियों तथा उपबोलियों पर आधारित भोजपुरी का प्रामाणिक व्याकरण है।३ यह व्याकरण अपने में पूर्ण है। इसके अन्तिम पृष्ठों पर भोजपुरी लोक-गीतों के कुछ उदाहरण भी प्रकाशित हैं। डा० ग्रियर्सन की अद्भुत और चिरस्मरणीय कृति हैं, 'लिंग्विस्टिक सर्वे औफ इंडिया' इनमें भारत और पाकिस्तान की सभी भाषाओं के यथेष्ट उदाहरण-

(१) रिपोर्ट आन दि सेटलमेंट आपरेशन्स इन दि डिस्ट्रिक्ट आफ आजमगढ़ परिशिष्ट २ (इलाहाबाद, १८८१ ई०)।

(२) प्रकाशक— ट्रूबनर एण्ड कम्पनी, लन्दन, १८८० ई०।

(३) प्रकाशक— दि बंगाल सेक्रेटरियट प्रेस, कलकत्ता, १८८४ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संहित भाषागत विशेषताओं की सविस्तार विवेचना की गई है। इसी ग्रन्थ के खंड ५: भाग २ में भोजपुरी भाषा के साथ-साथ अन्य बिहारी भाषाओं की भी मीमांसा है।१ इसमें भोजपुरी के नामकरण, क्षेत्र-विस्तार भाषाभाषियों की संख्या और उनकी बोलियों तथा उप-बोलियों का सविस्तार वर्णन किया गया है। इस भाषा की बोलियों तथा उप-बोलियों की भाषा विशेषता स्पष्ट करने के लिए इसमें भोजपुरी प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।

भाषा विज्ञ होने के नाते डा० ग्रियर्सन ने बिहार की मैथिली, मगही और भोजपुरी क्षेत्रों और ग्रामीणों द्वारा उनके दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाले हजारों शब्दों का संग्रह किया था जो 'बिहार पेजेन्ट लाइफ' के नाम से प्रकाशित है।२ इनमें विषय क्रमानुसार शब्दों की उत्पत्ति, व्यवहार क्षेत्र और एक से दूसरे क्षेत्र में समान अर्थ रखने वाले शब्दों की व्याख्या तुलना के आधार पर संजोई गई हैं। इस विषय पर डा० ग्रियर्सन की अन्तिम प्रकाशित पुस्तक है, 'ए कोम्पेरेटिव डिक्शनरी ओफ बिहारी लेंग्वेजेज'।३ इसके दो ही भाग प्रकाशित हैं। इस बोली—कोश के लिए सामग्रियाँ जुटाने में डा० ग्रियर्सन को डा० ह्वार्नले से सहायता मिली थी। इस शब्दावली के शीर्षक से ही स्पष्ट है कि इसमें बिहारी भाषाओं के शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इन दोनों ही बोली—कोशों में भोजपुरी के हजारों शब्द संगृहीत हैं, गिरीन्द्र नाथ दत्त ने अपने दो लेखों के द्वारा सारन-जिले में बोली जाने वाली भोजपुरी का बड़ा ही सांगोपांग व्याकरण प्रस्तुत किया है।४

---

(१) प्रकाशक दि बंगाल सेक्रेटारियट प्रेस, कलकत्ता, १९०३ ई०।

(२) प्रकाशक—अधीक्षक, सरकारी मुद्रणालय, कलकत्ता, १८८५ ई०। द्वितीय संस्करण—प्र०-सरकारी मुद्रणालय, पटना, १९२६ ई०।

(३) प्रकाशक—दि बंगाल सेक्रेटारियट प्रेस कलकत्ता, प्रथम भाग-१८८५ ई० तथा द्वितीय भाग—१८८९ ई०।

(४) क-नोट्स ऑन दि वर्नाकुलर डाइलेक्टस स्पोकेन इन दि डिस्ट्रिक्ट आफ सारन—जरनल ओफ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, भाग-६६, सं०-३। १८९७ ई०, पृ० १९४-२१२।
ख-फर्दर नोट्स आन दि भोजपुरी डाइलेक्ट स्पोकेन इन सारन, भाग-६९, सं०-३, १९०४ ई० पृ० १९१-२१२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १८९६ ई० में रेव० फादर ई० एच० ह्विटली ने 'नोट्स ऑन दि गनवारी डाइलेक्ट आफ लोहरदगा: छोटानागपुर' नामक एक ठोस और प्रामाणिक व्याकरण का प्रणयन किया।१ यह सदानी बोली का प्रथम व्याकरण है। अल्पकाय होते हुए भी यह व्याकरण प्रतिपादित विषय के प्रायः सभी अंगों पर प्रकाश डालने के लिए पर्याप्त है। सदानी बोली का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करने के लिए पुस्तक के अन्त में गद्य और लोक-गीतों के कुछ उदाहरण जोड़ दिए गए हैं। एक परिशिष्ट में अगरेजी—पर्याय के साथ सदानी के कतिपय शब्द भी संगृहीत हैं। सन् १९१४ ई० में इसी व्याकरण का संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण 'नोट्स आन नागपुरिया हिन्दी' के नाम से प्रकाशित हुआ था।२

भोजपुरी भाषा पर पांडित्यपूर्ण सर्वांगीण गवेषण करने का श्रेय है, प्रयाग-विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्राध्यापक डा० उदय नारायण तिवारी को। उन्होंने डी० लिट्० की उपाधि के लिए शोध—प्रबन्ध तैयार करने के सिलसिले में वर्षों तक ग्रामीण क्षेत्रों में रहकर इस भाषा के विभिन्न रूपों का अध्ययन मनन किया था। प्रायः उसी समय बलिया—जिले की बोली पर आधारित उनका भोजपुरी व्याकरण 'ए डाइलेक्ट आफ भोजपुरी' नाम से प्रकाशित हुआ।३ इस ८३ पृष्ठीय व्याकरण में भोजपुरी भाषा सम्बन्धी बहुत सारी सामग्रियाँ उपलब्ध हैं।

सन १९४५ ई० में डा० तिवारी का 'ओरिजिन एण्ड डेवलेपमेंट आफ भोजपुरी' नामक शोध—प्रबन्ध प्रयाग-विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत हुआ।४ यह प्रबन्ध अपने में इतना पूर्ण है कि यह शोधार्थी विद्वानों के लिए एक प्रकार का मार्ग—दर्शक बन गया है। उन्होंने इसमें भोजपुरी भाषा के प्रायः सभी

(१) प्र०—दि बंगाल सेक्रेटारियट प्रेस, कलकत्ता, १८९६ ई०।
(२) प्र०—बिहार एण्ड उड़ीसा गवर्नमेंट प्रिंटिंग, पटना, १९१४ ई०।
(३) जनरल आफ दि बिहार एंड उड़िसा रिसर्च सोसाइटी (पटना) वर्ष २०, अंक ३-४, जुलाई-दिसम्बर, १९३४ ई०, पृ० १-३१ (परि०), वर्ष-२१, अंक-१, जनवरी-मार्च, १९३५ ई०, ३३-५६ (परि०) और वर्ष-२१, अंक-३ ४, जुलाई-दिसम्बर, १९३६ ई०, पृ० ५७-८३ (परि०)।
(४) प्रकाशक—एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, १९६० ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंगों की विस्तृत विवेचना की हैं। इसी शोध-प्रबन्ध के आधार पर डा० तिवारी ने 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' नामक दूसरा महाग्रन्थ तैयार किया जिसका पाठ उन्होंने सन् १९५१ ई० में बिहार-राष्ट्र-भाषा-परिषद् (पटना) के तत्वाधान में आयोजित एक गोष्ठी में किया था।१ इस ग्रन्थ में उन्होंने भोजपुरी की तुलना मैथिली, मगही, आदि आर्य परिवार की कई भाषाओं से करके इसकी महत्ता बतायी है। इसमें भोजपुरी व्याकरण के साथ-साथ भोजपुरी के सन्त साहित्य तथा अर्वाचीन साहित्य पर वैज्ञानिक ढंग से प्रकाश डाला गया है। इस ग्रन्थ की उपादेयता इतनी बढ़ गई है कि कितने ही विश्वविद्यालयों ने एम० ए० की उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए प्रादेशिक भाषाओं की पाठ्य पुस्तक के रूप में इसे स्वीकृत किया है। इनके अतिरिक्त, भोजपुरी भाषा-विषयक डा० तिवारी के अनेक लेख आजकल (दिल्ली), नागरी—प्रचारिणी—पत्रिका (काशी), सम्मेलन-पत्रिका (प्रयाग), जनपद (काशी), भोजपुरी (आरा), हिन्दी-अनुशीलन (प्रयाग), मुरली मनोहर -अभिनन्दन ग्रन्थ (बलिया) आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं तथा अभिनन्दन- ग्रन्थों में प्रकाशित हैं।

नागपुरिया भाषा सम्बन्धी सर्वांगीण गवेषण करने वाले हैं रांची के रे० फादर पीटर शान्ति नवरंगी। उन्होंने सन् १९५६ ई० में 'ए सिम्पुल सदानी ग्रामर' नामक एक व्याकरण प्रकाशित किया जिसमें उन्होंने सदानी बोली की सभी महत्वपूर्ण बातों की बड़ी ही सजीले ढंग से व्याख्या की है।२ नागपुरिया भोजपुरी का शुद्ध ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह पर्याप्त हैं। इस बोली का समग्र रूप प्रदर्शित करने के लिए पुस्तक के अन्त में एक लोक कथा दे दी गई है। फा० नबरंगी की दूसरी कृति है, 'नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण'३ यह उपर्युक्त अंगरेजी व्याकरण का प्रायः छायानुवाद है। इसमें भारत के आर्य परिवार की नव भाषाओं से तुलना कर नागपुरिया बोली की विशिष्टता को स्पष्ट किया गया है।

इसके अतिरिक्त, भोजपुरी भाषा पर प्रकाश डालने वाले दो और व्याकरण हैं। पहला हैं, डा० शुकदेव सिंह द्वारा प्रणीत 'भोजपुरी और हिन्दी'४

(१) प्रकाशक—बिहार—राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना, १९५४ ई०।
(२) रांची से ग्रन्थकार द्वारा प्रकाशित, १९५६ ई०।
(३) वही, १९६६ ई०।
(४) प्रकाशक—ऋतम्भरा, अखारा घाट मुजफ्फरपुर, अक्तूबर, १९६० ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा दूसरा है, रास बिहारी राय शर्मा द्वारा लिखित 'भोजपुरी व्याकरण'[१] पहला भाषा विज्ञान की दृष्टि से लिखा गया है और दूसरा विद्यार्थियों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए। पहले में खड़ी बोली, मैथिली, मगही, अंगिका वज्जिका आदि के व्याकरणों से भोजपुरी की तुलना की गई है और दूसरे में व्यावहारिकता पर अधिक जोर दिया है। पहले का 'हिन्दी और भोजपुरी का तुलनात्मक व्याकरण'[२] नाम से संशोधित और परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण हो चुका है और दूसरे का होने जा रहा है! इस क्षेत्र में भाषा – मर्मज्ञ गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ की पुस्तिका बिहार की भाषाएँ और बोलियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है।[३] बिहार में बोली जाने वाली भाषाओं और बोलियों का परिचय प्राप्त करने के लिए यह पर्याप्त है। इसमें भोजपुरी की सांगोपांग व्याख्या की गई है।

पत्र—पत्रिकाओं में भी कुछ ऐसी सामग्रियाँ प्रकाशित हैं जिससे भोजपुरी भाषा का सुस्पष्ट चित्र सामने आ जाता है। पहला लेख है, रास बिहारी राय शर्मा का 'भोजपुरी'.[४] सन् १६२६ में उसका प्रकाशन लखनऊ की 'सुधा' नामक पत्रिका में हुआ था। मेरी समझ से वही भोजपुरी के सम्बन्ध में हिन्दी में लिखा गया पहला लेख है। शर्मा जी ने उस लेख में भोजपुरी को मैथिली के बहुत सन्निकट बताया था! हाल में ही भोजपुरी वर्तनी और हिज्जे विषयक शर्मा जी का एक और महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ है।[५] लालजी सिंह ने 'भोजपुरी संस्कृति' शीर्षक अपने लेख के प्रथम अर्द्धांश में भोजपुरी व्याकरण के प्रायः सभी अंगों पर वैज्ञानिक ढंग से विचार किया है[६]

---

(१) प्रकाशक— राजगुरुमठ, शिवाला, वाराणसी, १६६४ ई०।

(२) प्रकाशक—सौरभ प्रकाशन, इलाहाबाद १६६८ ई०।

(३) प्रकाशक— ग्रन्थमाला कार्यालय, बांकीपुर, पटना, १६३८ ई०।

(४) मासिक 'सुधा' (लखनऊ), वर्ष २, खण्ड-१, सं०-१, फरवरी, १६२६ ई० पृ० १८ ३३।

(५) मासिक 'भोजपुरी जनपद' (वाराणसी), वर्ष-३, अंक-८-६, जुलाई-अगस्त, १६७१ ई०, पृ० १५-१६।

(६) त्रैमासिक 'हिन्दुस्तानी' (प्रयाग), वर्ष-१६, अंक-२, अप्रैल जून १६४६ ई०, पृ० १२८-४४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव ने भोजपुरी के क्रिया—पदों,[1] सर्वनामों[2] और विशेषणों[3] पर पांडित्यपूर्ण ढंग से प्रकाश डाला है। डा० नेमिचन्द्र शास्त्री का लेख 'भोजपुरी भाषा में प्राकृत तत्व' कई दृष्टि कोणों से महत्वपूर्ण है।[4] नागरी प्रचारिणी पत्रिका (काशी) में प्रकाशित वाचस्पति उपाध्याय का लेख 'बनारसी बोली' विषय प्रतिपादन की दृष्टि से अत्यन्त श्लाघ्य है।

विश्वविद्यालयों द्वारा पी० एच० डी० की उपाधि के लिये स्वीकृत कुछ ऐसे भी अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध हैं जिसमें भोजपुरी की विशेषताओं की गवेषणापूर्ण मीमांसा की गई हैं। वे सर्वसुलभ नहीं है, किन्तु उनकी महत्ता सर्वविदित है। इस प्रकार का सन् १९५३ ई० में कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत हिन्दी का पहला शोध प्रबन्ध है, नलिनी मोहन सान्याल का 'बिहारी भाषाओं की उत्पति और विकास'। जहाँ तक मेरी जानकारी है, हिन्दी में लिखित यही पहला शोध-प्रबन्ध है जो किसी विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत हुआ था। तत्पश्चात् सन् १९५१ ई० में लंदन विश्वविद्यालय द्वारा डा० विश्वनाथ प्रसाद का 'फोनेटिक्स इन भोजपुरी' शीर्षक शोध-प्रबन्ध स्वीकृत हुआ। इसमें भोजपुरी ध्वनियों का बड़े ही आकर्षक ढ़ंग से वैज्ञानिक अध्ययन उपस्थित किया गया है। सन् १९६९ ई० में डा० वकील सिंह बिहार विश्वविद्यालय द्वारा पी० एच० डी० की उपाधि से विभूषित किए गए। इनके शोध-प्रबन्ध का विषय था, 'चम्पारन की बोली का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन'। डा० सिंह ने इसमें चम्पारन की बोली की विभिन्नताओं को नूतन ढंग से पांडित्यपूर्ण गवेषणा उपस्थित की है।

भोजपुरी के बोली कोश पर अब तक जितना काम हुआ है, यदि उसे नगण्य कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वस्तुतः यह अछूता

(१) त्रैमासिक 'अँजोर' (पटना); वर्ष-५, अंक-१-२ अप्रिल-जुलाई, १९६४ ई०, पृ० ९-१३, वर्ष ५, अंक-३ ४, अक्तूबर, १९६४, जनवरी-१९६५, पृ० २७-३१।

(२) वही, वर्ष-९, अंक-३-४, अक्तूबर, १९६८ जनवरी १९६९, पृ०-२-७।

(३) वही, वर्ष-११, अंक-१-२, अप्रील-जुलाई १९७० पृ० १०-१३।

(४) वही, वर्ष-१० अंक-१-२ अप्रील-जुलाई १९६९ पृ०-२-१६ और वर्ष-१० अंक-३-४ अक्तूबर १९६९ जनवरी १९७० पृ०-२-०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही है। कुछेक शोध-ग्रन्थों को छोड़कर अन्य में भोजपुरी शब्दों का संकलन प्रसंगवश ही हुआ है। सर्व प्रथम सन् १८७४ में जी० कैम्पबेल ने चम्पारन और शाहाबाद में बोली जाने वाली भोजपुरी के कुछ शब्दों और वाक्यों को अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'स्पेसिमेन्स ओफ लेंगवेजेज ओफ इन्डिया' में स्थान दिया था।१ जे० आर० रीड ने अपनी 'सर्वे रिपोर्ट' के परिशिष्ट ३ में जो अलग छपा है, आजमगढ़ जिले से संकलित शब्दों को प्रकाशित कराया है।२ एस० डब्ल्यू० फैलन के 'ए न्यू हिन्दुस्तानी इंगलिश 'डिक्शनरी' नामक बोली कोश में भोजपुरी के कुछ शब्द सम्मिलित हैं।३ डा० ग्रियर्सन ने बिहार के भोजपुरी-भाषा-भाषी-क्षेत्रों के ग्राम वासियों-द्वारा प्रयुक्त होने वाले बहुत से शब्दों को अपने बहुचर्चित कोश 'बिहार पीजेंट लाइफ' में स्थान दिया था जिसकी चर्चा अन्यत्र हो चुकी है। किन्तु भोजपुरी के विशाल शब्द-भंडार को देखते हुए इसे नगण्य ही कहा जायगा। पाँचवा कोश है, मिस एल: सेण्ट जॉसेफ द्वारा मोतीहारी (चम्पारन) के सन्निकट के ग्रामों से संकलित तथा मोतिहारी के मिशन हाउस से प्रकाशित 'भोजपुरी शब्द कोश ।४ यह कोश पाकेट बुक साइज में मुद्रित २८ पृष्ठों का है। अन्वेताओं को सुविधा के लिए संकलनकर्त्ता ने कोश के अर्द्ध भाग में भोजपुरी शब्दों के अंगरेजी पर्याय और शेष अर्द्ध भाग में अंगरेजी शब्दों के भोजपुरी पर्याय दिए हैं। कोश वर्ण क्रमानुसार नियोजित है। कोश में २०० से अधिक शब्द नहीं हैं। डा० हरिहर प्रसाद गुप्त का 'ग्रामोद्योग और उनकी शब्दावली' शीर्षक बोली-कोश स्वतंत्र रूप से भाषा-विज्ञान पर आधारित भोजपुरी का प्रथम कोश है।५ यह एक शोध प्रबन्ध है और इसका संकलन क्षेत्र हैं, आजमगढ़ जिले का फूलपुर तहसील। इसी कोश पर सन् १९५१ ई० में उन्हें प्रयाग विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० की

---

(१) प्र०—दि बंगाल सेक्रेटारियट प्रेस, कलकत्ता, १८७४ ई० क्रमशः पृ० ६० और पृ० ९५।

(२) रिपोर्ट आन दि सेटलमेंट ओपरेशन्स इन दि डिस्ट्रिक्ट ओफ आजमगढ़ (इलाहाबाद, १८८१ ई०)

(३) प्र०—मेडिकल हॉल, बनारस, १८७९ ई०।

(४) प्रकाशक—मिशन हाउस, मोतिहारी (चम्पारन), १९४० ई० (?)।

(५) प्रकाशक—राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, १९५६ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपाधि मिली थी। इसमें विषय क्रमानुसार शब्दों की व्युत्पत्ति और इसके हिन्दी पर्याय बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से सजाए गए हैं। इसमें २५०० शब्द संकलित हैं। भोजपुरी शब्दावली से सम्बन्धित अन्तिम और महत्वपूर्ण बोली-कोश है, 'कृषिकोश'। यह दो खण्डों में प्रकाशित है।१ पहले के सम्पादक है, डा० विश्वनाथ प्रसाद और दूसरे के हैं, वैद्यनाथ पांडेय। इसमें मैथिली मगही और भोजपुरी क्षेत्रों के ग्रामीणों द्वारा व्यवहृत कृषि सम्बधी प्रायः सभी पारिभाषिक शब्दों को संगृहीत किया गया है। इसका कार्य क्षेत्र केवल बिहार है। डा० कृष्णदेव उपाध्याय द्वारा संकलित सम्पादित 'भोजपुरी ग्राम गीत (भाग-१) के अन्तिम पृष्ठों पर भोजपुरी के कुछ शब्द संगृहीत हैं।२ त्रैमासिक 'अँजोर' (पटना) के कतिपय अंकों में भी भोजपुरी के सैकड़ों शब्दों का संकलन किया गया है। इसका श्रेय उसके विद्वान सम्पादक पांडेय नर्मदेश्वर सहाय को है। पं० गणेश चौबे, डा० उदय नारायण तिवारी तथा डा० सत्यदेव ओझा ने भोजपुरी क्षेत्र के कुछ पेशेवरों द्वारा प्रयुक्त होने वाले सांकेतिक शब्दों का संग्रह किया है जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित है।

इस प्रकार बोली-कोशों के इस सिंहावलोकन से यह स्पष्ट है कि यह कार्य अभी सिन्धु में विन्दु के समान है। हर्ष की बात हैं कि इधर हिन्दी अन्तर्जनपदीय परिषद् का पुनर्गठन हुआ है और व्रज भारती' (मथुरा) के सम्पादक वृन्दावन दास के संयोजकत्व में हिन्दी प्रदेश की विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं के बोली कोश का कार्यारम्भ कर दिया गया है। परिषद् के आयोजन के अनुसार चम्पारन के पं० गणेश चौबे ने भोजपुरी के बोली कोश के लिए सामग्रियाँ इकट्ठा कर ली है और उन्हें विन्यस्त कर रहे हैं। देखें, यह कबतक मूर्त्त रूप धारण करता है।

[महल्ला ठाकुरबाड़ी, मोतिहारी]

---

(१) प्रकाशक—बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना, प्रथम खंड—१९५९ ई० और द्वितीय खंड—१९६८ ई०।

(२) प्रकाशक—हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, संवत २०००।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार के मुख्य मंत्री : एक संक्षिप्त परिचय

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

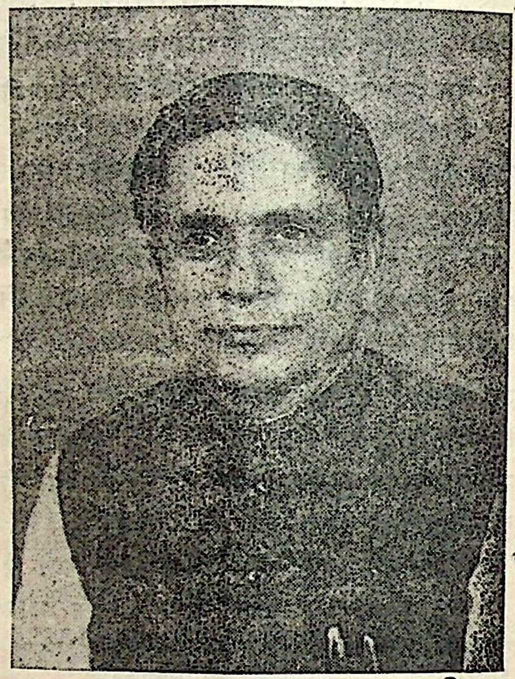

श्री केदार पाण्डेय जी

भोजपुरी बीरन आ जवानन का तपस्या, त्याग आ बहादुरी से भारत के इतिहास के पन्ना-पन्ना भरल बा। भारते के ना समूचा संसार के सभ्यता आ संस्कृति पर भोजपुरी व्यक्तित्व के प्रभाव परल बा। भोजपुरी क्षेत्र बराबर अपना कोख से जनमल एक से एक हीरन के दान मानवता के कल्याण खातिर कइले बा। भगवान बुद्ध, शेरशाह, बाबू कुंअर सिंह, मंगल पाण्डेय, सच्चिदानन्द सिनहा, राजेन्द्र प्रसाद जी, लाल बहादुर शास्त्री आ अनेक भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेकर नाम गिना ना सके, अपना क तब से भारत के माथ ऊँचा कइले बाड़े। अब स्वराज भइल, तब अनेकन धूरि में लपिटाइल हीरा, जवाहिरातन के चमक देखाये लागल। ओइसने चमकत हीरन में हमार मुख्य मंत्री श्री केदार पाण्डेय जी भी हईं। अपने का पहिले, भी मुख्य मंत्री का पद पर श्री हरिहर प्रसाद सिंह जी (शाहाबाद) श्री महामाया प्रसाद (सारन) श्री दारोगा प्रसाद राय (सारन) इत्यादि लोग एह पद कि शोभा बढ़वले बानी। अनेक आउर भोजपुरी लोग मंत्रिमंडल में अपना गुण से जनता के भलाई करता।

गोर रंग, ऊँच लिलार, विशाल छाती हँसमुख चेहरा, अंग-अंग में फुर्ती, मीठ बोली, विद्वत्त पूर्ण व्यक्तित्व, दयालु मोलायम स्वभाव, परोपकार के भावना, ई सब गुण जेकरा में ह, ओह हस्ताक्षर के नाम ह श्री केदार पाण्डेय जी।

पाण्डेय जी के जनम चम्पारण जिला का रामनगर थाना के तौलहा गाँव में ६ सितम्बर सन १९२० के भइल। अपने के पिता स्व० पं० राम-दत्त पाण्डेय जी जिला जवार के नामी गिरामी पण्डित आ गृहस्थ रहलीं। अपने का लइकाइयें में अपने के पिता जी गोलोकवासी हो गइलनीं। परिवार विद्याप्रेमी आ सुसंस्कृत रहे, लड़िकाई तौलहा में बीतल। बाद में बेतिया हाई स्कूल से मैट्रिक परीक्षा पहिला दर्जा में पास कइलीं। पास कइला पर वजीफो मिलल। आइ० एस० सी० लंगट सिंह कालेज से आ बी० एस० सी० ग्रीयर भूमिहार ब्राह्मण कालेज मुजफ्फरपुर से पास कइलीं। काशी विश्वविद्यालय से गणित में एम० एस-सी० के डिग्री लिहलीं। छात्र जीवन में अपने बहुत मेधावी आ परिश्रमी रहलीं, जेकर नमूना आजुओ देखे के मिलता। एल० एल० बी० के डिग्री ओहिजे से सन १९४५ में लिहलीं।

एम० एस-सी० का पहिलका साल यानी पाँचवाँ बरिस (5 th year) में देश आ राष्ट्र का पुकार पर अपने आजादी का लड़ाई में आपन सर्वस्व न्योछा-वर कइ के कूदि परलीं। देश प्रेम के भावना लरिकाइएं से अपने का मन में रहे। अपना जिनिगी के, अपना भविष्य के कुछ परवाह ना कइ के अपने देश सेवा खातिर आपन तन मन धन अर्पण करे लगलीं।

सिसवाँ बसन्तपुर बाजार, थाना बगहा में सभा करत अपने गिरफ्तार भइलीं। छव महीना के सम जेल सजाइ मिलल। भागलपुर जेल में सजाइ काटे खातिर अपने भेजल गइलीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थोड़े दिन का बाद अपने वोकालत शुरू कइलीं मोतिहारी आ बेतिया कचहरियन में। थोरे दिन पटना हाई कोर्ट में भी वोकालत कइली। वोकालत का साव साथ इन्टक द्वारा प्रमाणित, बिहार चीनी मजदूर संघ के अध्यक्ष बनावल गइलीं। मजदूर आन्दोलन में अपने १९५२ तक बराबर सक्रिय सहयोग देत रहलीं। १९५२ में रामनगर क्षेत्र से कांग्रेस का ओर से विधान सभा खातिर उमेदवार खड़ा भइलीं। १९५२ से १९५७ तक विधान सभा के सदस्य रहलीं। १९५२ से लगायत १९६२ तक स्वनामधन्य स्व० डा० श्रीकृष्ण सिंह का मंत्रिमंडल में अपने सिंचाई आ सामान्य प्रशासन के उपमंत्री का हैसियत से सदस्य रहीं। श्रीबाबू अपने के बहुत मानत रहीं। बड़ बड़ जिम्मेदारी के काम इहाँ का कन्धा पर लादल जात रहे, आ आसानी से खूबी का साथ ओकर सम्पादन अपने करत रहीं।

सन् १९६२ से सन् १९६७ तक बिहार नागरिक-परिषद् (Bihar Citizens Concil) के अपने प्रधान मंत्री रहलीं आ भारतीय तेल निगम (India oil Corporation) के सदस्य रहलीं ! सन् १९६८ में अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी का बैठक में प्रमुख वक्ता का रूप में चुनल गइलीं। बाद में अमेरिका सरकार का नेवता पर अपने अमेरिका देश भर के दौरा कइलीं। मध्यावधि चुनाव में नोतन क्षेत्र से कई बार विजयी हो के मंत्री पद के सुशोभित कइलीं। सन् १९७२ का आम चुनाव में नोतन क्षेत्र से अपने चुनल गइलीं।

अपने का पहिलका अनुभव, लायकियत, विद्वता आ काम करे के लगन देखि के, अपने के बिहार का मुख्य मंत्री का पद पर बैठ गइलीं। जेह दिन मंत्रि मंडल के सदस्यन का शपथ-ग्रहण रहे, राज भवन का पंडाल में हमहूँ गइल रहीं। अपने के माला से लोग लादि दोहल आ नवयुवक दल 'शेरे बिहार जिन्दाबाद' का नारा से पंडाल गूंजि उठल। जनता के स्नेह अपने का प्रति ओहिदिन देखे के मिलल।

धर्मपत्नी, दू बेटा, दू बेटी, इहे अपने के परिवार ह। एह तरे त अपने बराबर कहीला कि समूचा सूबा हमार परिवार ह जेकर हम सँवाग या सेवक हईं।

मुख्य मंत्री का पद पर बइठला का थोरे ही दिन का बाद इहाँ का अपन शासन कुशलता, आ प्रखर बुद्धि के परिचय देवे लगलीं। इन्दिरा जी देश के नवकी पीढ़ी के लोग के शासन भार सौंपे के चाहेली आ एही से नवहिन के भर नोमन नीमन ओहदा पर जादे बा। इन्दिरा जी के सपना साकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करे में अपने एको बात उठाना रखलीं। कांग्रेस संस्था के सिद्धान्त आ नियम कागजे पर डूबत उतारात रहल हा। अपने का मुख्य मंत्री बनला का बाद, सभे सिद्धान्त कार्य-रूप में परिणत होखे लगले। बड़े-बड़े सुधार करे में जे आउर लोग हिचकत रहे, अपने तुरंत हाथ लगा दिहलीं। बिहार के शिक्षा विभाग में बहुत गड़बड़ी बा। अपने शिक्षा विभाग के अपना हाथ में लिके सुधार शुरू कइ देले बानी। विश्व विद्यालयन के समस्या जवना खूबी से हल कइली ऊ देखि के लोग चिहा गइल। यदि अपने का हाथ में ई विभाग रहि गइल त एकर सब बिगरल अंग अपने के ठीक क देबि।

भूमि हदबन्दी कानून (नगर-ग्राम) के विधान सभा से पास करा देलीं। भारत के गँवई का जिनिगी में एह कानून से घनघोर क्रान्ति मची। हो सकेला गाँवन के नक्शा बदलि जाये। एह काम में विधि मंत्री श्री चन्द्रशेखर सिंह जी अपने के काफी मदति कइ रहल बानी।

मैथिली के बिहार लोक सेवा आयोग में जगह देके अपने मैथिल भाइयन के भाग चमका दिहलीं। मिथिला विश्वविद्यालय बनि गइल। ई भोजपुरिये के करेज ह कि आपन ना दोसरे के सजावे सँवारे ला।

भोजपुरी क्षेत्र के भइला से भोजपुरी का प्रति अपने के बड़ा नेह बा। 'भोजपुरी परिवार' पटना, आ 'अँजोर' खातिर अपना सामान्य शासन मंत्री का काल में जे बिरवा रोपलीं ओकरा के सींचि के बा० अम्बिका शरण सिंह जी (भू० पू० वित्त उप मंत्री) खड़ा कइलीं। फिर भी भोजपुरी का नाम पर अपने कुछ करे के तुरत तैयार हो जाईला। अपने के भोजपुरी प्रेमसे प्रेरित होके भोजपुरी संसद काशी अपना विशाल जलसा के अपने से उद्घाटन करवले रहे। चेतना समिति (मैथिली) के जलसा में अपने भोजपुरी में भाषण दिहलीं। अपने ढेर भोजपुरिये में बोलीला।

जनता के सेवा एकमात्र अपने के ध्येय ह। सबका से मिलिके ओकर दुख सुख सुनि के ओकरा जोग उपचार करे के अपने हरदम चाहीला अपने का आगा जे हाथ पसारल कुछ न कुछ लेइके लवटल। दोसरा का दुख से अपने तुरत दुखी हो जाईला। काम में दिन रात बाझल रहला पर अपना चेहरा में तनिको कमी ना आवे दीं। सुन्दरता त भगवान देले हीं बाड़े गुण भी ओइसने सुंदर बा। सादगी के त अपने नमूना हईं। ठीके कहाइल बा "होनहार बिरवान के होत चीकने पात"। भगवान करसु अपने युग युग जीहीं आ मुख्य मन्त्री का पद से देश आ प्रान्त के सेवा करते रहीं। प्रभु अपने के सदा 'नीरोग राखसु' 'भोजपुरी परिवार' के इहे कामना बा ★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जमीन–आसमान

रउरा राजा बाबू बानी, बानी बड़का खानदानी
कइल करीं मनमानी, हमनी सइनी — सहतानी

जब-जब पड़नी बेमार, तब-तब करजा उधार
रउरा करजा के दानी, हमनी बानी पानी-पानी

जनम-जनम के गुलाम, हमनी करतानी काम
घटले रहेला चुहानी, घरे कउड़ी ना कानी—

आपन एको ना समय, बाटे आठो पहर भय
चौका बर्तन सानी - पानी, दिनों रात बा हरानी

भइल कस भर बिआह, माथे करजा अथाह
सूद बढ़े से ना मानी, कइसे करीं बेईमानी

सूद द्रुपदी के चीर, बढ़ते जाता चिन्ता भीर
कुछऊ बाहे ना जवानी, चली कइसे आना कानी

आपन पेट काट-काट, टुकड़ा-टुकड़ा बाँट-बाँट
बस, जीयतानी, जानी; धिरिक-धिरिक जिनगानी

राउर सुख देखतानी, आपन दुख देखतानीं
बानी दुइये परानी बाकिर जानीं ना जवानी

हमरा अच्छर से ना भेंट, रउरा हाथे बाटे घेंट
चाहे बान्हीं चाहे छानीं, चाहे कूटीं चाहे खानीं।

★

—महेन्द्र शास्त्री
[रतनपुरा, सारन]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सालारजंग-अजायबघर

कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य'

सालारजंग-अजायबघर देखे के एगो पुरान सरधा रहे। बहुते पुरान। पूरा भइल, पर साल दिसम्बर महीना में। हैदराबाद के कुछ तेलुगु भाषी मित्र लोग से नेवता मिलल रहे।। १२ दिसम्बर के भोरहरिए हम अपना तेलुगु-भाषी हिन्दी-लेखक-मित्र श्री मुप्पन मल्लेश्वर राव जी का संगे हैदराबाद पहुंचलो। उहां पहुंचला प तरह तरह के परोगराम बने लगलेस। लेकिन हमरा मन में त सालारजंग-अजायबघर देखे के छटपटाहटि ले ले रहे। हमार विशेष आग्रह प सम कोई पहिले अजायबेघर चले के तेआर हो गइल। दिन भर अजायबघर के बिराट-बिल्डिंग में घुमल आदिमी। एह कम समय में एह अजायबघर में जवन कुछ हम देख पवनी आ हमरा मन में ओकर का परभाव पड़ल, एह विषय में हम नीचे संछेप में लिखतानी।

सालारजंग-संग्रहालय देखि के, प्राचीन-कला-विज्ञान चाहे तकनीक से बेसी सरधा हमरा खुद सालारजंग के व्यक्तित्व के प्रति जागल। सबहूं कतना बड़हन कला-प्रेमी ऊ आदिमी होई जे अपना जिनिगिये भरि में ४३,००० कला-कृति आ ५५,००० पुस्तक आ पांडुलिपियन के अतहत विशाल जमघट जुटवले होई। ऊ भी एकदम कम उमिर के जिनिगी में। मान लिहल जा सकेला कि हैदराबाद निज़ाम के मंत्री के हैसियत से उनुका धन के कमी ना होई, लेकिन खलिहे रुपये-पइसा से त अतहत बड़हन काम ना हो सकेला। एकरा खातिर चाहीं, अनथक मेहनति—अनहद-लालसा आ अथोर लगन। इटालियन, डच, ब्रिटिश आ फ्रेंच कलाकारन के मूल-कला-कृतियन के एक घर में एके आदिमी जुटा दे, ई कतना मेहनति आ लगन के काम बा? दुनियां में सालारजंग तृतीय के छोड़ि के केहू अइसन ना भइल जे अपना महल में एके संगे 'वाट्स', 'लइटन', 'कमूर', 'लैंडसीअर' आ 'वेनजोनी' जइसन दुनियां के एह कोना से ओह कोना तक के मशहूर कलाकारन के कृतियन के बीच में जोअल आ मरल होखे।

सालारजंग (तिसरका) के जिनिगी के बारे में बहुत कम जानकारी मिलेला। बाकी हैदराबाद पहुँचे वाला घुमक्कड़ लोग जब मुसी नदी के पछिमी किनार प आसमान से आँखि लड़ावति कला के एह महान साधक के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाधि एह अजायबघर के इमारति के देखेला, त मन में सालारजंग के बारे में जाने के इच्छा जरूर पैदा हो जाले।

सालारजंग (तिसरका) के असली नाम 'मीर युसुफ अली खां' रहें। कहल जाला, ई जिनिगी भरि कुंआरे रहि गइल रहनि। हैदराबाद निजाम के मंत्री पद प भी ई खाली ३ बरिस रहनि। सन् १९१४ में ई एह पद से इस्तीफा दे देले रहनि। इनकर सउँसे जिनिगी दुनियाँ के कोना कोना से कला-संग्रह करे में बीतलि। लगभग २५ देश के कलाकारी के नमूना ई अपना महल के भीतर जुटवले। एह संग्रहालय में इनकर आपन खानदानी निशानी भी पावल जाली स। एह में खास चीज बाड़ी स भोजन करेवाला बड़का टेबुल, मेजपोश, मुकुट, कामदार शाही जूता आ बरतन वगैरह। कहेके जरूरति नइखे कि एह कुल्हि के बहुत बढ़ियाँ कलाकारी प काम कइल बा। अजायबघर के एक भाग में खाली हीरा-जवाहिरात के संग्रह राखल बा। त दोसरा अलगे अलगा-अलगा देशन्हि के चीज अलगा-अलगा कोठरिन्ह में राखल बा। रानी विक्टोरिया के दस्तखत के साथ फोटो, प्रिंस ऑफ वेल्स के दिहल कामदार चान्दी के कटोरा, आ ड्यूक ऑफ एडिनबरा के दिहल कटोरा-लोटा त बड़लेबा, लूई चउदहँवा के फर्निचर, पंचम जार्ज के फर्निचर आ 'मेरी इन्तोइनेत, के सिंगार करे वाला बड़का ऐनक भी बा। कांच के बनल चीजन्हि खातिर फरके कोठरी बा आ कांसा के कला-कृति अलगे कोठरी में राखल बाड़ीस। एगो दोसरा कोठरी में खाली घड़ी राखल गइल बाड़ीसन, सैकड़ों नमूना के घड़ी।

मशहूर विदेशी चित्रकारन के बनावल दुर्लभ तैलचित्र के बड़ा अच्छा अच्छा संग्रह एह अजायबघर में बा। भारत के चित्रकला के नमूना, जवना में पहाड़ी, मुगल, राजस्थानी आ दक्खिनी शैली के चित्र बाड़े स, अलगे एगो कोठरी में राखल बा। एकरा अलावे आधुनिक शैली के कुछ देशी चित्र भी राखल गइल बाड़े स।

सालारजंग के कला प्रेम के उनकर धर्म सम्प्रदाय भी नइखे दबा सकल। एह बात के परमान एह संग्रहालय में राखल सैकड़ों हिन्दू-मूर्ति, जइसे शिव, पारवती, गणेश, विष्णु, सूर्य आ इन्द्र वगैरह के संगहीं संगे बौद्ध आ जैन धर्म के अनेकन मूर्तियन के जमघट बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १९५८ से ई संग्रहालय सरकारी देखरेख में चल रहल बा। एकरा प्रबंध खातिर एगो परिषद गठित कइल बा। एह अजायबघर के आपन रासायनिक प्रयोगशाला भी बा।

सालारजंग संग्रहालय सचहूँ में एगो अजूबा के चीज बा। कहीं-कहीं त दर्शक एह में भूलभूलैया के चक्कर में पड़ि जाला। अइसने चक्कर में डाले वाली कला-कृति बिआ एगो आदमकद काठ के बनल मेफिस्टोफेलज आ मार्गरेट के मूर्ति। ई मूर्ति 'गेटे' के 'फाउस्ट' के आधार प बनावल गइल बिआ। खूबी एकर ई बा कि एह एके मूर्ती में सामने से मर्दाना शक्ल (मेफिस्टोफेलज) बा आ पीठि के ओरि जनाना सूरति (मार्गरेट) बा। पीछे देवालि में बहुत बड़हन ऐनक में मार्गरेट के परिछाँहीं लउकेले। अब दर्शक के एके मूर्ति में एके हाली मर्दाना आ जनाना दूनों लउकत रहेला आ अचके में आदिमी चकचका जाले कि एके मूर्ती में दूगो शरीर कइसे गढ़ल गइल होई।

ठाक एही ढंग के अचरज में डाले वाली एगो घड़ी के जिकिर क के हम ई बिवरन खतम करतानी। एह संग्रहालय के आंगन में एगो झोपड़ी बना के एगो बड़हन घड़ी राखल बिआ। एह घड़ी के खूबी ई बा कि जब १२ बजे में एकाध मिनट के देरी रहो तबहीं ध्यान आकर्षित करे खातिर मद्धिम सुर में एगो घंटी बाजेले। ओह घरी दर्शक लोग सगरी अजायबघर से निकलि के अंगना में जमा हो जाला। जब ठीक १२ बजी त घड़िये में एक अलंगे लागल एगो छोटहन मड़ई के फाटक अपने आप खुली आ मड़ई में से एगो बूढ़ मुसलमान सादा पैजामा आ कुरता पेन्हले निकली। ओकरा हाथ में काठ के एगो छोटहने हथउरी रही। एक दू डेग चलि के उ पँजरे टाँगल पीतर के एगो घरीघंट प १२ हाली चोट मारी, फेरु लवटि के अपना मड़ई में अमा जाई। मड़ई के फाटक अपने आप बन्द हो जाई। ई सभ काम घड़ी के भीतरे ओकरा डायल प होई। एह घड़ी के बनावट देखि के दरसक के अचरज त होखबे करेला, घड़ी में के बड़का मियाँ के काम देखि के हँसत-हँसत पेट फुलि जाला।

[C/o प्रियंवदा प्रकाशन झारसुगुड़ा (उत्कल)]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होखे तनी छूटि के

नेता—महिमा

जबले वोट पड़ी ना भइया, नेता वोट ना जइहें।
पड़ते वोट, वोट हो जइहें, फिर वोटे में अइहें।

ई चुनाव मधु के छाता ह, वोट मधुर-मधु असली।
नेता-नट—मधु के कढ़वइया, भाषण, पोस्टर नकली।

लमहर पेड़ लपकि के धइनी, जननी जे फल चूई।
ई त बड़का सेमर निकलल, भरि मुँह भरलस रूई।

कटनी

केहू काल काटता, केहू जाल काटता।
केहू सुतल-सुतल पराया के माल काटता।

केहू सानी काटता, केहू पानी काटता।
केहू परल-परल हीक भरि चानी काटता।

केहू सोरह, केहू बीसो, केहू तीसी काटता।
केहू ढललो प दाँत से बतीसी काटता।

केहू सुखे काटता, केहू दुखे काटता।
केहू दिन रात खटलो प भूखे काटता।

केहू नरमे काटता, केहू गरमे काटता।
जेका अँखिया में लाज बा ऊ शरमे काटता।

केहू रोट काटता, केहू नोट काटता।
केहू चेक देके काबिलो के वोट काटता।

केहू छुँछे काटता, केहू पूँछे काटता।
केहू चढ़ते जवनियाँ मे मूँछे काटता।

★

लक्ष्मण पाठक 'प्रदीप'
कटेया, सारन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐतिहासिक कहानी

आन्हर प्रेम

तैयब हुसैन 'पीड़ित'

ओरंगजेब का मुअला पर उनकर बेटा 'मुहम्मद मुअज्जिम' पाँच बरिस ले राज कइलन। ओकरा बाद राजकाज नौ महीना लाग मुहम्मद मुआज्जिम के बेटा जहांशाह के हाथे लागल। जहांशाह रहस त कमसीन बाकी एक नम्बर रंगरसिया। राज के बनल-बिगरल वजीर 'जुल्फकार खाँ' देखस आ बादशाह साकी-शराब में भूत भएल जमीने पर जन्नत जमावस। राजा हाथ के कठपुतरी आ वजीर ओकरा नचवइया, लोग तमाशा देखे आ अपना काम में लागे।

ढेर दिन ले अइसहीं चलल बाकी आखिरी समइया में ओह कठपुतरी के डोरी एगो ओरत थमलक त नाच में कुछ आउर तेजी बुझाएल। राजा नाचत रहलन-नाचत रहलन तबले, जब तकले उनकर सब करम ने हो ग ल'''।

ई जनी जात ओही राज के एगो बेसवा के बेटी 'लालकुँवर' रहे जेकरा सूरत से मोहा के बड़का दुलार से कहस—'शीरींलबा'। राजा के ममिआउत भाई 'जहांवस्त' एह मूरत के अपना घर में बइठावे के चाहस, बादशाह अपना घर में। पता ने मुरती अपना चउहट्टा से हटे के चाहे कि ने ? इतिहास कहले—ओह खेलवना के चाभी ओकरा महतारी के हाथ में रहे 'बाकी हमर मन कहता—बलजोरी के एह दोहरी जांता में जब ओकर मनसा अनाज-नियर पिसा गएल तब उ अनबोलता देवी बनके लोग के आपन महातम देखावे के किरिया खा लेलस''''।

साँच जे होय, लालकुँवर दोनार के ढेरी से बदलके शाही-दरबार में आ गइली आ जहांवस्त जब चहुंपलन त उनकर मतारी नकिआत कहली—"बबुई त काल्ह पसली के दरद से हमरा के छोड़-भगली ! विश्वास ने होय त निजामुद्दिन में उनकर कबर देख आईं।" नया कबर एगो नाटक रहे बवन देख के जहांवस्त एह घड़ीआरी लोर से पीला होय के जगहे सूखल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइलन, उनकर आँख लाल हो गएल, साँस हाली-हाली चले लागल आ हाथ के दूनों मुट्ठी अइसन बन्हा गएल जइसे ऊ खीसे आग में धनकत होखस। ऊ आब ने देखलन ताव, तेरुआर खींच के बुढ़िया के दू टुकी कर घललन…।

लाल कुँवर मातारी के मउअत पर रोअली ने बलुक ठठाके हँसली, साइत समाज के बुरबकई पर, जवन औरत नाम बहिरा साँर के सिवाई के जानकार वा, जहर से अनजान। उनकर तिकरम चले लागल। 'तिरिया-चरित्तर आ मरद के भाग का दो देवतो ने जानस आदमी के कवन गिनती !' लालकुँवर खटवांस-पटवांस लेली—"जवले जहाँविरत के लाश ई आँख देखो ने, गीलि रहो; कान मुअला के खबर सुनी ने गूँगे रहो…ई लालकुँवर के ने, जहाँपनाह के सिकाइत बा, का एतनो ताकत नइखे जहाँशाह में ? नकल काम कर गइल, जहाँविरत कवनो बहाना से जहर देके मार देल गइलन आ तब लाल कुँवर बूझ गीं—"औरत देह-धुआ में भलहीं मरद से अवर होय खीस सधावे में मरद से सै गुना जब्बर। ऊ चाहे त मरद जात ओकरा आगा-पीछा कुकुर-नियर पोंछ डोलावस, खाली देरी ओकरा मरद के कमजोरी पहचान गइला के बा…!'

एक शिकार करते ऊ दोसरका तिकावे में लाग गइली—"का होई जब बादशाह मर जइहन आ राज उनकर शाहजादन के हाथ में आई ! का ऊ दूध के माछी नियर निकाल फेंकल ने जइहन ? शाहजहाँ के अपन खून औरंजेब जब उनका कामे ने अइलन त अनका के कवन भरोस…? आ इहे सोच के एकदिन मोका मिलते जब बादशाह उनका परेम में पागल भेल रहस, ऊ इतरावत अपन जाल बिछवली—"बादशाह सलामत ! एगो सनक हमरा मन में हुरदंग मचावत रह गएल।"

बादशाह कहलन—"कहऽ। तोहरा लाग आसमान के तारा तूड़दीं, दौलत के ढेरी लगादीं आ आउर ने त अपन सिर…" लालकुँवर हहुआ के मुहें जाँत देली—"ना ! ना ! बहुत भएल। हम दिल्लगी करत रहनीं।" बाकिर बादशाह खोदबारत गइलन—"ना ! हमरा बिना जनले चैन ने आई, तोहरा कहहीं ला पड़ी !"

इहँहीं ऊ जगेह ह जहाँ मर्दानगी आन्हर होके औरत के सहारा खोजे लागला जानुक बिना ओकरा एको डेग चलले ने जाई ! लाल कुँवर बेशवा

[शेष पृष्ठ ३१ पर]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बरखा बुन्नी के रात

राहे-पेंड़े अन्हुरात,
झनकत - पटकत,
जेकरे –तेकरे से
बजना . बजनी करत,
मुस्की पर मुस्की छोड़त,
घोकछा भिरले,
हहास–पताल बन्हले,
गछिए—गछिए
ई कवन चुरइलिया
चलल आवतीआ।
घुरघुरवले ?
दिन भर के थाकल—खेदाइल,
सर—सवांग के,
खेत—बधान में
नीन उछन्नर करेके
बेरा तिकवले बींआ!
अकेले त चले ना
आगा पाछा लश्कर लेले चलेले,
कपार पर, खानी—बिरवानी के—
बनउरी बजारत,
खपड़ा – नरिया भुरकुस करत,
गाछ—बिरिछ के
गतर–गतर थूरत।
जहवाँ ना चूअत रल
सहवों चूए लागल।

हमनीं गरीब—गुर्बा के परान—
चंग बेआला होके रह जाता।
कइसन नयद
सोरठी कढ़वले रहले,
मीठू के छंवड़ा,
खेप धललस;
का करो ?
ए हल्ला-कुचाह में
गुनी के ?
अगसरुओ आदमी के जिनगी
कवनो जिन्दगिए ह ?
पा-भर डुभुका के खइलस
आ मर लैला परल रहल।
इनका एगो कुसल-छेम के—
पोसकाट लिखत,
परमासनेः भइल बा,
केकर लइका सेआन
पूरब-पच्छिम नइखे ठेकल ?
बाकी अइसन नइखे,
जे गाँव के सिवान हेलत-हेलतः
घर-दुहार सब भुला जाता।
इहाँ हमार नू संसा में,
रात-दिन परान अंटकल रहता;
उनका कवन ?
होइहें कवहूँ बगइचा मारत !

—बुद्धदेव नारायण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-21

(कहानी)

अँकोर

डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' पी० एच० डी०

(चतुरी चाचा)

होत फजीरे जब नारद जी भगवान कीहां चोंहपलन आ चाय के फुरमाइस कइ दिहलन त भगवान खातिर ई एगो बहुत झंझट के काम हो गइल। ई बात ना रहे कि भगवान का दरबार में केवनों जिनिस के कमी रहे। चाय के अबहीं टटके डिब्बा बजार से कीनि के मँगावल गइल रहे। चीनी के केवनों दुखे ना रहे। दुख रहे त खाली दुध के। ओह घरी भगवान कीहाँ इची लगहर के कमी ही गइल रहे। कामधेनु बेचारी लें आइलि गइल। जइसहीं नोखड़ से छानि के घूंचा रेके दूहे वाला पाछा बइठल तबले ऊ अइसन लात चलवलसि कि घूंचा राम फइलांवां फेंका गइलन। दुहनिहार बेचारू नाकि टोवे लगलन। एने चाय बनावे खातिर पानी धिकवल जात रहे।

नारद जी कुल्ही तमाशा देखत रहलन। ऊ गते से खाँची उठवलन आ चलि गइलन छपटिअउरा। ले आ के खाँची में थोरे हरिअर गाइ का आगा धइ दिहलन। दुहे वाला से कहलन कि भाई अब गाइ के मजे से दूहि सकेलऽ। अब ऊ साँसि ना ले सकेले। सचहूं गाइ सांस ना लिहलसि अ रोज से अधिके दूध दे के घूंचा गरगरा दिहलसि। भगवानके बड़ा अचरज भइल। ऊ नारद जी से चिहा के पूछलन— भाई तूं केवन जादू कइलऽ हा कि बिना खरी खुदी के गाइ बिना केवनों परेशानी के रोजे से अधिका दुध दिहलसि हवे।

भगवान के बाति सुनि के नारद जी हंसलन, आ कहलन कि महाराज रउरा गोरू चरवाही कइले नू हवीं—रउरा के का बतावे के बा।

भगवान कहलन कि बात तूं ठीक कहत बाड़। गोरूवे का चरवाही कइला से पंच हमके गोपाल कहे लागल। बाकिर अ.जु जे गाइ अचक्के में टांगि उठा दिहलसि हवे ओकरा आगा त हमार केवनों उपाइये काम ना करति रहल हवे। बतावऽ नारद जी, तूं खाची में ले आके का दे दिहल हा कि गाइ मनथि गइल हवे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नारद जी कहलन कि एमें केवनों भारी बात नइखे। चलि के पहिले चाय पिअल जाउ त अउरी बात होखत रही। पानी ठंढा होखत बा।

हाली हाली चाय बनल आ दूनों जाना चाय पिअल लोग। बाकिर भगवान का त ई जाने खातिर हुटहुटी लागल रहे कि हाली हम जानीं कि केवना वॅवत से गाइ के मनसाइ लिहल गइल हवे। ऊ पूछलन कि अच्छा त अब नारद जी ऊ नुस्खा हमके हाली बता द कि तूं केवन उपाइ कइलऽ हा कि गाइ चट देने पेन्हाइ गइलि हवे।

नारद जी कहलन कि ई केवनों भारी काम नइखे महाराज। ई त फजीर के बेरा रहल हवे। उपाइ त ऊ बाटे कि दुपहरिया 'तिजहरिया' राति बिराति 'जूना' कुजूना जब चाहीं गाइके लगा सकेलीं। ऊ सांस ना ले सकेले।

बस, बस हम अइसने नू उपाइ चाहत रहलीं हवीं नारद जी। जब से हमरी इहां चाय के बेमारी आ गइल बा केहू का आ गइला पर जूना कुजूना दूध बिना बड़ा परेशानी हो जाति बा। हमार ई गाइ त बड़ा लगमान हवे बाकिर ना जाने काहें आजु टांग उठा दिहलसि हवे।

बात किऊछ ना रहल हवे महराज। गाइ राउर अँकोरहा हो गइल बा। ओकरो धरती के हवा लागि गइल बाटे। अब बिना अँकोर के ना लागी।

अँकोरहा? ई त एगो नये बात बतलवलऽ हा नारद जी। ई धरती पर अंकोर केवन चीजु पैदा हो गइल कि ओकर हवा सरग ले आवे लागल?—भगवान पूछलन।

महाराज आजु काल्हि धरती पर अँकोरे अइसन चीजु बा जेवना से केवनो काम चाहे जायज होखो चाहे नाजायज होखो, हो सकत बा।—नारद जी कहलन।

अच्छा त, जायजो काम अँकोर का बेगर रुकि सकत बा का नारद जी? —भगवान चिहा के पूछलन।

हां महाराज, एमे केवनों सक ना होखे के चाहीं। ई अँकोर के बेमारी अइसन फइलल बा कि घर से बहरा ले, कोट से कचहरी ले—चपरासी से हाकिम ले कुल्ही महकमा में छवले बा। जबतक ले अंकोर नइखे देखावल जात काम फाइल में परल परल सरत रहत बा। केहू पूछे वाला नइखे। जहां अंकोर देखा दिहीं झट देने काम हो जाई। नाजायजो काम होखी त ओमे बीस गो मीन मे ख निकासल जाई। बार बार छान पगहा तुराई लोग। बाकिर जइसहीं अँकोर देखा दिहल जाई कुल्ही टांग पीटल बंद हो जाई।—नारद जी कहलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अच्छा त ई अंकोर केवन चीजु होला नारद जी ? —भगवान पूछलन। अंकोर के केवनों खास रूप रेखा ना कहल जा सकेला महराज। ई रउरे नीयर निराकार आ साकार दूनों होला। एकर केवनों स्थान नइखे। ई रउरे नीअर सर्व व्यापी बाटे। जहाँ देखीं अँकोरे पर काम काज चलि रहल बा। सरकार अंकोर ही हो गइल बा। हाकिम अँकोरहा हो गइल बा। नेता अँकोरहा, वोटर अँकोरहा, जनता के एक एक आदमी अंकोरहा हो गइल बा केहू घासि भूसा अँकोर लेता। केहू दही दूध अंकोर लेता। केहू गोंइठा बा लवना अंकोर में सहेजत बा त केहू हरिअर हरिअर नोटि के थाहे अंकोर में बटोरत बा। महाराज अँकोर के त धरती पर अइसन प्रबल प्रभाव बाटे कि हम राउर ओंकार-ओंकार नाम ना ले के अब अंकोरे-अँकोरे जपत फिरत बानी। जेवन काम रउरा नाम लिहला से नइखे हो सकत ऊ हो अँकोर देहला से आसानी से हो जात बा। जमाना अइसन आ गइल बा महराज कि फाले फाले अंकोर के जरूरत पड़त बाटे। बिना अँकोर के केहू जो सकत नइखे।—नारदजी कहलन।

ई बात नइखे महराज। खाये पीये के कमी कतों नइखे। सभकर तनखाह मिलत बाटे। बाकिर ऊ थोक रकम खाये पाए में नइखे उड़ावल जाइ। ओ से मजिगर खाइल नइखे होत। अँकोर से इची मनफेरवट हो जात बा। एही से जेवन काम में अँकोर नइखे मिले के पंच ओइ काम का करे से नाक भौंहा सिकुरावत बाटे। तनखाह भलहीं कम होखे बाकिर अँकोर गोवाह मिले के चाहीं। एही के 'ऊपर झापर' कहल जाला। जब केहू लरिका कमा के बहरा से घरे आवत बा त बाप महतारो ओकर तनखाह पूछत बा। ओकरा बाद दोसरका सवाल इहे होत बा कि ऊपर झापर बा कि ना। अगर बा त कितना ले परि जाला। अगर नइखे त नोकरी केवनो काम के नइखे। ओके हाली छोड़े के सलाह ऊ लोग देत बा, आ केवनों रंगगर डाढ़ि पकड़े के उपाइ देत बा। अगर हजार दू हजार घरो से अँकोर लगावे के परि जा त पाँच ओकरा खातिर तेआर हो जात बा।—नारद जो कहलन।

अच्छा, ई त—जनता के हालि बा। सरकार कइसे अँकोरहो हो गइल बा नारदजी भगवान अचरज से पूछलन।

महराज ए में केवन अचरज के बाति बाटे ? जेइन बाँस के बाँस बंसुरिया, ओही बाँस के सूप दउरिया। जनते के बनावलि नू सरकार हवे। जब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनते अँकोरही हो गइल बा त ओकर सरकार काहें ना अँकोरही होई। वोट का दिन में अगर रउरा जा के देखितीं त पता चलित कि जनता आपन वोट देवे खातिर केवना केवना किसिम के अँकोर चाहत बा। नेता लोग अँकोर देखा देखा के अपना अपना ओरि केतरे भिरावत बा। खैर आजुये काल्हि चलि के देखीं नूं। आजु काल्हि सरकार में दल बदलू बेरामी बड़ा जोर से खोरहा रोग का नीअर फइलल बा। वे पेनी के नेता लोग कबों एह पाटी में कबों ओह पाटी में जा के आपन गोटी बइठावत बाड़न। सरकार डगमगाइ गइल बा एह अँकोरहा लोगन से। अगर दू चारि जाना भरकलन त सरकार टूटि जाई आ फेनु से नया चुनाव लड़े परी। हजारन रुपया के वारा न्यारा होखे के बा। आजु काल्हि के चुनाव केवनों खेलवाड़ थोरे बा। एही से हर पाटी के लोग हाथ में अँकोर ले के बराबर अपना पछलगुआ लोगन के देखावत रहत बाड़न कि वतों भीड़ि खरके जनि पावो।—नारद जी कहलन।

बाकिर एगो बाति हमरा नइखे बुझात। जे के भरि पेट खाये के एही तरे मिलि जात बा ओके ऊपर से अँकोर दिहला पर अपच नइखे करत ?— भगवान पूछलन।

का बाति रउरो बतिआवत बानी महराज। अँकोर कतों बदहजमी कइ सकेला ? ऊ त अउरी पाचक के काम करेला।—नारद जी ठठा के हँसलन आ कहलन। अँकोर त ऊ टानिक हवे कि केवनों महकमा में चौंहपि जाई। बाबू हाथ गोड़ पसारि देले बाड़न। बार बार आपन काम करावे खातिर रउरा निहोरी करत बानी बाकिर ऊ बहिर बनल बाड़न। कान पर इचिको जूं नइखे रेंगत। बाकिर जहां हाथ थइली में डललीं आ हरियर हरियर लोटि के उहां अँकोर देखवलीं कि बाबू के मन हरियरा जाई। ना जाने कहाँ से उनका में काम करे के ताकत आ जाई। आ ऊ चिटुकी बजाइ के राउर काम कइ दीहन।

नारद जी के बाति सुनि के भगवान का मन में आइल कि चलि के इची धरती के रंग रमूज देखल जाउ। ऊ घंटी बजवलन। चपरासी बहरासे आइल। भगवान हुकुम दिहलन कि गरुड़ जी से कहि द कि धरती पर चले के बा ऊ जल्दी तैयार हो जासु।

चपरासी घवरल गइल आ फेनु जल्दीये लौटि के आके कहलसि कि महराज गरुड़ महराज त हड़ताल कइले बाड़न। उनकर कहाव बा कि

(बांकी ३० वां पन्ना के नीचे)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उगिहें कँवलवा के फूल

नेहिया के जोती आस मोतिया गिनत चलु
धरु-धरु-धरु मन धीर।
जहिया कि देहिया में नेहिया सरसिहें
कि जगिहें फकिरवा में पीर।
कवना क मन जे में दरद न आइल
कवना क तन जे में पीर?
कवना क ओंठवन गीतिया न आइल
कवना क नयन न नीर?
जनम-जनम सुख सगवा ना देहीं, नाहीं—
फूटिहें सदईं तकदीर।
जनम-जनम केहू हरिहें न जीतिहें
न खिंचिहें दुरोपदी के चीर।
जवना परतिया में दुबिया न जमली
कि उड़ली असढ़वो में धूल।
जुगवा बनाई तहीं लहरत तालावा
कि उगिहें कँवलवा के फूल।

आनन्द कुमार 'सन्धिदूत' (गहमर, गाजीपुर)

(३० वाँ पन्ना के शेषांश)

दाना न घासि दूनों जूनि खरहरा। अब हमसे अधिका बेगारो ना हो सकेला। हम टाइम से काम करबि, टाइम से घरे जाइबि। ई कवन नोकरी हवे कि जबे मन करे घोड़ा जोतलहीं रहऽ।

चपरासी के बाति सुनि के नारद जी कहलों कि देखलीं नू महराज! गरुड़जी अब अँकोर का फेर में बानी। रउरा उनके कहि देईं कि अब उनके टी० ए० डी० ए० दूनों मिलल करी, समय समय से ओवरटाइमों मिलल करी। देखीं अँकोर देखते ऊ के तरे छउकत आवेलन।

अच्छा त एहू जा अंकोर के प्रभाव आ गइल बा? —भगवान चिहा के कहलन। आ गरुड़ जी का तनखाह मंहगाई भता का आगा एगो अंकोरो के रकम बढ़ा दिहलन।

—[चित बड़ागाँव, बलिया]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चार गो मुक्तक

एक

साँस में सवाद जो मिले, त जीए के हूब होला।
ऊबड़ खाबड़ जिनिगी में रस भी खूब होला।
बाकिर फूल के बिछवना पर मन जों न। महके—
त बढ़नी मारी जियला के, बड़ा ऊब होला।

दू

तूँ अब तूँ मत रह, हमहूँ हम ना रहेब।
फटला में कटला के दुखवा हम ना सहेब।
दहकत ई जिनिगी सइंठाइए के रह गइल
त मुँह फेरऽ हमरा से, हम केकरा में का कहेब?

तीन

जिनिगी में जे जीतेला, से खोवेला।
हारेला, ऊ कपार धके रोवेला।
जीतनीं, त थहरा के बइठीं मत—
पावेला, जे हारो के हिम्मत से धोवेला।

चार

ई फूल हमार ह, महकता, महके द।
प्यार में भींजल पँखुड़ियन के बहके द।
पराग पर राग जब लुटा दिहनी—
त घिघियाएब हम, एकरा के बहके द।

—हिमांशु रंजन

[शंकर भवन, दहियावाँ (छपरा)]

[पृष्ठ २४ के शेष]

सली— 'बात त लमहर बा बाकी परेम का अरजूई पर पक्षा ने ओकर का वजन लागी ?...''

बादशाह फेर किरिया खाए लगलन त लाल कुँवर सकपकात जहर उगिल देली —''हम चाहत रहलीह कि शाही-सिक्का पर हमर छपल तस्वीर राउर शाहजादा लोग फोड़ल आँख से देखे के कोरसिस करित ...।''

कोठा के कबूतर फड़फड़ा के उड़ गएल...बाकी बिसमातल राजा के बुध सोचे के सहूर कहाँ? फरमान पर हुँकारी के मोहर लगा देलन।...आ बिहान भइला आन्हर शाहजादन के हाथ में लालकुँवर के तस्वीर ढारल शाही-सिक्का लोग के आँख में कुटकुटात रहे...। [मिर्जापुर, बसन्त (सारन)]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

कबाला

धीरेन्द्र प्रसाद सिन्हा 'धवल'

आजु के जमाना में भाई-भाई के बीच निबहला आ बेटी के बिअहला में कवन अधिका कठिन बा, ई कहलो कवनो कम कठिन काम नइखे। दूनो समस्या आपन सानी नइखे राखति। ओनइस बीस कवनो नइखे लउकति।

देखे में त ईहे आवता कि जबले बाप में किछु दम दिलासा आ बल-बउसाहु रहता तबले गिरहस्ती के गाड़ी कवनों तरकीब से घींच-घांच के टकदुम-टकदुम चलत रहतीया। बाकिर बाप के आँखि मूनते भाई-भाई में भिड़ंतहोखे लागता। बाप के चिता अबहीं सेराहूँ नइखे पावत कि बेटन का बीच गर्मा-गर्मी छिड़े लागता।

अगर बाप के तकदीर बाउर बा आ बुढ़ापा लमहर, तब त उनका अपना जियत जिनगिये में बहुत कुल्हि नीमन-जबून देखे के पड़ता। जइसे धृतराष्ट्र के अपना जिनगिये में अपना संखा-सन्तान के सरबनास सनमुख देखे के परल ओइसहीं उनको अपना करेजा पर पखान ध के आपन बसल बगइचा के उजरत देखे के पड़ता बेबस, असहाय। मँगला से मटअवो त नइखे मिलत! झगर-झगरा में कबो-काल ऊहो सउना जालन। पांकी में ढेला बिगला पर एकाध छींटा नियरा पास के आदमी पर भी परिये जाला।

बेटन का बीच बाप बस ऊहे काम करेला जवन सुमिरिनी का बीचे सुता जहाँ सूत सड़ल आ टूटल कि एगो दाना भीर घाट आ दोसरका तीर घाट।

बेटी के बिआह का बारे में त किछु बोलल बेकार बा! तिलक-दहेज के मसला आपन बिकराल मुँह बवले सभका सामने वाल ठोंकि के ठाढ़ बा। हालत अइसन बा कि बेटा होखे त बधाव बाजे आ बेटी के बेरि ओठ पर फेफरी परे। महाजनी अइली त सूदि दर सूदि आपन करजवा वसूलिये के अइहें। बाप के ना त ढींढ़ में भूखि ना ढेंढ़र में नीन।

भला एमें बेटी बेचारी के का कसूर? ओकर बस चलित त ऊ बेटे बनि के आइत, मा नहिंये आइत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाज से कवनो कुरीत आइसहीं कठिनाई से निकसेले जइसे पुरान पोखर के अमकछ हरियर पानी उड़ाइ करावे के पड़ेला। ई बउसाह सभका में ना होखे। ई काम जेकरा बूते हो पावेला ओकर नाँव एह संवसार में भगवान लेखा जपल जाला।

तिलक दहेज का खिलाफ बहुते मोरचाबन्दी भइल। कायदा-कानून भी कम ना बनल। बाकिर हाथे किछुओ ना लागल। ई कुरीत अबहियो अखाड़ा में ताल ठोक रहल बा, जोड़-जुगुत के जोवे नइखे मिलत।

जेकरा बिआह खातिर दू-चार गो बेटी बाड़ीसन ओकर बेड़ा बूड़ले बूझीं। एह जुग में, जबकि बाल-बच्चन खातिर दू सितुहा दूधो मुहाल बा, बेटी खातिर गहना गुरिया गढ़ावल आ बरात के एक जून जेंवावल भी आसमान के तारे तूड़ल बा।

अइसने कठिन समय में हमरा पड़ोस में एगो बिआह नधाइल। उमानाथ के ई चउथी धिया रहली। तीन बेटी के बिआह में त उनका तिरलोक सूझि गइल रहे। साइत उनका खातिर बिधाता एगो चउथो लोक के सिरजन कइले रहलन।

उमानाथ के बाबू जी काफी लछिमी उपरजले रहलीं। लेकिन उनका आँखि मूनते ओ लछिमी पर सनीचर सवार हो गइलन। ओकरा के कुबेर के कोठिला बूझि के उनकर सपूत लोग अपना बउसाव भर हाथ साफ करे लागल। पहिले नगद पर सामत आइल। ओकरा में कवनो गूलर के फूल थोड़े पड़ल रहे? नगद रुपइया सफाचट्ट होते जमीन-जाथा बिकाए सुरू हो गइल।

माझिल भाई उमानाथ सुरुए से परदेसे रहिके बँदई करत रहलन। उनकर बड़ा भाई शिवनाथ आ छोट भाई जगरनाथ मिलि-जुलि के गिरहस्थी सँभारसु। दूनो भाई नोकरी-चाकरी करे खातिर कुछ काल तक परदेस बहर सेवछे रहलन, बाकिर सेहत साथ ना देलस आ आखिरस घर-बइठले दिन काटे लगलन। बेकार बइठल नीक ना लागे त सराबो-कबाब के लत लागि गइल। ठीके कहल जाला कि बेकार आदिमी के मन भूत-पिचास के अखाड़ा होला।

उमानाथ कइसहूँ बँदई से खाये-खरचे भर अरज लेत रहलन। घर, के घर-जदद द ववर धेआन देबे के सँवसना रहे। दूनो भाइन्ह पर भरोसा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी भरपूर रहे। उनकर आपन समय मरोजन के सेवे-सुसुरसा में काटे आ एही में उनका आनन्द मिले।

भारतीय परिवारन में अबहियों अनुसासन के किछु अवसेस रहि गइल बा। लेहाज-मरअत के मारे उमानाथ अपना जेठ भाई का सोझा कबो जबान न खोलस, आ ना मुँह खोल के घर से किछु मँगवे करसु। शिवनाथ अपना ईमान धरम से जवने किछु दे देस ओही पर उनका सन्तोष रहे।

लेकिन शिवनाथ अपना ईमान पर अधिका दिन कायम ना रहि सकलन। धन के चकाचौंध उनका आँखि के चौंधिया देलस। जइसे-जइसे धन-जयदाद घटत गइल, उनकर लोभ बढ़त गइल, आ ईमान बिगड़त गइल। कुटुम के करता-धरता ऊहे रहबे कइलन। अदिमी-जन सभ उनुके मुट्ठी में उनका मरजी के बिना एगो खर ना खरके, आ ना पतइये डोले। ऊ एह मोका के नजायज फायदा उठावे लगलन। उनकर गीध के आँखि उमानाथ आ जगरनाथ के बखरा पर रहे लागल। अभाव के पेट से दुराव के जनम भइल।

कबो कबो तकदीर भी बुराइये के साथ देत देखल जाले। जगरनाथ के जाँगर त बेकारी के घुन चाटिये गइल रहे। तवना पर सराब कबाब बिना छान्ह के मकान पर हथिया के झपसी लेखा काम कइलस। चलत-चलत एक दिन भद्द से भहरा गइलन। अपना पाछा अपना बेवा के करम कूटे खातिर छोड़ि गइलन।

शिवनाथ के आखिरस ऊ मोका मिलिये गइल जवना के ताक में ऊ अतना दिन से लागल रहलन। बिधवा भवह पर उनकर जादू जलदिये असर कइ गइल। ऊ गते से ओकर हिस्सा दाबि के बइठ गइलन। अब उमानाथ के बखरा उनकरा आँखि में काँट लेखा करके लागल। लाभ भइल त लोभ जागल। एक हाली आदिमी के माँस सवाद लेला से बाघ आदम-खोर हो जाला।

एही बीच उमानाथ के चवथी बेटी के बिआह नधा गइल। तिलक-दहेज, बराती-सराती कुल्हि मिला के तीन-चारि हजार के हिसाब किताब रहे। बैदई के बूता पर घर खरची त काँखि-कूँखि के निकल जात रहे लेकिन घर खरची चलावल एक चीझ ह, आ बेटी के बिआह कइल दोसर चीझ। जमीन धसकावल जरूरी रहे। उमानाथ आपन बखरा बेचे में शिवनाथ से मदद मँगलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिवनाथ समय चूकि के पछिताये वाला आदिमी ना रहसु । ऊ भरपूर दिलासा देके उमानाथ के बिदा कइलन । ओ घरी उनका आँखि में एगो अजनबी ढंग के चमक रहे, ऊ चमक जवन एगो शिकारी के आँखि में शिकार फँसत देखला पर पैदा होले ।

उमानाथ के अपना जेठ भाई पर अबहियो भरपूर भरोसा रहे । ऊ इतमिनान के साँस लेके लवटलन । पेट काटि के किछु रुपया जमा कइले रहलन । किछु एने ओने से जुटा-पटा के कइसहूँ तिलक चढ़ा अइलन । बिआह के दिन नगिचे रहे ।

बिआह के ठीक तीन दिन पहिले उमानाथ के हाथ में शिवनाथ के लिखल चिट्ठी मिलल । उनका के बोलावल गइल रहे । उमानाथ त फफीहरा भइले रहलन । चिट्ठी का मिलल, पपिहरा के कंठ में सवाती के बूनि सरसि गइल । चउका पर खाये बइठल रहलन । घड़ी पर निगाह गइल । गाड़ी क टेम हो गइल रहे । मेहरारू हाथ में परोसल छीपा लेले ठाढ़ रहली । मगर गाड़ी छूटे के डर रहे । ऊ दुइओ कवर ना खा सकलन ।

दू दिन के बाद, माने बिआह के दिन पहिले उमानाथ घर से लवटलन । उनका हाथ में डेढ़ हजार रुपइया के पुलिन्दा रहे । अधिका सोच-विचार करे के समय ना रहे । कइसहूँ इजत निबाहे के रहे । किछु एने-ओने से उधार-पइंचा, आ करज-गुलाम लेके पुरोहन में हाथ लगा दिहलन । मेहरारू आ पतोह के देह पर के गहना-गुरिया वेचो खातिर उतरि गइल । किछु त माटी के मोले वेचहूँ के पड़ल ।

बारात आइल । सभ लोग ओकरा खातिरदारी में जुटि गइलन । बाजा गाजा, हाथी-घोड़ा, नाच-रवाइस सभ-किछु भरपूर रहे । बरतिअन के फ़रमाइस के मारे नाक में दम हो गइल रहे ।

पुरोहित जी बर-कनिया के गठबन्धन करावे में लागल रहलन । एगो नजरी दानो-दछिना पर रहे । उमिरगर मेहरारू गोत-मानर, नेग-दस्तूर आ रसम-रिवाज में लपटाइल रहली सन । नवही कुल्हि बर-सहबाला से हँसी-मजाक करे आ ओकनी के छकावे के फिराक में रहलीसन । अड़ोस-पड़ोस के लोग बराती-सराती के खियावे-पिआवे में लागल रहे । जेकरा कवनो काम ना रहे ऊहो अन्हेरिये एने से ओने तूमा फेरी क के देखावे के चाहत रहे कि हम बहुत काम करत बानी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठीके कहल जाला कि बुरिबक के भइँसि बिआइल आ सउँसे गाँव घूँघा ले के दउरल। सभ आपन-आपन दाव देखत रहे। कवनो कुल्हि नेग खातिर अइठान-बइठान पड़ल रहलीसन। वर रेडियो खातिर मुँह फुलवलि रहलन, खइबे ना करसु। बेटिहा के पुरोहित जी बेटहा के पुरोहित जी से पक्का एक घंटा तक शास्त्रार्थ कइके खीसी भूत हो गइल रहलन। उनकरा सिरमुख से उचरल सलोक भी करकस लागत रहे। समधी साहेब द्वारपूजा आ आज्ञा के रकम में कमी भइला खातिर कोहनाइल रहलन। ऊ सीधा-मुँहें बाते ना करस। उमानाथ के केहू वरहरिया ना रह, जे रहे से लुरहीं वाला। आखिर ऊ आपन पाग उतारि के समधी के गोड़ प' धइ दिहलन आ हाथ जोड़ के उनका सोझा ठाढ़ हो गइलन, "अब खाली देहिये बाचि गइल बा। कवनो गँहकी ठीक क इ दीं त हम एकरो के बेचि दीं।"

खैर, कवनो तरीका से ले दे के बिआह पार-घाट लागल। सभ लोग कहे कि उमानाथ एह बेटी के बिआह में उजरलन ना, बलुक बसि गइलन। कम किफायते में कुल्हि काम हो गइल।

लेकिन बेटी के बिदाई कइला के बाद उमानाथ अपना एकान्त आ अन्हारा कोठरी में गुमसुम बइसल असमान कवर मुँह कइके भगवान से का कहत रहलन, ई केहू ना जानल। पता ना उनकरा बेटी के बियोग से अधिका सदमा पहुंचल रहे, कि कवनो आउर बात से ई देखे आ सोचे के केहू के फुरसत ना रहे—ओकरो ना जे बिआह में खूब छकड़ल आ अँड़चि-अँड़चि के पर मुंडे फरहार कइल।

बहुत दिन के बाद बतावे वाला बतावल कि उनका के ओह कठिन समय में पेच में डालि के शिवनाथ उनकर चार हजार रुपइया के जयदाद महज डेढ़ हजार रुपइया में अपना बेटा का नावें कबाला करा लेले रहलन।

[फ्लैट नं० १४, लालबहादुर शास्त्री नगर, पटना]

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

अँखिया बिसुरल जाय

जमकल बदरा चीर के
गिरल बिजुरिया पीर के
छतिया छीलल जाय हो,
अँखिया बिसुरल जाय !

(१)

धरती के छितराइल देहिया,
लहकल जइसे लहके नेहिया,
भीतर भीतर सोन चिरइया
टप—टप मोती खाय हो,
अँखिया बिसुरल जाय !

(२)

रतिया नाचल काजर पोतल,
जइसे स्वयं करुण रस नाचल,
संगवो नाचल भूखवा, जइसे
सउवत नाचल जाय हो,
अँखिया बिसुरल जाय !

(३)

ताल तलइया तकलस छोभे
आस सोक के भूठे गोभे,
मुनिया सोके साट करेजवा
इन्नर फटल बेबाय हो,
अँखिया बिसुरल जाय !

उमाकान्त वर्मा
[राजनारायण महाविद्यालय, हाजीपुर]

★

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी आ कुछ दोसर भाषा के तुलनात्मक कहाउति

डा० सत्यदेव ओझा

एके निअन कहाउति कई भाषा आ प्रान्त में देखे में आवेला, कबो कबो तनि फेरो बदल होला, कबो पूरा पूरी मिलि जाला। समान मानसिक परिस्थिति आ समान जीवन-दर्शन से कई भाषा में एक निअन कहाउति संभव बा, एह बात पर कई विद्वान लोग सहमत बा। एह से ई कहल संभव नइखे कि कवना भाषा में मौलिक रूप में कवनो कहाउति पहिले पहल कहाइल होई! एक, ईहो बात माने के परी कि कहाउति सब एक जगह से दूसरा जगह में भी खूब घूमेलीस, खास कर व्यापारी लोग, तीर्थयात्री लोग आ घुमक्कड़ लोग एह काम में जाने-अनजाने खूब मदद करेला। कबो कबो कई देश में एके निअन कहाउति सुने में आवेला। अगर कहाउति के एह यात्रा के अनुसंधान कइल जाउ त परस्पर के सांस्कृतिक आदान–प्रदान के पता लागि सकेला। अइसन कहाउति के ढेर मानी परिवर्तन से गुजरे पड़ेला अवर जवना प्रादेशिक भाषा में ऊ जगह पावेला ओह प्रादेशिक भाषा के पूरापूरी छाप ओकरा पर पड़ जाला, अपना रंग में रंगि के ओकरा के अपनावेला। हो सकेला जे एकरा में हजारो बरिस के समय लागि जाउ। एइजा हम भोजपुरी कहाउति का संगे मालवी, राजस्थानी आ गुजराती कहाउति के तुलनात्मक संग्रह दे रहल बानी। भोजपुरी कहाउति हमरा निजी संग्रह में बा। राजस्थानी कहाउति डा० कन्हैया लाल सहल का पुस्तक से, गुजराती कहाउति

'गुजराती कहावत संग्रह' (गिजूभाई अने तारा बेन १९४० ई०) आ मालवी कहाउति 'मालवी कहावतें भाग १' १९५० ई० (श्री रतन लाल महता) से लीहल गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी	मालवी
१ अपना गली में कुकुरो बाघ होला—	१ आपणो गरी में कुत्ता मीशेर ।
२ गइल मरद जे खाइ खटाई गइल नारि जे खाइ मिठाई ।	२ आदमी ने खटाई ओर औरत ने मिठाई बगाड़े ।
३ आम खइला से काम बा कि फेड़ गिनला से ?	३ आम खावा तो काम गठल्या गणवाती कई ।
४ एक लाख पूता सवा लाख नाती ओह रावन घर दिया नु बाती ।	४ एक लाख पूत सवा लख नाती रावण रे घर दीवको न बाती ।
५ जूठ खाला आदमी मीठ जानि के ।	५ एँठो खाय मीठा रे लारे ।
६ एक दिन पहुना दोसर दिन केहुना तीसर दिन ठेहुना ।	६ एक दन रो पामणो दूसरे दन रो पई. तीसरे दन रेवे तो बैरी मति गई ।
७ जइसन करो ओइसन भरी जइसन बोई ओइसन काटा ।	७ करेगा जो भरेगा ने बावेगा जो लूणेगा ।
८ लड़ि मुए बलवा, बइठल खाइ तुरंग ।	८ खोदा मरे ऊंदरो मोज मारे मोग ।
९ जिअत मांछी ना घोंटाइ ।	९ जीवती माखी नो नगल्याय ।
१० जतने गुर डाराई ओतने मीठ होई ।	१० जतनो गोर नाके वतरो मीठो वे ।
११ सात गिहिथिनि माठा पातर ।	११ जठ्ये मल्या तीन परजी वठे ही बात उलझी ।
१२ जेकर खाइं ओकर गाईं ।	१२ जेरी बटो ए वणी वण्डो गीत गावणो ।
१३ माइ मुई घर जोइ बिआनी तबो ना छूटे तीनि परानी ।	१३ डोकरी मरी ने दादो परण्यो फरे तीन रा तीन ।
१४ मंगनी का बैल के दांत ना देखल जाइ ।	१४ धरम री गाय रा कइ दाँत देखणा ।

भोजपुरी	राजस्थानी
१ निकलल ओठो चढ़ि गइल कोठो ।	१ निकली होठां चढ़ी कोठां ।
२ राजा के दान परजा के असनान ।	२ राजा को दान परजा को स्नान ।
३ मेहरारू के नहाइल, मरद के खाइल ।	३ लुगाई को न्हाणूं मरद को खाणूं ।
४ देह चोरी से परदेस भिक्छा ।	४ देस चोरी परदेस भीख ।
५ फूहर चले नव घर डोले ।	५ फूड़ चले नो घर हाले ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६ आजु मुअली सास काल्हु गिरल आँसु।	६ आज मरी सासू काल आया आंसू।
७ काठो के सवति ना भावसु।	७ सोत तो काचें चूनको भी बुरी।
८ जेकरा छाती बार ना सेकर एतबार ना।	८ छाती पर केश नही जके सूं बात नहीं करणी।
९ जइसन नोयति तइसन बरक्कति	९ नीत गैरु बरकत है।
१० एक धेअला गांठो चूरी पहिरों की माठी	१० एक टको मेरी गांठी मगद खाउं क माठी

भोजपुरी	गुजराती
१ अधजल गगरी छलकत जाइ।	१ अघूरो घड़ो छलकाय।
२ जे हाथ से हाथ।	२ हाथे से साथे।
३ दे दाल में पानी बहि चले चुहानी।	३ दे दाल मां पाणी।
४ सेर पर सवा सेर।	४ शेर ने माथे सवा शेर।
५ तुरंत दान महा कल्यान।	५ तरत दान महा पून।
६ ना करे के नव गो बहाना।	६ नहिं करवानां हजार बहाना।
७ राजा के दान परजा के असनान।	७ राजा दाने परजा स्नाने।
८ रोवत गइली मुअला के खबर। ले ले अइली	८ रोतो जाय ते मुवाना खबर लावे।
९ अबरे ओनचास बयारि।	९ पोचु जाणो सी दबावै।
१० अन्हरी गइआ राम रखवइया।	१० अंधे की गाय अल्ला रखवाल।
११ मँगनी के बैल के दांत ना देखे के।	११ धर्मनी गाय ना दाँत शा जावा।
१२ चमार का सरपला से डांगर ना मुए।	१२ बिलाड़ी ने कइये छोकु टूटतु न थी।

ऊपर के कहाउति के अध्ययन कइला से ई बात साफ हो जाई कि तनी मनी अन्तर रहला पर भी एह सभ के भावभूमि समान बा आ एकरा से जनमानस के चिंतन के एकरूपता आ कहाउति के स्थानान्तर के झलक मिलता। एही तरे अगर भिन्न-भिन्न प्रादेशिक भाषा के कहाउति के तुलनात्मक अध्ययन आ ओकर विश्लेषण कइल जाउ त भारतीय लोक सांस्कृति के सरूपता पर प्रकाश पड़ी, एह में कवनो संदेह नइखे।

★

[कोआपरेटिव कालेज, जमशेदपुर]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहाँ चललऽ !

राम वचन द्विवेदी 'अरविन्द'

[१]

साथ-साथ नवयुवक हृदय में १
हम दूनों आइल रहलीं
चललीं दूनों साथ-साथ हम
साथ-साथ सुनलीं कहलीं ।
नाम लिआइल साथ-साथ हीर२
साथ-साथ आदर पवलीं ।
माई—बानी के गुन—गरिमा
साथ—साथ दूनों गवलीं ।
हमरा अस करकस, तहरा अस—
मधु सुर संगति सब गाई ।
आज छ ड़िके साथ कहां तूं
चललऽ मनरंजन भाई !

[२]

याद परत बा गाँधी जी के
ऊ आँधी झकझोर महान ।
याद परत बा लात मूक सँग
लाठी बरछा गोली बान ।।
झुंड—झुंड झंडा के पीछे
तबहूँ लड़ता बूढ़ जवान ।
गली—गली गावत जातारन
गीत फिरंगिया भरि भरि तान ।।
गूंज रहल बा अबहूँ जेकर
ओज भरल ऊ गौरव गीत ।
के बा कहत मनोरंजन जी
भइलन हमनी हेत अतीत ?

[लोहिया नगर, पटना]

---

(१) 'विहार के नवयुवक हृदय', हिन्दी साहित्य कार्यालय, लहेरियासराय संवत् १९८५ वि० ।
(२) शाहाबाद गजेटियर, बिहार सरकार; १९६६ ।
(३) भोजपुरी साहित्य मंडल, बक्सर द्वारा एक साथ सम्मानित ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महगू

लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी

"हम चक्की चलाइबि, 'रामबाँस' कूटब, दिन भर पम्प चलाइबि बाकी हम मुर्गा त ना बनब।"

काहे मुरुगे बनावत बानी ? मोर आ कोइलरि काहे नइखीं बनावत ? जहँगू का मुँह से धारा प्रवाह भाखन शुरू भइल। एने नायब जेलर के पारा गरम होखे लागल।

आजु ले केवनों कँदी हमार हुकुम नइखे टरले आ तोहार ई हिम्मत की अंग्रेजी राज में हमार हुकुम ना मानS आ अउरी जवाब पर जवाब द ? ई बहराइच जेल ह। इहां बिगड़ल लोग के दिमाग ठींक हो जाला। जल्दी मुर्गा बनS ना त अब खैर नइखे।

"हम त एक जबान जानीला। परान जाइ बाकी बचन ना जाई। हम आदमी से मुर्गा कइसे बनी ? एइसन कबो भइल बा ? आदमी आदमी ह, चिरई चिरई ह।"

'ई बदमाश ह। अरे पक्का ! दू चारि गो लमरदारन कें बोलाउ आ तनी इनकर दिमाग ठीक कइ द स।"

हुकुम के देर रहे, दूइ लमरदार चट दे दुनों हाथ आ दुइगो दूनों गोड़ धइ लिहले आ चारि जना लपटि के तड़ातड़ मुँह पर थप्पड़ जमावे लगले। जब मुँह पर भूसी छूट गइल त एही बीच महंगू के दूनों पैर उठाके पटक दिहल गइल आ दूनों तरवा पर बेंत से मरम्मत होखे लागल। ना महंगू रोवसु ना आँखि से एको बून पानी गिरे।

"ले जा इनका के बड़की बेड़ो पहिना द तब दिमाग ठीक होई। आ जेलर साहब के यहाँ ५ बजे पेशी कर दS।

महँगू सुनले, कुछु ना सुनले, ऊ अपने उधेड़ बुन में रहले तब ले लोहार आइके बेड़ी पहिना के तनहाई दे दिहलस।

महंगू के देहि भी गजबे रहल हँ। तम्बई रंग, मोट मोट हाथ गोड़, चाकर देहि तनी चाकर मुंह आ एक हाथ के छाती ! दूनों जून दण्ड-बइठक से जाँघ के रान चढ़ल। कड़कत मारी बोली। मस्तानी चालि आ विद्रोह के धधकल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिया। एक छन चंन ना लेसु। हँसत बतियावत ए छोर से ओ छोर तक सबका से दण्ड परनाम कइ आवसु। छोटबड़ सभे उनसे प्रसन्न। उनुका सिपाई से सभे परिचित। महँगू के ई तनहाई आ बेड़ो कवनों परेशानी वाला ना रहे। तनहाई में से उनकर आलाप जब हमरा बैठक में आइल तब हमरा पता चलल कि आजु केवनों काण्ड हो गइल बा।

'परेड' लागल। साहब अइले। 'महँगू' आजु 'परेड' ना लगवले। ऊ विद्रोह कइ दिहले। अब त जेल के कर्मचारी लोगन के हालत अउरो डांवा-डोल हो गइल कि कहीं साहब का सामने भी महँगू के 'पारा' गरम ना होइ जाइ।

"सरकार! ए तनहाई में एगो बहुत बदमास बन भइल बा। ई अपने त काम करते नइखे अउरी कैदिन के भी भड़कावत बा। एकरा संगे रहला पर कैदी बिगड़ जइहें स। एही से एके तनहाई दे दीहल बा।"

साहब! तनी हमरो बात सुनले जाईं। हमरा के बिना बेजाईं के मारल गइल ह आ बेड़ी पहिनाइ के तनहाई दिहल बा। रउवा चाहीं त हमरा के चक्की दे दीं आ जेहल में जे सबकाले अधिका काम करत होखे ओकरा के हमरा संगे लगा दी अगर हम तनिको नाकुर नुकुर करीं त हमरा के 'सेल्ह' दे दिहल जाय। बाकी हम काँच रोटी आ कम रोटी ना लेईब। कालिह एक टीन तेल आ एक बोरा गेहूँ नायब साहब का घरे गइल।"

साहब महँगू के मुँह टुकुर-टुकुर तिकवे लागल "का। कहत बाड़ ? तेल नइखे दाल में पड़त आ राशन कम मिलत बा!!!"

"हँ सरकार! एतने कहला खातिर हमके मारि के बेड़ी डालि के तनहाई दिहल बा।

हम एहसन बात नइखीं सुने चाहत!

आ साहब चट दे भण्डार का ओर मुँड़ि गइले।

आपन जूता दुआरि पर काढ़ि के भीतर गइले आ रोटी का 'थाह' में से चारि-पाँच गो खोराक तवलवले। एक केवनों में रोटी केवनो में आधा आ केवनों डेढ़ रोटी कम हो गइल।

अब त साहब के दिमाग खराब हो गइल।

"तनी रोटी के एने ओने कइके देखाव। साहब कड़क के रसोइयादार से बोलले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोटी के हाथ में लिहले। आ लिते रोटी के टुकड़ा-टुकड़ा होइके एने ओने छितरा गइल। साहब रोटी फेंकि के सीधे आफिस में आ गइल।

तनहाई वाला कैदी के अवहियें बाहर निकाले आ बेड़ी काटे के हुकुम देइ के भण्डारी के पेशी पर बुलवलस।

"रोटी कम काहें तवलल ह आ कच्चो काहें बा ?

"सरकार ! गरम-गरम तउलला पर जेतना रहेला ऊ ठण्डा भइला पर कम हो जाला। सरकार हमार दोस नइखे।"

"चुप रहो ! पनदरह दिन की सजा बढ़ो आ भण्डारे से निकाल कर चक्की दी जाती है !"

रोटी कच्ची क्यों रही ? तावे वाले से साहब ने पूछा। "सरकार ! अब एइसन ना होई। आजु तावा के 'ताव' ना आइल ह। कोइला ठीक ना रहल ह।"

"कुछ ना...। तुम ...स्साले...! १५ दिन का दलेल। रामबाँस की कुटाई, अब भण्डारे में कभी भी हनीं।"

"नायब साहब ! अंग्रेज बहादुर के राज ह। कैदी भी आदमी ह। एह पेट काटल ठीक ना ह। राउर विभाग बदलल जात बा।"

अब महंगू के जेहों देखे उहे उनका ओर इसारा कइके बतावे कि इहे साहब से कहले रहल ह। कुछु दिनले कैदिन के रोटी नीक आ पूरा मिले लागल बाकी जेहल के अधिकारिन के आँखि चढ़ले रहे। उनकर खोंखि गाहे बेगाहे एक दूसरा कै दिन पर निकलत रहे। अब ऊ ई फेर में पड़लेह कि कइसे ई कैदी एहजा से बाहर चलि जाइत।

महँगू दिन भर लंगोटा कसले एहर से ओहर घूमत रहसु। अन्त हुनका से केहू के बोले के हिम्मत ना होखे। बाकी महँगू गान्धी जी के असली चेला रहले। ऊ आपन काम पूरा कइके जंग भाई के भी चक्की सिखवा देसु। जब जेलर साहब कवनों काम में महँगू के ना दबा पवले त परेशान हो गइले।

एही बीच बनारस जेल से कुछ कैदिन के माँगि आ गइल आ जेल के अधिकारी मूसरन ढोल बजावे लगले। महँगू, जंग भाई आ शर्मा जी आदि के नाम भेजि दीहल गइल आ सातवाँ दिन महँगू बनारस जेल के फाटक में किरिन फूटते हाजिर हो गइले। संगे-संगे इहों रिपोट आ गइल कि ई कैदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत बिगड़ा हउवन स। तनी पहिलहीं से होशियार रहला पर काम चलियाई।

महँगू के दल जब फाटक में दाखिल भइल त कैदिन के बैरक खुलत रहलन स। एने महँगू के 'नारा' के आवाज फाटक आ दीवाल के फाड़ि के कैदिन के कान में पड़त रहल।

आजु बुझाता जे सुराजिन के दल आइल बा। नइखऽ सुनत ई जोर-जोर से नारा। राम जीयावन नम्बरदार फेंकू पक्का से कहले।

चलऽ नीक बा, अब किछु दिन हमनी से केहू ना बोली। ऊ त उन्हनिये के सम्भारत लोग परेशान हो लाई।

"अब हम लन्दन जरूर भिजवायेंगे? 'विजई विश्व तिरंगा प्यारा' ऊधम सिंह अधम करि डाला डायर को लागि गई गोली रे" के तान अब जब महँगू छेड़न तब त। जेहल के अधिकारिन के दिमाग चकरा गइल।

\+ \+ \+ \+

आ ओहि दिन जब महँगू के देखे गइलीं त हमार करेजा दहलि गइल। महँगू के जेवन देहि चक्की राम बास आ पम्प के तनिको फिकिर ना करत रहलि ह उहे देह आजु टुटही खटिया पर आइल नीयर परल बा आ देहि के रग रगतर लउकत बा। एक एक गो नासि हरियर-हरियर फइलल बाड़ीस। देहि में खाली पंजर रहि गइल बा। हाड़-हाड़ हाड़!!! बाप के बुढ़ापा से कमर झुकि गइल बा आ महतारी के मोतिया बिन आ गइल बा। एगो भाई के मति किछु फिर गइल बा। रही रही आ दब सनकि जाईं, चिकरे लागी आ आकास-पताल के बाति कहे लागी ई पते ना चले। घर में चूहिया दंड करत रहे। हमरा तब अउरी अचरज भइल जब घर में कहीं एगो दाना ना रहे।

रउवा बाड़ा समय से अइलीं ह। अन्तिम घरी दरसन भइल अब हम का कहीं। इहे परिवार बा। ई घर बा आ जिनगी भर के जेहल खटल ई देहि अब रउवा सोझे बा। सोचले रहली कि सुराज लेईं त हमनी नीयर गरीब गुरुवन के दिन लवटी बाकी सोचान सोचान रहि गइल। हम त ना घर के भइली ना घाट के। जवानी जेहल में सात बरिस काटि के बिगाड़ चललीं। तरह-तरह के बेमारी घइ दबवलसि। दू बरिस पहिले बियाह कइके बड़ी एगो गलती कइली आ हमार घरवो हमार यदि देयाद अपना नांवें करा के ले वाड़न। ओघरी त कहलन कि हमनी का नांवें रही त कुर्की आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जुरमाना ना वसूल होई बाकी अब त सोझे अंगूठा देखावतारन स। जवले ताकत रहल ह तवले त डेरात रहले ह स अब हम चलऊ बानी, रउवा जानी राउर सुराज जाने।

हम का कहीं !!! कहीं महँगू के बाप चिघाड़ मारतन, कहीं उनकर महतारी त कहीं मेहरारू। जेवन महँगू लाइन उखाड़ के फेंक देले रहले, 'तार' का खम्भा पर चढ़ि के उनुके हाथ तोरि दीहले ऊहे देहि अब सोना से माटी हो गइल।

+ + + +

तीन बरिस तक महँगू के बाप खातिर प्रदेश आ केन्द्र के सरकार के लिखत रहि गइलीं बाकी पिनसिन ना मिलल। एक बेर चनरसेखर बाबू के जा चिट्ठी दिहलीं त ऊ चाहे अपना पास से चाहे सरकार से कुछु मदत दिहले। घींचि घाँचि के काम टरकते रहे बाकी उनुका बाप के पिनसिन के आशा ना पुअल आ जब हम अपना टरेनिङ्ग कइके छवाँ महीना अइलीं आ महँगू के बाप के पता लगावे गइलीं त पता चलल कि उ त एह संसार से उठि गइलन, आ पिनसिन के कागज पर अबहीं ले कानूनगो साहब के दसखत ना भइल। ऊ किछु चाहत रहले बाकी खुलि के ना कहले आ महँगू के बाबू के हाथ में कानी कोड़ी ना रहे। कागज धइले रहि गइल, बाप बेटा आसरे में चलि गइलन।

तब से फेरु हमार हिम्मत ना भइल कि हम पता ठेकाना लीं कि उनुका घर के का हालि बा काहें जे छूँछि पुछार हतिया बराबर।

त हे पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय जी ! रउवा चिट्ठी में जेतना बाति पूछले रहलीं ओकर ओर छोर त लमहर बा, अब हम गरमी से अउजा गइल बानी, फेरु कबो भेंट होई। ई घटना इयाद आइके मनों बिगाड़ देले बा। अब आजु त खाए के भी मन नइखे करत।

—नरही, बलिया (उ० प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विज्ञापन

स्वस्थ सन्तान, सुखी इन्सान।

स्वस्थ लड़िका घर में आनन्द बिखेरेलेस
अइसन तबे होई, जब हुनकर नं[illegible]र ढेर ना हो[illegible]
ओइसना हालत में ओहन लोग के, बहुत दुलार,
नीमन कपड़ा, निमन पढ़ाई आ शरीर के
मजबूत बनावे वाला पुष्ट भोजन मिली।
हर बच्चा अपना महतारी - बाप से
इहे उमीद करेला :
हर महतारी आ बाप के ई करतब ह कि
उन्हन के ई आस पूरा होखे।
आजुए नगिचा के परिवार नियोजन
केन्द्र में डाक्टर से सलाह लीं।

—राज्य परिवार नियोजन ब्यूरो द्वारा प्रकाशित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिट्ठी-पत्री

प्रियवर पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय सहाय जी,

सस्नेह नमस्कार !

आप द्वारा सम्पादित "भोजपुरी साहित्य का संक्षिप्त परिचय एवं भोजपुरी का प्रकाशित साहित्य" की एक प्रति मिली। इसे मैं ने आद्यन्त पढ़ा। इसके लिए भोजपुरी समाज आप का चिर ऋणी रहेगा। इस पुस्तिका की सामग्री एकत्र करने में तथा उस सामग्री के वर्गीकरण में आपने अत्यधिक परिश्रम किया है। कृपया इस पुस्तिका के प्रकाशन के लिए आप मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

सस्नेह,

उदय नारायण तिवारी

आदरणीय पांडेजी,

प्रणाम।

भगवान से प्रार्थना बा कि भोजपुरी के सौभाग्य से रउरा सानन्द शतायु बनल रहीं।

बिहार सरकार आदिवासी भाषा के साहित्यकारन के भी रुपया लुटावे लागल आ भोजपुरी के नावें चर्चा ना रहल, एकर जतना विरोध होखे के चाहत रहे ना भइल। हमनी का अपना ढंग आ समरथ से करतानी। रउरा राजधानी में बानी, समाज में राउर प्रतिष्ठा आ पहुंच बा, मुख्य मंत्री आदि कीहाँ बार-बार शिष्ट मंडल जात रहे के चाहीं, अखबारन में बार-बार पत्र आ समाचार आवत रहे के चाहीं। परिवार का अगुआ के नाते रउरा से हथजोरी बा कि जल्दी एने ध्यान दीं। का एहू साले साहित्य-अकादमी के राहु भोजपुरी चनरमा के लिलिए जाई ? तनी सावधान रहे के जरूरत बा। हमनी का पोस्टकार्ड अभियान चला रहल बानी। भोजपुरी क्षेत्र में सगरे आइसन आन्दोलन हो।

बिहार विश्व विद्यालय के भोजपुरी पाठ्य क्रम के का भइल ? एने 'अंजोर' ना देखली हां। शेष ठीके बा—

स्नेहाकांक्षी

बच्चन पाठक 'सलिल'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार सरकार से विनम्र निवेदन

बिहार में भोजपुरी बोलने वालों की संख्या २॥ (ढ़ाई) करोड़ के लगभग है। अभी भोजपुरी में १,५०० कवि और लेखक रचना कर रहे हैं। भोजपुरी में प्रतिवर्ष सैकड़ों पुस्तकें निकल रही हैं। बिहार विश्वविद्यालय में बी० ए० तक भोजपुरी की पढ़ाई हो रही है। भारत से बाहर मारिशस ट्रिनीडाड ऐसे देशों में भोजपुरी संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग में आ रही है। इस संदर्भ में बिहार सरकार से निवेदन है :—

(१) दूसरी भाषाओं की तरह भोजपुरी के कवियों और लेखकों को भी आर्थिक सहायता दी जाय।

(२) बिहार लोक सेवा आयोग में मैथिली की तरह भोजपुरी को भी स्थान मिले।

(३) भारत सरकार पर दबाव डालकर साहित्य अकादमी से भोजपुरी को मान्यता दिलाई जाय।

(४) मगध और मिथिला विश्वविद्यालय की तरह भोजपुर विश्व विद्यालय भी शीघ्र बनाया जाय।

बिहार के सभी विधायकों, नेताओं, पंचायत प्रमुखों और मुखिया बन्धुओं से निवेदन है कि इन माँगों के लिए बिहार सरकार पर नैतिक दबाव डालकर हमें सहयोग दें। जयहिन्द।

आपका
रामवचन तिवारी
अध्यक्ष
सरायकेला अनुमण्डल, भोजपुरी समाज

●

प्रिय महोदय,

आपका कृपा-पत्र यथासमय प्राप्त हुआ। इसके साथ-साथ "अँजोर" का जनवरी वाला अंक भी मिला है। इन्हें पढ़कर जो जानकारी मुझे मिली है वह अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। सबके लिये धन्यवाद।

अभी आप फिर स्वस्थ हुए हैं यह जानकर हर्ष हुआ है। इसीके अवसर पर मेरी बधाइयाँ स्वीकार करें। "अँजोर" का प्रकाशन भी पूर्ववत चल रहा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है ओर उसकी बारहवीं वर्षगांठ मनायी गयी है। बारह वर्ष से उसे निकालते-निकालते आपने जो कार्य किया है वह बहुत महत्वपूर्ण है। आशा है कि भोजपुरी वाले विशेषकर भोजपुरी साहित्य के सेवी आपके कार्य का सही अर्थों में मूल्यांकन करेंगे।

आपका,
चेर्निशोव
डा० चेर्निशोव
मास्को, यू० एस० एस० आर०
३-५-७२

★

मुख्य विषय :---दण्डी स्वामी सरस्वती जी के पाती पर आपन प्रतिक्रिया

मान्य संपादक महोदय,

'अँजोर' के ताजा अंक हाथे लागल। आपन लेख 'मंगनी के बासन' छपल देखि के लेखक का हैसियत से जतना खुशी होखे के चाहीं भइल। कृतज्ञता-ज्ञापन स्वीकार कइल जाव।

दण्डी बाबा के ई बात त जरूर नीमन लागल कि 'लेखन' खाँटी होखे के चाहीं। मगर, 'जिनुइन' होना भी ओकर एगो गुन ह। साहित्य-सेवा में अझुराइल रहीला—एहसे अनुभव बा कि 'एकहीं भाषा' के प्रयोग लेखन के उद्देश्य कबो-कबो पूरा ना कर पावे। काहेकि, लिखे में भाव के प्रधानता रहेला। बात कहे का साथे साथ लेखक के विचार होला कि एह क्रम में ऊ जेतना तरह के प्रक्रिया, मनःस्थिति आ जोड़-तोड़ से गुजर रहल बा, पाठक पर पूरी तरह व्यक्त हो सके। ओहसे भी, हिन्दी भाषा से भोजपुरी के फरका कहल जाव त अइसन कवन भाषा बा जवन अपने आप में पूर्ण होय? बंगला, उड़िया, मैथिली, पंजाबी, तामिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम—सब में उर्दू, हिन्दी, संस्कृत के आ आपसी शब्द भरल बा। अंग्रेजी अइसन विश्वव्यापी भाषा में 'लैटिन' के अनठेकान शब्द बाड़नस।

त, कवनो भाषा के शिकाइत एहमें नइखे कि ओकरा में दूसर भाषा के शब्द आ गइल—बलुक, एहसे ऊ भाषा अऊर उपयोगी होके दोसरो भाषा-भाषी के मदद आ आनंद दे सकेले। शिकाइत के बात तब होई जब दोसरा के विचार आ व्योहार के नकल कइल जाई, चोरी कइल जाई। भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई शब्दन के कमी जरूर नइखे—बाकी, अगर, लेखक कवनो से काबिज शब्द ओगाड़ कइ लेस त ओहू पर कवनो आपत्ति ना होखे के चाहीं। इहाँ अपना लेख के एगो जगह के जिकिर करतानी। शब्द-मोह के फेर में ही हम "लरिकवा बिछुवना पर हग देलस" लिखले रहीं। हमनी का एह वाक्य के प्रयोग कहीं भी मजे में करीला जा। (धेआन देल जाव कि 'हगना' शब्द बंगला में भी बा एहि में प्रयुक्त होला) लेकिन, संपादक जी ओकरा जगह पर 'गंदा कर देलस' छाप देलीं। देखि के हमरा खुशी भइल। अब त सोच के मन भिना जाता। कइसे एकर हम प्रयोग करतीं?

हमार मकसद ई बा कि भोजपुरी जाने बूझेवाला आदमी अंगरेजीओ जानेलन आ बोलेलन। त, जवन अंगरेजी के शब्द हमनीका बहुतायत से बोलतानी, ओकरा खातिर कवनो भोजपुरी के उचित शब्द भी नया लागी। आ, पाठक या श्रोता के वांछित प्रभाव से वंचित भी कर दीही। जतना भोजपुरी के आंचलिक उपन्यास छपल-बा—ओही शान से पुस्तकालय में सजावल आ शौक से पढ़ल जाता। हाल में, कहानी-साहित्य के अगुवा पत्रिका 'सारिका' में एगो कहानी आइल रहे—'बीच के लोग'। अगर, भोजपुरी के फरका समझल जाव त कहनी में हिन्दी भाषा के शब्द चौथाई से भी कम मिली। आ अंग्रेजी, उर्दू के शब्द त जीवन के हर साँस में समाइल बाड़न। लेखक का सोझा सवाल रहेला—अपना पात्र का भावना संगे न्याय करे के। ओकरा मौलिक आ व्यावहारिक बनल रहे में कवनों गड़बड़ी ना आवे के चाहीं। जब पात्र आ परिवेश मौलिक रूप में चित्रित करे के बात उठ जातीया—त, चाहे जइसे होखे लेखन-धरम शब्द के पचड़ा से फरके हो जाला। स्वामीजी एकरा के खिचड़ी पकावल कहतानी त हम पूछब कि अइसन खिचड़ी कहाँ नइखे पाकत? बलुक, एकरा बिना कामे आगामुँहें ना बढ़ी।

फिर भी, हम स्वामीजी के सनेह के कायल बानी—जवन उहाँ के भोजपुरी के प्रति सँजोगले बानी। प्रेमवश उहाँ का ई लक्ष्मण रेखा खींचल चाहतानी—ई अनुभव होता त मन भर जात बा। भगवान उहाँ के देहि-बांगर आ भोजपुरी खातिर ई नेह कायम राखसु—आनेवाली पीढ़ी उहाँ के उपकार से कबहीं उरिन ना होई। हमार व्यक्तिगत निवेदन बा कि भोजपुरी के व्याकरण लिखाव। बकायदा शब्द-भंडार बने आ शब्दन के उत्पत्ति के चर्चा लिखत बेरा एतना जरूर होखे कि हमनी के विचार के मौलिकता के सुरक्षा कइल करींजा। कवनो गैर भाषा के शब्द तूर-खानिके लिख भर देवे से ऊ भोजपुरी ना बन जइहें। जवन हमनी के चीज ना ह—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमनी के ना होई,का हरज बा कि ओकरा के ओइसही स्वीकार कइ लिआव? उर्दू में केतना अंगरेजी के शब्द मौलिक रूप में ही ले लीहल गइल बाड़न। अन्त में, स्वामी जी से छिमा मांगत समय निवेदन करब कि उहां के विशाल हृदय से हमरा छोट मुँह बड़ बात के धृष्टता बूझि के अपना व्यक्तित्व पर आक्षेप ना समझब आ भोजपुरी के सेवा में कवनो कोर-कसर न राखब। शब्द के लफड़ा में हमनीका पिछड़ीं रहि जाइल जाई। आ ओहू में हिंदी त खड़ी बोली भी ह, भोजपुरी भी ह।

भवदीय,
सहाय
ज० स० असीम (जे० सहाय)
क्वा० नं०—बी-२५/२००,
यू० सी० आइ० एल० कॉलोनी,
पो० जादूगोड़ा माइंस
जि०—सिंहभूम [बिहार]

मुख्य मंत्री जी से भेंट

कुछ मित्रन के चिट्ठी आइल कि मुख्यमन्त्री जी से मिलि के भोजपुरी खातिर कुछ करे के चाहीं। कई गो सुझाव भी आइल बा। हमनी का मुख्यमन्त्री जी का सोझा आपन मांग रखलि बानी जा। उहाँ का भी विचार कर रहल बानी। एने आर्थिक आ राजनीतिक कई गो समस्या खड़ा हो गइल बा एह से अपनेके ध्यान बँटल बा। बहुत जल्दी भोजपुरी क्षेत्र के लोग के एगो शिष्टमंडल अपने से भेंट करी आ अपना मांग के अपने सामने राखी। भोजपुरी का प्रति उहां के भाव सहानुभूतिपूर्ण बा।

मुख्यमन्त्री जी से एगो लोकभाषा गोष्ठी में भेंट भइल। उहां का हमरा से कहलीं कि भोजपुरी साहित्य के निर्माण करीं। स्कूल कालेज में पढ़ावे लायक किताब लिखल जाय। अबतक के प्रकाशित भोजपुरी साहित्य का बारे में उहां के जनावल जरूरी बा। किताब लिखल त जाई बाकी ओकर प्रकाशन आ खरीदगी के भार सरकार अपना ऊपर ले अइसन बिचार हम उनका सामने रखलीं। उहाँ का जल्दी में रहीं। ज्यादा बात-चीत ना हो सकल। फिर हमनी का एगो शिष्टमंडल उहां का पास ले जाके आपन मांग करबि जा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मँजीर

बिहार कोआपरेटिव बैंक लिमिटेड

स्थापित सन् १९१४ ई०

(एक अनुसूचित बैंक)

प्रधान कार्यालय

अशोक राजपथ, पटना—४

टेलीग्राम—एपेस्को बैंक

टेलीफोन—२८६३, २३३३३, २२२२२, २६११०२, २६०२८,

शाखाएँ :—

पटना में :—नया सचिवालय, मुसल्लहपुर हाट तथा न्यू मार्केट

जमशेदपुर में :—बिस्टुपुर तथा गोलमुरी

पूर्णिया जिले में :—जोगबनी। बरौनी के पास बिहट

	लाख रुपये
समादत्त पूंजी—	१४४.३३
आरक्षित एवं अन्य निधियां—	२०८.१४
जमा—	११०६.०८
उधार—	९३३.९४
कामकाजी पूंजी—	२४३६.४९

नियत जमा राशि पर व्याज की आकर्षक दरें :—

अवधि के अनुसार—२% से ७ १/४% तक
चालू खाता पर— १ १/४%
बचत जमा पर— ४%

बैंक की किसी भी शाखा से बैंक में मिलनेवाली प्रत्येक तरह की सुविधाएँ सुलभ हैं।

पी० एन० श्रीवास्तव, सचिव, जी० कृष्णन, प्रबंध निदेशक, मथुरा प्रसाद सिंह अध्यक्ष;

(जहाँ धन तेजी से बढ़ता है)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बारहे रुपया में नव किताब

(डाक खर्च अलग)

(भोजपुरी परिवार, पटना–३ से मँगाईं)

१. जिनगी के परछाँही (कहानी संग्रह) ले० श्रीमती रूपश्री–एक रुपया
२. पाँख सतरंगी (कविता संग्रह) ले० जगन्नाथ—दू रुपया
३. भोर हो गइल (,,) ले० पाण्डेय कपिल दू ,,
४. लहर लहर में सावन (,,) ले० डा० बसन्त कुमार–अढ़ाई ,,
५. पुरइन (,,) ले० शारदानंद प्रसाद दू ,,
६. चारो ओर अन्हरिया (,,) ले० डा० स्वर्ण किरण—एक ,,
७. सुर-पंछी (,,) ले० रामेश्वर प्रसाद सिन्हा–डेढ़ ,,
८. जनकवि भिखारी ठाकुर (,,) ले० महेश्वर प्रसाद—चार ,,
९. भोजपुरी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास और भोजपुरी के प्रकाशन ग्रन्थों की सूची—सं० पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय— एक रु०

घोषणा-पत्र

१. प्रकाशन-स्थान—पटना
२. प्रकाशन की नियत कालिका—त्रैमासिक
३. मुद्रक का नाम—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय
राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—सालिमपुर अहरा, पटना—३
४. प्रकाशक का नाम—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय
राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—अध्यक्ष, भोजपुरी परिवार, पटना— ३
५. संपादक—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—सालिमपुर अहरा, पटना—३
६. समाचार पत्र के मालिकों और कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक शेयर वालों का नाम और पता—
पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, सालिमपुर अहरा— पटना—३
७. मैं पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, इसके द्वारा घोषित करता हूँ कि ऊपर दिये गये ब्यौरे जहाँ तक मेरी जानकारी तथा विश्वास है, सही हैं।

(ह०) पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वतन्त्रता की

रजत जयंती

के इस आनन्दमय अवसर पर

हम आपके बच्चों के

सुन्दर स्वास्थ्य, सुन्दर जीवन

एवं आशामय भविष्य की

कामना करते हैं ।

अपने बच्चों के भविष्य की खातिर उनकी संख्या सीमित रखें ।

राज्य परिवार नियोजन ब्यूरो,
बिहार, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक-परिचय

अँजोरिया (द्विमासिक भोजपुरी पत्रिका) सम्पादक राममूर्ति पराग, चन्द्रकान्त। प्रका० अँजोरिया प्रकाशन, त्रिवेणी, हुगली (प० (बंगाल), पन्ना....६४, सालाना—५) एक प्रति के—१) आजीवन—१०५) रु०, छपाई सफाई सुन्दर।

कई बरिस से सुनत आवत रहलीहां कि 'अँजोरिया' नांव के भोजपुरी पत्रिका कलकत्ता से निकले जा रहल बा। पत्रिका के मई-जून '७२ के पहिला अंक हमरा सामने बा। पत्रिका का भोजपुरी क्षेत्र के मानल-जानल कलाकारन के सहयोग मिलल बा। चन्द्रकान्त जी स्वयं कवि हवे, एह से पत्रिका सजावे सँवारे में कवनो कसर नइख छोड़ले। कहानी, कविता, निबन्ध वगैरह सभे में चुनाव नीमन भइल बा। लेखक आ कवि लोग पुरनके नयके ह लोग बाकिर बड़ा पसन्न से आपन-आपन रचना सिरिजले बा लोग। भोजपुरी के स्तर एह पत्रिका से बढ़ी। पत्र निकसत रहे आ 'अँजोर' का अँजोरिया में अउर चमक पैदा करे भगवान से इहे बिनती बा। अइसन नीमन पत्रिका निकाले 'खातिर अँजोरिया' परिवार के बधाई!

*　　　*　　　*

पा० न० सि०

बिहार के लोक-वार्त्ता साहित्य के ग्रन्थसूची

संकलनकर्त्ता—श्री हरिश्चन्द्र बी० ए० श्रीमती गीता सेन गुप्ता। प्रकाशक-इण्डियन पब्लिकेशन्स, कलकत्ता—१) प्र० का० १९७१-पृ० सं० ९६ मूल्य २५ रु० रोआयल, सजिल्द, छपाई-सफाई सुन्दर।

करीब २५ बरिस से लोक साहित्य के अध्ययन पर विद्वानन के काफी ध्यान जा रहल बा। लोक गाथा, लोक नृत्य, लोक वार्ता के आ लोक संस्कृति पर देश, विदेश के विद्वान अनुसन्धान में लागल बाड़े। रूस के चेर्निशेव, आ अमेरिका के जॉन आर० लोक साहित्य पर काम कर रहल बा। लोक वार्त्ता साहित्य के अध्ययन एगो अन्तरराष्ट्रीय सहयोग, प्रयत्न के विषय हो गइल बा। एह से लोक वार्ता के विद्यार्थी का देश विदेश के लोक साहित्य के जानकारी होखेके चाही एह दृष्टिकोण से देखला पर श्री हरिश्चन्द्र जी के, ई संकलन अनेक दृष्टि से अद्‌भुत आ अत्यन्त महत्वपूर्ण बा। अइसन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्रन्थ सूची प्रत्येक देश के लोक साहित्यन में दिलचस्पी राखेवाला विद्वानन के बहुत काम के हई।

एह में बिहार के किताबन के लेखन आ रिपोर्ट आ मोनोग्राम बिहार पर लिखाइल कतने, लेखन आ रिपोर्ताज आ मोनोग्रामन के हिन्दी आ अंग्रेजी नाम के विस्तृत रूप से प्रस्तुत करेके ई पहिला प्रयास ह। १९६५ ई० तक के अंग्रेजी आ हिन्दी के किताबन आ लेखन के सूची बा। समूचा संकलन चार भाग में बाँटल बा (१) अँग्रेजी किताब (२) अँग्रेजी लेख (३) हिन्दी किताब आ (४) हिन्दी लेख। अनुवाद में हिन्दी आ अंग्रेजी के लेख मिलल जुलल बा। हरिश्चन्द्र जी भोजपुरी आ हिन्दी क्षेत्र के बहुत मेधावी आ परिश्रमी लेखक हवे। सरकारी नौकरी में रहि के अनुसन्धान, खोज ढूँढ़ के अइसन-अइसन चीज समाज के देले जा रहल बाड़े कि उनका अध्यवसाय, परिश्रम के कतने बड़ाई कइल जाय थोर हुई। संकलन के देखले पर श्रम के अन्दाज बुझाई। एह संकलन खातिर हरिश्चन्द्र जी सभी लोक भाषन का ओर से बधाई के पात्र बाड़े।

रामेश्वर धाम के यात्रा (भोजपुरी) ले० श्री सांवलिया बिहारी लाल बर्मा। प्र० समाज शिक्षा बोर्ड, बिहार, पटना प्र० का० १९६१ दाम ४४ न० पै० पन्ना ६४ छपाई साधारन।

ई किताब वर्मा जी निदेशक समाज शिक्षा बिहार, श्री नवल किशोर गौड़ का आग्रह पर लिखले। वर्मा जी का सर्वतोमुखी प्रतिभा से बिहार में के परिचित नइखे। इहां का रहीला सीतामढ़ी में बाकी हईं खास भोजपुर इलाका के। रामेसर नाथ धाम के यात्रा कइले हईं आ जे जे देखे के मिलल आ सुने के मिलल ओकर बड़ा सहज आ सुन्दर वर्णन कइले बानी। काँचीपुरी पक्षी तीर्थ, अरुणाचल, पान्डिचेरी, श्री रंग मदुरा रामेश्वर धाम आ दूसरा मद्रास के आउर दूसर देखे लायक जगह के बड़ा सुन्दर तसवीर अपने उतरले बानी किताब बड़ा रोचक बा। वर्मा जी अभी आउर भोजपुरी में लिखि के भोजपुरी के भंडार भरबि अइसन हमनी के उम्मीद बा। अइसन किताब लिखला खातिर बहुत बहुत धन्यवाद।

पुष्प वाटिका में राम (हिन्दी चरित काव्य) ले० श्री बच्चन पाण्डेय प्र० ग्रामीण प्रकाशन, बोक्सा, शाहाबाद बिहार प्र० का० १९७२, पन्ना ८५, दाम १ रुपया। छपाई, सफाई सुन्दर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

कवि एह किताब में राम के जनकपुर का फुलवारी वाला मधुर प्रसंग के वर्णन काव्य में कइले बाड़े। बिम्ब के जरिये सफल चित्रण भइल बा। राम काव्य पर अनेक पुस्तक लिखाइल बा। पाण्डेय जी पुष्पवाटिका प्रसंग में प्रेम के सुन्दर चित्र उतरले बाड़े। सभ मिला के पुस्तक पढ़े योग बा।

सचित्र आयुर्वेद (जनवरी १९७२ अंक) सं० श्रीकान्त शास्त्री एम० ए० संरक्षक प्राणाचार्य पं० दुर्गा प्रसाद शर्मा आयुर्वेदाचार्य, पं० वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन पटना १ पन्ना ५४४, दाम एक प्रति कै ५० पैसा। छपाई, सफाई, सुन्दर।

भारत के चिकित्सा पद्धति, बहुत प्राचीन काल से आपन विशेषता रखले बा। आयुर्वेद से संसार के सब देश के लोग चिकित्सा के विज्ञान पावल बा अपना देश काल मोताबिक अपना ढाँचा में ढारि के इस्तेमाल कइले।

वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के कीर्ति देश विदेश में फैलल बा। दवाई के अतना बड़ कारखाना, बहुत कम बा। सचित्र आयुर्वेद औषधि विज्ञान के एक उच्चकोटि के पत्रिका ह। पत्रिका के शैली अतना रोचक बा कि पढ़े में आनन्द आवेला। दवा दारू आ रोग के बारे में जतना विषय एह में दियाला ओकर उपयोग कइला से बड़ा लाभ होई। बड़े २ लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान के लेख एह पत्रिका के गौरव आ शोभा बढ़ावता। एक ओरि दवाई तैयार करके देश विदेश में जनता का भलाई खातिर दियाता आ दोसरा ओर सचित्र मासिक पत्रिका निकाल के एह विज्ञान के खूबी बतावल जाता। प्रसिद्ध सम्पादक श्रीकान्त शास्त्री जी एह पत्रिका के समाचार में कवनो कसरि ना राखस। प्राणाचार्य दुर्गा प्रसाद शर्मा जी आयुर्वेद जगत के एगो रतन हुईं। परोपकारी मृदुभाषी आ विद्वान शर्मा जी के देख रेख में एह पत्रिका में चार चांद लग जाता। हर आदमी का एह पत्रिका के पढ़े के चाहीं। श्रीकान्त शास्त्री जी हिन्दी जगत के लब्ध प्रतिष्ठत विद्वान हुईं। अइसन पत्रिका निकाले खातिर शर्मा जी आ शास्त्री जी बधाई के पात्र बानी।

वज्जिका साहित्य। तिरहुत कमिश्नरी की जनभाषा के एकमात्र साहित्य संस्कृत कला विषयक संकलन। (गीत कविता अंक) सं० रमण शाण्डिल्य प्र० वज्जिका संस्थान, जवाही प्र० काल १९७२. पन्ना २२. दाम १ रु० ५० पै० छपाई सफाई सुन्दर।

वज्जिका उत्तर बिहार के एक जनपद के लोक भाषा ह। एह संकलन में ओकर विस्तार क्षेत्र दीहल बा। लोक भाषा का ओर विद्वानन के रुचि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो रहल बा। उहाँ सभे वज्जिका भाषा साहित्य के उद्धार में लागल बानी। एने वज्जिका के कई पत्र पत्रिका आ कोश भी देखे के मिलल।

एह संकलन में खाली कविता बाड़ी सन - आधुनिक कविता, कविता, नवगीत वगैरह। कवितन में मौलिक विचार, भाव, शैली सुन्दर उतरल बा। कवितन का पढ़ला से बज्जिका जनपद के पुरान विचार आ साहित्य के कुछ पता नइखे लागत। वज्जिका के लोकगीतन के भी संकलन होखे के चाहीं। एह क्षेत्र में बड़े-बड़े विद्वान बाड़े। कवनो-कवनो कविता हृदय के छूवे वाली नया भाव, भाषा से भरपूर एह संग्रह खातिर शाण्डिल्य जी बधाई के पात्र बाड़े।

मनोरंजन स्मृतिग्रन्थ

पांडेय कपिल जी से पता चलल कि मनोरँजन बाबू के कुछ प्रशंसक आ प्रेमी इन का प्रयास से मनोरंजन स्मृति ग्रन्थ निकाले के तैयारी हो रहल बा। ग्रन्थ तीन भाग में होई, एक में कवितन के सँग्रह, दोसर में गद्य संग्रह आ तिसरका में चिट्ठी पत्री रही। मनोरंज, बाबू के भोजपुरी सेवा के उनकर स्मृति बना रखल जरूरी बा। स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति के सदस्य लोग के ई काम सराहे जोग बा। मनोरंजम बाबू के लिखल जे कुछ जेकरा पास होखे उ एह पता से जल्दी भेजे ई हमार निहोरा बा।

पाण्डेय कपिल, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना—१.

पाकिस्तान में सिन्धी भाषा

पर साल 'जय बंगला' के नारा बड़ा जोर से लागल रहे जेकर बुलन्दी सँउसे संसार देखल। 'जीये सिन्ध' के सुगबुगाहट भी पहिले से सुनात रहे बाकी एकर रंग झलकल हा अबकी जुलाई में। ढाका में बराइल मशाल करांची के अँजोर करी ई केहू ना कहत रहे। जनाब जुल्फिकार अली भुट्टो के घरऊ प्रान्त सिन्ध में सिन्धी राजभाषा के घोषणा होते मातर एने-आने से गइल बहुराइल लोग लागल हो-हल्ला करे। जवना 'सिन्धी' भाषा के केहू बाँदी लेंड़ी अस बूझत रहे ओकरा राजरानी के गादी झटके प भेंटा गइल ई भला 'उर्दू' दाँ लोग के सहाउ? पाकिस्तान के सदर साहब समझौता के जवन फारमूला निकसले बाड़े ओकरा में गैर सिन्धी लोग के १२ बरिस के समय दिआइल हा सिन्धी भाषा सीखे खातिर। एह बीचे ओह लोग के 'सिन्धी' ना बनला का चलते कवनो घाटा ना लागे दिआई। तबहूं कठहुजति करे वाला पैंतराबाजी से बाजि ना अइहें। बुझला बनावटी ढाँचा के भहराये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का डरे अब हीं 'पश्तो' आ 'बलूची' के आवाज नइखे उठत। 'पंजाबी' के त बाते कुछ अउर बा। 'उर्दू' के टोपी उतारि के ऊ आपन पगरी हालाहाली ना सरिआई। पर, पाँच हजार बरिस के पुरान संस्कृति के रक्षा खातिर सिन्धी लोग आपन मातृभाषा के कवच पहिर रहल बा। —विद्यार्थी

भोजपुरी भाषा के कुछ महत्वपूर्ण अगिला प्रकाशन

१—डा० कृष्णदेव उपाध्याय जी भोजपुरी भाषा साहित्य के इतिहास लिखलीं हा। उनका से मालूम भइल कि किताब ४०० पन्ना के प्रकाशित हो गइल अब कुछ साज सज्जा के काम हो रहल बा। ई काम बहुत महत्वपूर्ण भइल। अभी किताब देखे के ना मिलल। आगे कुछ ओकरा बारे में कहल जाई। उपाध्याय जी भोजपुरी के एगो बड़हन कमी के पूरा कइलीं।

२—श्री हरिश्चन्द्र बी० ए० मोतिहारी मे 'भोजपुरी साहित्य के पिछले अस्सी वर्ष' पर एक बड़ा हो शोधपूर्ण ग्रन्थ लिख रहल बानीं। हरिश्चन्द्र जी के लेख जे 'अँजोर' में पढ़ले होई आ उनकर हाल के कृति (Bibliography of folk lore in Bihar) 'लोक गाथा पुस्तक सूची' नामक किताब जे देखले होई ऊ उनका परिश्रम आ शोध प्रवृत्ति के अन्दाज लगा सकी। भोजपुरी के ई अदभुत ग्रन्थ होई।

३—दण्डी स्वामी विमला नन्द सरस्वतीजी भोजपुरी भाषा में 'बउध-लीला' नाँव के महाकाव्य लिखले बानीं। किताब कई सर्ग में बा। स्वामी जी के कलम के कमाल 'अँजोर' के पाठक जानताड़े। हम पाण्डुलिपि देखलीं। अपने के अध्ययन आ अनुभव के लाभ भोजपुरी साहित्य खातिर बेमिसाल होई। सचमुच ई किताब भोजपुरी भाषा के एगो गौरव-ग्रन्थ कहाई।

पा० न० स०

स्वाधीनता रजत जयन्ती समारोह

एह साल देश में स्वाधीनता रजत जयन्ती समारोह मनावल गइल। बिहार में धूमधाम से मनावे के तैयारी रहे बाकी अकाल के घरी देखि के हिसाब ढीला परि गइल। भोजपुरी परिवार का ओर से भी रजत जयन्ती समारोह मनावल गइल। स्वाधीनता संग्राम पर वक्ता लोग प्रकाश डालल। शहीदन का प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कइल गइल। पा० न० सिं०

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पच्चीस वर्षों में

बिहार के सर्वांगीण विकासात्मक कार्यों की प्रगति

बिहार सरकार ने आत्म-निर्भर एवं स्वयंचालित अर्थ-व्यवस्था की उपलब्धि के निमित्त विकास कार्यक्रमों पर अपनी तृतीय पंचवर्षीय एवं तीन वर्षीय योजनाओं पर ७८४.६७ करोड़ की राशि खर्च की है।

स्वतंत्रता के विगत २५ वर्षों में वार्षिक खाद्य उत्पादन की क्षमता ४१.७२ लाख टन बढ़ कर ८६ लाख टन हो गई है।

वृहत् एवं मध्यम सिंचाई योजनाओं के सफल कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप सिंचाई क्षमता ४१ लाख एकड़ हो गई है। जिसमें से ३१ लाख एकड़ की सिंचाई हो भी रही है।

पर्याप्त विद्युत उत्पादन की दिशा में किये गये अविराम प्रयत्नों के फलस्वरूप जून, १९७२ ई० तक ८५५८ गाँवों में बिजली की गई तथा ७५२६४ पम्पिंग सेटों को बिजली दी गयी।

समाज के दुर्बल वर्गों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के उन्नयन की दिशा में में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में इनकी शिक्षा तथा कल्याण योजनाओं पर अबतक १८.४० करोड़ रुपये की राशि खर्च हुई है।

पचीस वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में जो अभूतपूर्व प्रगति हुई है, उसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि १९५१ में प्राइमरी विद्यालयों की संख्या २३६९९ थी, जो अब बढ़ कर ४६५८२ हो गयी है। १९५१ ई० स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों की संख्या/१४.६५ लाख थी और वह बढ़ कर ५३.०६ लाख तक पहुँच गई है। इसी तरह माध्यमिक स्कूलों की संख्या जो १९५१ में ६४३ थी वह जून, १९७२ ई० तक बढ़ कर २,५८१ हो गई है और इन विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या १९५१ ई० में एक लाख थी और अब ५,४३००० हो गई है।

बिहार राज्य के सभी प्राइमरी विद्यालयों का प्रबंध सरकार ने अपने हाथ में लेकर शिक्षा के क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

निदेशक, जन सम्पर्क, बिहार द्वारा प्रसारित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक के बिचार

एह अंक से 'अँजोर' तेरहवां बरिस में जाई। अब तक बारह बरिस में 'अँजोर' भोजपुरी-भाषा-साहित्य के जे सेवा कइलस कि उ सबका आगा बा। बारह बरिस के समय एगो जुग कहाला। एक जुग तक 'अँजोर' भोजपुरी साहित्य के हर तरह से सेवा कइलसि। पत्रिका के स्तर हमनी का ऊँच राखे में कवनो जुगुति उठा के ना रखलीं।

बारह बरिस निकलला का बाद भी 'अँजोर' भोजपुरी भाई लोगन के अपना गोहार से सूतल नींद जगावे में पूरा कामियाबी हासिल ना कइलस। अपना भाषा आ संस्कृति से मोह एह जनपद में बुझाते नइखे। अपना जनपद, अपना बाल बच्चा आ अपना दसा पर केहू तनिक सोचे के तैयार नइखे। बगले में मैथिल भाई लोग अपना जनपद के, अपना भाषा के कहाँ से कहाँ ले गइल ई देखि के भी भोजपुरी भाई लोग का मन में हौसला नइखे साढ़े सात करोड़ भोजपुरी भाई लोग के ई कुम्भकरनी नींद कब टूटी बुझाते नइखे। अभी भोजपुरी खातिर ढेर काम करेके बा। अगर एह घरी भोजपुरी भाई लोग ना चेती त संकट का एह घरी में आपन सर्वनाश नजरि आवता। भोजपुरी के सवाल लेके सब केहू आन्दोलन करे आ अपना हक के माँग करे, सरकार से आ केन्द्रीय सरकार से। पहिले बहुत कुछ कहले सुनले बानी। का हम उमीद करीं कि भोजपुरी भाई लोग भोजपुरी का गोड़ में टाँगी मारल छोड़िके फूले फले में पुरहर मदति दीहें।

'अँजोर' के आर्थिक संकट बराबर बनल रहेले। अधिका से अधिका गांहक बनावे के निहोरा भी कारगर ना भइल। भोजपुरी किताबन के कीनि के पढ़े का ओर भी केहू के ध्यान नइखे जात।

पा० न० स०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोक सेवा आयोग में मैथिली

मैथिली के लोक सेवा आयोग में स्थान देके, बिहार सरकार लोक भाषा के आदर कइलसि बाकिर आयोग में राखे का पहिले तनी विचार कइ लेवे के चाहत रहल हा। मैथिली का आयोग में आ गइला से मैथिली परीक्षार्थी का जे सुविधा हो जाई अउरी लोक भाषा का उमेदवारन के उ सुविधा ना मिली।

बिहार के अउरी क्षेत्रीय भासन के जेह में भोजपुरी आ मगही प्रमुख स्थान मिले खातिर प्रबन्ध होखे के चाहीं। जइसन कि बिहार विश्वविद्यालय पर साल भोजपुरी के अपना पाठ्यक्रम में बी० ए० तक स्थान देलस ओइसही तुरत पटना, मगध, राँची आ भागलपुर विश्वविद्यालय भी व्यवस्था करे। एह में अब कोई हवाला करे के गुंजाइश ना रह गइल।

पां० न० स०

जमशेदपुर भोजपुरी परिषद के १७ वां वार्षिकोत्सव

एह साल जमशेदपुर के भोजपुरी साहित्य परिषद के १७ वां वार्षिकोत्सव १५-१६ अप्रिल के मनावल गइल। ओह में भोजपुरी के प्रसिद्ध कवि डा० राम विचार पांडेय जी के साहित्यिक सम्मान भी भइल। हर साल नियर एह अवसर पर दू दिन के समारोह मनावल गइल जवना में कवि सम्मेलन आ सांस्कृतिक कार्यक्रम सज धज से सम्पन्न भइल।

साहेबगंज डिग्री कालेज में कुँअर सिंह जयन्ती

२३ अप्रिल, ७२ के साहेबगंज डिग्री कालिज में बड़ा धूमधाम से कुंअर सिंह जयन्ती मनावल गइल। कुँअर सिंह जी के बहुते सुन्दर तैल चित्र के अनावरण, श्री महेन्द्र शास्त्री जी का हाथे भइल। उदघाटन कर्त्ता रहीं आरा राजेन्द्र कालेज के प्राचार्य श्री मुरलीधर श्रीवास्तव जी। ओह अवसर पर प्रमुख अतिथि का रूप में प्रो० रामेश्वर नाथ तिवारी जी के बड़ा सारगर्भित भाषण भइल। एगो कवि सम्मेलन हमरा अध्यक्षता में भइल। साहेबगंज, संथाल परगना जिला में रहि के भोजपुरीयन के प्रवास क्षेत्र है। समारोह के सफल बनावे में इहाँ के प्रोफेसर आ छात्र कुछ उठा ना रखले। एह सुयोग के समूचा श्रेय कालेज के प्राचार्य बिहार के नामी हिन्दी के साहित्यकार श्री शिवबालक राय जी के दियाई। उहाँ के भोजपुरी के भक्ति देखि के दंग रहि जाये के परल।

पा० न० स०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर्यटकों का आकर्षण केन्द्र

पाटलिपुत्र के प्राचीन राजनगर, नालन्दा के विश्व विख्यात विद्यालय तथा राजगृह की भग्न दीवारों के भग्नावशेष, ससराम स्थित शेरशाह का मकबरा, वैशाली, अरेराज और लौरिया नन्दनगढ़ के अशोक स्तम्भ, बोधगया, देवघर, पारसनाथ, और पावापुरी के प्राचीन मन्दिर और पटना सिटी के सिख गुरुद्वारा को अवश्य देखें।

राजगृह के गर्मजल के झरनों में स्नान करना तथा छोटानागपुर के जल प्रपात, मनोरम पहाड़ियाँ, झीलों और जंगलों के प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन करना न भूलें।

जमशेदपुर, हटिया (राँची), सिन्दरी, धनबाद, पंचेत, मैथन, तिलैया तथा बरौनी के सुविख्यात औद्योगिक केन्द्रों का परिदर्शन करें।

पटना, राजगृह, गया, राँची, नेतरहाट और मुजफ्फरपुर में टुरिस्ट बस, टुरिस्ट यान तथा उत्तम कोटि की आरामदेह मोटरगाड़ियाँ भी सुलभ है।

राजगृह, वैशाली, नेतरहाट, (पलामू) और हजारीबाग में पर्यटकों के आवास की सुविधा के लिए उत्तम कोटि के आरामदेह टुरिस्ट बंगलों की स्थापना पर्यटन विभाग द्वारा की गई है। राजगृह में, जापान-भारत-सर्वोदय मित्रता संघ, जापान के सहयोग से रत्नगिरि के शिखर पर निर्मित विश्व शान्ति स्तूप के परिदर्शन के लिए पर्यटन विभाग द्वारा आकाशीय रज्जुपथ का संचालन किया गया है, मात्र एक रुपया प्रति व्यक्ति की दर से शुल्क देकर रज्जुमार्ग की यात्रा की जा सकती है।

विशेष जानकारी के लिए पर्यटक सूचना केन्द्र,
मजरुलहक पथ, पटना—१
(दूरभाष यंत्र संख्या—२५२९५) से सम्पर्क स्थापित करें।

पर्यटक विभाग, बिहार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर

राष्ट्रीय बचत प्रतिभूतियों (Securities) एवं लेखा (Accounts) में धन लगावें

धन विनियोजन से बहुत बड़ी मोटी रकम की आमदनी होगी।

इसी में आपकी एवं आपके राष्ट्र की उन्नति है।

धन जमा (विनियोजन) करें (Invest)

(प्रतिभूतियाँ Securities) एवं लेखा (Accounts)

	सूद
(१) डाकघर संचय अधिकोष (सेविंग्स बैंक)	—४ प्रतिशत वार्षिक
(२) द्विवर्षीय अवरुद्ध जमा (Blocked deposit)	४½ ,, ,,
(३) एक वर्षीय डाकघर कालानुपाती जमा (Time deposit)	६ ,, ,,
(४) त्रिवर्षीय डाकघर कालानुपाती जमा (Time deposit)	७ ,, ,,
(५) पंचवर्षीय डाकघर कालानुपाती जमा (Time deposit)	७½ ,, ,,
(६) पंचवर्षीय आवर्त्ती जमा (Recurring deposit)	६¾ ,, ,,
(७) सप्तवर्षीय राष्ट्रीय-बचत-प्रमाण-पत्र	७½ ,, ,,
(८) पंचवर्षीय सर्व कालानुपाती जमा (Comulative time deposit) एवं आवर्त्ती जमा (Recurring deposit)	चूक न होने पर और लगातार चुकती करते रहने पर २४ महीने के बाद, संरक्षित

(निर्देशक राष्ट्रीय बचत द्वारा प्रेसारित)

ईकार प्रेस, भदैनी, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

बिहार राज्य सहकारिता भूमि बंधक अधिकोष लि० पटना—१

प्रगतिशील किसानन खातिर दीर्घकालीन कर्जा के व्यवस्था

ई बैंक अपना ७७ शाखन द्वारा सभे वर्ग के किसान के ६ से १३ बरिस खातिर ९% सालाना सूद पर जमीन के साधारन बंधक पर नीचे लिखल काम खातिर कर्जा देला।

(क) ट्रैक्टर, पावर टीलर, पम्पिंग सेट, बिजली चालित मोटर तथा आउर आउर कृषि-यंत्र खरीदे खातिर।

(ख) कुँआ, नल कुआँ, नाला, पम्प आदि बनावे खातिर।

(ग) जमीन के सुधार, जैसे ऊँच-नीच, जमीन के बरोबर (समतल) आ बंजर जमीन के ऊपजाऊ बनावे खातिर।

(घ) चकबन्दी वास्ते जमीन खरीदे खातिर।

(ङ) जमीन के बंधक से छोड़ावे खातिर।

(च) बिजली के लाइन पावे खातिर।

यह बैंक के शाखा छोटा नागपुर प्रमंडल आ संथालपरगना में जिला स्तर के अलावे, गुमला, जमशेदपुर, गिरीडीह, गढ़वा, देवघर तथा साहेबगंज अनुमंडल में आ अउरी जिलन में अनुमंडल स्तर का अलावे किसानन का सुविधा खातिर नीचे लीखल जगहन में प्रखंड स्तर पर, खोलल गइल बा:—वैशाली, पुपरी, जयनगर, रोसड़ा, झंझारपुर, बेनीपुर, मैरवा, मढ़ौरा, मीरगंज, सुगौली, रामनगर, ढाका, धमदाहा, फारबिसगंज, राघोपुर, उदा-किशुनगंज, शेखपुरा, खड़गपुर, बखरी, नवगछिया, कहलगाँव, हिलसा, डुमराँव, विक्रमगंज, पीरो, मोहनिया, दाउदनगर।

जे गृहस्थ एक बार कर्जा ले चुकल बाड़े उन्हका खातिर, दोसरका बार आ तीसरका बार भी कर्जा मिले के इन्तजाम बा। छोट-छोट गृहस्थन खातिर 'संयुक्त ऋण' (कर्जा) देबे के भी व्यवस्था बा।

स्मरण रहे कि किसानन के कर्जा के पावल, शाखा का वसूली पर निर्भर करी। ५० प्रतिशत का वसूली पर, खाली नल कुंआ आ पम्प खातिर, ६० प्रतिशत वसूली पर एकरा अलावे ट्रैक्टर खातिर, ७५% वसूली भइला पर समतलीकरण खातिर, ८५% वसूली भइला पर सब तरह के कर्जा के सुविधा किसान के मिली।

तपेश्वर सिंह
अध्यक्ष

दिनेश्वर प्र० चौधरी
प्रबन्ध निदेशक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[बिहार सरकार द्वारा विद्यालय आ पुस्तकालय खातिर स्वीकृत]

अँजोर

[भोजपुरी परिवार (पटना) के त्रैमासिक मुख-पत्र]

जा में रस कछु होत है, ताहि पढ़त सब कोय।
भाव अनूठो चाहिये, भाषा काहू होय॥

प्रधान सम्पादक

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

कला—१३
अक्तूबर—१९७२

किरिनि—३-४
जनवरी—१९७३

भोजपुरी परिवार
पटना-३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

सम्पादक-मंडल

रासबिहारी राय शर्मा, गणेश चौबे, रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द', डा० वसन्त कुमार, प्रो० ब्रजकिशोर, डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी', धीरेन्द्र प्रसाद सिन्हा 'धवल'

सहायक सम्पादक

अविनाशचन्द्र विद्यार्थी

एह अंक में पढ़ीं

पन्ना

१. गजल—जगन्नाथ १
२. भोजपुरी गीतों में लोक संस्कृति की परंपरा—गणेश चौबे २
३. डा० परमेश्वरी लाल गुप्त : एक भेंट—पांडेय नर्मदेश्वर सहाय ५
४. अँजोरिया (कविता)—डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी' १२
५. विनय पत्रिका के एगो पद आकँहरऊ बोली—अनिल कुमार राय 'आंजनेय' १३
६. आजादी क जादू (कहानी)—प्राध्यापक 'अचल' १८
७. भोजपुरी के मान्यता—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय २४
८. भोजपुरी मधुशाला (कविता)—डा० सलिल २६
९. रुबाई—अवधेन्द्रदेव नारायण २६
१०. लोर (निबंध)—महन्थ मिश्र २७
११. अधूरा वृत्त (कविता)—कन्हैया सिंह 'सदय' ३१
१२. पह फाटे के पहिले (कहानी)—कृष्णानन्द कृष्ण ३२
१३. हिन्दुस्तान : एक ठे सानेट—अशोक द्विवेदी ३६
१४. कवि भिखारी ठाकुर (निबंध)—अवधेश प्रधान ३७
१५. लरिकाईं (कविता)—गणेश दत्त 'किरण' ४४
१६. विदेसिया गीत—अविनाशचन्द्र विद्यार्थी ४५
१७. विहार के वित्त मन्त्री श्री दारोगा प्रसाद राय—पा० न० स० ५२
१८. एगो वली अउर (कविता)—पाण्डेय सुरेन्द्र ५५
१९. डा० सुनीति कुमार चटर्जी के नाम चिट्ठी आ ओकर जवाब—दण्डि स्वामी विमलानंद सरस्वती ५६-६४
२०. वायन (१) मैथिली (कविता)—आरसी प्रसाद सिंह ६७
(२) मगही (कविता)—मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश' ६८
२१. पुस्तक-परिचय ७१
२२. भोर पहर के दीया (कविता)—रजनीकांत पाण्डेय 'राकेश' ७२
२३. संपादक के विचार ७४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

अँजोर

धरती के लोर बाट जोहि रहल भोर के
पह फाटल, बिहँसी अब किरिनियाँ 'अँजोर' के

कला—१३ | अक्तूबर १९७२-जनवरी-१९७३ | किरिन—३-४

गजल

जिनिगी प बहुत दुख के एहसान हो गइल।
दोस्ती के दुश्मनी के पहिचान हो गइल।

हमरा से नसा नेह के छूटल भइल ई हाल
उनकर छूने में हेठ चढ़ल मान हो गइल।

आखीर मौत के रहल साँसन का ना अबूझ
अँखियन प नींद जब से मेहरबान हो गइल।

उनका खुनुस के खोट कि तकदीर के ह खेल
जतना मिलल सराप सब बरदान हो गइल।

सरधा के, प्रेम के का एकरा से बढ़ि के मोल
पत्थर के टूक छोटहन भगवान हो गइल।

—जगन्नाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी गीतों में लोक संस्कृति की परम्परा

—गणेश चौबे

किसी देश और जाति के विचार और कर्म, आदर्श और व्यवहार के क्षेत्र में जो उसकी प्रगति और उपलब्धियाँ हैं, वही उसकी संस्कृति है। इसके अन्तर्गत जहाँ परम्परागत विश्वास, रस्म-रिवाज, रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान, नृत्य-गीत, कला-कौशल, जीवन-यापन के तरीके आदि लौकिक बातें सम्मिलित हैं, वहीं देव-पितर, आत्मा-परमात्मा, जन्म-मरण, संवन्धी आध्यात्मिक चिन्तन की धाराएँ भी सन्निविष्ट हैं। इस प्रकार संस्कृति के क्षेत्र का विस्तार अत्यन्त व्यापक है।

संस्कृति को हम शिष्ट संस्कृति और लोक संस्कृति दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। शिष्ट संस्कृति से हमारा अभिप्राय अभिजातवर्ग की उस संस्कृति से है, जो बौद्धिक विकास के उच्च शिखर पर पहुँचा है, जो समाज का अग्रणी और पथ-प्रदर्शक है। लोक संस्कृति से हमारा तात्पर्य जन-साधारण की उस संस्कृति से है, जो बौद्धिक विकास के निम्न स्तर पर अवस्थित है, जिसका उद्‌गम स्रोत जन समुदाय है, यद्यपि दोनों प्रकार की संस्कृतियों के बीच किसी प्रकार की स्पष्ट विभाजन-रेखा खींचना अतीव दुष्कर कार्य है। इस आलेख में भोजपुरी क्षेत्र की लौकिक संस्कृति की परम्परा की एक झाँकी वहाँ के लिखित और मौखिक साहित्य के आधार पर उपस्थित करने का प्रयास किया जा रहा है।

किसी प्रान्त या क्षेत्र की संस्कृति पर वहाँ की प्राकृतिक स्थिति एवं जलवायु का प्रभाव अपरिहार्य है। भोजपुरी क्षेत्र की जलवायु समशीतोष्ण है, फलतः यहाँ के निवासी शरीर से हृष्ट-पुष्ट होते हैं। इस क्षेत्र में गंगा, सोन, सरयू, घाघरा, गंडक आदि नदियाँ बहती हैं, जो माता के रूप में पूजित हैं। उनकी कृपा पर ही यहाँ की कोटि-कोटि जनता की सुख-समृद्धि निर्भर है। ये नदियाँ वर्षाकाल में उद्दाम हो उठती हैं, फसलों को बर्बाद कर देती हैं, लोगों के घर-द्वार को अपने उदर में विलीन कर लेती हैं। प्रकृति से संघर्षरत रहने के कारण यहाँ के निवासियों में आत्मनिर्भरता की भावना आ गयी है। भोजपुरी क्षेत्र में खनिज संपदा का अभाव है, अतः यहाँ बड़े-बड़े उद्योगों का विकास नहीं हो पाया है। यहाँ के निवासियों को अपनी जीविका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की तलाश में बड़ी संख्या में अन्य प्रान्तों में नौकरी या मजदूरी के लिए जाना पड़ता है। फलतः उनमें संकीर्णता का अभाव और राष्ट्रीयता एवं राष्ट्र की भावनात्मक एकता की भावना का प्राबल्य है। वे संपूर्ण देश को अपनी मातृभूमि मानते हैं और उसकी रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार रहते हैं। भोजपुरियों का भारतीय स्वतन्त्रा संग्राम में अनवरत योगदान रहा है। भोजपुरियों के इन्हीं गुणों को ध्यान में रखकर आज से लगभग पचहत्तर वर्ष पूर्व डा० ग्रियर्सन ने कहा था—'भोजपुरी एक ठोस जाति है, जो परिस्थितियों के अनुकूल अपने को ढालने के लिए सदा तैयार रहते हैं। वे जहाँ जाते हैं, अपना प्रभाव जमा देते हैं। हिन्दुस्तान की सभ्यता के प्रसार में अग्रणी दो जातियों में बंगालियों ने इस काम को अपनी कलम से पूरा किया और भोजपुरियों ने अपनी लाठी से।' इस क्षेत्र की एक प्रचलित कहावत है—लीखे-लीखे गाड़ी चले,

लीखे चले कूर।
लीख छोड़ के तीन चले,
सिंह, सपूत, सहदूल ।।

भोजपुरी क्षेत्र के निवासियों में प्रगतिशीलता की परंपरा वैदिक युग से ही चली आती है। यह व्रात्यों की निवास भूमि है, जो वैदिक रूढ़िवाद को नहीं मानते थे। यही कारण है कि बुद्ध, कबीर, शिवनारायण, दरिया, धरनी, पलटूराम, बावरी साहिबा आदि अनेक संप्रदायों के प्रवर्तकों को अपने मत के प्रचार के लिए यहाँ अनुकूल वातावरण मिला और उनके मत यहाँ फूले-फले हैं।

भोजपुरियों की आंतरिक विशेषता का चित्रण कवि 'भानु' ने इस रूप में किया है:—धुरिया चढ़ावे जाने, पीठ ना देखावे जाने,

दीठ ना लगावे जाने आन के बहुरिया।
आन पर लड़ावे जाने, जान के ना जान माने,
चले के उतान जाने तान के लउरिया।
हठ में हमीर महावीर वीर लट्ठ में जे,
बान्हें लटपट कनपट्टी ले पगरिया।
घेंटि के बनल 'भानु' माटी के कसल,
इहे खाँटी ह जवान उमगल भोजपुरिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब भोजपुरी लोकगीतों में वर्णित उस क्षेत्र के विद्या-व्यसन की ध्यान दें। हम जनेव के एक गीत में वटुक को अपनी माता से आ करते हुए पाते हैं :—

पीस हे आमा सतुअवा,
हम जइवो कासी वनारस,
वेद पढ़ि आएब।

इस पर माँ उत्तर देती है :—

का तूँ हूँ हो वरुआ जइव वनारस,
घरहिं में बाबा वेदवइआ,
घरहिं वेद पढ़ब।

यह गीत उस अतीत युग के गौरव की याद दिलाता है, जब यहाँ घर घर वेदज्ञ थे और वेद पढ़ने के लिए किसी को काशी जाने की आवश्यकता नहीं थी। इतना ही नहीं, इस क्षेत्र की कन्याएँ भी अपने लिए पंडित की कामना करती थीं। गीत के माध्यम से कोई कन्या अपने पिता प्रार्थना करती है :—

बन पइसि खोजिह हो बाबा, चनन चउकिया।
देस पइसि खोजिह हो बाबा, पढ़ल पंडितवा॥
अपना जोगे खोजिह हो बाबा, सर रे समधिया।
धिया जोगे खोजिह हो बाबा, धिया धी जमाय॥

युरोपीय देशों में गीत के सम्पर्क में आये बिना भी कोई व्यक्ति अप जीवन व्यतीत कर दे सकता है। लेकिन यहाँ की स्थिति इससे सर्वथा भि है। भोजपुरी क्षेत्र में पुत्र-जन्म, जनेव, विवाह, व्रत-पूजा-त्योहार आ मांगलिक अवसरों पर गीत अनिवार्य है। ये गीत हमारी संस्कृति प सम्यक प्रकाश डालते हैं। एक सोहर में पुत्र-जन्म के पश्चात् बहू से उन सास-स्वसुर प्रश्न करते हैं कि तुमने कौन सा तीर्थव्रत किया है कि तुम्हा पुत्र इतना सुन्दर है? इस पर बहू उत्तर देती है :—

कातिक मास नहइलों सुरुज गोड़ लागिले।
तुलसी के दियरा देखवलों, मैं ना रे जानो इहे गुन॥
वरत में कइलो एकादसी, दोआदसी के पारन।
भूखले में विप्र जेवललों, मैं ना रे जानो इहे गुन॥

[शेष पृष्ठ १७ पर]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डा० परमेश्वरीलाल गुप्त : एक भेंट

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

[पटना संग्रहालय के अध्यक्ष डा० परमेश्वरी लाल गुप्त को लोग एक प्रख्यात ...तत्त्ववेत्ता और हिन्दी-साहित्यकार के रूप में भली प्रकार जानते हैं। मुद्रातत्व-...द के रूप में उनकी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति है। किन्तु यह कम ही लोग ...नते हैं कि जीवन के आरम्भिक दिनों में वे भोजपुरी आन्दोलन के उत्प्रेरकों ...रहे हैं। यद्यपि उनका कार्य क्षेत्र बदल गया है किन्तु उनका भोजपुरी-... आज भी बना हुआ है। उनसे मैंने अभी हाल ही भेंट कर भोजपुरी ...सम्बन्धित कुछ प्रश्न पूछे थे। इस प्रश्नोत्तर का अपना महत्त्व है। अतः ...हें यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। --ले०]

प्रश्न--भोजपुरी के प्रति आपका आकर्षण कैसे हुआ ?

उत्तर—आकर्षण कैसे हुआ ? भोजपुरी मेरे घर-परिवार की भाषा ...। घर में हमलोग उसे नित्य बोलते हैं, उसके लिए आकर्षण जैसी कोई ...त ही नहीं उठती।

प्रश्न—मेरा आशय है कि आपका भोजपुरी आन्दोलन के प्रति ...व क्यों, कब और कैसे हुआ ?

उत्तर—भोजपुरी के किसी आन्दोलन की मुझे जानकारी नहीं है। ...द उसका कोई आन्दोलन वस्तुतः हो तो उसमें मुझे कभी दिलचस्पी नहीं थी। ...द आपका अभिप्राय भोजपुरी भाषा ओर साहित्य की ओर मेरे रुझान से ...तो आपके प्रश्न के उत्तर में कहूँगा कि बचपन से ही स्त्री-पुरुषों के मुख ...तरह-तरह के गीत सुनता रहा हूँ। वे मुझे सदैव अच्छे लगते रहे हैं। ...ड़े होने पर जब उनके भाव समझ पाने की क्षमता हुई तो मुझे लगा कि ...जपुरी के इन गीतों का अपना काव्य-सौन्दर्य है और वह उन रचनाओं ...सौन्दर्य से किसी प्रकार कम नहीं है, जिसे हम साहित्य की कोटि में ...ते हैं और जिनकी सराहना करते हम नहीं अघाते। इस अलिखित साहित्य ... संकलित करने के भाव मन में निरंतर उठते रहे। जब ...वन-भादो के मादकता भरे दिनों में तमसा के किनारे टहलते हुए दूर से ...ती हुई 'बिसराम' के 'बिरहों' की आवाज ने मेरे अनन्त को झकझोर दिया ... मैं अपने को रोक न सका। बिसराम के बिरहों को संकलित कर ...ला। इसे ही आप मेरे भोजपुरी साहित्य से लगाव का आरम्भ कह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सकते हैं। विसराम के इन विरहों पर मैंने एक लेख लिखा जो कलकत्ता से प्रकाशित हो रहे 'विशाल भारत' के १९४२ के अप्रील अथवा उसके आस-पास के किसी अंक में छपा था। उस लेख को पढ़कर राहुल जी (राहुल सांकृत्यायन) ने मुझे पत्र लिखा था। खेद है वह मेरे पत्र-संग्रह में ढूंढ़ने पर भी नहीं मिल रहा है। उसमें उन्होंने क्या लिखा था यह आज ठीक से याद भी नहीं आ रहा है। पर इतना कह सकता हूँ कि उसने मुझे आगे कुछ करने की प्रेरणा दी। राहुल जी से पत्राचार का सिलसिला आरम्भ हुआ और जब १९४३ में राहुल जी अपना गाँव छोड़ने के ३५ वर्ष बाद आजमगढ़ आये तो मेरे घर पर ही ठहरे।

प्रश्न—यह ३५ वर्ष वाली बात क्या है?

उत्तर—आप तो यह जानते हैं कि राहुल जी मेरे ही जिले आजमगढ़ के निवासी थे। उन्होंने जब घर छोड़ा तो कदाचित उन्होंने कोई ऐसा संकल्प किया था कि वे एक निश्चित काल तक अपने गाँव-घर नहीं लौटेंगे। यह सीमा आयु की थी अथवा वर्ष की मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता। पर वे घर छोड़ने के पैंतीस वर्ष बाद अपने जिले में आये थे। उस समय उनका वह संकल्प पूरा हो गया था।

प्रश्न—यह कुछ विषयान्तर हो गया, आप अपनी मूल बात पर आइये।

उत्तर—उस समय राहुल जी जितने दिनों आजमगढ़ नगर में मेरे पास रहे, भोजपुरी और उसके साहित्य के सम्बन्ध में काफी बातें हुईं। लोक-साहित्य के सम्बन्ध में मेरे सामने एक स्पष्ट चित्र उभरा और भोजपुरी के लिए क्या कुछ किया जाना चाहिये यह समझ पाया। उन्हीं दिनों बनारसी दास चतुर्वेदी और वासुदेवशरण अग्रवाल भी लोक-साहित्य अथवा जनपद साहित्य के सम्बन्ध में पत्रिकाओं में लिख रहे थे। उन सबसे भी प्रभावित हुआ और इस प्रकार भोजपुरी के सम्बन्ध में मेरे जो विचार बने, वे समय समय पर काशी के दैनिक और साप्ताहिक "आज" और "समाज" के माध्यम से लोगों के सामने आये। उस समय तक भोजपुरी भाषा और साहित्य पर विशेष कुछ कहा लिखा नहीं गया था। इन लेखों के परिणाम स्वरूप अनेक व्यक्तियों का ध्यान इस ओर गया। बलिया जिले के अनेक नवयुवकों ने मुझे पत्र लिखे। खेद है उनमें से किसी का नाम याद नहीं कर पा रहा हूँ, बात यह नहीं कि मैं उन्हें भूल गया हूँ सम्पर्क छूट जाने के कारण वे मस्तिष्क की फाइलों में बहुत नीचे दब गये हैं। उस प्रसंग से जिन भोजपुरी प्रेमियों से सम्पर्क बना और मेरी कार्य-दिशा बदल जाने पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री जिन से मेरा सम्पर्क बना रहा उनमें आपके बिहार के गणेश चौबे, महेन्द्र शास्त्री, रघुवंशनारायण सिंह और दुर्गाशंकर सिंह का उल्लेख कर सकता हूँ।

प्रश्न—भोजपुरी के उन्नयन के लिए आपने किन दिशाओं में प्रयास किया ?

उत्तर—आप ने जिस दृष्टि से प्रश्न किया है उसको दृष्टिगत रखते हुए इतना ही कह सकता हूँ कि मेरे मन में भोजपुरी को भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने और उसके साहित्य को व्यवस्थित रूप से उपस्थित करने की भावना सदा रही है। इस कार्य के निमित्त मैं एक भोजपुरी अनुशीलन समिति बनाना और अनुसंधान संस्था स्थापित करना चाहता था; और मैंने तिवारी जी (डाक्टर उदय नारायण तिवारी), राहुल जी और दुर्गाशंकर सिंह से विचार-विमर्श भी किया था। किन्तु तिवारी जी की अपनी अस्त-व्यस्तता थी, राहुल जी घुमक्कड़ी थे, वे कदाचित उन दिनों रूस जाने की हड़बड़ी में थे। दुर्गा शंकर सिंह की भी अपनी कुछ विवशताएँ थीं। निदान इनमें से किसी का कोई सक्रिय सहयोग प्राप्त न हो सका। अकेले ही 'अग्रवालजी (डाक्टर वासुदेव शरण अग्रवाल) के जनपदीय कार्य-क्रम को कार्यान्वित करने की दृष्टि से समिति की एक रूप रेखा तैयार की और 'भोजपुरी अनुशीलन' नामक पत्रिका निकालने की योजना बनाई थी। जिस ढंग की बातें मैं सोच रहा था, कुछ उसी ढंग की बातें उन दिनों गणेश चौबे भी सोच रहे थे और इस विषय पर उनके दो-एक लेख 'आज' में छपने को आये। उन दिनों मैं 'आज' के सम्पादकीय विभागमें आ चुका था। इस प्रकार उनसे सम्पर्क बना। बातें कुछ आगे बढ़ीं पर तब आज जैसी भोजपुरी के प्रति किसी प्रकार का कोई जागरण न था। अनेक कारणों से भोजपुरी अनुशीलन समिति और शोध संस्थान वाली मेरी कल्पना कागजों में ही सिमट कर रह गयी। पर इतना अवश्य हुआ कि अनेक लोगों के मन में भोजपुरी सम्मेलन के भाव जगे। काशी में इस प्रकार का सम्मेलन अधिक केन्द्रीय होता। वहाँ मैंने सम्मेलन करने की चेष्टा की। पर वह हिन्दी का गढ़ ठहरा। उसके लिए अनुकूल वातावरण न मिल सका। तब राज-नाथ पाण्डेय ने, जो उन दिनों गोरखपुर में सेण्ट एण्ड्रूज कालेज में प्राध्यापक थे, इसमें रुचि ली और अपने कालेज में होने वाले हिन्दी कवि-सम्मेलन के साथ भोजपुरी सम्मेलन करने की बात स्वीकार की। यह कदाचित १९४५ के आरम्भ की बात है। शीघ्र ही मेरा उनका कुछ सैद्धान्तिक मतभेद उठ खड़ा हुआ, भोज-पुरी को लेकर नहीं, हिन्दी की एक समस्या विशेष पर। मैंने अपने को उनके साथ सहयोग करने में असमर्थ पाया। भोजपुरी सम्मेलन की बात जहाँ की तहाँ रह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गयी। दूसरे वर्ष बलिया जिले के एक सज्जन, जिनका नाम याद नहीं आ रहा है, अपने जिले में भोजपुरी सम्मेलन करने की ओर अग्रसर हुए, पर वह भी उनकी अपनी कठिनाइयों के कारण मूर्त रूप न ले सका। १९४७में इस दिशामें सफलता मिली। महेन्द्र शास्त्री ने सीवान में सारण जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साथ भोजपुरी सम्मेलन का आयोजन किया और वह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। उसकी अध्यक्षता पण्डित श्री बलदेव उपाध्याय (डाक्टर कृष्णदेव उपाध्याय के बड़े भाई) ने की थी। इस प्रकार भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का जन्म हुआ और मेरी कल्पना साकार हुई। भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दूसरे अधिवेशन का आयोजन भी उसी वर्ष या दूसरे वर्ष सारण जिले में ही महेन्द्र शास्त्री ने किया और राहुल जी उसके सभापति थे। इन दोनों ही सम्मेलनों में मैंने प्रमुख रूप से भाग लिया था। इन सम्मेलनों में भोजपुरी प्रान्त की भावनाएँ भी उठीं पर वे तब तक राजनीतिक दृष्टि से अंकुरित न थीं। इन सम्मेलनों के साथ भोजपुरी कवि सम्मेलन भी हुए थे। मेरी धारणा है कि इन्हीं कवि सम्मेलनों से आधुनिक भोजपुरी कविता का विकास हुआ। भोजपुरी भाषा में पत्रिका निकालने का पहला प्रयास भी इन्हीं सम्मेलनों का परिणाम था। महेन्द्र शास्त्रीने छपरा से "भोजपुरी" निकाली थी। इतना आगे बढ़ कर भी सम्मेलन का कार्य अनेक कारणों से आगे न बढ़ सका और मैं अपनी परिस्थितियों के प्रवाह में दूसरी और बह गया। इस प्रकार मैं नहीं समझता कि मैं भोजपुरी के लिए कोई ठोस काम कर सका हूँ। आप कहना चाहें तो कह सकते हैं कि भोजपुरी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में आज जो कुछ हो रहा है, उसकी नींव के लिए मिट्टी तोड़ने वाला एक मजदूर रहा हूँ।

प्रश्न—आपकी बातों से ऐसा जान पड़ता है कि आपने यह सब जो कुछ किया, उससे आप सन्तुष्ठ नहीं हैं अतः बताइये आप की अपनी दृष्टि में भोजपुरी के लिए आपके किस कार्य का महत्व है?

उत्तर—यदि मेरी आत्मश्लाघा न समझी जाय तो मैं आपके इस प्रश्न के उत्तर में यह कह सकता हूँ कि बिसराम के बिरहों की खोज मेरा एक ऐसा कार्य है जिसकी उपेक्षा भोजपुरी साहित्य का कोई भी इतिहासकार करना चाहे तो भी नहीं कर सकता। बिसराम को खोज कर मैंने भोजपुरी साहित्य के आसन पर एक ऐसे महाकवि को प्रतिष्ठित किया है जिसका सानी संसार का बड़ा से बड़ा कहलाने वाला महाकवि भी नहीं है। बिसराम की रचनाओं को लेकर मैंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में जो लेख और आकाशवाणी से जो वार्ताएँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंजोर

प्रसारित कीं, उन्होंने दूसरे भाषा-भाषियों को भोजपुरी की ओर आकृष्ट किया। वे भोजपुरी की काव्य-क्षमता और सुष्ठता से परिचित हुए। भोजपुरी ने बोली से उठ कर भाषा का पद प्राप्त कर लिया। यह उस समय एक बड़ी उपलब्धि थी।

प्रश्न—भोजपुरी के सम्बन्ध में आप कहते हैं कि उसने भाषा का पद प्राप्त कर लिया; पर इसको मान्यता कहाँ प्राप्त है ?

उत्तर—किसी सरकार या संस्था की मुहर लग कर ही कोई भाषा भाषा कही जाय, ऐसा मैं नहीं मानता। जनता जिसे भाषा कहे वही भाषा है और वही उसकी मान्यता की कसौटी है। आप जिस मान्यताकी बात कहते हैं, वह भोजपुरी को मैथिली से पहले कभी मिल चुकी होती और आज भी किसी क्षण मिल सकती है किन्तु भोजपुरी भाषियों में अपनी भाषा के प्रति मोह का सर्वथा अभाव है। यदि कोई मोह की बात कहता है तो वह दम्भ करता है। हमारे भोजपुरी के कथित नेताओं ने भोजपुरी भाषा का मूल्य और महत्व जानने और समझने की कभी चेष्टा नहीं की, भले ही प्लेटफार्म पर जाकर जो कुछभी कहें। जो लोग भोजपुरी के वस्तुत: प्रेमी हैं, उनकी ओर से भी उन बातों की पूर्त्ति का कोई प्रयास नहीं किया गया, जो मान्यता की शर्तों को पूरी करने की दृष्टि से अपेक्षित हैं। उनकी पूर्ति का आज भी प्रयास नहीं किया जा रहा। उदाहरण केलिए यदि आज भोजपुरी के किसी विश्वविद्यालय में एम० ए० की पढ़ाई का विषय मान लिया जाय तो उसके आठ प्रश्न–पत्रों के लिए आप साहित्य के रूप में क्या प्रस्तुत करेंगे ? क्या पिछले दस–पन्द्रह वर्षों से कविता, कहानी-नाटक आदि के नाम पर जो लिखा जा रहा है, इसके लिए पर्याप्त है ? मैंथिली को मान्यता मिल जाने पर हम चाहे जितनी उछलकूद मचायें, हमने कभी यह बताने का प्रयास किया कि हमारा विद्यापति अमुक है। अभी तक हम इस बात का भी कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सके हैं कि कबीर भोजपुरी के हैं। मध्य–कालीन साहित्य के संग्रह के रूप में आपने कौन सा ग्रन्थ प्रस्तुत किया ? आपने अभी तक जो रूप उपस्थित किया है वह एक दरिद्र का ही है यद्यपि तथ्य यह है कि भोजपुरी की साहित्य समृद्धि में कोई कमी नहीं है। इस ओर ध्यान दीजिये और फिर मान्यता की बात कीजिये।

प्रश्न—भोजपुरी में आज जो साहित्य सर्जन हो रहा है, उसको देखते हुए भोजपुरी के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तर—मेरी दृष्टिमें आज का भोजपुरी कहलाने वाला साहित्यिक भोजपुरी में इसलिए नहीं लिख रहा है कि वह भोजपुरी की सेवा करना चाहता है। वह इस लिए लिख रहा है कि हिन्दी में लेखकों—कवियों की जो भीड़ है उसमें वह कहीं खो न जाय इसलिए वह उनसे अपने को हटा कर रखना चाहता है। उनकी रचनाओं की भाषा का निकट से परीक्षण किया जाय तो उसमें भोजपुरी का निजस्व बहुत कम दिखाई पड़ेगा। भोजपुरी के अपने शब्दों, मुहावरों, भाव-व्यंजनाओं से अधिकांश लेखक अपने को दूर रखे हुए हैं। मात्र भोजपुरी क्रियाओं के सही—गलत प्रयोगों से भोजपुरी का साहित्य नहीं बन सकता। भोजपुरी भाषा के प्राण, उसकी आत्मा को समझने—पकड़ने की आवश्यता है। और इसकी चेष्टा हमारा आज का साहित्यिक कदाचित ही करता हो। मेरे कहने का यह अर्थ नहीं कि मैं भोजपुरी के लेखकों—कवियों का किसी प्रकार तिरस्कार कर रहा हूँ। मेरे कहने का आशय इतना ही है कि वे लोग आज वही कर रहे हैं जो दूसरे लोग अपने प्रदेश की बोली में साहित्य-सर्जन की होड़ में कर रहे हैं। हमें होड़ में न पड़ कर अपनी भाषा की प्रकृति को समझना और उसके अनुसार अपने भावों को ढालने के लिये शब्दों का प्रयोग करना चाहिये जिससे लगे कि हम अपनी भाषा में कह सुन रहे हैं।

प्रश्न—भोजपुरी भाषा की एकरूपता के सबन्ध में आपके क्या विचार हैं?

उत्तर—भाषा की एकरूपता का सवाल अपने आप में गलत है। साहित्य का सृजन होता है पर भाषा का निर्माण नहीं किया जाता। वह अपने आप बनती और निखरती है। भोजपुरी में लिखने वाले उसकी प्रकृति को ध्यान में रखकर लिखते चलें भाषा साहित्य के विकास के साथ स्वयं अपना निखरा रूप धारण कर लेगी। जब भाषा निखर उठेगी तो उसका व्याकरण अपने आप बन जायेगा। व्याकरण के चौखटे में कस कर आप भाषा का विकास नहीं कर सकते। मेरी इस बात को आप हिन्दी को सामने रख कर देखिये। उसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह उस खड़ी-बोली से निकली है जो दिल्ली मेरठके आसपास बोली जाती है। यदि यह सत्य है तो आप स्वयं देखिये कि आज हम साहित्य की जिस हिन्दी से पराचित हैं, उसका मेरठ की बोली के साथ कितना सान्निध्य है। उनकी क्रियाओं के रूप में कितनी निकटता है आप स्वयं देखेंगे, । दोनों एक दूसरे से काफी दूर हट गयी हैं। भोजपुरी भी साहित्य के विस्तार के साथ एक दिन ऐसी सीमा पर पहुँच जायेगी जहाँ उसका स्वरूप स्वयं निखर कर अपना स्थायी रूप ले लेगा। उसकी चिन्ता हमें आपको करने की आवश्यकता नहीं। अभी भाषा अपनी तरल अवस्था में है उसे तरल रहने दीजिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रश्न—भोजपुरी के लेखन में दूसरी भाषाओं के शब्दों के प्रयोग के सम्बन्ध में आपका क्या मत है ?

उत्तर—मैं समझता हूँ, इस सम्बन्ध में मेरे अपने मत जैसी कोई बात उठती नहीं। यदि आप भोजपुरी में लिखते हैं तो भोजपुरी शब्दों का प्रयोग कीजिये। नहीं जानते तो उन्हें ढूंढिये। भोजपुरी अनेक भाषाओं की अपेक्षा भाव-व्यंजना की दृष्टि से अपनी शब्दावली में बहुत अधिक समृद्ध है। दूसरों को उनसे परिचित कराने के लिये कोष बनाइये। दूसरों से उधार मत लीजिये। आज का साहित्यिक दूसरी भाषाओं से उधार लेने के चक्कर में ही रहता है। अपने शब्द नहीं खोजता। यदि दूसरी भाषाओं से शब्द ग्रहण करना ही हो तो उसे भोजपुरी भाषा की प्रकृति को सदैव ध्यान में रख कर ही कीजिये। कोई बाहरी शब्द यदि किसी भाषा में उसकी अपनी प्रकृति के विरुद्ध अपने मूल रूप में प्रयोग किया जायेगा तो भाषा का रूप उबड़-खाबड़ हो जायेगा। यह बात अकेले भोजपुरी पर ही लागू नहीं है। आप अंग्रेजी के शब्द "लैन्टर्न" को हिन्दी में उसीरूप में क्यों नहीं लिखते जिस रूप में वह अंग्रेजी में बोला जाता है। आप 'लालटेन' कहते हैं क्यों ? क्योंकि उसे सब समझते हैं। इसी तरह अंग्रेजी में भारतीय भाषाओं से कई सौ शब्द लिये गये हैं और उन्हें अंग्रेजी ने अपनी प्रकृति के अनुसार ढाल लिया है। उदाहरण के लिये आपका 'सेर' (वजन) अंग्रेजी में 'सियर' (Seer) बन गया है। फारसी का 'हवलदर' हिन्दी में 'हवलदार' और अंग्रेजी में हाविलदार' कहा जाता है। इस तरह असंख्य उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। भाषा का सम्बन्ध बोलने से है अर्थ से नहीं। बोलने की सुविधा भाषा की प्रधानता है इसलिये यदि भोजपुरी में भाषा को भाखा लिखा और बोला जाता है तो उसे उसी रूप में साहित्यिक रचनाओं में भी अपनाना चाहिये। इसे भाषा के तोड़ने मरोड़ने की संज्ञा देना भाषा का अहित करना है।

प्रश्न—भोजपुरी साहित्य के विकास से आपकी समझ में हिन्दी का कोई अहित हो रहा है ?

उत्तर—किसी भाषा के साहित्य के विकास से किसी दूसरी भाषा के साहित्य का अहित नहीं होता। जो लोग भोजपुरी से हिन्दी के अहित की बात कहते हैं, वे ऐसा क्यों कहते हैं, वही बता सकते हैं। मुझे तो उनकी बातें मूर्खतापूर्ण ही लगती हैं, उसमें राजनीति की गन्ध आती है।

प्रश्न—भोजपुरी त्रैमासिक "अँजोर" के प्रकाशन के सम्बन्ध में आपकी क्या धारणा है ?

उत्तर—पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन आज के युग में सहज नहीं है। फिर भी आप उसे बारह-तेरह वर्षों से निकालते जा रहे हैं, इसे मैं साहस ही कहूँगा। कदाचित यह आपकी भोजपुरी के प्रति मिशन-भावना का प्रतीक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अँजोरिया

थिर-थिर थिरिकत आवेली अँजोरिया ।

जगमग-जगमग भइले अकसवा,
मथवा प चमकेला जोति के कलसवा,

जुहिया के फूल छितरावेली अँजोरिया ।
थिर-थिर थिरिकत आवेली अँजोरिया ।

बाबा-पकड़िया प लुकि-छिपि रहली,
बतिया पिरितिया के चुपे-चुप कहली,

पिपरा प दुलुहा लगावेली अँजोरिया ।
थिर-थिर थिरिकत आवेली अँजोरिया ।

अँउधल धरती प दूधके टहरिया,
केकरा बथनियाँ में गाँवके बहरिया,

घरे-घर रस बरसावेली अँजोरिया ।
थिर-थिर थिरिकत आवेली अँजोरिया ।

कुँलचेली खेतवामें चानो के हरिनियाँ,
डँसि-डँसि केकरा के उलटे नगिनियाँ,

रहि-रहि टिहुकी चलावेली अँजोरिया ।
थिर-थिर थिरिकत आवेली अँजोरिया ।

रूपवा के नदिया में उमड़ल पनियाँ,
गोरिया के गलिया प चढ़ली जवनियाँ,

गलियन-गलियन गावेली अँजोरिया ।
थिर-थिर थिरिकत आवेली अँजोरिया ।

छन्हियाँ-छपरिया प छलके सुरतिया,
अँगना में उतरल छवि के मुरतिया,

केकरा के प्यार में भोरावेली अँजोरिया ।
थिर-थिर थिरिकत आवेली अँजोरिया ।

डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'विनय पत्रिका' के एगो पद आ कँहरऊ बोली

—अनिल कुमार राय 'आंजनेय'

राम कहत चलु, राम कहत चलु, राम कहत चलु भाई रे।
नाहिं तौ भव बेगारि महँ परिहै, छूटत अति कठिनाई रे॥
बाँस पुरान साज सब अठकठ, सरल तिकोन खटोला रे।
हमहिं दिहल करि कुटिल करमचंद मंद मोल बिनु डोला रे॥
विषम कहार मार-मद-माते चलहिं न पाउँ बटोरा रे।
मंद-बिलंद अभेरा दलकन पाइय दुख झकझोरा रे॥
काँट कुराय लपेटन लोटन ठावहिं ठाउँ बझाऊ रे।
जस-जस चलिअ दूरि तस-तस निज बास न भेंट लगाऊ रे॥
मारग अगम, संग नहिं संबल, नाउँ गाउँ कर भूला रे।
तुलसिदास भवत्रास हरहु अब, होहु राम अनुकूला रे॥

(विनय पत्रिका पद सं० १८९)

डा० हर गोविन्द सिंह ('ब्रजभारती' भाद्रपद सं० २०२८ वि० अंक-२) के कहनाम वा जे एह पद में आइल मंद, बिलंद, अभेरा, दलकन, लपेटन, लोटन आ बझाऊ शब्द बुन्देली खित्ता का कँहरऊ बोली के हउवन स। कहाँर अपना एह इसारा वाली—थोर कहे ढेर बूझे वाली—बोली में, जे ओकर जोड़ीदारे बूझेला, गते-गते चले खातिर 'मन्द' आ फलगर बढ़े चले बदे 'बिलन्द' सबद बोलेला। राहे-घाटे ठूँठ जइसन कवनों चीजु बतुस लउकी त अगिला कँहार अपना पिछिला जोड़ीदार के 'अभेरा' सबद बोलिके सजग करी। फेंड़ भा खाम्हा नियर भारी-भरकम चीजु जवना ले डोली टकरइला के अनेसा रही त 'दलकन' या 'दड़कन' कही। डहरी में कवनों लमहर-पातर आ हरियर लता भेंटइला पर, जे में लभराके भहरइला के डर रही त ओके 'लपेटन' कहिके अपना पिछिला संघाती के सचेत करी। ईंटा भा पत्थर बदे 'लोटन' आ झाड़-झंखाड़ खातिर 'बझाऊ' कहिके बुझाई।

हमरा खेयाल वा जे बहुत दूर ले पसरल भोजपुरी क्षेत्र में छितराइल आ एह अँउजार-पथार में हेरात कँहरऊ बोली के अँखियान क के हेरे आ संइथे-सहेजे के जो उतजोग कइल जाव त हमनी का लगे पुरहर 'अर्थ'-संपदा बटुरा जाई। 'विनय-पत्रिका' का एही पद के ना, बलुक गोसाईं तुलसीदास आ कबीर दास अस ढेर भक्त-संत कबिन का पद के अनगिनित-अनचिन्हार सबद भोजपुरी में भेंटा जइतन सन। हम कवनो एह बात बदे न दोचित बानीं, न त हरनठले आ बिसमाधल बानीं जे 'विनय पत्रिका' का एह पद में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइल 'कँहरऊ' बोली के खींचि-तानि के तीन-तेरह क के भोजपुरी में भेंटिए लेइब। हम त ईहे कहब जे एह पद ले हम के भोजपुरी खित्ता के कँहरऊ बोली के मरम बूझें के प्रेरणा मिलल ह। ए से कँहरऊ बोली के हेठ ना, सेठ मानि के हम एकरा ओर लपकल बानीं। एमें दूगो राय ना हो सकेला जे सबद मधु के छत्ता ह। जेकरा छत्ता ले मधु निथारे के लूर-सहूर होई, ऊहे मधु बटोरी जा त अन्हेरिहे मधुमाखी के खोदि के अपना के चहेटवाई, आपन दुरगति करवाई आ अपना देहि में माखी ले बिन्हवा के माहुर बटोरी। मधु आ माहुर अपना अपना लूर-सहूर ले मिलेला। एसे सबद-मधुमाखी का एह छत्ता केवर संचेत होके गँव-बिचार ले बढ़े के चाहीं।

हम इहाँ बात फरिआ दीहल चाहत बानीं जे हिन्दी के बढ़न्ती खातिर हमनी का जनपदीय अध्ययन आ लोक-वार्त्ता ले अपना डीठ का धुधुआवन के साफ क लेवे के चाहीं। कँहार के, मल्लाह, धोबी, गोंड़, मजूर-किसान, मुसहर, बहेलिया, हथवान आ मदारी का बोली के मान देके अपना साहित्य-श्री के सिंगार करे के चाहीं; ना त कले-कले सबद निझा रहल बाड़न। अनघा शब्द-श्री बाँझ हो रहल बाड़ी। ए में कवनो सक नइखे जे ई कुल्हि वर्ग अपना-अपना बोली में (जे के हमनी का अनगराहित बुझले बानींजा) अपना अपना वंश परम्परागत अनुभव के, जीअत जागत पोढ़ निधि सँचले बाड़न। ई लिख-लोढ़ा-पढ़-पत्थर उधार मनई भलहन कवनो शास्त्र नइखन पढ़ले बाकिर जनता का हिरदया का तार-तार का झंकार के गूढ़ अरथ के मजिगर गुनले बाड़न। अपना अनगढ़ सबद में ई जनता का सुख-दुख का पल-पल के अमरता देले बाड़न। इनका लोक कथा, लोक गीत, लोकोक्ति आ सबद-सबद में जिनिगी के कवनों ना कवनों खाँटी सचाई भरल बा। इनकर अभिव्यक्ति शिथिल हो सकेले बाकिर इनकर अभिव्यंजना बड़ा सरकस आ अचूक होला। सही पूछीं त जनपदीय अध्ययन भाषा-विज्ञान आ साहित्य खातिर त कामधेनु बटले बा, देश का इतिहासो के सँवारे वाला बा। एसे देश के कन-कन के ज्ञान हो सकेला। एतने ले ना, ई देश का आतमा के जगमगा दी आ हमनी के आगे का भकसावन राह के उजागर कर दी।

लोक-कथा, लोक-गीत आ लोक शब्द हिन्दी के अइसन पूँजी बा जवना पर कवनो भाषा का गुमान हो सकेला। ई बूझे के चाहीं जे हिन्दी अपना गाँठ का एह पूँजी के जवना दिन गँवा दीही ओह दिन ऊ दिवालिया, छूँछ आ छूँछ हो जाई। फिर त ऊ 'ए छूँछा तोह के के पूछा' का उधार हालत में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अरबी-फारसी, संस्कृत आ अँगरेजी का एह दुआरी ले ओह दुआरी भीखि माँगत फिरी, छिछियात फिरी। एमें अचिको अनेसा नइखे जे जवना दिन लोकगीत, लोक-कथा, लोकोक्ति आ लोक शब्द के लोप हो जाई ओह दिन हिन्दी निरबंस हो जाई आ एकर अरदुआइ पुज जाई। साच कहीं त जनभाषा का एह पूँजी के हीन, हेठ आ अनगराहित गानि के हमनी का आत्महत्या पर उतारू हो गइल बानीं जा। घर फूँकि के तापल कवनो चाल्हाँकी त ह ना? अभागा आदमी अपना पास का हीरा आ रतन के अइल-गइल पत्थर आ काँच बूझि के आँखि का ओहटा फेंकि देलन। ठीक ईहे हाल हमनी का जनपदीय भाषा का साथे भइल बा। हमनी सभ का जनपदीय भाषा के गर के फँसरी जानि के एकरा ले बिजुके के ना चाहीं। ई रतन के हार ह।

हम कँहरऊ बोली का अपना एह अध्ययन के बलिया जिला का गड़हा परगना तक समेट के चल रहल बानीं आ रउवा सभे के नेवत रहल बानीं जे एह ओर कुछ काम कइल जाव, कुछु नावा जोड़ल जाव।

कँहार जब डोली लेके चलेलन त पाछे वाला जोड़ीदारन के अगाऊँ बतरा ले अगाह करत खानी सैन से भरल अपना भाषा में जवन सबद बोलेलन ऊ बड़हीं गूढ़, अरथ से भरल-पूरल, जीअत-जनगर, तेज-तरार,झझकार, पोढ़ आ कबो-कबो मजिगर उपेक्षा, तीखा व्यंग, उपहास, प्रतिकार, दुलत्ती आ लताड़ ले भरल होलन। ई सबद कँहार का फाल में फाल मेराके ठेका भरेलन। कँहार एमें लव लगाके घाट-बाट में लइ लगावत चलेलन।

कँहार डोली लेके रेलले चलल जाला। आगे जब विष्ठा (गुह) परेला त अगिला कँहार बोलेला 'आगि ह'। 'आगि' सुनते पिछला जोड़ीदार छनक उठेलन आ आपन गुह ले बचाव क लेलन। पिछड़ल जाति के ई करमजरू कँहार बाम्हन के उचिलावत खान अपना बुझउवल वाली भाषा में गुह के 'बाम्हन' कहेलन। कँहार का एह सबद में प्रतिशोध के मनोविज्ञान कार कइ रहल बा। एकर बेवहार ओही तरे हो रहल बा, जे तरे ब्राह्मण-साहित्य बुद्ध के 'बुधू' तक घसीटंत, 'महापंडित' के मुरुख-गँवार तक थूका-फजीहत करत आपन मलाल उतारत अपना पंडिताई के गरूर के रखले बा।

कँहारन के सबदन पर अँखियान क के धियान देला पर एह बात के पता चली जे ई अपना मजाक, ठिठोली, हँसी-विनोद ले अपना भार के हलुक करत चलेला, थकावट के गम ना कइके मन महटियावत-बँहटिआवत-बहलावत चलेला, दुख-दरद के दरेरत-ढकेलत-चहेटत चलेला। ई भारी ले भारी बिपत्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में, गाढ़ ले गाढ़ भीर-सकेत में हँसि सकेला, ठिठोली करि सकेला आ अपना दरिद्दर के दरेरा पर दरेरा दे सकेला, धकिया सकेला, गरदनिया सकेला, लोलिया सकेला, पोकिया सकेला, काँट-कुस, खाई-खंधक, ऊँचा-खाला के हँसत-हँसत अंगेज सकेला, वे गम होके पार कइ सकेला।

एकरा मरदानगी, मस्ती, अल्हड़ई आ फक्कड़ाना सुभाव के ई सबद गवाह बाड़न। आगे जब बबूर के काँट परेला त ई ओके 'रुपहुला ह' बोलेला। भजकटैया (रेंगनी) के 'सोनहुला ह' कहेला। सचहूँ चानी आ सोना के बबूर आ रेंगनी के काँट बूझि के छनकल रहे वाली ई दृष्टि कवनो कबीर आ तुलसी अस बैरागीए के हो सकेला। ई 'कंचन काँचहिं सम गनै, नारिहि काठ-पखान। तुलसी ऐसे सन्तजन, जग में ब्रह्म समान ॥' वाली पहुँचल दृष्टि ह। बइर के काँट सोझा परला पर 'नोचनी ह' कहिके अपना जोड़ीदारन के नोचइला ले बरकावेला। आगे खाल परला पर 'धामक ह' कहि के पिछिला संघातिन के संचेत करेला। राह का एक ओरी गड़हा परला पर 'खाली ह' (एक अलँगी, एकगर ह कहेला। नीचे ढालुवाँ पर ढुरकत खान 'नवता ह' बोलेला। चढ़ान पर चढ़त खान 'सीर ह' कहेला। लकड़ी में लभरा के लथरइला के अनेसा रहला पर 'लकड़बज्झा ह' कहिके बचे के इसारा करेला। ऊढ़ुक ढेला भा ईंटा-पत्थर' भेंटइला पर 'लोटना ह' कहिके बुझावेला जवना के ई मतलब होला जे सजग हो जा न त उढ़ुकते लोटि जइब। देवाल के दरकच्चा लगला के अनेसा रहला पर 'कमरतोड़ ह' बोलेला। घुमाव अइला पर 'भँवता ह' कहि के ई बुझावन बुझावेला जे भपतलऽ कि गइलऽ।

एही तरे कँहारन के सधल सबद होलन। ओह सबदन में दम-खम दूनो होला। कँहरऊ बोली में अभिधा आ व्यंजना ले अधिका लक्षणा शक्ति काम करेले। ई थोर कहे ढेर बूझे वाली चौकस बोली ह। नीचे एह तरे के कुछ सबदन के तालिका दे रहल बानी जे एह बात के गवाह बाड़न कि ई मरम तक पहुँचि के भरम दूर करेलन। ई सबद सोझा-सोझी करा देवे वाला आ रूप परतच्छ क देवे वाला होलन :—

आगे पत्थर बा—मतवाल ह।
दूनो बगली पेड़ बा—दरेरा ह।
ऊपर डाढ़ि भा बाँस के पुलुई लटकल बा—आसमानी ह।
खावाँ फाने के बा—जंघाफार ह।
ऊँच-खाल बा—टपाटपी ह, लपालपी ह।
पाँकी भा बिछलहर बा—चाहट ह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खूंटा बा— नसा तोड़ ह ।
गोबर के चोंत बा—गोलहरा ह ।
अनथा छितरायल गोबर बा—घनेरो ह, छींटहरा ह ।
सामने औरत बा—दुरासा ह ।
कान्ह बदले के बा—राम राम भजलऽ ।
फलंगर चलऽ—डुगुर चलऽ ।
अंकड़ी बा—मानगी ह ।
काँट बा—उड़ियान ह ।
काँट गड़ल बा—बरिये, बरिया ह ।
आगे बैल बा—अनबोलता ह ।
गाड़ी बा—चरखी ह ।
असवारी रखल जाव—चौक द ।
कई गो मेहरारू बाड़ी सन—चढ़ जा ।

★

[पृष्ठ ४ का शेष]

इस गीत में एक पुरातन विश्वास की अभिव्यक्ति है, जिसकी परम्परा आज भी अक्षुण्ण है ।

भोजपुरी क्षेत्र में ऐसे बहुत से गीत पाये जाते हैं जिनमें अपने सतीत्व की रक्षा के लिए रमणियों द्वारा उनके आत्म बलिदान की कथा आयी है। कोई कामुक राजा या विधर्मी किसी रमणी को घेर लेता है और उसे अनेक प्रकार का प्रलोभन देकर पथ भ्रष्ट करना चाहता है। लेकिन वह ऐसे प्रलोभनों में नहीं आकर उस व्यक्ति को चकमा देती है और किसी जलाशय में डूब कर या अग्नि में जलकर अपने धर्म की रक्षा करती है।

भोजपुरी क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के लोक नृत्य प्रचलित हैं, जिनके अपने पृथक-पृथक वाद्ययन्त्र हैं, नर्त्तकों की वेशभूषा है, गीत और लय है, जिनकी विस्तृत चर्चा यहाँ आपेक्षित नहीं है। वस्तुतः संस्कृति जैसे व्यापक विषय पर इस छोटे से अलेखमें विधिवत् प्रकाश डालना संभव नहीं है, अतः यहाँ भोजपुरी लोक संस्कृति की केवल संक्षिप्त झांकी ही प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

[आकाशवाणी, पटना से साभार]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजादी क जादू

प्राध्यापक 'अचल'

आसाम क चाय वगान एगो लोके ह। ओंजग कई लाख कुल्ली काम करेलन। जेकर कहीं ना ठेकान लागे ऊ आसाम का चाय वगान में राज रजेला। भोजपुरी वे पढ़ल-लिखल भाई लोग ओंजग छवले ह। केहू गाय-भेंइस पालेला, केहू चाय क दुकान करेला। केहू बगान में आटा-दाल क सप्लाई करेला, केहू नून-तेल-लकड़ी क सप्लाई क ठीका लेला। केहू के कुल्लिन क घर बनावे क ठीका मिलेला, केहू के किरानी बाबू लोगन क क्वार्टर क। केहू वेकार ना रहे। तव्वो सिलहट गइल भोजपुरी प्रदेश में अच्छा ना मानल जा। आशंका ह कि ओंजग क पानी भोजपुरी मरदन का लागेला; काहें कि पूरव क पानी हलुक ह। कलकत्ता में एँजग क आदमिन क वड़ा गुजर होला वाकी ओजग क पानी क शंका वनलि रहेले। पेट बड़ा पापी ह, ओके भरे खातिर नरको में साधारण आदमी जाये के तयार हो जाला। एकर आगि ना सहाले। का सिलहट आ का कलकत्ता, भोजपुरी मजदूर आदमी के आसाम क चाय वगान नन्दन-वन ह। जे वंगाल आ आसाममें कहीं जाला ओके एन्ने क भाई लोग जानेला कि ऊ कलकत्ता आ सिलहटे गइल वा। ओ अधिक लोग दिमाग दउरावेला त रंगपुर, दिनाजपुर आ डिवरूगढ़ तक। आ पता ना कि का सोचि के लोग नाकि भौंह सिकोड़ि लेला। ई लोग भुला जाला कि आसामे में कवरू-कमइछा ह जहाँ ले विश्व में जादू सप्लाई होले। एम्मे सन्देह ना कि ए लोग का दिल पर कवरू-कमइछा क धाकि ह आ ई लोग ओंजग का आदमिन से भरमेला। जादू का बल पर आदमी के भेड़ा आ बकरा बनाके पीछे-पीछे घुमावे क कहानी ई लोग रटले ह। कमइछा माई किहाँ कुँआरी लोग रहेला। अइसन बिसवास ऊ लोग जमवले ह कि जादू का बल से ऊ लोग चाहे त केहू के भी गाँछि पर वइठा के पाँच-छः सौ कोस भेज सकेला। आसाम भारत क एगो अजवे देस ह। ओंजग कुँआरी लोग क सासन ह। विना बिआह सेनुर क प्रयोग ओंजग क कुँआरी लोग करेला, बिना जोरन डाललि दही ओंजग जामेले आ कमइछा माई का प्रभाव से साँप का डँसला पर भी लहर ना आवे। पुरान आदमिन में आसाम प्रसिद्ध ह त चाय खातिर ना; ऊ कवरू-कमइछा खातिर। कवरू-कमच्छा क नावँ ह जादू खातिर। पहिले जव लइका-फरिका आसाम के पयान करसु त पुरान लोगन का अँदेसा हो जा कि कहीं लइकवा जादू का जाल में न पड़ि जा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुन्नी ठाकुर क गाँव मालिक रहे तब्बो परिवार क खरच-बरच क बोझ बा चलल। एक्के मरछहा लइका रहे। महतारी-बाप दून्नो मिल के आसाम का चाय बगान में अपना आँखि क पुतरी बिरुजुआ के भेजि दिहलन। बिरजू के एगो न एगो डाढ़ि भेंटाति गइलि। चाय-बगान में पहुँचि गइलन। गोरा साहेब का आगे पेशी भइलि। साहेब उनकर रोआँ पहचान के नापित-सूची में उनकर नावँ दरज करा दिहलन। बिरजू चलफल लइका रहे। ऊ बड़ा चलता निकलल। थोरही दिन में ओकर साहेब से जान-पहचान हो गइल। अपना गावें-गिरावें क नाऊन के काम दिवावे खातिर बिरजू क हल्ला मचि गइल। ऊ अपना हित-परीत के चाय-बगान में भरि दिहलन। उनका भयने क गदह पचीसी रहे। धूरि लगावत रहे। घर क काम-काज करे क ओके चिन्ता ना रहे। बाप खटत रहे बेटा देखत रहे। एक दिन बाप से ना अड़ाइल ऊ झिड़कलसि—'ससुर मरि जाइब त भीखि मँगब। का जानत बाड़ कि हम अमर हईं, हम एही तरे कमात रहब, तूँ खात रहब ? चेतु; चेतु।'

सनगर बेटा बाप क उत्तर ना दिहलसि बाकी बाति करेजा में धँसि गइलि। अपना गर क तँती राजा सोनार किहाँ बन्हकीराखि के रुपया लिहलसि आ बिरजू मामा किहाँ आसाम भागि गइल।

बिरजू देखि के सन्न रहि गइलन—'भयनवाँ ! तूं का रे ? तोरा त घरही केहू करे वाला नइखे।'

'मामा ! जले बाबू बान, घूमि-फिरि लेईं। फेरि त कोल्हू क बैल होखही के बा। तू अपना लोक क बड़ा चरचा करत रहल ह। मन चलि गइल ह।'

'ठीक बा; रहु। कुछ कामो करबे ?'

'बइठल का करब ?'

'अपने काम न ?'

'हँ; आपन काम नींक बा। एम्मे सुतंतर रहब।'

'ठीक सोचत बाड़े। कुल्ली लोग क चूल काटु। चूल काटत-काटत गुनी हो जइबे। काम-काम के सिखावेला।'

'बिरिछ कुल्लिन क चूल काटे लगलन। ए काम में उनकर मन लागल। बड़ा नीक नाऊ निकललन। उनका किहाँ भीड़ लागल रहे। बिना कंघी लगावल सिर क बाल बरोबर काटे में उनकर जोड़ केहू ना भइल। उनकर सोहरत चाय-बगान में फइलि गइलि। बिरजू चारि महीना क छुट्टी पर घरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइलन। बिरिछ उनकर चार्ज सँभरलन। विरजू अपना भयने के साहेब क चूल काटे क भार सौंपलन।

भारत परतंत्र रहे। ओघरी चाय-वगान क मैनेजर अँगरेज होखे। जेवना चाय वगान में विरिछ काम करसु ओकर मैनेजर रे साहेव रहलन। दस हजार कुल्ली ओमे काम करसु। आठ-दस हजार कुल्ली क मालिक रे साहव का पेशाब से वगान में विराग जले। रे साहब क वंगला पर जेकर पेशी हो जा ओकर धोती ढील हो जा। साहव साढ़े सात फुट क गोरा जवान रहलन। शरीर दोहरगर रहे। मोटि गरदन, मोटी-मोटी जाँघ आ मोटी-मोटी मुँसड़ो रहली स। चाकर छाती आ चाकर लिलार रहे। मांसल शरीर वनल रहे। पहलवान क भ्रम हो जा। लाल-लाल वड़ी-वड़ी आखि चनोर कपार में बड़ा तेज रहे। शरीर क कुल्हि बार भूअर रहे। साहेव वंगला का आगे सप्ताह में एक दिन सवेरे आठ बजे आरामकुर्सी पर हंटर लेके वइठि जासु। अपराधिन क पेशी होखे। उनका आगे गइले बड़ दण्ड रहे। जेकरा के घूर के ताकि देसु ओकरा पेशाव उतरि जा। जीउ धक्-धक् करे लागे। अँगरेजी शासन क पूरा आतंक उनका में मूर्त्तिमान रहे। जेतना ऊ देखत क भयानक लागसु ओतना हृदय क क्रूर ना रहलन।

बिरिछ का परीक्षा क पहिला दिन रहे। भगवती माई क मनौती मनलन। सुमिरि के साहेव क चूल काटे चललन। साहेव क बँगला देखत जीउ धक्-धक् करे लागल। परीक्षा देवे केहू ना चाहे वाकी विवशता में देवही के परेला। विरछ भागि के कहाँ जइतन। पाँच मिनट क विलम्ब असह रहे। सवेरे क साढ़े छः बजल आ बिरिछ वंगला पर हाजिर। दरवान साहेव के खबर दिहलसि। थोड़ी देर में परीक्षा-भवन खुलल। विरिछ पइठलन। साहेव कुर्सी पर चूल कटावे खातिर वइठल रहलन। टेवुल पर छूरा, कैंची, सिल, साबुन, तौलिया सब सामान पड़ल रहे। ओंजग नापित के आपन सामान क उपयोग कइल मना रहे। विरिछ साहेव क झुकि के प्रणाम कइलन। संकेत पा के छूरा, कैंची ठीक करे लगलन। चूल काटे क काम भगवान के सुमिरि के आरम्भ क दिहलन। मन में शंका वनलि रहे कि कहीं फेल न हो जाईं। दूसरा का हथियार से लड़ाई लड़े के रहे। जीवन में पहिली बार दूसरा का हथियार से संग्राम प्रारम्भ कइले रहलन। बड़ा दिमाग लगावे के परे। साहेव का नाराज होखे क भय लागल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिरिछ क ध्यान साहेब पर रहे आ साहेब क बिरिछ पर। दूनो एक दूसरा खातिर अजनबी जीव रहलन। साहेबो क जवानी रहे आ बिरिछो क। साहेबे का ना; बिरिछो क शरीर बनल रहे। लंगोट काछि के मेहनति करसु। कुछ दिन अखाड़ा में लड़लो रहलन। साहेब बड़ रहलन आ बिरिछ छोट। साहेब छरकाह रहलन आ बिरिछ मोट। साहेब गोर रहलन जेतने बिरिछ करिया रहलन ओतने। गोर-करिया क ई दूनो जना सच्चा प्रतिनिधि रहे बाकी बिरिछ क रंग पक्का रहे। बिरिछ साहेब की गोराई से हैरान रहलन आ साहेब उनकी सँवराई से। भेंट क पहिला मौका रहे। बिरिछ क उनका से बोले बतियावे क भड़क ना खुले। ऊ कंघी-कैंची उठाके उनके बाल बे रेप काटत जात रहलन। मन क डर जनाए ना दिहलन। मन के खुटुका लागल रहे कि साहब का मन लायक चूल काटे में चूकब त्यों डाँट परी। पीछे की ओर ले बाल काटत रहलन साहब पूछलन—'टुमारा नाम क्या है ?'

'सरकार, बिरिछ।'

'ठीक बोलो। क्या नाम है ?'

जीउ धड़कल बाकी गलती समझ में ना आइलि। उत्तर दिहला बिना काम चले के ना रहे डीढ़ होके कहलन—'रामबिरिछ।'

साहेब घुर के तकलन। रामबिरिछ डूबे उतराये लगलन। बड़ा फेर में पड़ि गइलन। बाल काटे में चूक ना भइलि, नावें बतावे में गड़बड़ हो गइलि। चेहरा फक परि गइल; पिअरी छा गइलि। साहब कुल्हि रहस्य समझ गइलन। मुसकियात पूछलन—'पढ़े हो ?'

'जी।'

'कहाँ तक ?'

'सरकार चारि तक।'

'टुमारा मास्टर टुमारा नाम हाजिरी में कैसे पुकारटा ठा ?'

बाबू साहब क उच्चारन याद आ गइल। बिरिछ हिम्मत बान्हि के कहलन—'रामवृक्ष।'

'हाँ; बिल्कुल ठीक।'

बिरिछ क हजार मुट्ठी क जीव एक मुट्ठी क हो गइल कि विलायत क रहे वाला ई गोरा हमरा ले हिन्दीयो नीक जानत बा। बतिअवला से निर्भय हो गइलन। उन्हें गर्व आ आनन्द क अनुभव होखे लागल। अपना पूर्व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभ्यास का कारण चूल काटत-काटत आगे आ गइलन। साहेब तड़पल—'पीछे चलो। आगे से चूल मत काटो।'

बिरिछ डरि के पीछे खड़ा हो गइलन। हाथ-पाँव काँपे लागल। कामे ना करे। सोचसु—साहेब नाराज हो गइल। पता ना का सजा देई। साहेब मुड़ के देखलन। उनकर दशा देखि के बड़ा जोर से हँसलन—'क्यों डरटा है? म कुछ नहीं करेगा।'

साहस कइलन—'सरकार, का गलती भइलि ह।'

'टुम हिन्दुस्टानी है, हमारा गुलाम है। हम टुमारा राजा है। हमारे सामने खड़ा होना टुम्हें सोभा नहीं देटा। टुम काला आडमी है। चूल काटो।'

आज्ञा पाके बिरिछ चूल काटि के पूरा कइलन। साहेब बड़का आइना का सामने जाके खूब मजे में बनावल बाल देखलन, बड़ा खुश भइलन। आज्ञा भइलि—'हमेशा टुम्हीं आना।'

बिरिछ का जी में जी आइल—'हाँ, सरकार!'

साहेब ओ जमाना में दू रुपया निकालिके बिरिछ का हाथ पर फेंकि दिहलन। बिरिछ ओजंग ले उमँगि के चलि पड़लन जइसे परीक्षा भवन से इच्छानुकूल प्रश्न-पत्र पाके आ ओके हल कके परीक्षार्थी चलि जात होखे अथवा मोरचा जीत के सैनिक घर लौटत होखे। चाय-बगान की सड़क पर जात इनका मन में एगो बाति उठलि। ऊ सोचे लगलन कि गाँव पर बाबू साहब हमार राजा रहलन आ चाय बगान में गोरा साहेब। हम दूनो जगह परजा रहलीं! बाकी एतना अन्तर बा कि बाबू साहब क बाल बाबू सुविधा देखि के आगूहूँ ले काटसु आ ए गोरा साहेब का आगे जरूरत समझि के हम खड़ा होते बानी त तड़प उठत बान। दूनो साहेबन क अन्तर समझत बिरिछ चलि जात रहलन बाकी बुद्धि काम ना देति रहे, सन १९४४-४५ रहे।

अपना बात-व्यवहार से साहेब से बिरिछ क जान-पहचान बढ़ि गइलि। ऊ मेम साहेब तक सलामी दागे लगलन। बड़ी घराहि हो गइलि। साहेब का आगे जेवन उजुर लगा देसु ओकर सुनवाई होखे। मामा के गइलो पर साहेब उन्हीं से चूल कटवावसु। जेवन काम मामा से ना होखे तेवन बिरिछ क घालसु। बिरिछ नापितन के सरदार हो गइलन। रहे खातिर सब ले नीक घर मिलि गइल। गाय राखि लिहलन। छेकल मैदान में गाय चरे। ओमें अउरी खातिर मना रहे, साहेब का नापित के केवल ऊ सुविधा मिले। साहेब क ओर ले नापित के छुटि मिलि गइलि रहे। तार से घेरल मैदान में गाय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करिके सोझ हो जा। चौकीदार निगरानियों करे। जहाँ अउरी के राशन में नया चाउर मिले ओंजा बिरिछ के पुरान- चरान मेंहीं चाउर दिहल जा। बिरिछ क बड़ी मान रहे। भारत स्वतंत्र रहे। स्वनन्त्रता प्राप्ति का बादे क केवनो सन्-सम्वत रहे। बिरिछ साहेब क बाल काटत रहलन। अगल-बगल आ पाछे से बाल काटसु। साहेब प्रेम-विह्वल होके कहलन—'नापिट! आज टू डिवरू गर्‌ह जा रहा है?'

'का करे सरकार!'

'टुम लोगों का राजा आ रहा है।'

'हमन क राजा आपे हईं, सरकार!'

'नहीं, नहीं; टुम स्वटंट्र हो गया। टुमारा राजा जवाहर लाल है।'

'हम का जानीं सुतंतर भइल हजूर! हमन क राजा आप हईं।'

'नहीं टुम नहीं जानटा। हम एक डो महीने में अपने देश चला जायेगा। हम यहाँ नौकरी नहीं पसंड करटा।'

'अब मनेजर के रही सरकार?'

'टुम लोग रहोगे। तुम्हारे देश का आदमी रहेगा।'

'ई का कहत बानीं। हमरा त बिसासे नइखे होत। जेकरा राज में सूरज ना डूबे ऊ अब जात बा!'

बातचीत का रस में बिरिछ का आगे-पीछे क सुधि ना रहलि। आगे के चूल काटे लगलन। एतने में चौंकि के पीछे चलि गइलन। जीउ धड़के लागल। जाँधि काँपि गइलि। नापित के सुन्न देखि के साहेब हँसलन—'नापिट क्या बाट है? आगे से चूल टुम काट सकटा है। टुम आजाड है। अब गुलाम नहीं है।'

'ना, सरकार! हम आपका आगे कइसे खड़ा होइब?'

'नहीं, नहीं; डरो मत: टुम आजाद हो गया। टुम मेरे आगे खड़ा हो सकटा है। टुमारा राजा जवाहर लाल है। हम नहीं। हम भी टुम्हारे राजा को डेखने चलेगा।'

'आपो जाइब, सरकार?'

'जरूर जायेगा।'

साहेब क बाल बनि गइल। ऊ दू रुपया निकालि के बिरिछ का हाथ पर रखि दिहलन। बिरिछ साहेब का आगे झुकलन—'प्रनाम, सरकार!'

फेर पास का कमरा में घुस गइलन। मेम साहेब के देखि के आगे झुकि गइलन—'प्रनाम, सरकार!'

[शेष पृष्ठ २५ पर]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार के मुख्यमंत्री जी भोजपुरी के मान्यता

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

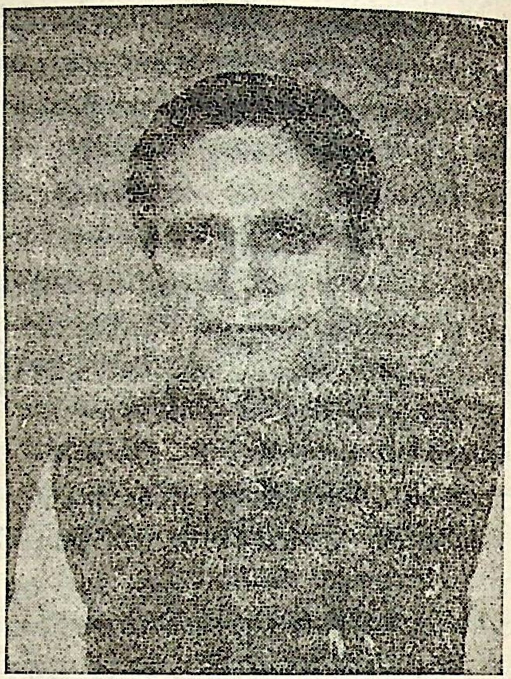

मुख्य मन्त्री श्री केदार पाण्डेय

बिहार के मुख्य मन्त्री श्री केदार पाण्डेय जी भोजपुरी क्षेत्र के निवासी हईं। अपने चम्पारण जिला का रामनगर थाना के तौलहा गाँव क वसिन्दा हईं। भोजपुरी खातिर अपने के खेआल बराबर रहल। अतना वड़ विद्वान होके भी अपने अधिका भोजपुरिये में बोलीला। जरूरी भइला पर भोजपुरी में भासनो दी हीला। मातृभासा से प्रेम भी देस-प्रेम के एगो नमूना ह। एकरा पहिलका अंक में हम अपने के जीवन-परिचय छपले रहलीं।

हमनी का (भोजपुरी परिवार, पटना) जब अपने कीहां भोजपुरी के सवाल लेके गइलीं त अपने कहले रहीं कि प्राइमरी कोर्स के किताब लिखाय हम ओकरा के प्राइमरी कोर्स में क देबि। २३ नवम्बर के भोजपुरी का एक सभा में भोजपुरिए में भासन देत अपने एह बात के दोहरवलीं। भोजपुरी कविता सुनिके अपने झूमि उठलीं। हम भोजपुरी के साहित्य पर कुछ प्रकाश डललीं आ ओकरा के अपने खूब पसन कइलीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरा में भोजपुरी क्रांतिकारी मोर्चा के सदस्य लोग आपन एगो शिष्ट मंडल अपने का पास हालही में ले गइले। अपने धेआन देके सब बात सुनलीं। भोजपुरी क्षेत्र में प्राइमरी कोर्स में भोजपुरी के पढ़ाई खातिर वचन दीहलीं। भोजपुरी साहित्य अकादेमी से मान्यता दिलावे के भी अपनेका कहलीं।

भोजपुरी के भाग त ओह दिन जरूर जागि जाई जेह दिन अपने अइसन बड़हन लोग एकरा के साजे संवारे में धेयान दीही। दिल्ली के संसद के कुछ सदस्य लोग भी तनी जोर लगाइत त भोजपुरी के बड़हन उन्नति हो जाइत।

हमनीका भोजपुरी के विशाल साहित्य कइ लेले बानी। भोजपुरी में कतने विषय पर किताब लिखाइल बाड़ी सन। बिहार विश्वविद्यालय में भोजपुरी पढ़ावल भी जाता। मध्यकालीन संत साहित्य के अगर प्रकाशन हो जाई त भोजपुरी के भंडार के केहू लोक भाषा के भंडार मोकाविला ना करी।

अपना मुख्य मंत्री के भोजपुरी परिवार समस्त भोजपुरी क्षेत्र का ओरि से हृदय से धन्यवाद देरहलीं बा। अपने के भगवान कायम राखसु। अपने से हमनी का ढेर उमीद बा।

जय हिन्दी ! जय भोजपुरी !!

[पृष्ठ २३ का शेष]

मेम साहब हँसली—'नाभिट, टुम आजाड है। हमलोग अब डेस जायेगा।'

'सरकार, दया राखब।'

बिरिछ साहेब का सामने आके फेर झुकि गइलन—'सरकार ! दया राखब। हम आप क गुलाम हईं।'

'नहीं; नापिट ! ऐसा मट कहो। टुम अब गुलाम नहीं है। टुम अपने डेश का राजा है। हम टुम समान है।'

'ना, सरकार आप क दया चाहीं।'

'जाओ अपने देश में मौज करो।'

बिरिछ साहेब के अन्तिम प्रनाम कइलन।

साहेब अपना देश में चलि गइलन आ बिरिछ अपना देश में स्वतन्त्र हो गइलन। बिरिछ रात में कभी कभी सपना देखेलन कि ऊ आ के साहेब अपने सामने खड़ा होके हाथ मिलावत बान। चौंकि के जागि जालन। लरिका-फरिका पूछेलन स—'सुतला में काहें बयात बाड़ ए बाबा ! आ काहें चौंकि के जागि जाल ?'

बिरिछ कहेलन—'ई आजादी का जादू क प्रभाव ह।'★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी मधुशाला

प्रेम के फूल जग में खिलो कि ना खिलो,
संसार के पर्दा हिलो कि ना हिलो,
आज जी भर अपना के देखे द रानी,
कालु अइसन रात मिलो कि ना मिलो!

× × ×

आके हमरा नीरस जीवन में, मधु रस बरसा जइह,
पंचतत्व बिलगी सब काया पर मदिरा ढलवा जइह,
लता अंगूरी से बन्हवइह मइअकि प्रान पियारी,
गंगा में मिलला के बदले, मधुवन में गड़वा जइह।

× × ×

साँप के जहर के सब का अनुमान रहेला,
इन्द्रधनु के रंगन के ज्ञान रहेला,
अँखियन में तू रह, ओठन पर प्यारी,
बोल हमरा इच्छा के ध्यान रहेला?

× × ×

तूफान बा हलचल बा, अउरी कहर बा,
पागल से नाचत एकरा में लहर बा,
मूए ना दीही हमरा के प्यारी ई,
अमृत बा ढेर ढेर, थोरहीं जहर बा।

—डॉ॰ सलिल

रुबाई

कोहना के अलग अरे बइठऽ मत
जियरा के कँपा-कँपा अइँठऽ मत
जोम जवानी के फूल अइसन बा
चोर नियर हिअरा में पइठऽ मत

२

हहरल बा हियरा के पोर-पोर
करिआइल रतिया में बहे लोर
दरपनिआँ चन्ना के अइला पर
अगरा के फूल खिले गोर-गोर

—अवधेन्द्रदेव नारायण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोर

● महन्थ मिश्र

दुख के लोर ! सुख के लोर !! विरह के लोर !!!

दुनिया का समूचा काया में लोर भड़ल-पड़ल बा। कवनों जीव एकरा से बाँचल नइखे आउर ना बाँचल रहो। एकर पूरा पता हमनीं के तब होई जब हमनीं चारों ओर फइलल दुनियां के ओर नजर फेरब। देखला पर हमनीं इ नतीजा पर पहुँचब कि समूचा संसार सुख-दुख के खेले के मएदान ह। जेने भी नजर जाला, सगरो लोरे झरत देखाई पड़ेला।

त, का लोर अभिशाप ह? कभी ना। एगो गरीब आदमी अपना गरीबी के वश में होके लोर बहावेला, लेकिन धन के लहर में लहरात नदी में खेले वाला आदमी भी लोर के रोक के ना राख सके। जहवाँ खुशी के फुहार छूटेला उहाँ दुख के लोर भी आपन राग अलापेला।

लोर विरह में भी बहावल जाला आउर मिलन में भी, त, का इ सुख-दुख के आँख मिचौनी खेले में सहायता करेला? फरक खाली इहे बा कि विरह के लोर विरह से भरल होला आउर मिलन के लोर खुशी के भी संघतिया बनाके ले आवेला।

धर्मशास्त्र के जानकार लोग कहले बा—'मन चंचल ह।' तरह-तरह के भाव मन में उठेला आउर मिटेला जइसे समुन्दर में लहर उठेला आउर फेर मेट जाला। जब कभी सुख के भाव पएदा लेला, त हिरदय में सुख से भींजल लोर हमनीं के कोमल आँख में भर आवेला, लेकिन दुख के भाव अइला पर करेजा मुँह तक आ जाला। आपन सब सुध-बुध भुला जाला कठपुतरी अइसन आदमी!

एगो भिखार, जे भूख से बेचैन रहेला, आउर दुखी जीवन बितावेला, उ जिनगी भर दुख के लोर बहावे में लागल रहेला, लेकिन का हमनी के कान उहां तक पहुँच के ओकर मददगार बन के ओकरा गरदन से लिपटेला? ना, त का इहे आदमियत के तकाजा ह? कभी ना। लेकिन, दोसरा तरफ उ आदमी, जे न्याय-अन्याय के भेद-भाव भुला के धन कमा के सुनर घर में रह के किलकारी भरेला, खाली सुख के लोर टपकत अपना कपार पर देखेला। ओइसन सुखी आदमी के पाछे-पाछे धउरे वाला हजारो आदमी मिलेलन, त का उ दीन हीन आदमी समाज खातिर कोढ़ बा, प्यार करे लायक नइखे, जे हमेशा लोर बहा-बहा के अपना भाग के कोसेला। उ भिखारी के हरेक आह में इहे करुण आवाज रहेला—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"रोना है केवल रोना है, जीवन रोता ही रहता है।"

कइसन कठोर विधान बा भगवान के! एक तरफ खून के बूंदा टपकत देखे वाला आदमी खुशी से हँसेला आउर दोसरा तरफ खून से रंगाइल कपड़ा पहिरले आदमी संसार के रंगमंच पर आपन नाटक देखावे खातिर लोग के सामने आवेला आउर आह भरत परदा के ओट में जाके छिप जाला।

धन्य ह उ हमार समाज! जे ना जाने कतना के हँसावेला आउर कतना के रोआवेला—काहे? एके सफल कलाकार द्वारा बनावल एके चीज में अतना फरक? कोई हँसता, तड़पता,, बिल्लाता आउर कोई मस्ती में झूमता मने-मने खुशी के गींत गावता। हँ, इ समाज ह हमर आउर राउर समाज जे में राजा भी रहेलन आउर रंक भी।

एमें भला दुनिया के बनावे वाला के का दोस? दोसी त उ वा जे गरीबन के मरई में आग लगावता, गोर से रउंदत चलता आउर ओकनी के दुख से भरल आवाज के तनिको परवाह नइखे करत। भला, इ लोर के कटोरा से बचल के वा? अइसन कवन आदमी वा जे जिनगी में ना हंसल, रोअल आउर गावल! जबाब मिलेला कि अइसन केहू नइखे। त, फेर काहे अइसन वदबू अपना समाज में घुस गइल बा? लोर बहावे के भेद से ही समाज में इ फरक वा। एक आदमी दुख से भरल जिनगी में रह के अपना हिरदय के टटोलेला आउर चारों ओर अन्हार देख के चीख उठेला। दोसर आदमी चारों तरफ अंजोर देख के सुख के जिनगी बितावेला।

लोर कवनों खराब साधक ना ह, उ त हमनी के बीतल घटना के वर्तमान के साँचा में ढालेला, हिरदय के दुख के साक्षात्कार करावेला। हमनीं के आँख के कटोरा जब लोर से भर जाला तब भला कवन अइसन आदमी बा जे हिरदय के दुख के ना समझ सके? एके साथे सुख आउर दुख के परिचायक बन के इ लोर आदमी खातिर कतना उपयोगी बा, एकर गवाह बने के काबिल उदाहरने हो सकेला। असफलता के कठिन राह पर भटकत आदमी के जीवन में आमूल परिवर्त्तन लाके उनकर सफलता के कारण का लोर सिद्ध नइखे भइल? इ सच्चाई के पुष्टि भर्तृहरि के जिनगी के दिशा के पलटे में उनकर पत्नी के खराब चाल चलन के कारण जे उनका हिरदय से भाव उठल, उ लोर के ही साक्षात् सरूप रहे। एसे इ साफ झलकता कि कवनों घटना के घटला पर आदमी के हिरदय से जे विचार पएदा होला उ आउर कुछ ना ह, लोरे के परिचायक ह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साथे-साथे लोर जिनगी आउर मरन के बीच काम करे वाला साबित भइल बा। काहे कि इ साफ-साफ देखल गइल बा कि लोर में आदमी के जिनगी के राखे आउर मिटावे के ताकत बा। लोर आदमी के परान लेवे के कारण सिद्ध भइल बा। आँख से देखल हाले के घटना ह—एकलौता जवान बेटा के अचानक मरला से बाप भीतरे-भीतर अतना दुखी भइलन कि उनका आँख से एको बूँद लोर ना गिरल! उ दबल लोर में अतना ताकत समटा गइल कि ओकरा से बहुत भयानक विस्फोट भइल। सचमुच उ घटना बहुत करुण और हिरदय के फारे वाला बा। उ इ कि दुख में डूबल बाप भी अपना मरल बेटा के साथी बन गइलन। एसे इ साफ साबित होता कि लोर के कतना उपयोगिता जिनगी में बा। ओकरा में जिनगी के धारण करे और परलोक के राह देखावे के ताकत बा। सुख आउर दुख जइसन दू विरोधी के बीच पड़ल गहीर खाई के पाटे के श्रेय लोरे के मिलल बा। लोर के उपयोगिता अतना अधिका बा कि ओकरा के दिन-रात अपनवले रखला में भलाई बा आउर उ आँख के सिंगार बने लायक बा।

कहे के ना होई कि लोर हमेशा मन केउदास करे वाला खबर लेके आवेला, खुशी आउर उल्लास के भी खबर लेके आवेला! एमें चतुराई के काम बा पहचाने के! नीर-क्षीर के भेद करे वाली बुद्धि के! लेकिन का अइसन तेज बुद्धि बा केहू के जे एकर असलियत के चीन्ह ले? अइसन तो शायद विरले ही समाज में मिलिहन।

असलियत तो इ बा कि आदमी के जिनगी के दू गो अलग अलग रासता बा—सुख-दुख के, हंसी-रोआई के। सुख आउर दुख जिनगी के प्रधान अंग ह, हंसी आउर रोआई त जउआँ भाई-बहिन ह। जइसन कि 'पंत' जी कहले बानी—

"यह साँझ उषा का आँगन,
आलिंगन विरह मिलन का।
चिर हास अश्रुमय आनन,
रे, इस मानव जीवन का॥"

सांझ आउर उषा के तुलना जिनगी के सुख-दुख से करे में कवि अत्यन्त भावुक बन गइल बारन, त का रोआई आउर दुख के नीच निगाह से देखे के चाहीं? ना। संसार के सब चीज़ से पेयार करे के चाहीं। कवनों अइसन चीज नइखे जेकरा के नीच समझल जाव। असलियत त इ बा कि सब चीज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिस्थिति के गुलाम बा। अनुकूल परिस्थिति के रहला पर एगो प्रधान हो जाला आउर प्रतिकूल परिस्थिति के रहला पर दोसरा के जड़े साफ हो जाला।

कवि के वाणी भविष्य के वाणी ह। उनकर लेखनी जे कुछ भी साफ कागज पर लिख देहल, उ महान उपदेश बन के आज भी अन्हार हिरदय के अँजोर करे में लागल बा।

"संसार में किसका समय है एक-सा रहता सदा,
है निशि दिवा-सी घूमती सर्वत्र विपदा सम्पदा।
जो आज़ एक अनाथ है, नर नाथ कल होता वही,
जो आज उत्सव मग्न है, कल शोक से रोता वही॥"

समय के फेर से बदलत भाग्य-दशा के पलट सकेला? कोई ना। भगवान जे कुछ भी हमनी के लिलार में लिख देले बानी उ मेंटे वाला नइखे। अपने समाज में हमनीं अइसन आदमी के भी दरसन करीले जे पहिले सुख के राग अलापत रहे उ आज अपने खून से फगुआ खेलता। कइसन बा हमनी के चम-चमात चानी के टुकड़ा अइसन जिनगी।

सुख के नींद में खर्राटा लेवे वाला आदमी त रसगुल्ला छील-छील के खाता, आउर दुख में लोर बहावत आदमी दुआरे-दुआरे छिछिआता-भिखारी के रूप में। अइसन दुख से भरल स्थिति में एगो लइका अपना माई-बाप से अलग रहता, आपन सुनर मेहरारू से अलग रहता। काहे! खाली भूख मेंटावे खातिर, पेट के दरद शान्त करे खातिर, का अइसन घोर अन्याय कोई भी हृदय वाला आदमी अपना आँख से देख सकेला? कभी भी ना। लेकिन अइसन घटना त आज अपना समाज के नियम बन गइल बा।

जिनगी भर लोर से भरल दिन बितावे वाला आदमी का सुख के सपना देखेला? हँ, देखेला तो जरूर, बाकिर ओइसन सौभाग्य नसीब कहाँ बा? एक गरीबिन मतारी जे हमेशा अपना बेटा से अलग रहेली आउर आपन बेटा के दुलार के भाव के हिरदये में राख के एह लोक से बिदा होखे खातिर तइयार हो जाली। अइसन विरह से भरल दुख के हालत में लोर बहावे के अलावे ओकरा पास रहिए का जाला? इहे ना उ त एगो महान् निधि भी खो बइठेली—"पेयार के भरल गगरी।" लोर बहावत-बहावत मरन-सेज पर सुतल उ अचानक कह उठेली—

"दैव, पेट की भूख जहाँ है, वहाँ हृदय की भूख न देना।
जलने को जो बनी चकोरी, उसको चन्द्र-मयूख न देना॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधूरा वृत्त

जे मिलल बेखिलल जागरन के बिना
भोर आइल जहाँ में किरन के बिना ...

ओट में चांदनी के लुकाइल मिलन
मुरिझयाइल जवानी रोवल बालपन,
नीक लागे जवानी में मजधार भी
रस मिलेला कबो ना चुभन के बिना ....

वासना चुलबुलाइल इशारा मिलल,
फेजे बुझाइल जे सबका किनारा मिलल,
बचपना जे रहल चाह मन के पुजल
होस आइल कहाँ फिसलन के बिना...

बह गइल सावने में बसंती पवन,
रसरसाइल टिकोढ़ा पुकारे सजन,
रस ना आवे मधुर बेमजा हो गइल
कामिनी काव्य जस आभरन के बिना...

फूल-सौरभ केहू के महक बावला,
तूरि धीरज के बंधन करे फासला,
सब्द माला छिटाला सुघड़ गीत के
बच ना पावे हिया तब जलन के बिना...

हर तरह के खुशी में खुशी ना मिले,
दिल कसक के जरे होंठ तबहूँ खिले
तूरि के अब कली बागवां रो रहल
बाग जेकर खड़ा बा सुमन के बिना !

जे मिलल बेखिलल जागरन के बिना
भोर आइल जहां में किरन के बिना !

—कन्हैया सिंह 'सदय'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी :

पह फाटे के पहिले

—कृष्णानद कृष्ण

जाड़ के दिन रहे। पछिया वेआर बहत रहे। ठंढा से समूचा शरीर पीपर के पतई अइसन काँपत रहे। दाँत कट-कट करत रहे। बुझात रहे जे हाथ-गोड़ के अँगुरी काटि के गिर जाई। ढंढा से नसन के खून जमल जात रहे। सोचे के शक्ति धीरे-धीरे जबाव देत रहे। अपना के ठंढ से बचावे खातिर हम धीरे-धीरे सुनगत कउड़ा भिरी बइठल जरत बुझत अंगोरन के देखत रहीं।

अन्हरिया रात कुच-कुच। हाथ के हाथ ना सूझत रहे। रात साँय-साँय करत रहे। आकास में छितराइल तरइन के पाँत कबहूं-कबहूं भगजोगनी उस चमक जात रहे। गाँव के लोग खा-पी के अपना-अपना बिछवना में लुका गइल रहे। शायदे कवनो आदमी अबहीं ले जागल रहे। सउँसे गाँव निरभेद सूतल रहे। सरदी के डर से एक ओर लोग कंवल आ रजाई में लुका गइल रहे। दोसरा ओर दूर खेत के मेड़ पर कंवल ले ले लोग खेत में पड़ल अनाज के रखवाली करत रहन।

कउड़ा गँवे-गँवे सुनगत रहे। हम कउड़ा का नजदीक बइठल रहीं। मन में तरह-तरह के विचार समुन्दर के लहर अइसन उठत आ गिरत रहे। दूर कहीं उरुआ के रोवल सुनके करेजा केरा के पतई अइसन काँप गइल। हिरदय अपसकुन के आसंका से भर उठल। सउँसे सरीर में सिहरन के एगो लहर धउर गइल। मन चिंचित हो उठल। मन में उठत विचारन के एगो झटका देत कहलीं "ना ना, अइसन ना हो सकेला। उ जरूर अच्छा हो जइहें।" —शंकालु मन ना मानल। शक मिटावे खातिर उठके देख लेल अच्छा बुझाइल। चदर सम्हारत उनुका खटिआ के नियरा गइली। आँखि बन्द। चेहरा पर शान्ति विराजत रहे। मन में शंका भइल। कहीं एकदम शांत त............ना, ना, अइसन नइखे। मन के संतोष भइल। उनुका के सुतल छोड़ के हम बहरी आ गइलीं।

देह प चदर सम्हारत कउड़ा के नीयरा रखल ईंटा पर हम बइठ गइलीं। कउड़ा के आग निझा गइल रहे। कउड़ा के हाथ से उटकेरत पुअरा डालि के आग लहरा ले लीं। सउँसे ओसरा भक से अँजोरा में नहा उठल। कउड़ा प बइठल-बइठल आँख झीपत रहे। जागे के कोशिश में रामायण के चौपाई गुनगुनात रहीं। दीरीखा पर रखल ढिबरी के मधिम रोसनी सउँसे दालान में पसरल रहे। ढीबरी के लौ से दीरीखा में करिखा के परत पर परत जमत जात रहे। हमरा दिमाग में विचारन के अन्हड़ बहत रहे। सोचत सोचत हमरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथ के अँगुरी कउड़ा के आग से ठेकि गइल। सउँसे देह झनझना गइल। रोआँ खड़ा हो गइल। एक दू मिनिट का बाद मन थिराइल। गली में लड़त कुतन के आवाज रात के सनाटा के तुरत हमरा कान में पड़ल। दिल काँप गइल। धड़कन तेज हो गइल। बाँवा आँखि के बेर-बेर फरकला से शंका के जरि अउर मजबूत भइल जात रहे।

"बबुआ"

बोली सुनके धेआन टूटल। उठके अनुका खटिआ भिरी गइलीं। पुछलीं— "कुछ कहत रहीं का ?"

"पानी"

—अतना कहि के उ चुपा गइले।

पानी उनका के पिया देनी। गिलास रख के उठत रहीं त देखनी ऊ हमरा ओर देखत रहन।

"अउर कुछ चाहीं का ?"— हम पुछलीं।

"ना"

उ इसारा से कहि के चुपा गइलन।

हम कउड़ा का नियरा बइठ गइलीं। बइठल-बइठल मन अकुता गइल रहे। रात के सूनापन काटत रहे। ओसरा से बाहर आके तीन डँड़ियवा के देख के अन्दाज लगावे के चहलीं बाकी कुहा गिरला के कारण असमर्थ रहलीं।

हम ओसरा में आ गइलीं। कउड़ा पर बइठत पुअरा पर सुतल सुरेन्दर के ओर देखनी। बुझात रहे जे घोड़ा बेंच के सुतल हं। नाक फोयें-फोयें करत रहे। खाय आ घूमे के बाद घर में का होंत बा एकरा से ओकरा कवनो मतलब नइखे। आखिर मतलब होखो कइसे। एकर कारन त उहे बाड़े। आ अपना प्रति उनकर बेवहार के इयाद परते मन घृणा से भर उठल। मन कइल कि हमहूं सूत रहीं। का हमहीं रात भर जागे के ठेका लेलें बानी ? सुरेन्दर के कतिना मानत रहन जइसे हम उनुकर बेटा ना रहीं। एह तरह के कतिनां बात मन में तैरत रहल—.........। उनुका के खटिआ पर निसचल असहाय परल देख के मन करुणा से भर उठल। एक पल खातिर। पास में पड़ल लकड़ी के टुकड़ा से आग उटकेर लेलीं।

रात बीतत ना रहे। जइसे जम गइल होखे। एक-एक पल काटत रहे। बइठल-बइठल टाँग दरद करे लागल रहे। आँख झिपे लागल रहे। पासे बिछावल पुअरा पर हमहूं रजाई ओढ़ के लेट गइलीं। आँख के थोरे देर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाद बुझाइल जे माटी के बनल टेंढ़ बाँगुर देवाल के सतह अलग-अलग चेहरा बन के हमरा ओर देखि के हँसत होखे। आ तेज आवाज में कहत होखे—"गोरे दे राम खेलावन के। हमनी के रोआँ-रोआँ उनुका के चैन से ना मरे दीं।"

—आ हमार आँख खुल गइल। हम उठ के बइठ गइलीं। आँख में कुछ दिन पहिले के दृश्य नाच उठल। बाबू दुअरा पर बइठल रहन। हम पढ़त रहीं। एही बीच में झगरुआ हाथ में रोपेआ लेले आइल। हम बाबू के आँखिन में छलकत खुसी देखलीं। उ भीतर दालान में गइले। थोरकी देर में बाहर आके उ बतवलन तीन सौ पचहत्तर रुपया भइल।

झगरुआ के आँखि छलछला अइली स। उ कुछ ना बोलल। बाबू के हाथ में रोपेआ रखके उ बोलल—"मलिकार, अब हमार पीठ ठोंक दी।"

ओकरा बोली के खुसी आ करुणा आजुओ हमरा हिरदय के झकझोर जात बा। बाबू रोपेआ गिन के बोलले—"बाकी रोपेआ के का होई ?"

"मालिक कम से कम सुदवा में से अतिना छोड़ दीं। जवान बेटा ना नोकसान भइल रहित त हम कुल्हि लौटा देतीं।"

बाबू का मुँह ओर देखत उ घिघियात कहलस।

"तोरा बेटा के जीये-मरे के ठेका हम नइखीं लेले। बाकी पइसा लौटा दे ना त हैण्डनोट बना दे।"

उ कुछ ना बोलल। चुपचाप सादा कागज पर अँगूठा के निसान दे के दुअरा के नीचें उतर गइल।

हम कहलीं—"बाबू कुछ रोपेआ छोड़ देतत का होइ त ?"

अतना सुन के उन बिगड़ उठले—"नालायक कहीं का, तोरा का बुझात बा। तें त सफेदी झार के घुमताड़े। हम नूँ जानत बानी।.... ....तें चुपचाप आपन काम कर।"——खोरी में लड़त कुत्तन के आवाज सुन के धेआन टूटल। मन में कुछ शक भइल। उनुका खटिआ का ओर नजर फेर के देखलीं। मन ना मानल। उठ के देह टोवनी तब जाके मन के तसल्ली भइल। फेरु कउड़ा के भिर आके बइठ गइलीं। कउड़ा के आग निंझा गइल रहे। गरमी के कवनों उमेद ना रहे। हम आग उटकेरत हाथ सेंकें के असफल प्रयास कइलीं।

कउड़ा पर बइठल-बइठल हम सोंचत रहीं--का ई जीवन भी एक दिन आग अइसन ठंढा हो जाला। तबहीं फद्-फद् के आवाज से धेआन टूटल। ढ़ीबरी का ओर देखली ! एगो फतिगा के बिछउतियाँ पकड़ ले रहे। फतिगा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भागे के कोसिस करत रहे बाकी भाग ना सकल। येही तरह से आदमी……भ

"बबुआ"

आवाज सुनके उठलीं। पूछली-"का कहत बानी?"

"पानी"

टनक बोली सुनके मन खुस भ गइल। गिलास में पानी ढार के पिया देनी। गिलास रखे जात रहीं त उनुकर बोली सुनलीं। पुछलीं—"कुछ अउर चाहीं का?"

"खइनी"

अतना कह के उ चुपा गइले।

ताखा पर खइनी आ चुनउटी से चूना काढ़ि के हम खइनीं बनावे लगलीं। ताखा पर ढिबरी वरत रहे। ढिबरी देख के इयाद परल। ढिबरी भी तेल खतम भइला पर एक बे खूबे अँजोर क के बुताला। कहीं इनको माथे त उहे बात नइखे। आ हमार मन एगो अज्ञात भय से काँप उठल। मन के एगो झटका देली ना, ना———अइसन कवनो बात नइखे। उ जरूर अच्छा हो जइहें। आ उठ के उनुका खटिया भिरी गइलीं।

आवाज देलीं —"खइनी लीहीं।"

अतना सुन के उ आँख खोलले आ कहले —"तनी ओठवा में जाँत दें।"

खइनी उनुका ओठ में जाँत के हम कुछ देर ले खड़ा रहीं।

"बबुआ तूँ जाके आराम कर। हमार चिंता तूँ छोड़ द। अब हमरा कुछ ना होई। जा सूत। हमरो के तनी निचिंत सूते द।"

—अतना कहि के उ आँख मूँद लेले।

उनुका मुँह से अपना खातिर 'बबुआ' सुन के हम चकचिहा गइलीं। ई सुबुधि उनका कहँवा से आइल। बुझाता सेवा कइल देख के। मन में सोंचली, चल कम से कम मरहूँ के बेरा त उनकर मगज ठेंकाने आइल।———आ हम रजाई ओढ़ के सुत रहलीं। कई दिन ले जागल रहीं एह से तुरुते नीन लाग गइल।

आँख लगला का थोरे देर बाद हम एगो सपना देखनी—"बाबू के बहुत से लोग घेर के पीट रहल बा। उनुकर कपार फाट गइल बा। सउँसे देह खून में बोथाइल रहे।"—आ हमार आँख खुल गइल। हम उठके उनुका खटिआ भिरी गइलीं। देखलीं। ढिबरी का लगे बिछउतिया एगो फतिंगा के धइले बिया।

[शेष पृष्ठ ४२ पर]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दुतान : एक ठे सानेट

कई बरिस से खोजत रहनीं, बाकिर दरसन
दुरलभ रहे तोहार, तबे तऽ तूँ ना मिललऽ
आज अचक्के देखनी तोहके जबतूँ हिललऽ
लगियेँ हमरा परछाहीं अस। चेहरा कइसन—
सूखल, फेफरी परल ओठ पर, सुटकल रऽहे।
देंहि—देखि के काँपल जियरा। देखनीं—बइठल
ठोकर, हाड़ेहाड़ सभत्तर चमड़ा मँउसल
जइसे जरल लुकाठो; कोई पचकल रऽहे।
सोचले ना रहनीं; तोहरो अइसन दिन आई,
तोहरे लइका तोहरे हाड़ चबा घालिहन सऽ,
तोहरे नाँव बेंचिके तोहके खा घालिहन सऽ,
मति घबड़ा, गलि अइहन सऽ ई कूल्हि कसाई;
जेकरन न तोहके हिंदुस्तान रहे देहलन सऽ
ना सुराज कऽ सच्चा अरथ कई देहलन सऽ।

—अशोक द्विवेदी

★

दू गो मुक्तक

एक

कुछो त ना, बात आइल-गइल हो गइल।
हँसे के चहनी, त मनवाँ तनी रो गइल।
अनेरे बेजनमल लरिकाई फुलाइल—
जब, बावे का माथे लरिको एगो हो गइल

दू

अफुराई का मनवाँ ई, धँवड़ी टँगाइल बा।
महफिल का भीतरे नु फँफरी लुकाइल बा।
का कहीं, जीर के ढगे भर धर लीले—
जनमे से, एने त, टँगड़ो छनाइल बा।

—हिमांशु रंजन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि भिखारी ठाकुर

—अवधेश प्रधान

[कवि भिखारी का अध्ययन में संकट ई बा जे उनकर कवनो सुसंपादित रचना संग्रह उपलव्ध नइखे । फिर भी जेवन कुछ मिलल ह, ओकरा आधार पर हम संक्षेप में आपन बात लिखलीं हँऽ। एतनी एकन भिखारी अइसन कवि पर कुछ नइखे । धन्यवाद श्री महेश्वर प्रसाद जी के, जे ऊ 'जनकवि भिखारी ठाकुर, में जानकारी क ढेर बात इकट्ठा क देले बाँड़न । हम फिर कबो फुरसत से भिखारी के आ खासकर 'बिदेसिया' के लेके अपना पाठकन से मिलब—अवधेश प्रधान]

पीपर क फेंड़ । बरम वावा क चउर । अन्हार हो गइल रहे । ढोलक झाल लेके भुइयाँ दरीं पर गोल वइठि गइल रहे । एक-एक ले कीर्तन गवाइल बाकी एगो कीर्तन पहिले-पहिले सुने के मिलल आ ओकर लय वहुत दिन ले मन में घमकत रहे । तव से ऊ गाना वेर वेर सुनलीं आ कवि भिखारी ठाकुर पर सोचते रहि गइलीं ।

भिखारी का देंह छोड़ले ढेर दिन ना भइल रहे ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का छात्रावास मार्ग पर हम टहरत रहलीं । विजुली गोल रहे । चारू ओर सुनसान । तवले एगो गाना सोचे कऽ लऽर तोरलस, अवाज निअराँ आइलि—'कवनी नगरिया से आवेली बरतिया रँङ्वा पिअरे पिअरे' । रेक्सा का धड़धड़-पड़पड़ का वीच एगो लमहर सूर आ फेर—'आरे, कवनी नगरिया भइली सोर रँङ्वा पिअरे पिअरे' एगो रेक्सावाला भिखारी क ऊहे गाना गावत हमरा वगलसे निकलि गइल रहे आ हम के जनाइल जे हमार प्रिय कवि हमरा आस-पास वा, कहीं गइल नइखे ।

खेत खलिहान में; कटिया विनिया पर, सोहनी-रोपनी में, सड़क बजार में, दिन में, रात में—कब्बो भिखारी ठाकुर के सुनल जा सकेला । भिखारीं कर्म आ गति क कवि हउवन । काम करत क आ फुरसत में भिखारी अपना जनता का साथ रहेलँऽ । पसराम गड़िवान ईंटा लदले बाड़न । भूख लागलि बा । वैल रहि रहि के वइठ जात बा । चार दिन में लइकी के धान-पान भेजे के बा । काल्ह लइका के फीस जुमावे के बा । सहुआ से उरिन होखे के बा""अच्छा कूल्हि ठीक बा । अपना गरीबी के ना मरला का लचारी में ऊ बैल के एक सटहा जमइहन आ फिर ललकार के भिखारी क एगो पुरबी छोड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दीहन। सड़क पर खड़ा रहीं, कवनो न कवनों नवहा 'बिदेसिया' भा 'ससुरा में बलमा वा नदान' पिहकत मिलि जाई। भिखारी चरवाह-हरवाह, रेक्सा वाला क कवि हउवन, ऊ मेहरारुन क कवि हउवन, ऊ जवानन क आ बूढ़न क कवि हउवन; केहू के उनकर पुरबी, केहू के बिदेसिया, आ केहू के उनकर भजन भावेला। मय भोजपुरी इलाका का कंठन में भिखारी क सरस्वती गा रहलि बा आ हम देख रहल बानीं कि कवि भिखारीं डाँड़-सिवान, खेत खरिहान, टोल-महाल में हमरा आरी-पास बानऽ। एही कारन हम उनके विद्यापति, कबीर, सूर, तुलसी आ मीरा का पाँत में बइठल देखत बानीं।

भिखारी क काव्य प्रकृति विद्यापति आ तुलसी का मेरवन का निअरां-पास पड़ी। विद्यापति क शृंगार, प्रेम, सरसता, संगीत भिखारी में बा वाकी ओपर तुलसी क नैतिक मर्यादा, भक्ति आ वैराग्य क बहुत बोड़ असर बा। ई कहत कऽ हम भुलाइल नइखीं कि पंडिताई में भिखारी क तुलसी आ विद्यापति से कवनो तुलना नइखे। भिखारी में एगो जनता के खींचेवाला चमत्कार जरूर बा जेवन तुलसी, जायसी आ विद्यापति में बा, नाहीं त उ करोड़-करोड़ जनता क कवि ना बनतन। आज भिखारी भोजपुरी जनता, इलाका, संस्कृति क प्रतीक बनि गइल बाँड़न जइसे अवधी क तुलसी, मैथिली क विद्यापति।

तुलसीदास आ सूरदास क राम आ कृष्ण नीअर आदर होला। कबीर सबकर गुरु ठहरलन। जनता विद्यापति क शिवजी नीअर भक्ति करेले। भिखारी क बात अलगाँ बा। ऊ सबकर पुजारी हउवन। जनता भी उनकर स्वभाव जानि के आपन संङी बना लेले हऽ। भिखारी ई सिद्ध कइलन जे हम तोहने लोगन में से हईं, केहू दूसर नाहीं। जनता उनकर बिसास कइलसि। कवि भिखारी आ जनता क सखा-भाव परंपरा से एकदम अलग बा, एकदम नया आ विशिष्ट बा।

जनता ना जाने जे भिखारी कुतुपुर क रहवइया रहलन हँऽ, जे ऊ बहुत बड़ा आदमी हउवन, भा बहुत बड़ा कबि हउवन, आ उनके गावेवाला अबहीं ले नइखँऽ जानत जे ऊ १० जुलाई ७१ के देंह छोड़ दिहलन; जनता जानेले बस अपना भिखरिया के आ ओकरा बिदेसिया के, छपरहिया गीतन के।

संगीत भिखारी का साहित्य क महत्वपूर्ण अंग ह। कई तरह कऽ लोक धुनन आ लोक छंदन में उनकर रचना बाड़ी स। बिदेसिया छंद लय में मनहरण कवित्त का पजराँ परेला; लेकिन भोजपुरी उच्चारण का कारन संगीत ओकर बिलकुल फरकाँ बुझाला। उनकी केहें लोकधुन क वेराइटी मिली। कुछ चीज पदन से—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१) हम ना बसब तोहरी नगरी, ए जसोदा, हम ना बसब तोहरी नगरी....
(२) पनघट पर, फोरलन गगरी हमार, पनघट पर...

ए गीतन के पढ़ते चेतना में नगाड़ा तड़तड़ाए लागेला, ई बहुत बोड़ सिद्धि मानल जाई। दुसरा गीत में, सुरू में, ह्रस्व मात्रा वाला वर्ण बाँड़न सऽ, अन्त में ग ग का बाद री आ फिर—'हमार'; अब ई पूरा गीत गवला पर खाली लय आ नाद से पनघट पर गगरी फूटे क दृश्य बुझाए लागी। कवित्त, सवैया दोहा, चौपाई, चौबोला खातिर नाहीं बाकी अपना ए पदन खातिर भिखारी बरोबर इआद करल जइहें। उनकर ई काम आधुनिक कविन में अविनाशचंद्र विद्यार्थी जिया रहल बाँड़न, ई संतोख क बात बा।

उनकर नाटक पौराणिक आ सामाजिक—दू शीर्षकन मैं आवेलँऽ स जेवना में विनय, भक्ति, नैतिक मर्यादा, शृंगार, वैराग्य, समाज चिंता कई तरह क प्रवृत्ति मिलेली स। भिखारी के पढ़ला पर बुझाई जे ऊ परंपरा से (तुलसी सूर से) बहुत कुछ लेले बाँड़न; शास्त्रीय दृस्टि से दोष बाँड़न स, छन्द कतों कतों गड़बड़ बा, भाषा भी मेरवन बा—लेकिन ए कूल्हि का बावजूद ऊ भोजपुरी क विशिष्ट संस्कार देले बाड़न जेवना के अलगा के भिखारी के समझल ना जा सके।

राम, कृष्ण की लीलन पर लिखत खाँ आ अउरियो नाटकन में फुटकर ढंग से विनय-भक्ति क पद भिखारी लिखले बाड़न। वैराग्य क भी उनका में एगो गंभीर संस्कार बा जेवना से सन्त कविन क याद आवेला। 'राम राम बोलऽ विहान भइल तोता' ए भजन में भिखारी क आपन फकीराना रंग बा। रामकृष्ण क लीला वर्णन में बड़ी तन्मयता बा, बाकिर आपन विनय आ भक्ति का कारन भिखारी ओके रीतिकालीन ढंग क होखे से बचवले बाड़न। ई पूरा सृस्टि क मये क्रियाकलाप ओ महानब्रह्म क बृहद उपासना हऽ, समूचा विश्व ओ बिराट का वन्दना में तल्लीन बा—एकर भिखारी अनुभव कइले बानऽ—

'केहू जपत बा गाय चरावत केहू जपत बनिहारी में
भोजन करत में बालक सुमिरत भातदाल ले थारी में,'

कृष्ण क ध्यान भिखारी अनोखा ढंग से कइले बानऽ—

'मम हिय परबत कानन गाछी
तेहि के मध्य चरावहु बाछी,

ई खाली भिखारी कहि सकत रहल हँऽ। तुलसीदास मतिन भिखारी भी अपना व्यक्तिगत जीवन के बड़ा हीन बतवले बाँड़न, आ ए निवेदन में कवितावली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ विनय पत्रिक के दीनता देखे के मिली । ई भक्त की ओर से आपन साच साच कहनाम हऽ—

'कुछ ना कइलीं बरत, बानी पर धन हरत'

तुलसी कहलन जे भगवन, हम तोहार नाँव वेंच वेंच के खात पीयत था पुजात बानीं, भिखारी कहलन जे हम बानी पर धन हरल बानीं । कहाँ बानी भजन करित, कहाँ धन कमाए में लागल बिया । गंगामाई में भिखारी क ऊहे भक्ति बा जेवन कवनो भारतीय में होखे के चाही ।

वैराग्य का बावजूद भिखारी समाज से तनिको अलगाँ नइखँऽ । बाढ़, गरीबी, पारिवारिक कलह, अनमेल बिआह, विधवा, सवतिया डाह आदि सवाल उनका करेजा में बरोबर सुनगत बाँड़न स । महान कवि भरसक व्यापक से व्यापक समस्या खातिर वेचैन होला, अपना जमाना का दुख के बड़ी गहराई से बूझेला । कवि भिखारी अपना इलाका का घावन से परिचित बांड़न आ वेटी बियोग, बिधवा विलाप, पुत्रबध, गंगा स्नान नाटक पढ़ले पर पता चलत बा जे कवि में केतना सचाई बा ।

वर्तमान परिवारन में बढ़त बिरोध के भाई बिरोध आ पुत्रवध नाटक में भिखारी उरेहले वाँड़न । भाई बिरोध में जहाँ उपदर आ उपदर वहू का माध्यम से कुटिल भाई-भउजाई क यथार्थ चरित्र रखले बांड़न, उहें उपकारी आ उपकारी वहू अइसन साधु आदर्श भी देले बाँड़न । पुत्रबध में सौतिया डाह क क्रूर नतीजा देखावल बा । परिवारन का अलगाव से भिखारी क जिम्मेवार मन आहत भइल वा । ऊ 'भारत का भाई' लोगन से आपन बात कहले बान—

बालक छछनत बा विरोध से मातु न दूध पियाई ।

× × ×

झगड़ा लगावल पाप बरोबर समझ भारत के भाई ।"

विधवा विलाप आ वेटी-बियोग में लचार होके बूढ़ मरद कीहाँ जाएवाली लइकी नाहीं, खुद भिखारी रोवले बाँड़न । ए दू नाटकन में उनकर असली कवि-हृदय क परिचय मिलेला । 'मा विषाद …' वाला वाल्मीकि आ करुण रसावतार भवभूति इयाद आवेलन । कालिदास अज भा यक्ष बनि के रो सकत रहलन हँऽ बाकी भिखारी भोजपुरी इलाका क कोटि-कोटि अभागिनन क कोना अँतरा में दबावल दर्द क उद्गाता बनि गइल बान । जइसने भाव, ओइसने भाषा, ओइसने छन्द । वेटी-वियोग में कुल्हि रोवला-कलपला का बाद लइकी कहति बा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'रोवत बानी सिर धुनि, इहे छछनल सुनि, बेटी मति बेचे दीहऽ केहू के हो बाबूजी' ई जइसे भिखारी कहत होखें । ई पंक्ति बेटीबेचवा बाबूजी पर आ अपना समाज पर सबसे बोड़ चोट बा । भिखारी का ए रूप के भुलवा देहला पर उनकर कवनों रूप सोझघत ना मिली । विधवा विलाप क लइकी बड़ा दीन होके अपना 'बाबूजी' से 'पगली पर बगली भरवला' खातिर रोवले बा । का ए दीनता का पाछे भिखारी क हाहाकार करत विकट रोष नइखे ?—

'गोबर करसी कइला से, पिअहा छुतहा घइला से,
कवनी करनियाँ में चुकली हो बाबूजी,

भिखारी का पूरा साहित्य के देखे से जनाता जे ऊ स्त्रीचरित्र क सजग साहित्यकार हउवन । कुटनी, उपकारी बहू, उपदरबहू, तीर्थ नहाए वाली, विधवा, प्रोषितपतिका, बेचाइल बेटी, पतिव्रता—तरह तरह क स्त्री चरित्र ऊ देले बाँड़न । स्त्री संवादन में बड़ी सटीक भाषा भी आइलि बा । भोजपुरी मेहरारुन क वेराइटी ऊ अपना साहित्य में उपस्थित कइलें बानऽ । भाई, ननद, भउजाई, तरह तरह क सम्बन्ध भी स्पष्ट कइले बानऽ । 'बिदेसिया' में जेवना प्रोषितपतिका क चित्र देले बान ऊ काव्य शास्त्र का घेरा से वहराँ बा काहें कि ई कूल्हि पात्र भिखारी अपना आसपास का मौजूदा समाज से लेले हउवन । एही से उनकर प्रेम पर लिखल चीज नकलची गीतकारन का शौकिया विरह बकवास से ज्यादा टटका आ आधुनिक बा ।

'न्याय' में माता आपन दुख सुनावतिवा—

'   नव मास ढोवलीं मोटरिया हो बबुआ
दिन रात हूल आवे, घर ना आँगन भावे, चलत में गोड़ भहरात रहे बबुआ
जब होखे लागल पीरा, दुखवा समुझऽ हीरा, मुखवा से कहतानी कमती हो बबुआ
सुधि करऽ भइलाके, गूहमूत कइलाके, भाई मति जानऽ हमें धाई जानऽ बबुआ'

× × ×

'सुनऽ बबुआ बात पहिला, गाँव घर कहे बहिला, तब कइली छठ एतवार'

एमें जे अश्लीलता देखत होखे ओकरा से निवेदन बा जे ऊ दुख के समुझे, दुख से कमती कहल जात बा । वास्तव में पीड़ा का स्थिति में भाषा कौन रूप लेले ई समझावल ना जा सके, अनुभव कइल जा सकेला । एकर अनुभव भिखारी के रहे । 'द्रौपदी पुकार' में भी द्रौपदी क भाषा भरल सभा में उघार हो गइल बा—

'पैर में पीर, सरीर दुखित बा, मासिक करम से लचारी'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भिखारी क साधुनमें, तीर्थनमें, गंगाजीमें श्रद्धा बा, बाकी ऊ साधू आ तीर्थ नहाएवाला भक्त लोगन क लीला भी गवले बानँऽ। लइका खातिर भक्तिन साधू बाबा का गोड़ पर लोटि जात बाड़ी—'ए मोर साधू बाबा...' आ साधू बाबा उनकर धन लेके सरकहवा नारा धलेत बानऽ। 'गंगा अस्नान' में तीर्थन का भ्रस्टाचार क पोल खोलल गइल बा।

भिखारी अपना पीढ़ीए का बीच से आइल रहलन जेवना के नया पीढ़ी क फेर बदल बिलकुल नापसंद रहे, बटलो बा। लुंगी आ बबरी पर बिजुके वाला बूढ़न क कमी नइखे भोजपुरी इलाका में। तंग पोशाक पहिरला आ मेहरारुन का 'सुतंत्र बिचरला पर भिखारी व्यंग कइले बानऽ। ध्यान देवे लायक बात ई बा जे सब से अधिक ऊ आहत भइल बानऽ नई पीढ़ी में परिवार का बखरला से। माता-पिता ए नई हवा में अलग पड़ि गइल बाँड़न। 'बूढ़शाला' खातिर उनकर बेचैनी भी इहे प्रमाणित करति बा। कहीं-कहीं ऊ अपना पुरनका जमाना का मस्ती आ ठाठ के बड़ा दुख का साथ इआद कइले बानऽ।

भिखारी नाट्य शास्त्र विद ना रहलन बाकी उनका नाटकन में कुछ बात अद्भुत जरूर बा जेवना क कुछ संकेत जगदीशचन्द्र माथुर देले बाँड़न। उनकर गद्य क भंगिमा 'विधवा विलाप' आ 'बिदेसिया' का भूमिका में देखे के मिली। चरित्र के उभारेवाली मुहावरेदार भाषा क प्रयोग भिखारी कइले बाँड़न। अवधी भा ब्रज क पेवन ऊ अपनी भाषा में बेरोक-टोक लगवले बाड़न—'जेते सखा सब तुमरे साथ में मिलकर सकल समाजा।' 'पुत्रवध' में भिखारी पुत्र का मुंह से विमाता के पातिव्रत्य क उपदेश करवले बाँड़न। इहवाँ केशवदास वाली बेवकूफी उनके लचार क देले बा।

[पृष्ठ ३५ का शेष]

फतिगा भागे के कोसिस करत रहे। हम उनुका ओर देखलीं। उ एकटक से बिछउतिया का ओर देखत रहन।

हम पुछलीं-"कइसन तबीयत बा ?"

उ कुछ ना बोलले।

शंकालु मन शंका से भर उठल। बिछउतिया फतिगा के खा गइल रहे। ढिबरी भी फकफका के बुता गइल। हिरदय कवनो अपसगुन के आसंका से कांपि उठल। हम अनुकर नाड़ी टोवलीं। नाड़ी बन हो गइल रहे।

कउड़ा का नियरा बइठल निझाइल आग में हाँथ सेंके के कोशिश करत पह फाटे के इन्तिजार करत रहीं।★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लरिकाईं

धनि लरिकइयाँ के रहे बेवहार।

कबो खेलीं गोली, कबो खेलीं गुली-डंटा।
सीताराम कोइरी के तूरि लिहीं भंटा॥
दिन भरि घचरीं ना इचिको हरासीं।
खेलीं सतघरवा भुखाईं ना पियासीं॥

दिन भरि खेलहीं के रहे रोजिगार।
धनि लरिकइयाँ के रहे बेवहार॥

दोल्हा-पाती खेलीं चढ़ि अमवाँ के गाँछो।
कुकुरा से लेके डालीं गदहा में माँछी॥
डालते-डालत चले गदहा पराई।
लरिका के गोल सब लेला पिठियाई॥

आजुओ भुलात नइखे ओइसन लहार।
धनि लरिकइयाँ के रहे बेवहार॥

घर में से निकले सरीफवा के माई।
सँचखे आकास लेले माथ पर उठाई॥
लरिका के गोल देखि लागलि गरियावे।
कबो-कबो ढेला लेके खीस में चलावे॥

ओरहन पहुँचल हमरा दुआर।
धनि लरिकईयाँ के रहे बेवहार॥

गुलिया के खेल एक दिन अझुराइलि।
भइलि तीजहरिया तबो ना फरियाइलि॥
एक बेरि गुली सनसनाति चलि आइलि।
ठेहुना प बजइलि जीव झनझनाइलि॥

ठेहुना से निकले रकतवा के धार।
धनि लरिकइयाँ के रहे बेवाहार॥

जाड़ का फजिरवा कउड़ लहका के।
पुअरा लगाईं हम कतहीं से लाके॥
अपने हम तापीं नाहीं आन के तपाईं।
खर-खवार आने फेनु चलि जाईं॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवहे ना अगहनवाँ के भिनुसार।
धनि लरिकइयाँ के रहे बेवहार॥

माई कहे खाल धन भात बाटे बासी।
कइसे के खाईं चिचिआत बड़न कासो॥
अतना कहत हम काँहे केनी ठहरो।
खेले खातिर कउड़ी निकलि गइलीं बहरी॥

कउड़ी का पाछा कइलीं जा तकरार।
धनि लरिकइयाँ के रहे बेवहार॥

घरवा से पढ़े पाठसाला जब जाईं।
उखिये आ रहरी का खेत में लुकाईं॥
साँझ खा अगनवाँ में आके कोहनाईं।
माई से हम बहरी के बात ना बताईं॥

सातो दिन मनाईं रहरी में अतवार।
धनि लरिकइयाँ के रहे बेवहार॥

उहे लरिकाईं फेनु हमरा प आइति।
बोझा नियन दुनियाँ ई काँहे के बुझाइति॥
हमरा हियरवा के दन छूट जाइत।
हाय-हाय कइला के झगरे ओराइत॥

हो जाइत हरियर जिनिगी हमार।
धनि लरिकइयाँ के रहे बेवहार॥

—गणेश दत्त 'किरण'

भोजपुरी कहानियाँ (मासिक)

प्र० सं० राजबली पाण्डेय

सं० गिरिजेश

प्रकाशक :

१२/१२० धूपचण्डी, जगतगंज, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिदेसिया गीत

—अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

★

भिखारी ठाकुर के 'बिदेसिया' गीत का नाँव प कतने ठहर ओह गीत के उल्लेख हो रहल बा जवन भिखारी के रचल ना ह। ५ अक्टूबर १९५९ ई० के बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना का मंच से पं० गणेश चौबे जी के पढ़ल भाषण 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' (२१ पन्ना में छपल किताब) में 'बिदेसिया' टेक वाला गीत के एगो उद्धरण प परिषद संचालक (श्री शिवपूजन सहाय) के पाद-टिप्पणी देखे के मिलल। भिखारी-काव्य से थोर-ढेर परिचित हमरा कान के दूनो बात खटकल रहे। हम खुद भिखारी ठाकुर के 'बिदेसिया नाटक' के किताब भेजे खातिर चिट्ठी लिखलीं त कुतुबपुर से जवाब आइल जे एह घरी उनुको लगे ऊ नइखे। एक-दू बरिस का बाद संजोग से एक दिन साढ़े पाँच बजे साँझि खा पटना के पुनाईचक महल्ला में अचके भिखारी ठाकुर भेंटा गइले। जेठ के महीना रहे। लगहीं एगो मड़ई में चउकी बिछावल लउकल। बस चट से उनुका जवरे उहवें बइठि के 'बिदेसिया' गीत के चरचा चला दिहलीं।

'तोर धनि बाड़ी रामा अंगवा के पतरी से, लचकेली छतिया के भार रे बिदेसिया!' सुनते मातर 'अइसे ना, हमार हइसे ह।' कहत भिखारी ठाकुर आपन बिदेसिया के कुछ लाइन सुनावे लगले। हमार दिलजमई हो गइल। एही बीचे ओही राहे जात हिन्दी भोजपुरी के पुरान साहित्यकार 'अरविन्द' जी (श्री राम वचन द्विवेदी 'अरविन्द')लउकलीं। बहुते अहगरि के हम उहाँ से भिखारी ठाकुर के चिन्हार करवलीं। एक बेरि उटुकेरि देला प भिखारी आपन सात-आठ गो गीत गाहे- बाटे कतहूँ सुना देत रहले हा। हमरा उनुका कतेक बेरि बतकही भइल ह। ओह दिन उनुका मुँहे चारि-पाँच गो गीत आउर सुने के मिलल।

सन् १९६३-६४ ई० में भोजपुरी परिवार से 'जनकवि भिखारीठाकुर (ले० श्री महेश्वर प्रसाद) का प्रकाशन के बेरा'बिदेसिया' के सवाल हमरा मन में फिनु उठल। पुस्तक प्रणेता से भी ऊहे गलती होत रहे जवन गणेश चौबे जी के निबंध में शिवपूजन सहाय जी पवले रहीं। महेश्वर जी ओह घरी कलकत्ता रहीं। हम चिट्ठी से उहाँ के आगाह कइलीं। उहाँ का मानि गइलीं। महेश्वर जी भिखारी ठाकुर के रचल "बिदेसिया' के बहुत खोज-ढूँढ़ कइलीं बाकी ऊ मिलल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किताब छपला का बाद ! एही से भिखारी ठाकुर का ऊपर प्रकाशित एकमात्र प्रामाणिक ग्रंथ 'जनकवि भिखारी ठाकुर, में अपने सभे 'बिदेसिया' ना पाइबि।

पर साल पटना से माँझी (सारन) जात खा राह में हमरा मुँहे भिखारी के 'बिदेसिया' आ अनकर 'बिदेसिया' के जकिर सुनि के डा० बजरंग वर्मा आ श्री परमानन्द पाण्डेय चिहइले । टैक्सी में जवरहीं बइठल महाकवि 'प्रभात' जी के हुकुम भइल कि ई बात पत्र-पत्रिका का माध्यम से तुरत जग-जाहिर हो जाए के चाहीं । एने कावर 'आकाशवाणी' आ भोजपुरी काव्य के एगो प्रतिनिधि संग्रह में अनकर लिखल 'बिदेसिया' भिखारी का नाँव प प्रसारित-प्रकाशित सुनि-देखि के कतने दिन से सँपरत-सँपरत आज हमरा ई भेद फरिआवे के मौका मिलल हा ।

बिरहिनि का मुँह से ओकरा सर्वांग का रंग-रूप के बखान सुनि के बटोही आगे के राह धइले—

चलि भइले राहे राही, बनि के अधिक दाही,
पूरुब के देसवा में पहुँचे बटोहिया ।
बइठि के सलोनी पास, खेलत रहले तास
सनमुख परल नजरिया बटोहिया ।
चिन्हि कर मने मन, होइ गइले धन-धन,
प्यारी के खबर कहे लगले बटोहिया ।

(बिदेसिया)

१

सुनि ल ऽ बिदेसी बात, कइल ऽ बहुत घात
अबहूँ से चेत ऽ दीन-दुनियाँ बिदेसिया !
तोर कुलवन्ती नारी, रोवतारी पूका फारी ।
डालि दिहल ऽ कूँआँ में तूं काटि के बिदेसिया !
ध्यान ध के पति पर, फेंकरि-फेंकरि कर,
मनि बिना फनिक बेहलवा बिदेसिया !
खेलतार ऽ जुआ सार, छोड़िकर घर-दुआर,
घरनी लोटत बा धरनि में बिदेसिया !
जलदी से घर चेतु , दुखित नारी के हेतु
अतने गरज के अरज बा बिदेसिया !
कहत 'भिखारी' फुलवारी के उजारि देल ऽ
पूत होके भइल ऽ जमदूत तूं बिदेसिया !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२

हउई बटोहिया, चलल जहाँ लोहिया के,
दुखवा से मुखवा मलीन बा बिदेसिया !
चललीं बहरवा त कान्हवा परल मोरा
सती का बिपति के मोटरिया बिदेसिया !
मोरवा मचावे जइसे सोरवा गरज सुनि,
प्यारी छपटाली राही देखि के बिदेसिया !
छोड़ि कर घरवा के बहरी ओसरिया में,
जल बिनु मछरी के हलिया बिदेसिया !
बीसवा बरिसवा के, अवहीं ना केस पाके.
साँवर बरन प्यारी धनियाँ बिदेसिया !
तोहरा मेहरिया के, कटि ह केहरिया के,
देखि कर भइलीं हरान हो बिदेसिया !
माथवा के बारवा भँवरवा समान बाटे,
मुँहवाँ दीपकवा बरत बा बिदेसिया !
फुलवा के सीस जगदीस जी बनाइ कर
पति के बियोग देइ देलन बिदेसिया !
सुनि कर कानवाँ में, गुनि कर मनवाँ में
कहत 'भिखारी' घरे चलिजा बिदेसिया !

ई भिखारी ठाकुर के ओह घरी के रचना ह जब ऊ कबिताई का राह प डेगाडेगी देत रहले । कलम के खरखराहट साफ सुनाता । उनुका 'बिदेसिया' में ऊ चिकनई, ऊ सुघरई नइखे जवन आन केहू के रचल 'बिदेसिया' के एह पाँतिन में वा (जे जनला–चिन्हला बिना भिखारी ठाकुर के कहाता) —

तोरी धनि वाड़ी रामा अंगवा के पतरी से
लचकेली छतिया के भार रे बिदेसिया !
केसिया त वाड़े जइसे काली रे नगिनियाँ से
सेनुरासे भरल बा लिलार रे बिदेसिया !
अँखिया त हउवे जइसे अमवाँ के फँकिया से,
गलवा सोहेला गुलेनार रे बिदेसिया !
वोलिया त बाड़ी जइसे कुँहुँके कोइलिया से,
सुनि हिया फाटेला हमार रे बिदेसिया !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतने ना, 'बिदेसिया' का साथे-साथ ओही नाटक में आइल 'बटोहिया' गीत भी दू किसिम के बा। भिखारी के 'बटोहिया' सुनल जाउ:—

कहाँ जइब ऽ भइया, लगाव ऽ पार नइया,
तूं मोर दुख देखिल ऽ नेतर से बटोहिया !
सुन ऽ हो गोसइयाँ, परत बानी पँइयाँ हम
रचि-रचि कहिह ऽ बिपतिया बटोहिया !
छोड़ि कर घरवा में, बीचे महँधारवा में,
पियवा बहरवा में गइलन बटोहिया !

× × ×

कइसे के कहीं हम, नइखे धरात दम,
सरिसो फुलात बाटे आँखि में बटोहिया !
कहत 'भिखारी' नीके मन में बिचारि देख ऽ
चतुर से बहुत का कहीं हो बटोहिया !

दोसर कवि के 'बटोहिया' देखल जाउ (जवन असावधानी से भिखारी ठाकुर के कहाता)—

पहिले त कहिह ऽ मोर सर हो सनेसवा से•••
ताही पीछे बारहो बियोग रे बटोहिया !
जेकर तिरियवा रामा बने-बने बिलखे से
सेहु कइसे करे रस भोग रे बटोहिया !
अगिया लगाऊँ रामा राजा के नोकरिया से
कठिन करेज हवे तोर रे बटोहिया !
तोर धनीं भइली रामा बन के कोइलिया से
कुँहुँकत फिरे चारू ओर रे बटोहिया !

बटोही से बिरहिनि के अपना पति का रूप के बखान भिखारी का मुँहे—

करिया ना गोर बाटे, लम्बा नाहीं हउअन नाटे
मझिला जवान श्यामसुंदर बटोहिया !
घुठिया ले धोती कोर, नकिया सुगा के ठोर,
सिर पर टोपी छाती चाकर बटोहिया !

आन कवि का हाथे उरेहल बिरहिनि का पति के चित्र देखीं—

हमरा बलमुजी के बड़ी-बड़ी अँखिया से
चोखे-चोखे बाड़े नैना कोर रे बटोहिया !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

ओठवा त वाड़े जइसे कतरल पानवाँ से
नकिया सुगनवाँ के ठोर रे बटोहिया !
दाँतवा त सोभे जइसे चमके विजुलिया से
मोछियन भँवरा गुँजार रे बटोहिया !
माथवा में सोभे रामा टेढ़ी काली टोपिया से !
रोरी बुन्द सोभेला लिलार रे बटोहिया !

भिखारी ठाकुर के 'विदेसिया' के नाच (नाटक) अतना लोकप्रिय भइल कि ओकरा में कुछ फेंट फाट कइके कतने जने आपन रोजगार चलावे लगले; भिखारी के बनावल गीतन का साथे आपन नाँव जोरि के किताब छपवावे लगले। भिखारी ठाकुर के कहनाम का मोताबिक "बगसर के कवनो बाबा जी के लिखल 'प्यारी सुंदरी' के गाना के भी चलाना रहे। भरसक ई ओही किताब में होई जेकर जिकिर बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के संचालक स्व० शिवपूजन सहाय जी पं० गणेश चौबे के 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' प छपल भाषण पुस्तिका के १३ पन्ना के नीचे का टिप्पणी में कइले बानी। "यह गीत(बिदेसिया) 'सुन्दरी विलाप' नामक पुस्तिक में भी मिला है। उसके लेखक पंडित राम सकल पाठक'द्विजराम' वक्सर (शाहाबाद) के सहनी पट्टी महल्ले के निवासी थे। उनकी पुस्तक विक्रमाब्द १९७६ (सन् १९१९ ई०) में प्रकाशित हुई थी।...... भिखारी ठाकुर का प्रसीद्ध गीत 'सुन्दरी विलाप' की हूबहू नकल है। इसलिए बिदेसिया गीत के सर्व प्रथम रचयिता पाठक जी हैं।"

पइसा कमाए वाला लोग भिखारी के बिदेसिया नाटक में हेरफेर क के ई अनर्थ कइल। फुटपाथ प रंग-बिरंगी गीत-गवनई के किताबन का बीचे विकात 'विदेसिया नाटक' (बारहोभाग) भा 'बिदेसिया नाटक' (बीसोभाग) में जवन 'बिदेसिया' भा 'बटोहिया' टेक वाला गीत बाड़े स ओह में एको भिखारी ठाकुर के ना ह। जिज्ञासु लोग के भिखारी कृत 'बहरा बहार' नाटक (प्र० दूधनाथ प्रेस, सलकिया, हवड़ा १९४० ई०) पढ़े के चाहीं जवना में 'बिदेसिया' आ 'बटोहिया' टेक वाला गीतन का अंतमें साफ-साफ 'कहत भिखारी' लिखल वा। भिखारी ठाकुर के असली रचना के पहचान खातिर ई जानि लेवे के चाहीं कि जइसे विद्यापति, कबीर, सूर, तुलसी भा मीराबाई अस पुरान भक्त कविन का हरेक पद में उहाँ सभे के नाँव-निसान रहत रहल हा ओइसहीं बीसवीं सदी के एह ठेठ भोजपुरी जनकवि का गीतन में भी 'भिखारी' 'भिखारी नाई, भा भिखारो हजाम' के भोग लगावल बा।★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर्यटकों का आकर्षण केन्द्र : बिहार

पाटलीपुत्र के प्राचीन राजनगर, नालंदा के विश्वविख्यात विद्यालय तथा राजगृह की भव्य दीवारों के भग्नावशेष, सासाराम स्थित शेरशाह का मकबरा, लौरियानन्दनगढ़ के अशोक स्तम्भ, बोधगया, देवघर, पारसनाथ और पावापुरी के प्राचीन मन्दिर और पटना सिटी के सिक्ख गुरुद्वारा को अवश्य देखें।

राजगृह के गर्म जल झरनों में स्नान करना तथा छोटा-नागपुर के जलप्रपात, मनोरम पहाड़ियों, झीलों और जंगलों के प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन करना न भूलें।

जमशेदपुर, हटिया (राँची), धनबाद, पंचेत, मैथन, तिलैया तथा बरौनी के सुविख्यात औद्योगिक केन्द्रों का परिदर्शन करें। पटना, राजगृह, गया, राँची और मुजफ्फरपुर में टुरिस्ट यान तथा उत्तम कोटि की आरामदेह मोटरगाड़ियाँ भी सुलभ हैं। राजगृह, बैशाली, नेतरहाट (पलामू) और हजारीबाग में पर्यटकों के आवास की सुविधा के लिए उत्तम कोटि के आरामदेह टुरिस्ट बंगलों की स्थापना पर्यटन विभाग द्वारा की गयी है। राजगृह में, जापान-भारत-सर्वोदय मित्रता संघ, जापान के सहयोग से रत्नागिरि के शिखर पर निर्मित शांति स्तूप के परिदर्शन के लिए पर्यटन विभाग द्वारा आकाशीय रज्जुपथ का संचालन किया गया है। मात्र एक रुपया प्रति व्यक्ति की दर से शुल्क देकर रज्जुमार्ग की यात्रा की जा सकती है। विशेष जानकारी के लिये पर्यटक सूचना केन्द्र, मजहरुलहक पथ; पटना—१ (दूरभाष संख्या—२५२९५) से सम्पर्क स्थापित करें।

पर्यटन विभाग, बिहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बसंत एक आँगन में

डोले बिरिछिया के पाती,
पवन उतपाती, अँगनवाँ। डोले०

फुलवन के कलियन पर डोले भँवरवा,
सुधिया जगावे रामा धंझिया सदेरवा,
गमकि-गमकि फूल बेइला—
जगावे आधी राती, अँगनवाँ। डोले०

मोरे पिछवरिया सघन बँसवरिया,
बंसिया बजावे रामा सुतली पहरिया,
कुहुँकि-कुहुँकि जिया मोर—
कोइलि मदमाती, अँगनवाँ। डोले०

पी-पी पपिहरा के बोलिया सुनाइल,
बिसरलि सुरतिया के याद आजु आइल,
बरिसन के जोगवल लुटाइल—
नयनवाँ के थाती, अँगनवाँ। डोले०

संझा के अँगना किरिनि परिछाइल,
तरइन के पालकी पर चांद चढ़ि आइल,
बइठिं पलंगिया के पाटी—
देखावे संझवाती, अँगनवाँ। डोले०

—भोला नाथ 'गहमरी'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार के वित्त मन्त्री श्री दारोगा प्रसाद राय

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

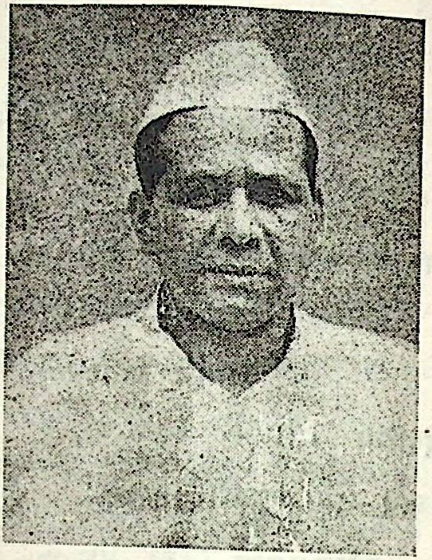

वित्त मन्त्री, श्री दारोगा प्रसाद राय

श्री दारोगा प्रसाद राय जी के जन्म २ सितम्बर १९२३ के सारन जिला के बजहिया गाँव में भइल रहे। पिता के नाँव श्री दुनिया राय रहे। शुरू के पढ़ाई-लिखाई सरैया गाँव में भइल जहाँ से मिडिल में अपने के में जिला में सब से अउअल दर्जा मिलल। बाद में परसा उच्च विद्यालय से मैट्रिक परीक्षा पास कइलीं।

चौथा क्लिास में पढ़त रहीं ओही घरी से नवशक्ति अखवार पढ़ीं। राष्ट्रीयता के भावना कुछ-कुछ मन में उठे लागल। १९३६ में जवाहर लाल जी के भाषण सुने खातिर जुर्माना भइल। जुर्माना दे दियाइल बाकी राष्ट्रीय भाव के प्रेरणा बढ़ल। गाँव से स्कूल चार माइल का दूरी पर रहे। पैदल, रास्ता खराब, पानी हेले का बेरा अंगवछी पहिन के पार करे के पड़त रहे। आठवाँ क्लास में जब पढ़त रहीं तब कांग्रेसी श्री बाबू के मंत्रिमंडल बिहार में बनि गइल रहे। सन १९४२ में राजेन्द्र कालेज छपरा में भर्ती भइलीं। बाद १९४२ के आन्दोलन शुरू भइल। आन्दोलन में भाग लिहला खातिर ६ महीना के जेल के सजाइ भइल। जेल से लवटि अइला का बाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आई० ए० के इन्तहान दियाइल। ओकरा बाद तेजनारायण जुबिली कालेज भागलपुर से बी० ए० (आनर्स) (अर्थशास्त्र में) १९४६ में पास कइलीं।

छात्रन का बीच राष्ट्रीय भावना के प्रचार छात्र जीवन से करत अइलीं। छपरा से भागलपुर जाये के इहो कारण रहे कि छात्र नेतागिरी से अलग हटि के पढ़गित होखे। बाकी उहाँ भी छात्रन का बीच में नेता बनि के राष्ट्रीयता के भावना फैलावे लगलीं। उहाँ श्री बाबू का पहिला मानपत्र इहेंका दिहलीं। श्री बाबू इनका प्रतिभा पर बहुत खुश भइले।

जेह समय छपरा में रहीं ओही घरी कांग्रेस के कर्मठ नेता बा० प्रभुनाथ सिंह से भेट भइल आ, काँग्रेस के काम में दिलचस्पी लेवे लगलीं। राजनीति के क्षेत्र में बा० प्रभुनाथ सिंहजी से अपने के जे प्रेरणा मिलल ओकर आभार अभी तक इहाँका मानीला। बाद में स्व० अनुग्रह बाबू का भी सम्पर्क में अइलीं। एक बात के चर्चा करीं त बेजइँहा ना कहाइ बि। श्रीकृष्ण सिंह जी (बिहार के मुख्य मन्त्री) श्री केदार पाण्डेय के प्रतिभा आ योग्यता के आदर करत रहलीं। उनका के मानत भी रहलीं। उ पाण्डेजी आजु श्रीबाबू का पद पर बानीं। ओइसहीं स्व० अनुग्रह बाबू (वित्तमन्त्री, बिहार) का पद पर आजु राय जी बानी। ई भी परिस्थिति के एगो विचित्र संजोग कहाई। अपने के विवाह १९४५ में भइल। पाँच सुजौग बेटा आ दू बेटी के जनक रायजी अपना परिवार के जिनिगी से सन्तुष्ट-सुखी रहेले। उनकर दू गो पुत्र असाधारण प्रतिभा वाला भइल बाड़े। मुन्ना के प्रखर बुद्धि के अनेक कहानी बा। अनिल बबकी देहरादून सैनिक स्कूल का प्रतियोगिता का चुनाव में देस भर में अउवल (फस्ट) भइल बाड़े। उ दोनो राय जी के बेटा बड़ा होनिहार बाड़े। अनिल में योग्य सैनिक नेता बने के सब गुण बा।

रायजी के राजनीतिक जीवन १९४२ से शुरू होता। १९४८ में सारन जिला पर्षद के सदस्य भइलीं। अपना क्षेत्र (परसा) से १९५२ में निर्वाचित भइलीं आ तब से बराबर अपना क्षेत्र से चुनात गइलीं।

सामाजिक सेवा अपने के जीवन के सब से बड़हन गुण ह। अपना इलाका में जनता कालेज का स्थापना कराके ओकरा प्रबन्ध समिति के सभापति रहलीं। राजेन्द्र कालेज में पढ़त समय कई सामाजिक संस्थान के सेवा कइलीं। नाना प्रकार के मजदूर-संस्थन से अपने के सरोकार रहे। मजदूरन के कल्यान में अपने विशेष रुचि राखत रहीं। महरौरा मिल के मजदूर संघ के बराबर अपने सहयोग दिहलीं। वोह घरी अंगरेज मैनेजर विलियम, मजदूरन पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़ा जुल्म करे। ओकरा संगे इहाँ का भिड़ गइलीं आ, विलियम के छक्का छुड़ा दिहलीं। उ इनका सामने हाथ जोड़ि के खड़ा भइल आ इनकर बात मान गइल। प्राकृतिक चिकित्सा निकेतन पथरी घाट के अपने उप सभापति हईं।

चतुर्थ वर्ग कर्मचारी युनियन के कई बरिस तक उप सभापति आ मुख्य मन्त्री भी रहीं। छपरा में अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ के जे विराट सभा भइल रहे ओकर इहाँका स्वागताध्यक्ष रहीं। लोग कहेला कि ओइसन विराट आ सफल आयोजन फेरू ना भइल। इहाँ का कहीले कि हमरा केहू से अदावत नइखे। जे केहू हमरा खिलाफ कुछ कहता ओकरो संगे मिलि के हम काम कइले हवीं। अपने के कहनाम बा कि कर्मचारी भाई लोग के हम बराबर शुभचिन्तक रहलीं। म्युनिसिपल लोकल बोडीज के मांग पर सबके बराबर दियाइल गरन्ते मांग रहे कि जेकरा मिलता ओकरा के मत दिआउ। इहाँ के डेढ़ करोड़ रुपया अउर दिया के सब के मांग पूरा कइलीं।

१९५२ से राजनीति का क्षेत्रमें आके १९५९-६१ तक सामुदायिक योजना आ कारा विभाग के उपमंत्री रहलीं। सन १९६१-६३ तक झा मंत्रिमंडल में राज्य मंत्री रहलीं। १९७१ में बिहार के मुख्य मंत्री रहलीं। आजुकाल १९७२ का चुनाव का बाद वित्त मन्त्री बानी।

अपना जीवन में संजोग के अवसर के लोहा इहाँ का मानी ला। संजोग जुटि गइला पर बहुत काम अनाया से हो जाला ई इहाँ के विचार ह।

धार्मिक जीवन में इहाँ का बहुत रुचि राखीला। परम संत मेंहीं दास जी महाराज से अपने दीक्षा लेले बानी। पूजापाठ आ यौगिक क्रिया में बहुत दिलचस्पी राखीला। मेंही बाबा से मुलाकात भी एगो जीवन के महत्वपूर्ण घटना ही। एक साधू जेकरा के ई ना चाहत रहस आ जेकरा से बराबर अलग रहे के कोशिश कइले ओकरे करतब से इहाँ का परम सन्त मेंही दासजी का चरण तब पहुँच सकलीं। बाबा मेंहीदास जी के चलावल सन्तमत के अपने अध्यक्ष हईं। सन्त के अपने पर पूरा किरपा रहेला।

धार्मिक काम में, कीर्त्तन में, यज्ञ इत्यादि में खुल के भाग लीही ले। धर्म के किताबन में तुलसीकृत रामचरितमानस से जीवन में अधिका प्रभावित भइलीं। गोस्वामीजी का व्यवहार कौशल आ ज्ञान पर मुग्ध रहीले।

बोले बतिआवे में अपने के एगो खास शैली बा। जतना आदिमी कोठी पर मिले अइहें सभकरा से मिलबि। ७ बजे साँझ से मिले के समय ह। अगर राति के दू भी बजि जाई त सभकरा से बिना मिलले ना रहबि। सुनीले सब के। कोशिश करीला कि अधिका लोग के काम हो जाय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वभावके खर्रा हईं । केहू से डरे के त नावें ना जानी । केहू चाहे कि दबा के कवनो काम करवा लीं ई ना हो सके । सिद्धांत के पक्का । ना भा हँ के मुँहे पर जवाव । केहू कतनो अपना के बड़का कहो ।

भोजपुरी खातिर अपने का मन में बहुत सरधा आ प्रेम वा । 'जनकवि भिखारी ठाकुर,' पुस्तक के समर्पण समारोह में अपने जे भोजपुरी पर भाषण देले रहीं उ सुनही लायक रहे। मुख्यमंत्री जब रहीं त एक बेर हमनी का गोष्ठी में जे इन्जिनियरर्स इंस्टिच्यूट में भइल रहे) कहलीं कि मुंह धोए बेरा रेडियो खास करके भोजपुरी भजनन खातिर सुनीला । भोजपुरी के अभी बहुत कुछ मदत के जरूरत वा । 'अँजोर' का जरिये भोजपुरी के सेवा भी अपने का मालूम वा । हमनी का पूरा उम्मीद वा कि भोजपुरी के उन्नति खातिर अपने कवनो जुगुति उठा ना राखब । भगवान करसु अपने स्वस्थ रहि के सइ वरिस ले जनता के सेवा कलेरीं ।

एगो बत्ती आउर

एगो बत्ती आउर देहनी देवता !
रक्षा कर !
साँझ के एह खूनी लड़ाई का बाद
रात के मउअतो अन्हार कट सको !
एगो देह के दियरी में
साँस के बाती
रात-भर बरत रह सको !
काल्ह भोर में
फेर होई खड्गहस्त प्रान ।
एगो बत्ती अपना अहम् के आउर देहनी
देवता !
रक्षा कर !

—पाण्डेय सुरेन्द्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

साहित्य अकादमी के अध्यक्ष भाषा-शास्त्री

डा० सुनीति कुमार चटर्जी के नाम

भोजपुरी भाषा की मान्यता के लिए खुला पत्र

हम सुनीति बाबू के,
आपन विनय सुनाईं कइसे;
जे भासा क भारी पंडित,
विदमानन कऽ मुकुट सिरोमनि
पूत सपूत बंग-धरती कऽ;
जहां रतन लालन कऽ खानि।
हमहूँ उनकर भाई हउवीं,
ओही एक बाप माईं कऽ
एह देश का,
बन-धरती सुख—संपति;
विद्या--बानीं
वेद-ग्यान-गुन सोकड़
सभमें हमरो,
साबिक हक ओतने बा।
भाई का भाई के'
धकियावल चाही ना।
भाई के धकियवले
हालि भइल का,
रिखि पुलस्त का नाती,
शिव-सेवक तपसी-बाभन कऽ?
बालि जुलुम कइलसि जब,
अपने सग भाई पर,
मुक्का मरलसि, मेहरि छिनलसि,
धरम विचार तनिक ना रखलसि,
भइल नताजा तब कि
मारल गइल रसातल पहुँचल।
हकवे खातिर
कुरू-छेतर में;
कौरव-पाण्डव,
एके घर क भाई,
लड़ि आपुस में
कुल परिवार हीत-नाता आ;
मीत-सुजन-संगी सभका के,
आगि लगाइ खउरलन।
बढ़लि लहरिया
फइलि गइलि सवँसे भारत में।
एतने नाहीं,
जावा, कम्बुज, ब ली;
श्याम, मलाया, बरमा,
दूर कोरिया;
सेलीबिज-जापान,
चम्पा, चीन सभे देशन से,
दूनो दल कऽ -
पछपलाइ करवइया,
आपन मदति मसाला लेके;
मोछिया अइंठत,
समर भूमि में अइलन;
अउरी आपन बल पुरुसारथ,
विद्या, ग्यान धरम-धन;
सब कुछ एहिजे,
कलह-अगिनि का
बरत-कुंड में,
सहजे चउपट कइके;
लंपकि फतिंगा नियर दीप का,
थोरे भर में जुझलन।
पुरुब ले ईरान-अरब आ
मिसिर—सीरिया;
बलख-बुखारा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कूचा भा तुरको से;
राजा लोग फउदि ले आइल
एहिजो अंधक-मेखल-दंडक;
वीर बिरसनी कुल कऽ,
नव जवान मनसोख बिगारू;
बली ढींठ इनरिन कऽ दास,
ले हथियार खोसि में मांतल;
रणचण्डी कऽ
भोजन सुरस बने खातिर के
आ जुटलन जल्दी से।
भइल नतीजा ई कि,
बतन कइल जुग-जुग कऽ
विद्या-कारीगरी ग्यान-गुन
सभ कुछ चउपट भइल देश कऽ
वीर पुरुष कुल मारल गइलन।
भारत माई,
देखि दशा पूतन कऽ;
हाथ माथ पर धइके,
केतना जुग तक बिलखत रहली।

— — — —

भाषा सहज सुघर मूरति हऽ।
भीतर का भावन कऽ
सभ देशन में,
मानुस का समाज में;
सभ जातिन कऽ,
किसिम किसम कऽ;
बांटे अलगा,
रहन-सहन आ
कुछ आचार-विचार!
बोली-भासा फरक-फरक बा
फरका केतने रीति रेवाज।
संसकीरित से
जनम भइल सुभ
पराकिरित पाली कऽ!
एहो तरे समय पर,
जुग-जुग में दुनिया में,
लोगन का रुचि-गरज मोताबिक,
केतने भासा
अइली गइली,
आपन देन सुघर कुछ देके।
भारत देश महान निपुन में,
उत्तर दक्खिन
केतने भासा बाड़ी।
केतनन कऽ सज सेवा
रहल सराहे लायक,
केतनन क अबहूँ बा।
एहिजा·व ड़ो,
केतने जाति सुलच्छन;
अपना लूरि सहूर ग्यान-गुन,
कारीगरी-कला के;
अपना सज भासा में
जुग-जुग ले जोगाइ के रखले।
जुग-जुग ले मौका से,
जाति बाहरी,
भारत में अइली कुछ;
ओमे केतना,
. :
. . रहली कइली राज,
अपना भासा के जनता पर
हथियारन का बल से लदली।
जब उखरल शासन कऽ झंडा,
उखरि गइल उनहूँ कऽ गोड़।
बाकी तबहूँ असर परल कुछ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खिचड़ी समय-समय से पाकलि।

— — —

बहुते मंहगा मोल चुका के,
देश सुतंतर भइल हमन कऽ
आशा जागलि,
खुशी भइलि कि !
अब बानी कऽ बान्हन टूटी ;
पाई सभई हक बोलि बऽ ;
पढ़े लिखे सोचे कऽ ?
अपना भासा भाव नगद के,
पाले-पोसे
साजे सरियावे कऽ
सभके मिली—
सुघर मोका शुभ।
बाकी आजो
रंगरेजो हमनीं पर
बरियाई लादलि बा।
संसकीरित के,
जे माई दुनिया का ;
ना जाने केतना भासन कऽ,
लउँड़ो-दाई बना किनारे
घिरिना वश राखऽ बा
झुठ बहाना रचि के।
जे जहवाँ बटुरा के,
रचत बखेड़ा टंटा ;
ओकर आदर होता,
आपन हकवा,
पावत बा ऊ सहजे।
केतनो गुनी सुलच्छन होखे,
चाटुर होखे
ओकर कुल-परिवार,
सबहूँ जुलुमी शासन वाली
रीत-नेति के,
अबो चलावल जाता।
सहज आजु ह,
बरिस पचीसन पहिले
हम सुनले रहलीं कि,
भारी भामा-पंडित
निपुन सुनीति चटरजी,
वंग देश कऽ राढ़ी बाभन ;
देश सुतंतर भइले,
करिहन उचित नेयाव हमन का
भोजपुरी-भासा का साथ।
बाकी अब देखत बानीं कि
तेल कान में डाल उहाँ का
चुप्पी सधले बानीं।
केतने पंडित,
एहूँ घर कऽ ;
अबो जमींदारी के,
जीयत राखे खातिर
किसिम किसिम कऽ
फंद खड़ा कइ,
हमनी के भरमावत बाड़न !

— — —

सभके बोले कऽ हक बाटे
सभई पावे आदर मान,
बस हमरे मुहँवा पर,
ताला पोढ़ अलीगढ़ वाला ?
साच कहीं तऽ,
पंडित असल उहे हऽ
जे सभका के
एक नजरि से देखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक देश का सभ भाइन के
जाने एक समान !
भारी भारत देश निपुनमें,
दूर दूर का भाइन के जब
रउरा उनकर जायज हक वा
जीवन-गति- बानी-बल,
सुख-मरजादा दिहलीं ;
तब काहें हमरा के,
अबरू समझि दबावत बानीं ?
तमिल तेलगू, मलयाली, आ
काश्मीरी, गुजराती
कन्नड़, उड़िया
सिंजिल मराठी, बंगला ;
सहज मैथिली,
नेवारी, आसामी ;
सभकर आदर कइलीं,
तब कारन का,
दूइ नजरिया,
दूइ भाव कइला कऽ ?
सभे लइकिया
प्रिय भारत भाई कऽ
रउर सगी बहिनिया ।
केहू के त ऽ
हीरा मोती दे के
महल अँटारी में बइठवलीं,
केहू के अब,
जुलम मड़इयो कइले बानीं !
इहे बहिनिया,
वीर सुरेमन ;
लाल नगीना केतने,
समय समय से पैदा कइके ;
राउर आ अउरिन का
मरजादा के रखलसि ।
भोजपुरी इ ऽ
भोजपुरिया वीरन कऽ
तेज-जोतिमय,
भासा-बानीं ;
जे बढ़िठनलि इरदम,
ठेंगा, गोजो,
तीर, धनुस, भाला आ
तलवारन का बांच !
भोजपुरी के
आरे 'बलिया, गाजीपुर आ
चम्पारन, सारन, आजमगढ़,
गोरखपुर, बस्ती 'देउरिया ;
आधा रांची, स वॅस पलामू,
मिरजापुर कुछ कासी ;
एतना चुनल जिलन कऽ
छव करोड़ लोगवा बोलेला !
एहिजे रहे राज सुखदायी
निपुन गाधि राजा कऽ ।
एही सुभ धरती पर,
परम पवित्तर सुघर आसरम
रहे सिद्ध जमदगिनि रिखी कऽ ।
एही भोजपुरी माई कऽ
लाल निराला
परसुरामजी रहलन !
एहिजे भिरगू मुनि कऽ .
पुन्नि-आसरम ;
दरदर मुनि कऽ अड्डा !
एही भोजपुरी तीरथ बगसर का
पंजरे जखिनी बन में ;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्ध-आसरम में शुभ,
सिद्ध महरसी ग्यानी ;
विसवामोतर जो महराज
राम लखन के,
सिच्छा दिहलन
बला अतिबला
दू ग शुभ विद्यन कऽ !
एही भोजपुरी छेतर में,
महा पुरुस मुनि बउध देव कऽ,
जनम धरतिया
सुघर लुम्बनी बाटे।
एहिजे भोजपुरी छेतर का पँजरा
गयका नगरी गया धाम में,
जहवाँ भोजपुरी भासा परधान
ग्यान मिलल उनका के।
पहिल धरम उपदेश सोहासुत
बउध धरम कऽ एहिजे ;
भोजपुरी-मिरगा बनवा में
बइठि शांति से सुख से ;
पहिलि पहिल उहाँका
परतन काशो में दिहलीं।
सहज सुगति निरवान उहाँ कऽ
एही छेतर भीतर ;
धुनी मल्ल वीरन, का,
रोब शान वाली रजधानी
कुशी नगर में होखल।
एहिजे पहिले
रहलन धुनी वीर कारूस ;
शाहाबाद जिला का
गांग किनारा वाला
सहन उत्तरी भाग निपुन में।

उ दखिखन वासिन से
निपुन उत्तरा पथ कऽ
रइछा करसु प्रेम से।
त्यागी तपसी,
गुनी जाति बाभन आ
बाभन-धरम निपुन कऽ
रहलन मददिगार' ऊ
घ र लड़ाका कट्टर।
एहिजे राज रहे सज,
दन्त वकर राजा क ऽ ;
महापुरुस मुनि ग्यानी
सन्त अराड़ रहसु बनवा में ;
कहीं पास आरा का,
जहवाँ जा के
मुनि गउतम सिद्धारथ
गूढ़ ग्यान कऽ
पहिलीं सिच्छा पवलन।
इहवें सहसरावँ में,
रहे बनल आराम सजीला ;
एक हजार भिक्खु लोगन का
भजन ध्यान तप साधन खातिर।
एहिजे दूसर सुघर विहार
रहे बनल मन मोहे लायक,
पोखरा भीतर सजगर।
प्रिय 'दरशी' राजा अशोक क ऽ
चंदन पीर पहाड़ी वाला
लिख अबो कायम बा
जेकर नगद सबूत।
एहिजे 'कापासिय' बन भीतर
बउध देव मुनि ठहरल रहलन ;
समय पाइ के जहवाँ,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनलन बउध विहार अनेकन !
इहवें ऊ आराम-नगरिया, बडध मठन
कऽ
जे के पाछे चलि के
आरा लोग पुकारे लागल ।
एहिजे संघाराम गाँव बा,
गाँव निपुन 'अंगार' ;
गुपुत वंश का राजा,
विसुन गुप्त कऽ
सजगम खेड्डा गमा ।
जेकरा के अब,
लोग पुकारत बाटे
प्रिय संगरावँ बउध-धरमी बा
शिव धरमी मँगरावँ !
एहिजे किला पुराना,
रोहितास कऽ
रोहितास-गढवा में ।
एहिजे 'मोहो शोलो'
अबका गाँव मसाढ़ सुघर में,
बंठदीप वासी राजा कऽ ;
बनवावल असतूप विचित्तर
बउध मुनी का धातु भाग पर ।
एहिजे वीर सुरेमन,
भोजपुरी वीरन कऽ नायक
शेरशाह कऽ
जनम धरतिया ।
एहिजे जिला सुखी सारन में,
मल्ल कल्प कऽ बुली बहादुर,
छातरी-राजा,
बउध मुनी का धातु खण्ड में
भाग जथारथ आपन,
लड़िके पावेवाला ।
एहिजे जैथर गाँव,
जहवाँ मुनि गंगेसर देव,
नोमिसार से आके बसलन ;
विजय-धजा फहरवलन ।
आगे चलि जहवाँ से,
जैथरिया बाभन लोगन कऽ
वंश बढल उत्तर में पसरल ।
राज बेतिया, ओकरे सुघर नमूना ।
एहिजे बागी वीर नरेश
फतेबहादुर शाहो,
भारत का अजादी खातिर,
अंगरेज से लड़लन,
दर दर ठोकर खइलन ;
तबहूँ माथ झुकवलन नाहीं ।

— — —

भोजपुरी हऽ
शाकिय—मोरिय-कोलिय-गन आ ;
वीर मल्ल लोगन क भासा ।
सुंग वंश के,
रोपे-थापे वाला,
उ बाभन सेनापति,
पुसमितर मतिमान
एही भोजपुरी वीरन कऽ,
मदति पाइ के,
भोजपुरिये सिवान में ;
गंगा का दीयर में,
सहकल जनव नरेश,
वीर धुनी चढ़बाँक,
प्रिय मिलिंद का
पीठी धूरि लगवलन ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी वीरन से
लड़ि के ओकरा
भरि मुंह माटी लिहले,
परल तुरत भागे के।
सबुर करीं मति,
बस एतने से रउरा,
शक कुशान जब,
एह देश कऽ,
नांकन दम करलन तऽ;
नाग वंश कऽ,
वीर भार-शिवराजा,
भोजपुरी छेतर में,
आपन चउकी कायम कइके,
एहिजा का वीरन का बल से,
उनके सहजे, दूर चहेटलन,
कइलन जग्य अनेकन,
जेकर खास गवाह,
दशासुमेध घाट काशी क।
राजा वीर विकरमादित्त
एही भोजपुरी वीरन कऽ
चउकस सेना साजि
शक लोगन के,
पिठियवलन आ
खेदि देश ले बहरी कइलन।
सानी सहज वीर भोजपुरिया,
हिन्दू-कुश के लाँघि,
बलख बुखारा घाँगत,
आमू नदिया का धारा में,
आपन तेगा धोवलन।
अउरी घूमत,
सुघर कियरिया केसरि वाली,
सहज सुगंध सोहासुत लेत,
दउरावत घोड़न के
दिल्ली आइ पहुँचलन!
मेहरवली का,
लोहा खम्भा में प्रिय
चनरगुपुत का ओह विजय कऽ,
सुजस-कथा टाँकलि बा।

— — —

एहिजे चम्पारन में
गांधी बाबा
निलहा कोठी वाला
कूर फिरंगी जिमिदारन कऽ
जुलुम मेटावे खातिर,
सतियागरह लड़ाई छेड़लन!
एहिजे जीरादेई
एगो गाँव छोट में;
राजेन्दर परसाद जनमले,
आजादी का,
कठिन समर में लड़लन,
आखिर जीति शान से
देश सुतंतर कइलन।
एहिजे गाधिपुरी का पाँजर,
देवा गाँव निपुन में,
सामी सहजानन्द सहज-चित
त्यागी संत महरसी,
संसकीरित भासा कऽ।
सफल महापंडित गुनवान,
विजयी नायक,
आजादी का महासमर कऽ,
अगुवा सजग जगावे वाला,
सभ किसान लोगन के!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मतलब मोट हमार कहे कऽ,
कि हमनी का,
भोजपुरी भासा में
बाटे बहुत ग्यान गुन
नगद वीरता भारी।
एकरा के दबाइ के,
बहुत दनन ले
राखल जाइ सके ना।
हमरा पासे,
पति-जीवन मरजादा बाटे,
बाटे पोढ़ कलमिया,
लाठी-गोजी,
तेगा आ तरुआर।
हिरदय बाटे परसुराम कऽ,
परतिग्या कवशिक कऽ!
शेरशाह कऽ पुरुसारथ आ,
शानी तेगा वीर कुवँर कऽ,
बाकी तऽ हम,
बउध देव कऽ चेला,
सेवक गाँधी जी कऽ,
रहवि शांति सज से।
अपना हक खातिर प्रिय,
जबले ओके पाइबि नाहीं।
हे पंडित परधान!
विदमानन में सुघर सुमेरू,
प्रिय सुनीति जी,
सवतुक नेति चलायीं।
भोजपुरी भासा के
मानीं जानी आपन,
देईं हक मरजादा।
दूसर विनय करत बानीं हम
पंडित राज 'माधवे
प्रभाकर' मतिमान गुनी से।
बलिया, शांति-निकेतन,
चंडीगढ़, काशी का।
निपुन जोतिषी पंडित
दूइ वेद का पदवी वाला
प्रिय परसाद हजारी जी से
हथजोरी बा इहे हमार
कि अब देर करीं मति,
देईं हमरा
भासा के मरजादा।
आखिर में हम अपना
खास दयालु भाई,
पंडित उदय नरायन जी से,
भाई आ संन्यासी,
दूनों सग नाता से,
अरज करबि कि,
ऊहो जोर लगावसु कसिके,
पंडित लोगन के समुझावसु,
भोजपुरी भासा का
हक-पद गुन-सेवा के!

—दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती
अध्यक्ष
राजगुरू मठ
शिवालाघाट, वाराणसी

२-६-७१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

(जबाब)

RESIDENCE :
"SUDHARMA"
16 HINDUSTHAN PARK
CALCUTTA P 28
PHONE : 46-1121

OFFICE :
NATIONAL LIBRARY
CAMPUS
BELVEDERE
CALCUTTA—27
PHONE : 45 5319

SUNITI KUMAR CHATTERJI
NATIONAL, PROFESSOR OF INDIA
IN HUMANITIES

Sri Dandiswami Vimalananda Saraswati
Adhyaksha, Rajguru Math
Shiwala Ghat, Varanasi (U. P.)

Revered Swamiji,

I have received your letter to me dated 8. 10. 71 together with your long poem in Bhojpuri, which was also addressed to me as an 'Open Letter'. In these you have pressed for the acceptance of Bhojpuri as an independent literary language, and in your poem, which is very fine, you have given a survey of the culture of Bhojpuri area. I thank you very much for all this. But as I have already mentioned to you. I have no hand in the matter. This will be decided by the Special Committee of Linguistic scholars on Bhojpuri,and when the meeting is held eminent scholars of Bhojpuri like Dr. Uday Narayan Tiwari will be there. You should try from outside, through the Parliament. Our Committee may recommend Bhojpuri as an independent language, but it lies with the Government of India to supply us with the ways and means to make the proposal work. I have sent all the papers in this connexion to our Secretary, Dr. P. Machwe, who will give you any further information you want.

With all my good wishes and apologies for writing my reply in English, as I am terribly busy and it is convenient to dictate my letter and have it typed in English.

Yours sincerely,

Sd. Suniti Kumar Chatterji

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(अनुवाद)

"निवास" कार्यालय
"सुधरमा" राष्ट्रीय पुस्तकालय
१६ हिन्दुस्तान पार्क वेलभेडियर
कलकत्ता–२८ सुनीति कुमार चटर्जी कलकत्ता–२७
फोन–४६-११२१ राष्ट्रीय प्राध्यापक फोन–४५५३१६

अक्टूबर २३-१६७१

श्रद्धेय स्वामी विमलानन्द सरस्वती,

अध्यक्ष, राजगुरु मठ, शिवालाघाट, वाराणसी (उ० प्र०)

आदरणीय स्वामी जी !

खुलल चिट्ठी में अपने के भोजपुरी के लम्बी कविता का साथ, अपने के हमरा के लिखल ८-१०-७१वाली चिट्ठी मिलल। ओह चिट्ठीमें रउरा भोजपुरी के स्वतन्त्र भाषा के रूप में स्वीकार करे खातिर हमरा के बहुत सुन्दर कविता लिखले बानी। अपने भोजपुरी क्षेत्र के संस्कृति के चित्र देले बानी। एह सब खातिर अपने के बहुत बहुत धन्यवाद। लेकिन हम अपने से कह चुकल बानी कि एह विषय में हमार कवनो हाथ नइखे। भोजपुरी भाषा साहित्य के विशेषज्ञ विद्वान का समिति द्वारा एकर निर्णय होई। जब समिति के बैठक होई तब डा० उदय नारायण तिवारी नियर भोजपुरी के प्रसिद्ध विद्वान ओह में रहिहें। पार्लियामेंट का जरिये रउवा हर तरह से पैरवी करीं। हमनी के समिति भोजपुरी के स्वतन्त्र भाषा के अनुशंसा ना दे सकेले। लेकिन एह प्रस्ताव के योजना के आपूर्ति, भारत सरकार का अधीन बा। हम अपना मन्त्री डा० पी० माचवे के सब कागज पत्र भेज देले बानी जे रउआ के आगे कुछ सूचना रउआ चाहबि त दीहे।

अपना शुभकामना का साथ, अंग्रेजी में चिट्ठी के जबाव दिहला खातिर माफी माँगतानी। हम बहुत व्यस्त बानी आ अंग्रेजी में चिट्ठी लिखवाल आ टाइप कइला में सुविधा बा—

अपने के स्नेहाकांक्षी
(ह०) सुनीतिकुमार चटर्जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

भूमि सुधार की दिशा में बिहार के बढ़ते चरण

राज्य में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के लिए भूमि सुधार की दिशा में निम्नलिखित प्रगतिशील कदम उठाए गए हैं :—

१. भूमिहीनों को भूमि—अबतक २.७५ लाख एकड़ भूमि २.३० लाख भूमिहीन परिवारों के साथ बन्दोवस्त की जा चुकी है। लगभग ६,००० ऐकड़ जमीन को ३७०० सैनिक परिवारों के साथ बन्दोवस्त किया गया है। इसके अतिरिक्त आठ लाख से अधिक भूमिहीन परिवारों को वासगीत भूमि का पर्चा दिया जा चुका है।

२. भूमि हदबन्दी कानून के लागू किये जाने पर लगभग पाँच से दस लाख एकड़ जमीन भूमिहीन कृषक मजदूरों के बीच, शीघ्र ही, वितरित की जायगी।

३. भूमिहीन किसानों के बीच अबतक ४.२६ लाख एकड़ भूदान जमीन वितरित की जा चुकी है और अगले वर्ष तक लगभग ५ लाख एकड़ भूदान जमीन और भी वितरित की जायगी।

४. छोटानागपुर के आदिवासी स्वतन्त्रता सेनानियों में से २,६५३ ताना भगत परिवारों को, जिनकी जमीन ब्रिटिश राज के समय छीन ली गई थी, जमीन वापस दिलाई जा रही है। इसके अलावा प्रत्येक ताना भगत परिवार को पाँच एकड़ भूमि बन्दोवस्त की जा रही है।

५. राज्य के लगभग २.५० करोड़ एकड़ कृषि भूमि को उत्पादन वृद्धि के लिए और ग्रामीण जीवन के नवनिर्माण एवं समन्वित विकास के लिए, लगभग २८ करोड़ रुपयों की लागत पर चकबन्दी का एक वृहद कार्यक्रम आरम्भ किया गया है जो चार चरणों में पूरा किया जायगा और जिसको समाप्ति छः सात वर्ष लगेंगे।

६. किसानों को आसानी से कर्ज दिलाने की व्यवस्था करने के लिए सभी रैयतों को एक-एक जमीन-परिचय पत्र जारी किया जा रहा है। जिसमें जमीन सम्बन्धी अद्यतन भू अभिलेख एवं अन्य विवरण अंकित होंगे।

७. मध्यवर्त्ती स्वार्थों का अन्तिम प्रतीक-जमशेदपुर स्थित टाटा की जमींदारी भी पूर्णतया राज्य में निहित कर ली गई है।

जन-सम्पर्क विभाग, बिहार द्वारा प्रसारित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गायन (१)

जागरण-गीत

(मैथिली)

हमर देश जागल, हमर भाग जागल।
हमर गीत में जागरण-राग जागल।

शिशिर-राति बीतल।
कठिन शीत जीतल।

जेना काढ़ि कऽ फण कोनो नाग जागल।
हमर भाग जागल, हमर देश जागल।

विजय-श्री भेटै छै पहिले उदय कें।
करय जे पराजित अन्हारक अनय कें।

भुवन भरि उजागर,
नदी, झील, सागर,

मनोरथ गुनागर, विपिन, बाग जागल।
हमर भाग जागल, हमर देश जागल।
चरित्रेक बल सँ प्रगति पर बढ़ै-ऐ।
चरित्रेक विकासक शिखर पर चढ़ै-ऐ।

न सोना, न दाना।
न सेना - खजाना।

चरित्रेक तप सँ हमर त्याग जागल।
हमर भाग जागल, हमर देश जागल।

—आरसी प्रसाद सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बायन (२)

गजल

(मगही)

तूँ न सुनबऽ त इ मन के बात केकरा से कहूं हम ?
पचर अनका से न कहलो जात, केकरा से कहूं हम ?

देउं हिरदा खोल कोई थाह ले सउंसे समुन्दर
कउन अइसन हे कि दुख पतिआत केकरा से कहूं हम ?

कउन टाँकत घाउ, छहरल पर चढ़ावत लेप चन्नन ?
के हरत हम्मर मरम आघात, केकरा से कहूं हम ?

कँप रहल हे मन कि जइसे कँपकँपी छउ में दिआ के
कँप रहल अनमन कि पीपर पात, केकरा से कहूं हम ?

राह देखलक रात भर अँखिया कि मन के मीत अउतन
ऊ न अइलन, रात होल परात, केकरा से कहूं हम ?

तूं उधर गेलऽ इधर निनिऑं हेराएल, अब करूं का ?
होल सपनों में कठिन मुलकात, केकरा से कहूं हम ?

एक दुख जब होय ओकरा से तनी तब पार पामूं
कर रहल उछबात सब समिलात, केकरा से कहूं हम ?

लाख भुलबऽ ही इयाद मगर भुलइलो न भुला हे
का करूँ ई हे बड़ी बदजात, केकरा से कहूं हम ?

मृत्युञ्जय मिश्र 'करुणेश'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विज्ञान की अभिनव पुस्तकें

बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कारपोरेशन लि० ने बिहार राज्य के वर्ग १–२ के शिक्षकों के शिक्षण की सुविधा के लिए 'समान्य विज्ञान-दर्शिका' प्रकाशित की है। इसके अतिरिक्त वर्ग ३ से वर्ग ७ के छात्र-छात्राओं के लिए 'सरल विज्ञान' के नाम से विज्ञान की अभिनव पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं। ये सभी बहुरंगी पुस्तकें विज्ञान की नवीन शिक्षण-पद्धति के अनुकूल तैयार की गई हैं और अत्यन्त आकर्षक; उपयोगी तथा सस्ती हैं।

बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग
कारपोरेशन लि०
बुद्ध मार्ग, पटना–१

बिहार स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक लि०

प्रधान कार्यालय, पटना

गणतन्त्र दिवस की शुभकामनाओं के साथ खुद और अपने अंगीभूत केन्द्रीय सहकारी बैंकों के माध्यम से बैंक की सेवा, ऋण और ओभर ड्राफ्ट देकर बिहार के सहकारी क्षेत्र के किसान, कारीगर और लघु उद्योग की सेवा करने का घोषणा करते हैं तथा चाहते हैं कि सभी सहकारी पदाधिकारी और कर्मचारी सहकारियों के बकाए की वसूली में सहयोग देकर चालू वर्ष को सफल बनावें।

शाखाएँ—बाँकीपुर, नया सचिवालय, मुसल्लहपुर हाट, न्यू मार्केट (पटना) विस्टुपुर, गोलमुरी (जमशेदपुर) और बिहट (बरौनी)।

जे० चरण, सचिव

एम० ए० एम० जिलानी, आई० ए० एस० प्रबंध निदेशक

मथुरा प्र० सिंह अध्यक्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ ओ३म ॥

संस्कार प्रशिक्षण विद्यालय

आर्य समाज मन्दिर, मीठापुर, पटना-१

श्रीमन्नमस्ते। विद्यालय का दूसरा शिविर दयानन्द विद्यालय, मीठापुर पटना—१ में १ से १५ फरवरी, १९७३ तक रात्रि में ६ बजे से ९ बजे तक चलेगा जिसमें १५ दिनों में यज्ञोपवीत, विवाह, अन्त्येष्टि (श्राद्ध) आदि १६ संस्कारों एवं यज्ञ (पूजा-पाठ) करने-करानेकी व्यवहारिक शिक्षा ३५० परीक्षार्थियों को दी जायगी।

संस्कार विद्यालय की परीक्षा २५ फरवरी, १९७३ को उपर्युक्त दयानन्द विद्यालय में होगी तथा परीक्षोत्तीर्ण शिक्षार्थियों को दीक्षान्त समारोह में 'संस्कार शास्त्री' की उपाधि दी जायेगी तथा उपाधि प्राप्त कर मनुष्य, अपने नाम के सामने शास्त्री लिख सकेगा तथा पुरोहित वन कर समाज का नेतृत्व कर सकेगा।

आप घर वैठे डाक से विद्यालय के पाठ्यक्रम एवं पुस्तकें मंगाकर प्राइवेट तैयारी करके भी परीक्षा में शामिल हो सकेंगे। अतः जिन शिक्षार्थियों ने विद्यालय शुल्क १०) जमा नहीं किया है उन्हें शुल्क शीघ्र जमा कर देना चाहि अन्यथा वे परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सकेंगे।

अबतक जो ४१५शिक्षार्थियों ने नाम लिखाया है उनमें अधिकांश विधायक प्रोफेसर,डाक्टर,वकील, अभियंता तथा एम.ए.से मैट्रीक तकके छात्र-छात्रायें हैं।

एक स्थान में २५-३० शिक्षार्थी होने पर वहाँ परीक्षा केन्द्र रहेगा तथा ५०-६० शिक्षार्थी होने पर वहाँ शिविर लगाया जायेगा। कृपया स्थानीय विद्यालयों और आर्य समाजों से सम्पर्क स्थापित कर परीक्षा केन्द्र खोलें, शिविर लगाने की व्यवस्था करें तथा सैकड़ों बन्धुओं-देवियों को परीक्षा में बैठाकर शास्त्री की उपाधि दिलावें। सोलहों सस्कारों की शिक्षा से शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति होती है तथा इससे जातिरूपी कोढ़ नष्ट होगा।

इस शिक्षा से चारित्रिक निर्माण होता है तथा यह सामाजिक एवं धार्मिक अन्ध विश्वास और पाखण्ड के लाखों रुपये के दुरुपयोग से वचायेगी। चारों पुस्तकें विद्यालय से ११।।) रु० में मँगा सकते हैं।

भवदीय

बनारसी सिंह, 'विजयी', मंत्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक परिचय

प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य—ले० वृन्दावन दास। साहित्य प्रकाशन मालीवाड़ा—नई सड़क, दिल्ली ६ प्र० काल १९७२ दाम १२ रुपया पचास पइसा—पन्ना ३६४, सजिल्द, छपाई सफाई बहुत सुन्दर। इतिहास का एह किताब में प्राचीन भारत में हिन्दू राज्य के आदि काल से एक हजार बरिस तक के भारतीय इतिहास के सिलसिलेवार झाँकी मिली। आजु के इतिहासकार पुराण के अलगा कइ के इतिहास लिखेले। ब्रज भारती के यशस्वी सम्पादक विद्यावारिधि श्री वृन्दावन दास जी के सर्वतोमुखी प्रतिभा के सभे कायल बा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन उ० प्र० के अध्यक्ष का हैसियत से अपने जे हिन्दी के सेवा कर रहल बानी उ सराहनीय बा।

पुस्तक में ४४ विषयन के जिकिर बा। ललित शैली आ सरल भाषा में जेतना सामग्री एह इतिहास में दीहल बा उ प्रशंसा के बात बा। पुराण के कथा के वैज्ञानिक ढंग से अपने लिखले बानीं। किताब में अनेक भरम दूर कइल गइल बा। हिन्दू राज्य के अतना जीअत जागत तस्वीर एक जगह हाला-हाली कहीं देखे का ना मिली। लेखक के परिश्रम आ अध्यवसाय के नमूना हर पन्ना पर मिलता। अपना के हिन्दू कहे में जे लोग लजाला उन्हन लोगन के लाज ई किताब पढ़ला पर छूटि जाई। प्राचीन भारत के इतिहास लिखे में जे प्रयास कइल जाई आ प्रयास कइला पर जे पुस्तक तइयार होई ओह कितावन का पाँति में एकर नम्बर आगे रही। अइसन किताब लिखला खातिर बाबूजी के अनेक बधाई।

पा० न० स०

प्रसाद—ले० श्री काजी अशरफ महमूद। ई किताब 'प्रसाद' बंगला देश से भोजपुरी परिवार पटना के पास परसादी के बायन भेजल गइल बा। भगवान श्रीकृष्ण के प्रसाद ह। रसखान आ सूरदास जी नीयन अशरफ साहेब भी श्रीकृष्ण के चोटी के भगत हवे। एह किताब में 'हरि आये', 'वियोगिनी', 'उन्मना', 'रहस्य', 'ब्रज दर्शन', 'शुभ क्षण', आह्वान' 'अभिलाष' शीर्षक कविता में भक्ति रस आ विरह रस के आठ गो भजन कीर्तन बा। कवितन से कृष्ण भक्ति, ब्रज भक्ति, देश भक्ति, मातृभक्ति आ गोपी लोग के विरह टपकत बा। जइसे विरह में—

कब फिर सजनी, ब्रज में आकर, बनकर ब्रज के नागर
दूर करेंगे श्री राधा वर; राधा का दुख सारा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

बंगला देश के मुसलमान भाई भी हिन्दू देवतन के अतना आदर आ प्रेम के नजर से देखत बाड़न ई बंगला देशके धर्म निरपेक्षता के बहुत बड़ सबूत बा। हिन्दू मुसलमान भाई एक दोसरा के परब-तीह में मिल-जुल के उतसो मनइहें आ आपुस के प्रेम भाव बढ़इहें तब दूनो देश एकता आ प्रेम का बाँध में हरदम खातिर बँधा जइहें। ई काम सच्चा प्रेम से ही सम्भव हो सकेला। सर्व धर्म समन्वय के जवना सिद्धान्त पर भारतवासी चलेले ओही सिद्धान्त पर बंगला देश चले त दिन दूना रात चौगुना उन्नति करी।

असरफ साहेब के एह भजनावली 'प्रसाद' के काव्य रचना खातिर भोजपुरी परिवार पटना के ओर से बहुत-बहुत शुक्रिया।

सुरेश जी पाठक

भोर पहर के दीया

लहरि उतरि गइला प
उतिर ढरकि गइला प
केहू के छोरि दोहल होखे—
जइसे अनगराहित पस,
सनेह के पियासल
जिनिगी जोये के भूखि
दिल के कवनो कोना में
जेकरा सुगबुगात होखे,
केहू के सुकवार आखरा के—
कोंढ़ो जइसे ममोरि दोहल जाय
आ एगो अधजरल कफन में ऊ—
लपिटाये खातिर अंतिम साँस गीनत होखे;
जबले आके फिन हम के केहू नया—
जिनिगी देवे; हम के मत बुताव
मोरे प्रान! हम के एही तरे जरे द
ओइसने केहू के मजारि प जरत
हम हईं भोर पहर के दीया!

—रजनीकान्त पाण्डेय 'राकेश'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्नी का स्वास्थ्य पति की बहुत बड़ी अमानत है

कहते हैं कि आदमी को ईश्वर की सब से
बड़ी और उत्तम देन है—

उसकी पत्नी

पत्नी गुणों की खान होती है। उसकी हर
खूबी बेमिसाल और जीवन में रस
भरने वाली है।

इसलिये पति का यह पहला फर्ज है कि वह पत्नी की सेहत और उसके सुख को अच्छी तरह देख-भाल करें और उसे ज्यादा बच्चों के बोझ से न लादें। साथ-साथ उन फूल से बच्चों की भी देख-भाल और रक्षा करें जिनको वह जन्म देती है।

अतः जिन्हें दो या तीन बच्चे हों उन्हें तुरत
नसबन्दी कराकर अधिक बच्चों की
परेशानी से बचना चाहिए।

राज्य परिवार नियोजन ब्यूरो बिहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक के विचार

एह अंक से 'अंजोर' के तेरहवां बरिस समाप्त हो जाता। तेरह बरिस का समय में 'अंजोर' अपना दीया बाती से जहां तक हो सकल भोजपुरी माई का मन्दिर में अंजोर कइलसि। जे जे भाई लोग, गाँहक, लेखक आ कवि राय देवे के किरपा कइल ओह सभ लोगन के भोजपूरी परिवार धन्यवाद देता। ओह सभन का मदति का बिना 'अंजोर' कवहीं अंजोर ना करित।

अवहीं भोजपुरी भाषा आ क्षेत्र खातिर बहुत कुछ करेके बा। अभी तक भोजपुरी के मान्यता साहित्य अकादेमी से ना मिलल। हमनी का जी जान से कोसिस करबि त उ कवनो मुश्किल बात नइखे। भोजपुरी भाई लोगनमें भोजपुरी खातिर मोह के कमी बा। चारू ओर सभा सोसाइटी बना के आन्दोलन करेके जरूत बा। अबहीं भी लोग ना कान करी त आगे के हाल बेहाले बा। भोजपुरी भाई के गोहार भोजपुरी भाई लोग सुनि के अनसुना कइ देता।

भोजपुरी के साहित्य दिनो दिन वढ़न्ती पर बा। भोजपुरी के किताब अखबार खरीद के लेखक आ प्रकाशक के वउसाव वढ़ावे के काम बा।

पा० न० स०

इलाहाबाद भोजपुरी संसद के जलसा

१७ दिसम्बर के इलावाद में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आँगन में एगो भोजपुरी के कवि-सम्मेलन भइल। कवि सम्मेलन के कर्त्ता धर्त्ता भोजपुरी के जानल मानल कवि श्री भोलानाथ गहमरी रहलीं। उघाटन पं० श्री उदयनारायण तिवारी कइलीं आ अध्यक्षता कइलीं डा० कृष्णदेव उपाध्याय। सुरक्षा मंत्री श्री जगजीवन राम जी मुख्य अतिथि रहलीं।

सम्मेलन के शुभारम्भ हमरा बिरहा (मंगलाचरण) से भइल आ ओकरा बाद श्री अनुरागी जी के सरस्वती वन्दना सुनल लोग।

श्री उदय दारायण तिवारी जी भोजपुरी साहित्य के छोटहन इतिहास कहि के भोजपुरी साहित्य के विशेषता बतवलीं। अपने के भाषण भोजपुरी साहित्य खातिर पुरहर राह देखावे वाला आ गम्भीर रहे।

श्री जगजींवन रामजी भोजपुरी के तारीफ कइलीं। भोजपुरी राज्य आ प्रान्त बनावे का पछ में अपने ना रहीं। अपने कहलीं कि भोजपुरीं राज आ प्रान्त का दायरा में बन्हाई त संकीर्ण बनि जाई। एकर अन्तर राष्ट्रीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसिद्धि बा से ना रही। भोजपुरी के मान्यता का बारे में भी अपने कहलीं। बाद में करीब एक डेढ़ घंटा तक झूमि-झूमि के कविता पाठ के आनन्द लिहलीं।

कवि सम्मेलन के संचालन हिन्दी भोजपुरी के प्रसिद्ध विद्वान आ आकाशवाणी पटना के पदाधिकारी श्री मदन मोहन सिनहा 'मनुज' जी कइलीं। कवि सम्मेलन का सफलता के सेहरा भाई गहमरी जी का माथे बन्हाई।

भोजन पान, रहे के व्यवस्था अति उत्तम रहे। कवि लोग के यथा-सम्भव सत्कार भइल।

कवि सम्मेलन में भाग लेवे वाला कवि लोगन में सर्वश्री प्रो० उमाकन्त वर्मा (हाजीपुर) प्रो० मोती बी० ए० (देवरिया) सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश'(छपरा) जनार्दन पाण्डेय 'अनुरागी' (देवरिया) जगदीश ओझा 'सुन्दर'(बलिया) सतीशचन्द्र श्रीवास्तव (गाजीपुर) पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय (पटना) मदनमोहन सिनहा 'मनुज' (पटना) रामजी सिंह 'मुखिया' (आरा) चन्द्रशेखर मिश्र (वाराणसी) अभयनाथ तिवारी (वाराणसी) आनन्द सन्धिदूत(गहमर-गाजीपुर) हरिराम द्विवेदी (रामपुर-वाराणसी) धर्मदेव मिश्र 'कमलेश' (आजमगढ़) गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश' (वाराणसी) भोलानाथ गहमरी (इलाहाबाद) 'बेधड़क बनारसी' नीलम (वाराणसी) श्रीराम प्रसाद पाण्डेय (ओबरा) संकट प्रसाद शुष्क (ओबरा) गोपाल कृष्ण द्विवेदी (गाजीपुर)।

स्थानीय में सन्त कुमार 'वीरान', प्रभाकर द्विवेदी, ब्रह्मानन्द श्रीवास्तव; प्रभा मिश्र इत्यादि लोग रहे।

गहमरी जी के एक बेरि फेरु बधाई।

पा० न० स०

पं० गणेश चौबेजी के ६० वां बरिसगांठ

पं० गणेश चौबेजी भोजपुरी के पुरान उन्नायकन में हईं। अपने के भोजपुरी लोक साहित्य के सेवा से सभे जानकारी राखेला। भाषा विज्ञान के भी अपने विद्वान हईं। हिन्दी आ भोजपुरी दूनों में समान गति से अपने के सैकड़न लेख देश का भिन्न-भिन्न पत्रिकन में प्रकाशित भइल आ हो रहल बा। भोजपुरी परिवार पटना आ 'अँजोर' के सम्पादक मंडल के सदस्य हुईं। 'अँजोर' के त अपने एक तरह खेमा बानीं। अँजोर के स्तर, रूप, साज, सज्जा संवारे में अपने के बड़हन हाथ बा। कवनो अखबार निकली त चौबे जी के अपना सम्पादक मंडल में राखि के लोग अपना के धनि समझेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी गद्य संग्रह जे बिहार विश्वविद्यालय से निकलल ह ओकरा में अपने सम्पादक मंडल में बानी। सादा जीवन आ उच्च विचार अपने के जिनिगी के वसूल ह। सचमुच 'आत्मीयता आ मित्रवत्सलता के भाव अपने का सुभाव में रमल बा।

६ दिसम्वर ७२ के अपने ६० वरिस पूरा कइलीं। भोजपुरी परिवार समस्त भोजपुरी सेवी भाई लोगन का ओरि से अपने के अभिनन्दन करता आ परमात्मा से प्रार्थना करता कि अपने के निरोग राखि के दीर्घजावी बनावें।

पा० न० स०

राज गोपालाचारीजी के सरगवास

राजगोपालाचारी जी के ९४ वरिस का उभिरि में सरगवास हो गइल। अपने कुशल राजनीति के जाने वाला, उद्भट विद्वान आ नीति आ धर्म के प्रकाण्ड पंडित रहली हाँ। सम्पादक कला के आचार्य, अपने कई अंग्रेजी पत्रिका के सम्पादन कइलीं। रामायण, महाभारत, गीता के अंग्रेजी में टीका सहित अनुवाद कइलीं। गाँधीयुग के एक मात्र नेता जे आपन सरवस देस का सेवा में लगा दिहलीं उहे राजा जी देश के सुन क के चलि गइली। केन्द्र में कुछ दिन तक अपने शिक्षा मन्त्री रहलीं। स्वाधीन भारत के पहिलका गवर्नर जेनेरल के पद के शोभा वढ़वलीं। अपने स्वराज्य पार्टी के स्थापना कइले रहीं। गाँधी जी भी अपने के योग्यता आ काबिलियत के लोहा मानत रहलीं। भगवान से हमनी के प्रार्थना बा कि सरगवासी आत्मा के सद्गति आ शान्ति देसु।

पा० न० स०

'माधव' जी के गोलोकवास

डा० भुवनेश्वर नाथ मिश्र 'माधव' बिहार के एगो बड़ विद्वान आ सन्त साहित्य के विशेष जानकारी राखे वाला रहीं। अपने पहिले गीता प्रेस, गोरखपुर में रहलीं। बाद में आरा जैन कालेज में अइलीं। फेरु औरंगावाद कालेज में प्राचार्य पद पर गइलीं। इहाँ शिक्षा विभाग के अनेक पद पर अपने काम कइलीं। कहीं आचार्य, कहीं प्राचार्य आ कहीं में निदेशक बनि के आपन सेवा विहार के दिहलीं। माधवजी भोजपुर (आरा) जिला के मिसिर वंली गाँव के रहीं। संस्कृत, हिन्दी, अंगरेजी आ बंगला के विद्वान रहीं।

अपने के भोजपुरी में सन्त साहित्य के विशेष अध्ययन रहे। 'अँजोर' पर अपने बराबर छोह के नजर रखलीं आ लिखलीं। मिजाज में हमेसा बुलन्दी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठा के हँसे के सुभाव, परहित के बराबर धेआन अपने के कुछ विशेष गुन रहे। अपनेके कृपा से 'जनकवि भिखारी ठाकुर' भोजपुरी परिवार से प्रकाशित भइल जवना घरी अपने राष्ट्रभाषा परिषद के निदेशक रहीं। अपने का गोलोक बास से प्रान्त के एगो बड़हन क्षति हो गइल। भगवान हमनी के ई दुख सहे के शक्ति आ गोलोकवासी आत्मा के सदगति आ शान्ति देसु।

पा० न० स०

मोहन राकेश

बुआता कि साहित्य के रत्न के चुनि-चुनि के काल ले जाता। अभी हाल में भाई 'मोहन राकेश हिन्दी साहित्य के मानल जानल कथाकार आ कलाकार' के हृदय गति रुकला से देहान्त हो गइल। राकेश जी अवहीं नवहनि में रहले हा। उनका से हिन्दी साहित्य का बहुत कुछ उमेदि रहल हा। प्रभु उनका दिवंगत आत्मा के सदगति आ शान्ति देसु आ दुखी परिवार के ई दुख सहे के ताकत।

पा० न० स०

श्री रामचन्द्र सहाय जीं के गुरुलोक वास

भोजपुरी परिवार के सवांग आ भोजपुरी के हित चाहे वाला श्री रामचन्द्र सहाय जी के सरगवास दिसम्बर का आखरी हफ्ता में तारकेश्वरनाथपथ चिरैया टाड़ में करीब ७५ बरिस का उमिरि में हो गइल। अपने के जनम ३ सितम्बर १८९५ में बक्सर में भइल रहे। अपने के घर बक्सरे का पास पाण्डेयपट्टी गांव में रहे। अपने दूगो बेटा आ दूगो बेटी छोड़ गइल बानी। श्री रघुकल तिलक बड़का बेटा बक्सर में वकालत करेले। छोट जना श्री दिवाकर कामर्स कालेज में प्राध्यापक बानी। गीता आ गोपाल के बिआह हो गइल बा। अपने कोअपरेटिव बैंक विभाग से अवसर प्राप्त कर के ईश्वर भजन में, आपन दिन बीतावत रहली हाँ। स्वभाव में सरलपन, मिजाज में नम्रता आ बेवहार में अपनापन ई सहायजी के खास खूबी रहे। क्रिया योग सम्प्रदाय, थियोसफीस्ट सम्प्रदाय से अपने के घनिष्ट संबंध रहे। अतिथि सेवा में अपने के बराबरी सायदे केहू करे। अपने का निधन से भोजपुरी परिवार के एगो बरियार पाया ढहि गइल। गुरूदेव से प्रार्थना बा कि अपने के सदगति आ आत्मा के शान्ति देसु।

पा० न० स०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी में शोध-काम

स्विस महिला श्रीमती जीतिका जी के भोजपुरी लोक गीतन के सांस्कृतिक रूप पर अनुसंधान।

वचन देवी गोष्ठी का ओर से सम्मेलन भवन में स्विस महिला श्रीमती जीतिका के स्वागत-सम्मान रहे। भोजपुरी परिवार का ओर से उनकर स्वागत एगो खास बात रहे। शरीर आ चेहरा मोहरा से देखे में सुन्दर। एकहरा वदन, गोर रंग। मन्द-मन्द मुसुकात ई रही जीतिका जी! बुझात रहे कि हमनी का बीच में अपना के पा के ऊ बहुते खुश रहली। सभे अपना-अपना तरह से उनकर स्वागत कइल। हमहूं उनकरा बारे में कुछ बोललीं। कहलीं—"बेटी जीतिका, जइसे ससुरार से बेटी बाप, महतारी का घरे नैहर आवेले आ जे खुशी

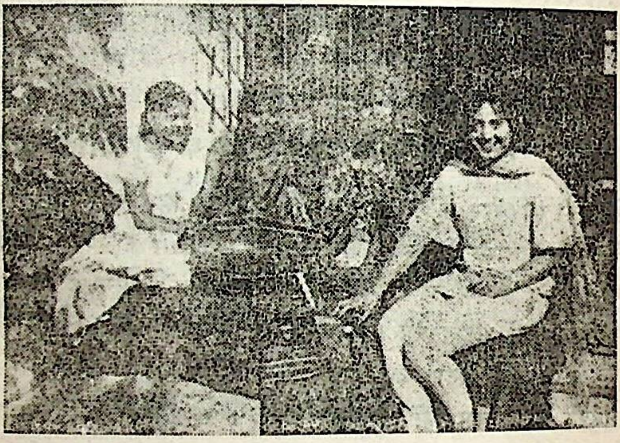

डा० बजरंग वर्मा का परिवार में ढोलक पर गावत लोक-गीतन के जीतिका द्वारा रेकार्डिंग

उन्हन लोग का होला उहे खुशी आजु हमरा हो रहल बा। भोजपुरी माई का मन्दिर में अपना सरधा के फूल चढ़ावे तू भारत खास, कइके बिहार में आइल बाड़ू, ई जानि के हमन का सब भोजपुरी सेवी तोहरा के बहुत बहुत धन्यवाद देतानी। भोजपुरी परिवार पहले तोहरा अनुसन्धान का काम में भरपूर मदति करी। एक बेरि तोहरा खातिर भगवान से हमन का विनती करबि कि जबले एह देश का माटी पर तूँ रह, जाँगर से निरोग रह आ बिहार के लोग का स्नेह, दुलार आ प्यार से अपना के भरपूर पाव।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा बोलला पर उ हमनी के जवाब देली। शुद्ध हिन्दी में मन्द मन्द मुसुकात, उ हमरा के हाथ जोरि के प्रणाम कइली। कहली "आज के आप लोगों के सदव्यवहार को मैं जहाँ कहीं भी रहूँगी याद रखूँगी। भोजपुरी भाषा के प्रति मेरे स्नेह के आर्कषण ने मुझे आप लोगों के बीच खींच लाया है। मुझे विश्वास है आप लोगों के आशीर्वाद और सहयोग से जिस काम के लिए मैं भारत आई हूं (भोजपुरी लोकगीतों के सांस्कृतिक रूप पर अनुसन्धान) उसे पूरा कर लूँगी।"

डा० जीतिकाजी के नाम रहे ज्ञतका हेर्तिक। इहाँ लोग उनकर नाम धइल 'जीतिका'।

पहले उ वासुदेव अग्रवालजी पटना के एक सम्मान्य नागरिक के अतिथि रहली। वाद में डा० बजरंग वर्मा का घरे कंकड़ बाग चलि गइली आ परिवार के एगो संवागिन नियर रहे लगली। इन्हका शील स्वभाव आ वेवहार के तारीफ डा० वजरंग जी का मुँहे सुनिके केहू निहाल हो जाई। लोक गीतन के गवा गवा क रेयरकार्डिंग करवाना, लोक गीतन के शब्दन के समुझे के कोशिश करना, उन्हन के संग्रह करना इहे इनकर काम रहे।

११-१२-७२ तारीख के लिखल एगो चिट्ठा भ ई संवाद भेजली हा कि जनवरी ७ के स्वीजर लैंड के राजधानी बर्न में उनुकर निर्देशित भाषण होई। एह अवसर पर डा० वर्मा के परिवार के जवन चित्र ले ले रही ओकरन के भी देखइहें।

डा० जीतिका, डा० ओडेलेन स्मेकेल के देखरेख में प्राग विश्वविद्यालय (जेकोस्लेवेकिया) से भोजपुरी "लोकगीतों का सांस्क्रतिक अध्ययन" विपय पर एह साल पी० एच-डी के उपाधि लिहली ह। भारत में अनुसन्धान करत डा० वर्मा से भी उनका काफी सहायता मिलल। डा० जीतिका भोजपुरी में अउर भी अनुसन्धान करे जा रहल बाड़ी। उनका भोजपुरी संस्कृति से वेहद प्रेम बा और भोजपुरी परिवार खातिर बड़ा सरधा राखेली।

पा० न० स०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रीय बचत सुरक्षा प्रतिभूतियों एवं खाते में धन लगावें। इनमें आपको और राष्ट्र को उन्नति निहित है।

प्रतिभूतियां एवं खाते	सूद को दर
(क) डाकघर बचत बैंक खाता	४% प्रतिवर्ष
(ख) बन्द जमा दो वर्षों के लिए	४½% प्रतिवर्ष
(ग) एक वर्षीय डाकघर सावधि जमा	६% प्रतिवर्ष
(ख) तीन वर्षीय डाकघर सावधि जमा	७% प्रतिवर्ष
(ङ) पाँच वर्षीय डाकघर सावधि जमा	७¼% प्रतिवर्ष
(च) पाँच वर्षीय आवर्त्ती जमा	६¾% प्रतिवर्ष
(छ) पाँच वर्षीय राष्ट्रीय बढ़ने वाली सावधिक जमा	४¾% प्रतिवर्ष
(ज) सात वर्षीय राष्ट्रीय बचत पत्र (चतुर्थ निर्गम)	७½% प्रतिवर्ष

इस योजना के अन्तर्गत यह सुविधा दी गयी है कि यदि जमाकर्त्ता २४ महीने तक लगातार ५/- एवं १० - जमा करता है और इस बीच में जमाकर्त्ता की मृत्यु हो जाती है तो उनके नामांकन को पूरा रुपया मिल जायगा।

राष्ट्रीय बचत निदेशालय,
वित्त विभाग, बिहार, पटना
द्वारा प्रसारित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार राज्य पथ परिवहन निगम

बिहार राज्य पथ परिवहन निगम की २५४२ गाड़ियाँ प्रतिदिन करीब दो लाख किलो मीटर चला करती है। यह पूर्वी क्षेत्र में सबसे बड़ा परिवहन संस्थान है। आप इन्हीं गाड़ियों से यात्रा करें। जहाँ काउन्टर बुकिंग से टिकट प्रदान करने की सुविधा है वहाँ काउन्टर से ही टिकट लेकर यात्रा करें।

स्मरणीय है कि अब बिना टिकट यात्रा करना दण्डनीय अपराध है। इसलिए किसी प्रकार की झंझट से बचने के लिए गाड़ी में प्रवेश करने से पहले ही टिकट अवश्य खरीद लें।

अपनी सहायता के लिए मेरी सहायता करें।

प्रचारित

बिहार राज्य पथ परिवहन निगम, पटना।

अँजोर के विज्ञापन दर

	रु० पै०
चौथा पन्ना	२००-००
तीसरा पन्ना	१५०-००
साधारण पन्ना	१००-००
आधा पन्ना	५०-६०

सालाना शुल्क—४ रुपया डाक खर्च—१ रु०

एह अंक के २ रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार राज्य विद्युत बोर्ड की प्रगति

	मार्च, १९६१ तक	मार्च, १९६६ तक	मार्च, १९७१ तक	मार्च, १९७… तक
प्रतिष्ठापित संयंत्र क्षमता (मेगावाट)	१४	५९	४०८	४६…
उत्पादित बिजली (दसलाख किलोवाट घंटे)	२९.४०	१०७.८१	१२७०.३०	१४३८.…
विद्युतीकृत गाँवों की संख्या	२३२८	३७९२	७९१३	८४१…
ऊर्जायित पंपों की संख्या	३९१६	१०,५५६	६५,३६६	७३,३८…

हमारी दृष्टि में कर्म ही पूजा, सेवा ही मंत्र, उपभोक्ता ही उपास्य, सत्य ही आदर्श और परम्परा तथा संस्कृति ही हमारी अक्षय शक्ति है।

जन-सम्पर्क पदाधिकारी,

बिहार राज्य विद्युत बोर्ड, द्वारा प्रचारित।

हुंकार प्रेस, न्यू मार्केट, पटना–१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[बिहार सरकार द्वारा विद्यालय आ पुस्तकालय खातिर स्वीकृत]

४

अँजोर

[भोजपुरी परिवार (पटना) के त्रैमासिक मुख-पत्र]

जा में रस कछु होत है, ताहि पढ़त सब कोय ।
भाव अनूठो चाहिये, भाषा काहू होय ॥

प्रधान सम्पादक
पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

कला—१४ किरिनि—१-२

अप्रिल : जुलाई : १९७३

भोजपुरी परिवार
पटना-३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक-मण्डल

रासबिहारी राय शर्मा, गणेश चौबे, रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द'
डा० वसन्त कुमार, प्रो० ब्रजकिशोर, डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी',
धीरेन्द्र प्रसाद सिन्हा 'धवल'

सहायक-संपादक
अविनाशचन्द्र विद्यार्थी

एह अंक में पढ़ीं

		पन्ना
१.	निराला जी के भोजपुरी गीत	१
२.	भोजपुरी लोक-साहित्य एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण—हरिश्चन्द्र प्रसाद	२
३.	एगो संडी क इयाद (कविता)—हो० चो० मिन्ह, अनु०—सुबन्धु	११
४.	गीत (कविता)—शमशेर बहादुर सिंह	११
५.	श्री कुलदीप नाराय राय 'झड़प' : एक भेंट—अनिल कुमार राय 'आंजनेय'	१२
६.	गजल—रामेश्वर प्रसाद सिन्हा	२३
७.	चल, चलों गवईं की ओर (कविता)—रमाशंकर राय	२४
८	मानस के मोती : साहित्य-संसार में राम वरणन—कमला प्र० मिश्र 'विप्र'	२५
९.	गीत (कविता)—रामवृक्ष राय 'विधुर'	३४
१०.	कुंठा (कहानी)—परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी'	३५
११.	देहाती जोंक (एकांकी)—तैयब हुसेन 'पीड़ित'	३९
१२.	पनघट के किनारे (कविता)—विश्वेश्वर प्रसाद मिश्र 'आढ़त'	५४
१३.	कारे कारे बदरा (कविता)—राममूर्त्ति नारायण सिंह शास्त्री	५६
१४.	का का किनवइब (कविता) मृगेन्द्र सिंह 'शान्त'	५६
१५.	पुस्तक परिचय	५७
१६.	ए तुलसी के राम (कविता)—अरुण मोहन 'भारवि'	६०
१७.	सम्पादक के विचार—	६१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

अँजोर

धरती के लोर बाट जोहि रहल भोर के
पह फाटल, बिहँसी अब किरिनियाँ 'अँजोर' के

कला—१४	अप्रिल : जुलाई : १९७३	किरिन—१-२

'निराला' जी के भोजपुरी गीत

खेलत रहलूँ अँगनवाँ, सखी संग साथी हो।
आइ गवन नियराई, भवन नियराई, बदन भैले धूमिल हो।

पहिले गवनवाँ ऐलूँ, पनियाँ के भेजलन हो,
देखि कुआ मोर भइल भारी, त गागरि फूटलि हो।
कवन उतर घर देबि, हाथ दोनों छूँछे हो,
घर मोरी सासु रिसानि, त ननदी हठीली हो।
केहि से कहबि दुख आपनि, संगो न साथी हो,
ठाढ़ि मोहरि[1] धनि सुसके, मने पछतवली हो।

('सांध्यकाकली' से साभार)

1. दरवाजा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी लोक-साहित्य : एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण

—हरिश्चन्द्र प्रसाद

भोजपुरी की आत्मा मुख्यतः उसके लोक-साहित्य में वसती है। इसमें लोक-गीतों, लोक-गाथाओं, लोकोक्तियों, मुहावरों तथा पहेलियोंकी विपुल सम्पत्ति भरी पड़ी है। कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहाँ जाँता चलाती हुई महिलाएँ और धान रोपते या सोहनी करते हुए किसानों के झुंड अपने श्रम को भुलाने के लिए गीत गाते हुए दृष्टिगोचर न होते हों। मेला जाती हुईं पर्व-त्योहार मनाती हुईं या विभिन्न संस्कारों का आयोजन करती हुईं महिलाओं के सुमधुर स्वर कानों को अपनी ओर आकृष्ट किए विना नहीं रहते। होली, चैता, कजली, बारहमासा, चतुर्मासा आदि ऋतु-गीत इतने मनमोहक होते हैं कि वे पथिकों को भी कुछ क्षणों तक श्रान्ति भुलाने के लिए बरवस रोक लेते हैं। ऐसे तो बिरहे तथा कजलियाँ सम्पूर्ण भोजपुरी प्रदेश की धरोहर हैं; किन्तु, मिर्जापुर और वाराणसी की कजलियाँ तथा आजमगढ़ के बिरहे वातावरण में रस की बूंदे बिखेरने में अपनी सानी नहीं रखते। यदि भोजपुरी-प्रदेश को ही लोक-गाथाओं का आदि जनक कहा जाय, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। वस्तुतः इस प्रदेश में इतनी सारी लोक-गाथाएँ प्रचलित हैं जिनकी समता करने वाला भारत का दूसरा भाषा-क्षेत्र नहीं है।

सम्पूर्ण भोजपुरी प्रदेश में सन्ध्या समय चौपाल में बैठा हुआ किसान और घर-आँगन में बैठी हुई बूढ़ी नानी-दादियाँ अपने आसपास बैठे हुए बालक बालिकाओं का मनोरंजन प्रेम और उत्साह की आश्चर्यजनक कथाओं से करती हैं। इस प्रकार की हजारों लोक-कथाएँ इस प्रदेश में प्रचलित हैं जिन्हें सुनने के लिए बच्चे सन्ध्या की प्रतीक्षा करते रहते हैं। लोकोक्तियाँ, मुहावरे तथा पहेलियाँ तो भोजपुरी जनता के हृदय के हार हैं। हजारों-हजार जनता प्रतिदिन अपने दैनिक जीवन में इनका व्यवहार कर अपने को धन्य मानती है। कोई भी ऐसा ग्रामीण नहीं है, जिसकी जिह्वा पर सौ-पचास कहावतें न हों।

भोजपुरी लोक-साहित्य को हम मुख्यतः चार भागों में विभक्त कर सकते हैं—(१) लोक-गीत, (२) लोक-गाथा, (३) लोक-कथा और (४) प्रकीर्ण साहित्य। ऐतिहासिक सर्वेक्षण की सुविधा के लिए सर्वप्रथम हम लोक-गीतों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(नृत्य-गीत सहित) और लोक-गाथाओं को एक साथ रखेंगे। तत्पश्चात् लोक-कथाओं को लेंगे और अन्त में प्रकीर्ण साहियि को स्थान देंगे जिसके अन्तर्गत लोकोक्तियाँ, मुहावरे तथा पहेलियाँ रहेंगी।

लोक-गीत और लोक-गाथा

भोजपुरी लोक-गीतों और लोक-गाथाओं के अध्ययम का इतिहास कोई पुराना नहीं है। भोजपुरी भाषा के अध्ययन के साथ ही लगभग एक सौ वर्ष पूर्व इसका भी श्रीगणेश हुआ था। यह शुभ कार्य भी अंगरेज सिविलियनों द्वारा ही प्रारम्भ किया गया था। सर्वप्रथम डॉ० जे०-बीम्स ने अपने भोजपुरी व्याकरण 'नोट्स आन दि भोजपुरी डाइलेक्ट आफ हिन्दी स्पोकेन इन वेंस्टर्न बिहार'[1] में उदाहरण-स्वरूप कुछ भोजपुरी के लोक-गीतों को उद्धृत किया था। तत्पश्चात् एस० डब्ल्यू० फैलन ने अपने बोली कोश 'एन्यू हिन्दुस्तानी-इंगलिश डिक्शनरी विथ इल्यूस्ट्रेशन्स फ्रॉम हिन्दुस्तानी लिटेरेचर एंड फॉकलोर'[2] में कृषि-सम्बन्धी कुछ लोग-गीतों को स्थान दिया था।

लोक-गीतों तथा लोक-गाथाओं के संकलन-सम्पादन के क्षेत्र में डॉ० जी० ए० ग्रियर्सन के कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने इन गीतों और गाथाओं को मुख्यत: बिहार राज्य के शाहाबाद जिले से संगृहीत किया था और उन्हें सुसम्पादित कर देश तथा विदेश को पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराया था। प्रकाशित लोक-गाथाओं के विवरण इस प्रकार हैं:—

(क) 'दि साँग ऑफ मानिक चन्द'[3]—यह बड़ो लम्बी लोक-गाथा है। इसका मूल अंगरेजी सहित प्रकाशित है। स्थान-स्थान पर इसमें पाद-टिप्पणियाँ भी दी गई हैं। प्रारम्भ में १४ पृष्ठों की एक भूमिका है जिससे मानिकचन्द क जीवन पर विस्तार में प्रकाश पड़ता है। मानिकचन्द राजा गोपी चन्द के पिता थे।

(ख) 'दि गीत विजयमल'[4]—यह भोजपुरी का एक महाकाव्य है और इसको समाप्ति ११३८ पंक्तियों में हुई है। इसमें भी सम्पूर्ण गाथा अंगरेजी अनुवाद और जगह-जगह पर टिप्पणियों के साथ छपी है।

---

(१) जरनल ऑफ दि रोआयल एशियाटिक सोसाइटी, भाग—३ (१८६८ ई०), पृ०—४८३५०८।

(२) प्र०—मेडिकल हॉल, बनारस, १८७९ ई०।

(३) जरनल ऑफ दि रोआयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, भाग ४७, खंड—१, सं०—३ (१८७८ ई०), पृ० १३५-२३८।

(४) जरनल ऑफ द्रि एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल भाग ५३, खंड १ (विशेषांक), १८८४ ई० पृ० ९४-१५०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ग) 'ट्रान्सॅन्स ऑफ दि सॉंग ऑफ गोपीचन्द'[1]—इसमें पटना-जिले (मगही-क्षेत्र) और शाहाबाद जिले भोजपुरी-क्षेत्र) से संकलित 'गोपीचन्द' नामक लोक-गाथा के दो भिन्न पाठ समानान्तर स्तम्भों में अंगरेजी अनुवाद-सहित प्रकाशित हैं। इसमें भी स्थान-स्थान पर पाद-टिप्पणियाँ दी गई हैं।

(घ) दि सॉंग ऑफ आल्हा'ज मैरेज'[2]—इसमें केवल आल्हा के विवाह वाले अंश को संगृहीत किया गया है। यह गीत ५५८ पंक्तियों में समाप्त हुआ है। इसमें आल्हा के ऐतिहासिक पुरुष होने की प्रामाणिकता पर भी प्रकाश डाला गया है।

(ङ) 'सेलेक्टेड स्पेसिमेन ऑफ बिहारी लैंग्वेजेज (२. दि भोजपुरी डाइ-लेक्ट : दि गीत नयका बनजरवा'[3]—यह लोक गाथा भोजपुरी-प्रदेशमें बहु प्रचलित है। इस संग्रह के प्रारम्भ में १६ पृष्ठों में भोजपुरी का एक छोटा व्याकरण दिया गया है और कतिपय भोजपुरी शब्दों की व्युत्पत्ति पर विचार भी किया गया है। यह लोक-गाथा ६२६ पंक्तियों में समाप्त हुई है।

(च) 'दि पॉपुलर लिटेरेचर ऑफ नॉर्दर्न इण्डिया'[4]—इसमें सूर, तुलसी, बिहारी और विद्यापति के पद्यांशों के साथ-साथ 'आल्हा' के सुप्रसिद्ध गाथा-गीत के कुछ अंश प्रकाशित हैं।

इन लोक-गाथाओं के अतिरिक्त, डॉ॰ ग्रियर्सन ने बहुत से लोक-गीतों का भी संग्रह किया था जो पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। उनका पहला संग्रह है, सम बिहारी फॉक सॉंग्स'[5]। इन गीतों के संकलन-क्षेत्र हैं, शाहाबाद और पटना जिलों के कुछ गाँव। इसमें सोहर जंतसार और झूमर गीत संगृहीत हैं। इन गीतों में अधिकतर गीत भोजपुरी के ही हैं। सारेगीत अंगरेजी में अनूदित हैं। इस संग्रह के प्रारम्भ में मैथिली, मगही और भोज-पुरी भाषाओं की संक्षिप्त विवेचना की गई है। डॉ॰ ग्रियर्सन द्वारा संगृहीत

(१) वही, भाग-५४, खंड-१, सं-१, १८८५ ई॰ पृ॰, १-३५

(२) इंडियन एंटिक्वेरी (बम्बई), भाग-१४, १८८५ ई॰, पृ॰ २०६-२२७

(३) साइत श्रिफ्त देर् दायसेन् मारगेन लेंदिशेन गेलेज शाफ्त् (जर्मनी), सं॰-४३, १८८६ ई॰, पृ॰ ४६८-५०६।

(४) बुलेटिन ऑफ दि स्कूल ऑफ ओरियंटल एण्ड अफ्रिकन स्टडीज खण्ड-१, भाग-३. १९२० ई॰, पृ॰ ८७

(५) जरनल ऑफ दि रोआयल एशियाटिक सोसाइटी, भाग-१६ (नवीन संस्करण), खंड-१, १८८४ ई॰ पृ॰ १९६-२२२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीतों का दूसरा संग्रह है, 'सम भोजपुरी फॉक-सॉंग्स'[1]। इसमें संकलित गीतों की संख्या ४९ है जिसमें ४२ गीत तो केवल बिरहा में है और शेष चैंता और जंतसार के। सारे गीत अंगरेजी-भाषा में अनूदित हैं और गीतों के अन्त में उनमें प्रयुक्त शब्दों की व्युत्पत्ति सम्बन्धी टिप्पणियाँ दी गई हैं। इस संग्रह के प्रारम्भ में भी ८ पृष्ठों की एक भूमिका है जिसमें भोजपुरी के महत्व और संगृहीत गीतों के छन्द पर प्रकाश डाला गया है।

भोजपुरी लोक-गीतों के संकलनकर्त्ता के रूप में गोरखपुर जिले के तत्कालीन जिलाधिकारी एच० फ्रेजर के कार्य कुछ कम महत्व के नहीं हैं। फॉकलोर फ्रॉम ईस्टर्न गोरखपुर'[2] शीर्षक से अंग्रेरेजी अनुवाद-सहित १३ लोक-गीतों का उनका एक संग्रह प्रकाशित है। इन गीतों में ६ कजली, १ जंतसार और शेष अन्य प्रकार के हैं। यद्यपि इन गीतों के संकलनकर्त्ता और अनुवादक स्वयं फ्रेजर साहब हैं, किन्तु इनका सम्पादन डॉ० ग्रियर्सन ने किया है। उन्होंने इसमें भोजपुरी की विशेषता और संकलित गीतों के छन्द पर महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ लिखी हैं। लोक-साहित्य मर्मज्ञ विलियम क्रूक ने भी उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले से अनेक भोजपुरी लोक-गीतों का संग्रह किया था। इस कार्य में उन्हें पं० राम गरीब चौबे से बड़ी सहायता मिली थी। ये गीत मुख्यतः 'नार्थ इंडियन नोट्स एण्ड क्वेरीज'[3] (इलाहाबाद) और 'इंडियन एंटीक्वेरी'[4] (बम्बई) में प्रकाशित हैं। उनके 'पॉपुलर रेलिजन एण्ड फॉकलोर ऑफ नॉर्दर्न इंडिया' नामक महत्वपूर्ण ग्रन्थ में भी भोजपुरी क्षेत्र के लोक विश्वासों,

(१) वही खण्ड-१८ (नवीन संस्करण) १८८६ ई० पृ० २०७-२३५।

(२) जरनल ऑफ दि एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, खण्ड-५२, सं० १ १८८३ ई०, पृ० १-३२।

(३) 'शार्ट सॉंग्स मेनली फ्रॉम मिर्जापुर'—नार्थ इंडियन नोट्स एण्ड क्वेरीज (इलाहाबाद), खण्ड-१ (१८९१ ई०), पृ०१०७, १२५ १४४ १६१, खण्ड-२ (१८९२ ई०), पृ-५३, ७४, ७६ ८६-९१,१०६, १११, १२५-२६, १२६, १४३, खण्ड--३ (१८९३ ई०), पृ०--५३,१४३, खण्ड--४ (१८९४ ई०), पृ० १६० और खण्ड--५, (१८९५ ई०), पृ०--१० तथा १९८।

(४) 'मैरेज सॉंग्स इन नॉर्दर्न इंडिया'—इंडियन एंटीक्वेरी (बम्बई) खण्ड-५५ (१९२६ ई०), पृ० ८१-८८। इसमें मिर्जापुर जिले में प्रचलित ८ विवाह-गीत संगृहीत है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्ध-विश्वासों, लोक-देवों तथा धर्मों की सर्वांगीण मीमांसा की गई है तथा कुछ लोक गीत भी संगृहीत किए गए हैं।

भोजपुरी लोक-गीतों और लोक-गाथाओं के संकलन-अध्ययन के अब तक जो यत्न हुए थे, वे सब-के-सब अंगरेजी की निधि हैं। हिन्दी-भाषा के माध्यम से भोजपुरी लोक-गीतों का सर्वप्रथम संकलन सम्पादन करने का श्रेय श्री मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी' को है। सन् १९१३ ई० में उन्होंने गोरखपुर जिले से कतिपय लोक-गीतों को संगृहीत किया था और उन्हें 'सरवरिया' नाम से एक संग्रह में प्रकाशित कराया था। हिन्दी भाषा के माध्यम से लोक- गीतों तथा लोकोक्तियों के संकलयिता के रुप में पं० रामनरेश त्रिपाठी की सेवाएं अत्यन्त महत्व की हैं। उन्होंने वर्षों तक हिन्द भाषी राज्यों में घूम-घूमकर बड़े परिश्रम से हजारों लोक-गीतों और लोकोक्तियों का सग्रह किया था। लोक-गीत-विषयक त्रिपाठी जी का प्रथम संग्रह है, कविता कौमुदी : भाग ५ [ग्रामगीत]'[१]। इसमें संकलित गीत विषय-क्रमानुसार नियोजित हैं और प्रत्येक गीत के अन्त में उसका हिन्दी-भाषा में छायानुवाद दिया हुआ है। इस संग्रह में सोहर;जनेऊ, विवाह, जाँत, सावन, निरवाही, हिंडोला, कोल्हू, मेला और बारहमासा-दस प्रकार के गीत संगृहीत है। इस पुस्तक के प्रारम्भ में १३८ पृष्ठों की एक विस्तृत भूमिका भी दी गई है जो शोधी विद्वानों के लिए बड़े काम की चीज है। इसमें भोजपुरी लोक-गीत बड़ी संख्या में संगृहीत हैं। इसके अतिरिक्त, 'ग्राम-साहित्य'[२] 'सोहर'[3] और 'हमारा ग्राम-साहित्य'[४] नामक त्रिपाठी जी के तीन और संग्रह. प्रकाशित हैं जिनमें भोजप्री के अनेक लोक-गीत पाए जाते हैं। 'सोहर' के कुछ गीतों 'कविता-कौमुदी : भाग -५ (ग्राम-गीत) से लिए गए हैं और कुछ नवीन भी हैं। 'हमारा ग्राम साहित्य' में संकलित सोहर, अन्न प्राशन,मुंडन, जनेऊ. विवाह, चक्की, खेती, कोल्हू आदि के लोक-गीतों के अतिरिक्त अहीर, कहार, तेली, गड़ेरिये, धोबी, चमार आदि के जातीय गीत भी संगृहीत हैं। जौनपुर के तत्कालीन-जिलाधिकारी, ए० जी० शिरेफ ने भी कोइरीपुर की अहीरिनों के मुख से सुनकर १९ लोक-गीतों का संग्रह किया था और उन्हें अंगरेजी में पद्यात्मक अनु-

(१) प्र०-हिन्दी-मंदिर, प्रयाग, १९२९ ई०।

(२) प्र०-हिन्दी-मंदिर, प्रयाग, १९३६ ई०, (३) प्र०-वही, १९४० ई०, (४) प्र०-वही; १९४०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाद कर मूल सहित 'हिन्दी फॉक-सॉंग्स'[1] नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित करया था। इस पुस्तक में संगृहीत गीतों में अधिकतर सोहर और जँतसार-गीत ही हैं। श्री शिरेफ ने इन गीतों में से कुछ की तुलना इंगलैंड और स्कॉटलैंड में पाए जाने वाले गीतों से करके इनके साम्य पर वैज्ञानिक ढंग से विचार प्रकट किया है। इस संग्रह के सारे गीत पं० रामनरेश त्रिपाठी की 'कविता-कौमुदी' भाग-५ (ग्राम-गीत) में भी ठीक उसी रूप में पाए जाते हैं।

भोजपुरी लोक-गीतों का प्रथम विशाल संग्रह है, 'भोजपुरी-ग्राम्य-गीत'।[2] डब्ल्यू० जी० आर्चर और संकटा प्रसाद ने सन् १९३९-४१ ई० के बीच इन गीतों को शाहाबाद-जिले के कायस्थ-परिवारों से संगृहीत किया था। इस संग्रह में २५ प्रकार के ३७७ लोक-गीत मूल रूप में संकलित हैं। गीतों के नाम इस प्रकार हैं—सगुन, तिलक, शिव-विवाह, प्रातः काली, हल्दी, सेहला, जोग-टोना, विवाह, मंगल, सोहाग परिछन, कोहबर जेवनार, अवटौनी, झूमर टापा, सोहर, मुण्डन, चैता, माता के गीत कजरी बरसाती, जतसार, रोपनी और सोहनी के गीत। यदि इन गीतों के सम्बन्ध में टिप्पणियाँ और शब्दार्थ भी दिए गए होते तो इसकी उपयोगिता और बढ़ जाती। लील-खो-रआ खे खल' (दो भाग, नामक डब्ल्यू० जी० आर्चर के उराँव लोक-गीत-संग्रह में भी नागपुरिया लोक-गीतों के कतिपय उदाहरण मिलते हैं।[3] इन गीतों को संकलित करने में श्री आर्चर को एफ० हॉन और धरमन्द दास लाहड़ा से सहायता मिली थी।

भोजपुरी लोक-गीतों का सबसे महत्वपूर्ण संग्रह है, डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय का 'भोजपुरी ग्राम-गीत' (अब भोजपुरी लोक-गीत)।[4] यह दो भागों में प्रकाशित है। दोनों भागों में क्रमशः २७१ और ४३० लोक-गीत संगृहीत हैं।

---

(१) प्र०-वही १९३६ ई०।

(२) प्र०-विहार रिसर्च सोसाइटी, पटना-१९४३ई०। मूलतः यह संग्रह उक्त सोसाइटी की मुख्य-पत्रिका (जरनल) के कई अंकों में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था। देखें—वर्ष-२८ भाग-३ सितम्बर, १९४२ ई०, वर्ष-२८ भाग-४. दिसम्बर, १९४२ ई०, वर्ष-२९, भाग-१-२, जनवरी-जून, १९४३ ई० और वर्ष-२९ भाग-४, दिसम्बर, १९४३ ई०

(१) प्र०—पुस्तक भंडार, लहेरियासराय प्रथम भाग—१९४० ई० और द्वितीय भाग—१९४? ई०

(२) प्र०—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम भाग—२००० वि० और द्वितीय भाग—२००६ वि०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस संग्रह का सम्पादन बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से किया गया है। गीतों को विषय-क्रमानुसार विन्यस्त कर उनके हिन्दी-अनुवाद दिए गए हैं। कठिन शब्दों को सरल करने के लिए उनके अर्थ पाद-टिप्पणियों के रूप में दे दिए गए हैं। प्रथम भाग के भूमिका-लेखक है, पं० बलदेव उपाध्याय और दूसरे के हैं, डॉ० अमर नाथ झा। पं० उपाध्याय ने अपनी शत पृष्ठीय भूमिका में भोजपुरी भाषा और उसके साहित्य पर प्रचुर सामाग्रियाँ प्रस्तुत कर दी हैं। प्रथम भाग में सोहर, खेलवना, जनेऊ, विवाह, वंवाहिक परिहास, गवना, जाँत, छठी माता, शीतला माता, झूमर, बारहमासा, कजली, चैता, बिरहा और भजन-गीत तथा द्वितीय भाग में पुनः सोहर, जोग, सेहला, विवाह, वहुरा, पिड़िया, गोधन, नागपचमी, जतसार, झूमर कजली, वारहमासा होली, डफ, चैता सोहनी, रोपनी, बिरहा, कहरवा गोंड़ऊ, पचरा, निरगुन, देशभक्ति पूर्वी पराती एवं भजन गीत संगृहीत हैं। प्रथम भाग की एक और विशेषता है। वह है इसके अन्त में प्रकाशित चौवीस पृष्ठीय भोजपुरी शब्द कोश। डॉ० उपाध्याय की दूसरी बहुप्रशसित कृति है, भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन'।[1] यह एक शोध-प्रबन्ध है जिस पर उन्हें सन् १९५१ ई० में लखनऊ विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० की उपाधि मिली थी। इस ग्रन्थ में डॉ० उपाध्याय ने लोक-गीतों के श्रेणी विभजन, उसके भेद-विभेद, लोक गाथाओं की उत्पत्ति और विभाजन आदि का सांगोपांग विवेचन किया है और अनेक लोक गीतों तथा लोक गाथाओं के अंशों को उद्धत कर उसकी पुष्टि की है। डॉ० उपाध्याय की तीसरी कृति है, 'भोजपुरी और उसका साहित्य'।[2] यह पुस्तक दिल्ली की सरस्वती सहकार' सस्था के तत्वावधान में 'भारतीय साहित्य परिचय' नामक एक पुस्तक-माला प्रकाशन की योजना के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी। इसका चतुर्थ अध्याय लोक साहित्य। भोजपुरी लोक-साहित्य का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करने में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है। हाल में ही डॉ० उपाध्याय द्वारा प्रणीत 'भोजपुरी साहित्य का इतिहास'[3] प्रकाशित हुआ है जिसके भी चतुर्थ अध्याय में ही भोजपुरी लोक-साहित्य' की विशद् व्याख्या की गई है। इन दोनों ही ग्रन्थों में भोजपुरी लोक-गीतों की सांगोपांग व्याख्या है। जब तक त्रिपिटकाचार्य

(१) प्र०—हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, १९६० ई०

(२) प्र०—राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, १९५७ ई०

(३) प्र०—भारतीय लोक-संस्कृति शोध सस्थान, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी, १९७२ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन के साथ सम्पादित डा० उपाध्याय की कृति 'हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास : भाग १६'[1] (हिन्दी का लोक-साहित्य) की चर्चा नहीं होगी, तब तक उनकी भोजपुरी लोक-साहित्य के प्रति देन का उचित मूल्यांकन नहीं होगा। इस ग्रन्थ का 'भोजपुरी लोक-साहित्य' अध्याय भी डा० उपाध्याय का ही लिखा हुआ है जिसमें उन्होंने भोजपुरी लोक-गीतों की विशद् व्याख्या की है और अनेक लोक-गीत उद्धृत किए हैं। डा० उपाध्याय की एक और भी कृति है, 'लोक-साहित्य की भूमिका,'[2] जिसमें लोक-साहित्य के मूल-भूत सिद्धान्तों का पांडित्य पूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किया गया है और उदाहरण स्वरूप अनेक भोजपुरी लोक-गीतों को स्थान दिया गया है। इनके अतिरिक्त डा० उपाध्याय के लोक-गीत, लोक-गाथा और लोक-संगीत विषयक अनेक लेख मिडवेस्ट फाकलोर (अमेरिका, 'ईस्टर्न एन्थोपालोजिस्ट' (लखनऊ), जरनल आफ लेटर्स (आगरा विश्वविद्यालय), सम्मेलन पत्रिका (प्रयाग), 'हिन्दुस्तानी' (प्रयाग), 'जनपद' (काशी), आलोचना (दिल्ली) आदि भारतीय तथा विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। 'भोजपुरी लोक-गीत की स्वर-लिपि'[3] और 'भोजपुरी लोक-संगीत'[4] शीर्षक लेख तो उनके अथक परिश्रम के द्योतक हैं।

भोजपुरी लोक-गीतों के संकलनकर्त्ता और उनके वैज्ञानिक अध्येता के रूप में दलीपपुर (शाहाबाद) के महाराज कुमार दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह की सेवायें अविस्मरणीय हैं। उन्होंने बड़े मनोयोग से हजारों लोक-गीतों का संग्रह किया था और उन्हें रस-सिद्धांत के अनुसार अलग-अलग विन्यस्त भी किया था। किन्तु, उसका एक ही संग्रह 'भोजपुरी लोक-गीतों में करुण-रस'[5] नाम से प्रकाशित हो सका। इस संग्रह में सोहर, जँतसार, झूमर, कहरुआ, भजन, बारहमासा, खेलवना, विवाह, पूर्वी, कजली, रोपनी आदि पन्द्रह प्रकार के गीत संगृहीत हैं। पुस्तक के प्रारम्भ में ८० पृष्ठों की एक भूमिका दी गई है जिससे भोजपुरी भाषा और लोक-साहित्य-विषयक अनेक महत्वपूर्ण बातों का परिज्ञान हो जाता है। भिन्न-भिन्न रसों पर आधारित उनके अनेक लेख अभिनन्दन तथा

(१) प्र० - काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सम्वत २०१७ वि०

(२) प्र०—साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग, १६३७ ई०

(३) भोजपुरी (आरा), वर्ष २, अंक-१२—१ अगस्त, १६५३ ई०, पृ० १-८

(४) बिहार थियेटर (पटना), वर्ष-१, अंक-४, मार्च-जून, १६५४ ई०

(५) पृ० -हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सम्वत् २००१ वि०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिज्ञान-ग्रन्थों में भी प्रकाशित है।[१] श्रीमती राज किशोरी देवी श्रीवास्तव ने भी हिन्दी लोक-गीत'[२] नामक अपने लोक-गीत संग्रह में कुछ भोजपुरी लोक-गीतों को स्थान दिया है।

भारतीय लोक-गीतों के संग्राहक के रूप में देवेन्द्र सत्यार्थी के कार्य 'माउन्ट एवरेस्ट' पर विजय प्राप्त करने के सदृश हैं। उन्होंने देश के कोने-कोने में घूम-घूम कर बड़ी लगन से एक लाख से भी अधिक लोक-गीतों का संग्रह किया था। इन गीतों का अलग से कोई संग्रह तो प्रकाशित नहीं है, किन्तु, एतद विषयक उनके अनेक लेख अंगरेजी तथा हिन्दी में पुस्तकाकार और देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। 'मीट माइ पिपल'[३] में उन्होंने स्वतन्त्र रूप से भोजपुरी बिरहों पर एक लेख लिखा है और 'दि न्यू रिवियू'[४] में 'भोजपुरी फाक-साँग्स' शीर्षक लेख में अनेक भोजपुरी लोक-गीतों को उद्धृत किया है। 'बेला फूले आधी रात,'[५] 'धरती गाती है'[६] 'धीरे बहो गंगा,'[७] और बाजत आवे ढोल'[८] नामक सत्यार्थी जी के लोक-साहित्य-विषयक लेख संग्रह में भी भोजपुरी लोक-गीतों के अनेक उदाहरण मिलते हैं।

[क्रमशः]

---

(१) (क) भोजपुरी लोक-गीत में वात्सल्य-राजेन्द्र अभिनन्दन-ग्रन्थ (आरा) १९४९ ई० पृ०-२७९-९०

(२) (ख) भोजपुरी लोक-गीत में वीर-रस—बिहार वैभव (मुजफ्फरपुर) १९४९ ई०, पृ० ५४-५६

(३) प्र०—साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, प्रयाग,' १९४६

(४) प्र०—चेतना प्रकाशन लिमिटेड, आबिद रोड, हैदराबाद, १९५१ ई०

(५) 'दि न्यू रिवियू,' स०-१५ (१९४२ ई०) पृ० ४३७-८३

(६) प्र०-राजहंस प्रकाशन, दिल्ली, १८४८ ई०

(७) प्र०-राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, १९४८ ई०

(८) प्र०-वही, १९४८ ई०

(९) प्र०-एशिया प्रकाशन, नई दिल्ली, १८५२ ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एगो रांड़ी क इयाद

—हो ची मिन्ह

ओ दिन तूँ हमरा संगे गइलऽ नदी का तीर
"फिर कब वापिस होखबऽ ?"—"जब तूँ देखबऽ पाकल धान।"
बाकिर अगली फसल बदे ऊ खेत जोता गइलन सऽ
एगो गैर मुलुक में हम कैदी बानी अबहीं ले।

(हो ची मिन्ह क 'प्रिजन डायरी' क 'थिंकिंग आफ ए फ्रेंड' कवित क अनुवाद)

अनु०—सुबन्धु

×

गीत

निंदिया सतावे मोहे सँझही से सजनी।
सँझही से सजनी ॥१॥
प्रेम—बतकही
तनक हूं न भावे
साँझही से सजनी ॥२॥
निंदिया सतावे मोहें०।
छलिया रैन
कजर ढरकावे
साँझही से सजनी ॥३॥
निंदिया सतावे मोहें०।
दुखि नैना मोहें
झुलना झुलावें
साँझही से सजनी ॥४॥
निंदिया सतावे मोहें०।

('कुछ और कवितायें' से साभार)

—शमशेर बहादुर सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री कुलदीप नारायण राय 'झड़प' : एक भेंट

—अनिल कुमार राय 'आंजनेय'

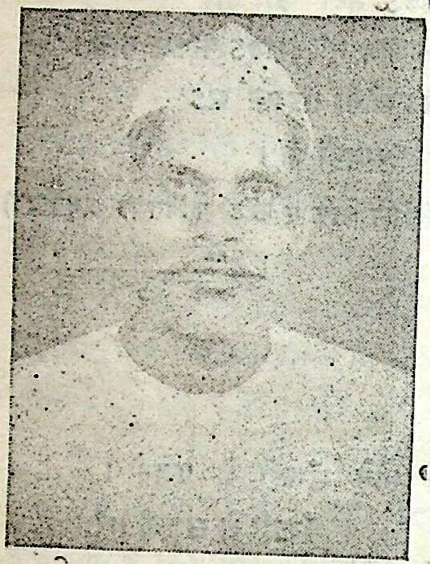

श्री कुलदीप नारायण राय 'झड़प'

('अँजोर' के गतांक में "डा० परमेश्वरी लाल गुप्त : एक भेंट" शीर्षक वार्तालाप प्रकाशित हुआ था। उसमें कतिपय ऐसी बातों का उल्लेख है जिन पर स्पष्ट निश्चयात्मक तौर पर विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए मैं ने ग्राम पो० लिलकर, जिला बलिया निवासी श्री कुलदीप नारायण राय 'झड़प' से भेंट करके अपनी शंकाओं के समाधान का प्रयास किया। 'झड़प' जी के साथ हुई इस वार्ता का प्रकाशन भोजपुरी आन्दोलन के गवेषणार्थियों के लिए उपादेय हो सकता है।—लेखक)

प्रश्न—आपने अभी हाल ही में त्रैमासिक 'अँजोर' में प्रकाशित "डा० परमेश्वरी लाल गुप्त : एक भेंट" शीर्षक वार्तालाप पढ़ा है ?

उत्तर—हाँ देखा है।

प्रश्न—उसमें डा० गुप्त ने बलिया जिले के एक सज्जन द्वारा सन् १९४६ ई० में अपने जिले में भोजपुरी सम्मेलन करने के लिए अग्रसर होने की बात कही है। क्या इस सम्बन्ध में आप कुछ बतला सकते हैं ?

उत्तर—अवश्य, कुछ ही क्यों, सब कुछ बतला रहा हूँ। गुप्त जी को आज ३७ वर्षों के बाद बलिया जिले के जिस सज्जन का नाम याद नहीं आ रहा है, अभाग्यवश वह व्यक्ति मैं ही हूँ। भोजपुरी के किसी आंदोलन की जानकारी गुप्त जी को नहीं है, यह भले वह आज कह लें किन्तु मेरी डायरी के पन्ने गवाह हैं कि दिनांक २५-१०-४६ को अन्नकूट के दिन श्री परमेश्वरी लाल गुप्त से काशी में मेरी भेंट हुई थी जब मैंने उनसे भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रांतीय साहित्य मंडल की योजना पर परामर्श किया। उसके बाद भी २७-१०-४६, १-१२-४६, १४-१२-४६ तथा १८-१-४७ को उनसे मिला। फिर जनवरी १९४७ को तो उन्हीं से मिलकर भोजपुरी प्रांतीय साहित्य मंडल की विज्ञप्ति तैयार की।

प्रश्न—भोजपुरी प्रांतीय साहित्य मंडल की योजना क्या थी?

उत्तर—मंडल की ९ सूत्री योजना यों थी:—

(१) भोजपुरी क्षेत्र में जनपदीय संगठनों द्वारा साहित्यिक तथा सांस्कृतिक चेतना जागृत करना। उक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्थायें, पुस्तकालय, वाचनालय आदि की स्थापना।

(२) पत्र-पत्रिकाओं, पर्चों, पुस्तिकाओं के प्रकाशन द्वारा योजना का प्रसार-प्रचार और संदेश घर-घर तक पहुँचाना।

(३) ग्राम्य गीतों, कहानियों, मुहावरों-कहावतों, पहेलियों और शब्दों का संग्रह।

(४) भोजपुरी प्रदेश के साहित्यकारों, विद्वानों, कलाकारों, वीरों और विशिष्ट पुरुषों का प्रामाणिक जीवन-चरित तैयार करना।

(५) भिन्न-भिन्न जातियों, उनकी रीति-नीति, मान्यताओं और आचार व्यवहार का अध्ययन।

(६) ऐतिहासिक तथा पुरातत्व सम्बन्धी खोज।

(७) भोजपुरी संस्कृति और कला को जीवित करना।

(८) गृह-शिल्प और उद्योग-धन्धों को पुनर्जीवित और प्रगतिशील करना—आर्थिक एवं सामाजिक आधार पर।

(९) भोजपुरी प्रांत का एक राजनीतिक इकाई में संगठन।

प्रश्न—उक्त योजना से प्रतीत होता है कि आप जनोत्थान के इच्छुक थे। सामाजिक कामों की ओर आपकी प्रवृत्ति कब और कैसे हुई?

उत्तर—सामाजिक काम की ओर मेरी प्रवृत्ति सन् १९३० से ही थी। मैं उन दिनों ग्राम सभा की निर्माण-योजनाओं के कार्यान्वयन में बड़े उत्साह से भाग लेता था। सन् १९३४ ई० में सिकन्दरपुर की प्राइमरी पाठशाला में मैं शिक्षक हुआ। थोड़े ही दिनों में क्षेत्रीय शिक्षक संघ तथा स्थानीय जालपा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तकालय के सहायक मंत्री के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। सन् १९३५-३६ में जब सर्व प्रथम सिकन्दरपुर नगर कांग्रेस कमिटी की स्थापना हुई तो दो वर्षों तक उसका मंत्री रहा। अध्यापन—काल में सन् १९३८ में मैं उक्त पद से अलग हो गया। अतः सन् १९४० ई० के पहले ही मेरी सामाजिक प्रवृत्ति का अंकुर पलुहने लगा था। उस समय सिकन्दरपुर संस्कृत पाठशाला पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का परीक्षा-केन्द्र था और परीक्षार्थियों को पढ़ाने की व्यवस्था में प्रायः मेरा सक्रिय सहयोग रहता था। सन् १९४२ में राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के आरोप में विद्यालय से निलम्बित किया किया गया। सन् १९४४ तक लुके-छिपे आंदोलन की ओर ही प्रवृत्ति रही, साहित्यिक कार्य का अवसर न था। सन् १९४५ में निष्क्रियता और अशांति का अनुभव होने लगा। इसी बीच पं० बनारसी दास जी चतुर्वेदी के सम्पर्क में आया और १९४६ में टीकमगढ़ (मध्य भारत) की यात्रा की, जहाँ कुण्डेश्वर के शांत वातावरण में निवास करते हुए चतुर्वेदी जी 'मधुकर' का संपादन एवं अन्य विधि से साहित्य-साधना कर रहे थे। उस समय वे अ० भा० हिन्दी पत्रकार-संघ के अध्यक्ष भी थे।

चतुर्वेदी जी ने बलिया जिले के साहित्यिकों, समाज-सेवियों, व्यापारियों और बाहर में प्रवास करने वाले लोगों की सूची तैयार करने और सबका व्यापक संगठन करने की ओर मुझे प्रवृत्त किया। बार-बार पत्र लिखकर उन्होंने मुझे उक्त कार्य की प्रेरणा दी। बहुतों से परिचय कराया। उन्होंने बड़ी आत्मीयता से मेरा पथ-प्रदर्शन किया और मेरा ध्यान रखा। उनकी षट सूत्री जन पदीय योजना की कार्यान्विति के लिए मुझे अनेक स्थानों की यात्रा करनी पड़ी। इसी वर्ष मुझे तीन मास के लिए प्रशिक्षणार्थ बेसिक शिक्षा केन्द्र, बनारस में रहना पड़ा। वहाँ से भी प्रचार करता रहा।

प्रश्न—पं० बनारसी दास जी चतुर्वेदी की षट् सूत्री जनपदीय योजना के उद्देश्य क्या थे?

उत्तर—श्रद्धेय चतुर्वेदी जी द्वारा प्रेषित षट्-सूत्री योजना के अन्तर्गत ये कार्य करने थे :—

१. बलिया जिले के प्रमुख ४०-५० साहित्य-सेवियों और साहित्य-प्रेमियों की सूची उनके पते सहित तैयार करना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. बलिया में एक साहित्य-परिषद् की स्थापना।
३. परिषद् का अधिवेशन बुलाना।
४. पुस्तकालयों की स्थापना और उनके लिए सरकारी सहायता प्राप्त करना।
५. गाँव-गाँव में साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना जागृत करना।
६. छोटे-मोटे उत्सव मनाना और उसमें बाहरी विद्वानों को आमंत्रित करना।

प्रश्न—इस योजना के सम्बन्ध में आपने क्या किया ?

उत्तर—इस योजना की सफलता के लिए मैंने अपने जिले में और जिले के बाहर भी अनेक स्थानों की यात्रा की। पत्र-व्यवहार किया। साहित्यिकों की सूची तैयार की। पुस्तकालय, वाचनालय आदि खोलने और साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं के संगठन में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। सन् १९४५-४६ ई० में जब मैं हिन्दी साहित्य परिषद्, सिकन्दरपुर (बलिया) का मंत्री तथा हिन्दी प्रचारिणी-सभा, बलिया का प्रचार मंत्री था, श्रद्धेय चतुर्वेदी जी की षट् सूत्री योजना का संचालन, हिन्दी साहित्य परिषद्, सिकन्दरपुर के माध्यम से किया गया। जब परिषद् की सिकन्दरपुर की बैठक में एक वृहत् सम्मेलन कराने का निश्चय किया गया तो मेरे मन में उक्त योजना को कुछ और व्यापक बनाने की भावना उत्पन्न हुई। वह भावना थी 'अखिल भोजपुरी प्रांतीय साहित्य-मण्डल' का संगठन।

प्रश्न—प्रस्तावित अखिल भोजपुरी प्रांतीय साहित्य मण्डल के अधिवेशन के संदर्भ में आपको कौन से अनुभव हुए ?

उत्तर—हिन्दी प्रचारिणी सभा, बलिया के वार्षिक अधिवेशन (१९४६) में मैंने भोजपुरी प्रांत के संगठन तथा भोजपुरी भाषा के उन्नयन हेतु एक प्रस्ताव रखा था जिसका कुछ लोगों ने विरोध किया। उस समय उसे स्थगित कर दिया गया। अध्यक्ष आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के आदेशानुसार वह दूसरी बैठक में रखा गया। इस बार वह सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। इसके अनुसार बलिया में उसी वर्ष (१९४६ में) अखिल भोजपुरी प्रांतीय साहित्य मण्डल का अधिवेशन करने का निश्चय किया गया, किन्तु उस वर्ष गंगा और सरयू दोनों नदियों में भयंकर बाढ़ आ गई और फिर सांप्रदायिक तनातनी बढ़ जाने से जिले की स्थिति संकटपूर्ण हो गई जिसके चलते उक्त सम्मेलन का कार्य स्थगित कर देना पड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी बीच सारन जिला (हिन्दी) साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन सीवान में किए जाने की सूचना मिली। मेरे कुछ मित्रों ने सलाह दी कि उसी के साथ 'भोजपुरी मण्डल' का अधिवेशन करा लेने में सुविधा होगी। अपना कार्य भार कुछ हल्का होता देख कर यह बात मुझे भी जंची और मैंने सारन जिला साहित्य सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री गदाधर प्रसाद श्रीवास्तव से बातचीत की। वे भोजपुरी मण्डल का व्यय-भार उठाने के लिए सहमत हो गये।

प्रश्न—तो फिर क्या हुआ?

उत्तर—अखिल भोजपुरी प्रांतीय साहित्य-मण्डल का अधिवेशन दिनांक १५-१६ फरवरी १९४७ को होना निश्चित था। मैं ने विस्तृत रूप से निमंत्रण-पत्र भेजे थे। भोजपुरी प्रांत के सभी जिलों से बहुत से प्रतिनिधि पहुँचने वाले थे, किन्तु उसी दिन सीवान में आचार्य कृपलानी के पधारने की सूचना से सीवान स्थित व्यवस्थापकों ने बिना मुझ से कुछ पूछे अधिवेशन की तिथि बदल कर २-३ मार्च कर दी। यह जानकर मुझे सीवान में सम्मेलन बुलाने के लिए बड़ा खेद हुआ। शीघ्रगामी पत्र और तार भेज कर एवं स्वयं दौरा करके मुझे सभी प्रतिनिधियों को परिवर्तित तिथि की सूचना देनी पड़ी। बहुत से प्रतिनिधि उसके चलते अधिवेशन में सम्मिलित नहीं हो सके।

प्रश्न—सीवान में अधिवेशन सम्पन्न कराने के लिए आपको किन-किन व्यक्तियों से किस प्रकार का सहयोग मिला था?

उत्तर—सीवान सम्मेलन के सम्पन्न कराने में वहाँ के लोगों ने किसी प्रकार का आर्थिक सहयोग मुझे नहीं दिया सिवाय प्रतिनिधियों के भोजन के।

उन दिनों मेरी नियुक्ति सारन जिले के ही गोरयाकोठी नामक ग्राम में कर्मयोगी उच्च माध्यमिक विद्यालय में सहायक शिक्षक के पद पर हो गई थी जिसमें पं० महेन्द्र शास्त्री भी अध्यापक थे। उनसे मेरा बहुत पहले का परिचय था। बिहार के प्रसिद्ध समाज सेवी और राजनीतिक पुरुष नारायण बाबू (श्री नारायण प्रसाद सिंह) द्वारा १९१६ ई० में अपने गांव में कर्मयोगी विद्यालय की स्थापना की गई थी जिस वर्ष काशी में हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। कर्मयोगी विद्यालय का अन्तप्रान्तीय महत्व था। इसकी शिक्षा व्यवस्था, छात्रावास, भोजनालय, भवन, फुलवारी आदि सबमें अपनी विशेषता थी। इसमें बिहार, उत्तर प्रदेश, बंगाल आदि के अध्यापक ओर विद्यार्थी थे। इस विशिष्ट विद्यालय में मुझे स्वाध्याय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का अवसर मिला। स्वाध्यायशील नारायण बाबू का मुझ पर बहुत स्नेह था। भोजपुरी मंडल के प्रथम अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष नारायण बाबू बनाये गये। मेरी इच्छा थी कि अधिवेशन की अध्यक्षता पं० बनारसी दास जी चतुर्वेदी करें। उनके अस्वीकार करने पर श्री हजारी प्रसाद जी द्विवेदी से निवेदन किया परन्तु उन्होंने भी अस्वीकार किया। वे श्री शिवपूजन सहाय जी को इसके लिए उपयुक्त समझते थे। मैं ने इसके लिए प्रयास किया किन्तु स्मरण नहीं कि किन कारणों से विफल हुआ। शिवजी अधिवेशन में सम्मिलित हुए थे और उपाध्यक्ष चुने गए थे। अन्त में हिन्दू विश्वविद्यालय के अध्यापक मेरे जिले के निवासी पं० बलदेव उपाध्याय मंडल के अधिवेशन के अध्यक्ष बनाये गये। नारायण बाबू और उपाध्याय जी दोनों सज्जनों के सम्पर्क में आने का सौभाग्य मुझे पहले से प्राप्त था।

प्रश्न – सीवान सम्मेलन की कार्यवःही की मुख्य बातें कौन कौन सी-थीं ?
उत्तर—सभा की पूरी कार्यवाही और उपस्थित किये गये गए प्रस्तावों का मुझे स्मरण नहीं है। कुछ यों है :—

भोजपुरी प्रांत के एक इकाई के रूप में संगठन करने के प्रस्ताव को लेकर विशेष चखचुक हुई थी। श्री नारायण बाबू, श्री चन्द्रिका सिंह तथा कई अन्य राजनीतिकों ने इसका विरोध किया। घण्टों वाद-विवाद के बाद यह प्रस्ताव बहुमत से स्वीकार कर लिया गया।

दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह था कि भोजपुरी एक भाषा है अथवा एक बोली। सभा ने उसे एक भाषा के रूप में ही मान्यता दीं। भोजपुरी के माध्यम से प्रारंभिक पाठशालाओं में शिक्षा दी जाय इस पर कोई चर्चा हुई थी अथवा नहीं यह मुझे ठीक-ठीक याद नहीं है। सभा की कार्यवाही हिन्दी के माध्यम से हुई थी। सभा में प्रायः उन्हीं विषयों से सम्बन्धित प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये जो मेरी नवसूत्री योजना द्वारा प्रचारित किए गए थे। एक प्रस्ताव द्वारा कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को 'भोजपुरी मंडल' संरक्षक घोषित किया गया। कार्य समिति के सदस्यों की संख्या सम्भवतः तीस से अधिक हो थी और उसमें सभी भोजपुरी जिलों के प्रतिनिधि रखे गये थे। निर्वाचन हो जाने के बाद उपस्थित सदस्यों की एक बैठक हुई। कार्यालय के व्यय के लिए सदस्यों ने दो-दो रुपये दिये जो गुप्तजी को दे दिये गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रश्न—'अँजोर' में प्रकाशित वार्तालाप में डा० परमेश्वरी लाल गुप्तजी ने १९४७ ई० में सीवान तथा दूसरे वर्ष सारन जिले में ही कहीं श्री महेन्द्र शास्त्री जी द्वारा आयोजित भोजपुरी सम्मेलनों में अपने प्रमुख रूप से भाग लेने की बात कही है। आपके जानते भोजपुरी सम्मेलनों की सफलता में गुप्तजी का कितना हाथ रहा है ?

उत्तर—अभाग्यवश श्री परमेश्वरी लाल गुप्त को जिस आशा के साथ भोजपुरी मंडल का मंत्री चुना गया था वह एक प्रतिशत भी सफल न हुई। वे न तो मंडल के कार्यक्रमों का किसी पत्र-पत्रिका द्वारा प्रचार ही कर सके और न कभी किसी स्थान पर कार्य-समिति की बैठक ही बुलाई। मुझे जहां तक स्मरण है मैं ने उनको और दूसरे सदस्यों को इसके लिए लिखा भी, किन्तु कोई फल नहीं निकला। अतः भोजपुरी मंडल जिसका बड़े प्रचार-प्रसार के पश्चात् बड़े समारोह में जन्म हुआ था अधिकारियों के हाथ में जाकर मृत प्राय हो गया। उन अधिकारियों में एक मैं भी था, जिसके सारे प्रयत्न बेकार गये।

प्रश्न—गुप्त जी को ही भोजपुरी साहित्य मंडल का मंत्री क्यों चुना गया था ?

उत्तर—काशी भोजपुरी भाषी प्रांत का केन्द्र-स्थल है। श्री परमेश्वरी लाल जी उसी केन्द्र के निवासी थे। उनका सम्बन्ध 'आज' जैसे प्रख्यात समाचार पत्र से था जिसका सम्पूर्ण भोजपुरी प्रदेश में व्यापक प्रचार है। एक प्रकार से वह भोजपुरी प्रांत का प्रतिनिधि पत्र था। गुप्तजी ने एक वर्ष पूर्व आजमगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन में 'भोजपुरी सौष्ठव' नामक निबंध पढ़ा था जिससे उनकी भोजपुरी के प्रति रुचि प्रकट होती थी। पं० बनारसी दास जी चतुर्वेदी ने पत्र लिख कर उनसे मेरा सम्पर्क कराया था। गुप्तजी ने वाराणसी में मुझे एक बार भोज भी दिया। इस प्रकार वे मेरे निकट से परिचित थे। मुझे उनसे भोजपुरी मंडल के विकास हेतु विशेष आशा थी इसी से सीवान-सम्मेलन में वे मंत्री चुने गये।

मैं देहात का रहने वाला था, एक ऐसे ग्रामीण अंचल में, जहाँ से रेलवे स्टेशन करीब १५ मील दूर था और मेरा विद्यालय भी बनारस से दूर सारन जिले के एक ऐसे ग्रामीण क्षेत्र में था जो छपरा सीवान दोनों से दूर था, आवागमन के आज-जैसे साधनों से रहित। अतएव, सभा ने मुझे परमेश्वरी लाल के बाद सहायक और प्रचार मन्त्री का भार दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री महेन्द्र शास्त्री तथा श्री बासुदेव द्विवेदी (देवरिया), टेढ़ीनीम, बनारस उपमन्त्री चुने गये। इन दोनों महानुभावों से मुझे प्रचार-कार्य में अधिक सहयोग मिलने की संभावना थी जो किसी रूप में सही सिद्ध हुई।

प्रश्न—सीवान के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर आये चलकर जो भोजपुरी सम्मेलन हुए उनके विषय में कुछ बता सकते हैं ?

उत्तर दूसरे वर्ष अर्थात् १९४८ ई० में पं० रामबहादुर शर्मा (स्वागता-अध्यक्ष और श्री राम नगीना राय (स्वागत मंत्री) के प्रयत्न से गोपालगंज (सारण) में महापण्ति राहुल सांकृत्यायन जी की अध्यक्षता में जो भोजपुरी सम्मेलन हुआ वह सारश जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साथ होने वाला मात्र जिला सम्मेलन था। न उसके उद्देश्य सीवान-सम्मेलन जैसे थे और न क्षेत्रीय व्यापकता। यही बात श्री फागू राय द्वारा संयोजित बक्सर सम्मेलन के विषय में कही जा सकती है। इसकी गोपाल गंज सम्मेलन से कुछ अधिक व्यापकता थी और इसमें बलिया के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए थे। एकमा, बसन्तपुर, सीवान आदि में होने वाले सम्मेलनों को भी प्राय: यही स्थिति थी। इन सम्मेलनों की अपेशा बलिया का सम्मेलन अधिक सफल कहा जा सकता है। इनमें भोजपुरी प्रदेश के कुछ प्रसिद्ध विद्वान और बहुत से जिलमें के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे एवं प्रस्ताव भी प्रथम सीवान-सम्मेलन के अनुसार हो स्वीकृत किए गए थे। इसके स्वागताध्यक्ष बा० मुरली मनोहर ऐडवोकेट और स्वागत मंत्री डा० रामविचार पाण्डेय थे तथा संयोजक श्री जगदीश औझा सुन्दर'। अध्यक्षता डा० उदय नारायण तिवारी ने की।

प्रश्न—लगता है सीवान के प्रथम सम्मेलन के बाद आप उदासीन हो गये। यदि नहीं, तो आपने इस सम्मेलन के पश्चात् भोजपुरी की सेवा एवं प्रचार के सम्वर्द्धन में क्या योग दिया ?

उत्तर—सम्मेलन के बाद की परिस्थिति बहुत निराशा जनक और उदासीनता उत्पन्न करमे वाली थी। सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधियों में बड़ा उत्साह देखा गया था। कार्य-समिति का निर्वाचन हो जाने पर कार्यालय के कार्य-संचालन हेतु सदस्यों ने चन्दे भी दिये और मैं ने तत्संबन्धी सारे कागजपत्र और चिट्ठियां कार्यालय में रखने के लिए गुप्त जी को दी किन्तु दुर्भाग्यवश सम्मेलन की कार्यवाही की पूरी रिपोर्ट समाचार-पत्र में प्रकाशित नहीं हुई और न दुबारा कभी कार्य-समित की बैठक बुलाई गई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सकी। मैं श्री परमेश्वरी लाल गुप्त से बैठक बुलाने के लिए लिखता ही रह गया, पर उन्होंने ऐसी चुप्पी साधी कि मेरे पत्रों का उत्तर भी न दिया। अध्यक्ष महोदय भी क्रियाशील न हुए। मैं ने श्री गणेश चौबे को पत्र लिखा परन्तु उन्होंने केवल इतनी सी सूचना दे दी कि श्री परमेश्वरी लाल इस समय बहुत व्यस्त होने से विवश हैं। इस उत्तर से मुझे मर्मान्तिक पीड़ा हुई। अपने सारे किये कराये कार्य और वर्षों से परिश्रम पूर्वक तैयार की गई भूमि पर पानी फिरता देख मैं व्यग्र हो उठा! जिन्हें कर्णधार बनाया, उन्होंने नौका मझधार में डुबो दी, इस से बढ़कर कष्ट और निराशा की कौन सी बात हो सकती है? मेरी समझमें नहीं आया कि श्री परमेश्वरी लाल गुप्त दूसरे को चार्ज क्यों नहीं देते! फिर भी प्रथम प्रयास में असफल होकर भी मैं हताश नहीं हुआ और छपरा-बलिया में पुनःप्रयत्नशील हुआ। अब मेरे सहयोगी श्री महेन्द्र शास्त्री और सुन्दर जी हो गये। इन्हीं लोगों के प्रयत्न से से छोपरा और बलिया जनपद तथा बक्सर में कुछ प्रगतिशीलता आई।

मैं भोजपुरी प्रांतीय मण्डल के उद्देश्यों के प्रति सदा सक्रिय रहा और आज भी हूं। मेरी प्रवृत्ति सम्मेलनों में समय और शक्ति लगाने की अपेक्षा जन पदीय रचनात्मक-कार्यों की ओर अधिक रही है। अवसर के अनुसर मैंने सदा भोजपुरी के जनपदीय कार्यक्रम संचालित करने के लिए मित्रों को प्रेरणा दी है और स्वयं भी पत्रिकाओं आदि के माध्यम से कुछ करता रहा हूँ।

प्रश्न—भोजपुरी साहित्य संस्कृति की ओर आपका ध्यान कैसे गया?

उत्तर—मेरा गाँव ठीक उस केन्द्र विन्दु में है जहाँ बलिया, देवरिया और सारन जिलों की सीमायें मिलती हैं। इन तीनों जिलों में अपने बन्धु-बांधव बसे हुए हैं और जमीन्दारी का उन्मूलन होने के पूर्व तक इन जिलों में अपनी भूमि भी थी। यह तो अपनी बात हुई। बलिया जनपद की स्थिति ही ऐसी है कि इस के तीन ओर बिहार और एक ओर उत्तर प्रदेश है। यह जिला भोजपुरी प्रदेश के केन्द्र में है। यद्यपि भोजपुरी भाषा भाषी क्षेत्र कई राज्यों में बंटा हुआ है फिर भी उसकी रीति-नीति आचार व्यवहार भाषा-भाव, नाते-रिश्ते, सभी में एक सूत्रता हैं। अतः केन्द्रवर्ती होने के कारण बलिया वासी समस्त भोजपुर क्षेत्र में महत्व और एकता का अनुभव करता है। यह ममत्व की भावना स्वाभाविक रूप से मुझ में भी है।

श्रद्धेय पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी के पत्रों से बलिया के जनपदीय संगठन की प्रेरणा प्राप्त हुई। 'मधुकर' और लोकवार्त्ता' के अंक पढ़ने को मिले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[म]धुकर' में वृहत् बुंदेलखण्ड की सांस्कृतिक एकता और संबंध-सूत्र सम्बन्धी लेख [प्र]काशित होते थे, जब कि उक्त प्रदेश भी कई प्रांतों (संयुक्त प्रदेश, मध्य प्रदेश, [म]ध्य भारत) में विभक्त था। 'मधुकर' की जनपदीय योजना ने मुझे प्रभा-[वि]त किया अस्तु मेरे मन में यह बात बैठने लगी कि एक मात्र बलिया जिले का [ही] नहीं, पूरे भोजपुरी प्रदेश का एक सूत्र में गठबन्धन हो। इससे हमारी शक्ति [ब]ढ़ेगी, अधिक अपत्व का भाव उत्पन्न होगा, भोजपुरी भाषा का विकास होगा [औ]र उसके द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी का पोषण भी। मैं ने अनेक विद्वानों से परा-[म]र्श किया और अचार्य हजारी प्रसाद जी द्विवेदी के सान्निध्य और सहमति से [भ]ोजपुरी सम्मेलन की योजना बनाने का मेरा हौसला बढ़ा।

प्रश्न—भोजपुरी साहित्य-मण्डल सम्बन्धी आपकी १९४७ई० वाली योजना [क]े विषय में अब आपका कार्यक्रम क्या है ?

उत्तर—जिन योजनाओं को समक्ष रखकर सन् १९४६-४७ में सम्मेलन [क]ा आयोजन किया गया, आज भी उसी रूप में उनकी आवश्यकता और उप-[यो]गिता है जिसके लिए सक्रिय पग उठाना हम सभी का कर्त्तव्य है। 'यथा [श]क्ति तथा भक्ति' के अनुसार चुपचाप मैं तो उसी में लगा हुआ हूं। मेरे सभी [स]ामाजिक सांसकृतिक और साहित्यक कार्य उन्हीं योजनाओं से प्रेरणा पाकर होते [है]।

प्रश्न—क्या भोजपुरी के प्रसार-प्रचार संवर्द्धन की दिशा में यत्र-तत्र हो [र]हे उद्योग से आप सन्तुष्ट हैं ? यदि नहीं, तो आप क्या सोच रहे हैं, आपके [स]पने क्या हैं ?

उत्तर—आजकल पटना, काशी, जमशेदपुर, सीवान अथवा मुज्जफरपुर [आ]दि स्थानों के अतिरिक्त कानपुर, इलाहाबाद, हवड़ा कलकत्ता आदि जगहों में [भ]ी भोजपुरी के नाम पर कुछ लोगों ने संस्थायें खोल रखी है किन्तु ऐसा [ल]गता है कि भोजपुरी के नाम पर संस्थायें स्थापित करने की एक लहर-सी चल [र]ही है। जिसके जीमें जब आता है, कहीं एक संस्था स्थापित कर देता है। [इ]न सस्थाओं की गैठक में बहुत हुआ तो कभी दो चार आदमी गैठकर भोजपुरी [ग]ीत गा लेते हैं, इसके अतिरिक्त उनके पास न कोई योजना है, न कार्य। [य]दि कहीं सक्रियता भी दिखाई देती तो कथा है कहानी या गीत-संग्रह छप [ज]ाते हैं। भोजपुरी भाषा और क्षेत्र के सांस्कृतिक विकास के लिए इतना ही [प]र्याप्त नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हालाँकि भोजपुरी परिवार, पटना और भोजपुरी संसद, वाराणसी तथा भोजपुरी परिषद् जमशेदपुर के कार्य अपनी सीमा के अन्तर्गत अवश्य संतोषजनक हैं किन्तु नाम मात्र के लिए अनेक संस्थाओं की स्थापना करने वाले लोग तो भोजपुरी के प्रसार-प्रचार और संवर्द्धन के मार्ग में रोड़े अटका रहे हैं। यह स्थिति भोजपुरी के लिए उत्साह वर्द्धक नहीं है। अभी सयोग्य कार्यकर्त्ताओं का अभाव है। अच्छा होगा कि इन सभी छोटे बड़े केन्द्रों और उनमें लगे कार्यकर्त्ताओं का समूहन कर लिया जाय और उसका प्रधान केन्द्र पटना तथा काशी जैसे स्थानों पर हो। इसकी शाखायें भोजपुरी प्रदेश के गांव-गांव में और भोजपुरी उपनिवेशों में सर्वत्र फैली हों एवं उत्साही कार्यकर्त्ताओं द्वारा क्रियाशील हों। सर्वत्र नव-सूत्री योजना के अनुसार कार्य किया जाय तथा भोजपुरी को विद्वानों द्वारा उन्नत साहित्य से परिपूर्ण किया जाय। यदि भोजपुरी प्रदेश की एक राजनीतिक इकाई हो जाय तो अति उत्तम और यदि न हो तो भी उसे पारस्परिक व्हवहार और संस्कृति के आधार पर एक इकाई मान कर जनपदीय योजनायें कार्याविन्वत की जायें। इसके मूल में विघटनात्मक प्रवृत्ति और घृणा भावना नहीं होगी।

प्रश्न—भोजपुरी साहित्य, संगीत नृत्य आदि की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए क्या आपके पास कोई योजना है ?

उत्तर—इसके लिए सर्वोत्तम उपाय है गाँव-गाँव में ऐसी संस्थाओं या मण्डलों की स्थापना जो पर्व-त्योहार और उत्सवों को समारोह पूर्वक मनायें एवं इस अवसर पर भोजपुरी नाटक, कवि-सम्मेलन नृत्य, गीत आदि का कार्यक्रम रखें। जनता में जनपदीय कार्यक्रमों के प्रति रुचि एवं उत्साह वृद्धि करें। मैं ने योग्याकोठी, वसन्तपुर, माघर (जिला-सीवान) छितौनी, सिवान कलाँ, सिकन्दर, लिलकर (जिला-वलिया) में और उनके पार्श्ववर्ती गाँवों में इस प्रकार के कार्यक्रम कार्यान्वित किये और उसमें सफलता भी मिली।

प्रश्न—भोजपुरी के प्रति आप की दृष्टि क्या है ?

उत्तर—भोजपुरी में इधर २५ वर्षों के भीतर जितने साहित्य का सृजन हुआ है वह उत्साहप्रद है। इस अवधि की कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं, अस्तु साहित्य-साधना के सम्बन्ध में भविष्य उज्वल दिखाई पड़ता है। किन्तु प्रकाशन कार्य और उसकी खपत आशाजनक नहीं है। इसके लिए जनपदीय योजनाओं के अनुसार गाँव-गाँव में ज्योति जगानी और धूनी रमानी चाहिए। भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का क्षेत्र भारत के बाहर मारीशस, फीजी, नेपाल, ब्रिटिश गायना और अफ्रिका के देशों तक व्याप्त है, अस्तु वहाँ भी इसके संरक्षण और विकास का प्रयत्न होना चाहिए

जनपदीय संस्थाओं का कर्त्तव्य है कि वे गाँव-गाँव में अपनी शाखाओं की स्थापना करें तथा ग्रामीण जनता में सुखद नव जागरण का संदेश पहुंचायें। साहित्यिक और सांस्कृतिक आधार पर अवलंबित जन-चेतना ही कल्याणकारी तथा चिरस्थायी होती है। सामाजिक जीवन को सरस बनाने के निमित्त जनपदों तथा गाँवों में सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संगठनों की अनिवार्य आवश्यकता है।

—o—

गजल

रामेश्वर प्रसाद सिन्हा,

कौंद जिनिगी के मुसुकियाइ गइल।
दरद रग-रग के ललहाइ गइल।
गीत फागुन के कबो तार के लागल छूवे,
मस्त सावन में मन गोताइ गइल।
नेह के थाती खुलि-खुलि के लुटवली सगरो,
जे मिलल ऊहे छटकियाइ गइल।
छल का हाथे वा बिसवास के दबल घांटी,
साध के सेनुर सब छिटाइ गइल।
प्यार अतना ले बढ़ गइल बा अब जमाना में,
प्यार बिन हियरा छछनियाइ गइल।
रूप का दुअरा हियरा के पूछनिहार के बा ?
मन के पवड़ी अब धनकियाइ गइल।

—o—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चल, चलीं गवईं की ओर

रम्भा शंकर राय

१

प्यासल हिरनी हिरनवाँ से कलपेली, चल चलीं गवईं की ओर
कारी रे बदरियों से झरे नाहीं बुनियाँ, इहवाँ विपति कोन ओर
बान्हि के बलकवा जे व्याधा लेइ गइले, तड़पत होई बड़ा जोर
हिरनी क छतिया से दूध टप-टपकेला, अँखिया से टपकेला लोर

२

एही रे शहरिया जे घरवा बहेलियन क, निपटे जे हउवँ कठोर
पनियों पियत पापी प्रान पीछे परिहँ प्रीति, परति, पछोर
गवईं में बसेला रे जोगिया किसनवाँ, बसे ना कसइया छिछोर
सरल सुभउवा क खेले ना अहेरिया, जे बोलेलँ, बोलिया सलोर

३

नियरे नहरिया में, तलवा, बउलिया में, सगरा में, हिया में हिलोर
रतिया के पनियाँ में बरेली बिजुरिया, कि नाचेली तरइया कोर
चाँदी अस चमकेला चम-चम पनियाँ, सोना अस चमकेला भोर
मोती अस चमकेली फफनाठि घसिया, फूलवा जे करेलँ अंजोर

४

धन वाली सोहरल अमवाँ क बगिया रे, नाही बाड़े बबूर सिहोर
खोंतवा से चहकेली बारी रे चिरइया, मोजरा से झाँकेला टिकोर
जेठ दुपहरिया के बइठल छइयाँ में, पगुरी में ढोर, बिसभोर
गम-गम गमकेली बगिया सरेहिया, कि गमकेली गउवाँ क खोर

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मानस के मोती :

साहित्य संसार में 'राम' वरणन

—कमला प्र० मिश्र 'विप्र'

गोस्वामी तुलसी दास जी 'मानस' में लिखले बानी कि 'हरि अनंत हरि कथा अनंता'। सचमुच प्राचीने काल से 'राम' के अनेक रूप बा देश आ विदेशन में आ ओसहीं रामो कथोके। भारत में त वैदिके युग से राम वरणन वा। ऋग्वेद में इक्ष्वाकु' दशरथ आ राम कथा के प्रसंग आइल वा। दाशरथी राम, परशुराम आ बलराम के नाम प्रचलित बा रामायण आ महाभारत काल से। रामायणो का विषय में गोस्वामी जी कहले बानीं कि 'रामायण सत कोटि अपारा आ राम' का विषय में कहले बानी कि—

राम नाम कर अमित प्रभावा, संत पुरान उपनिषद गावा।
सबकर परम प्रकाशक जोई, राम अनादि-अवधपति सोई ॥
कलिजुग सम जुग आन नहिं, जो नर कर बिस्वास।
गाइ राम गुन गन बिमल, भव तर बिनहिं प्रयास।

एह मरम के देश विदेश में बहुत लोग बड़ा सज से जानत आइल बाड़न। युग पुरुष स्व० महात्मा गांधी जी का उर अंतर में—

'रघुपति राघव राजा राम-पतित पावन सीताराम' के अरचित स्थान रहे। सबसे पहिले बाल्मीकि-मुनि रामायण लिखलीं।

बाल्मीकि मुनि के आदि कवि कहल बा आ उहां का तपस्या करत ढेर दिन बितला पर देंह में दंवका लागल रहे तवना का बाद उहां का देंवकांड़ि से बिमल रूप धइ के बाल्मीकि भइलीं। उहां का त्रेता-युग में रामो बन गमन का बेर रहीं जवना से कई विद्वान लोग बड़ा शंका कइले बाड़न। भारत के लोग अवतारिक रहस्य से अच्छी तरह परिचित बाड़न एही से इहां कवनों विशेष बुड़े-उतराए के बाते नइखे। आदि रामायण उन्हें के रचना ह। उहां का प्रचलित बाल्मीकि रामयण के रचना काल में कई विद्वान लोग बहुत ज्यादा छान बीन कहले वाड़न। बाल्मीकि कृत आदि रामायण-कांड (२-६) आ प्रचलित बाल्मीकि रा० कांड (१-७) देखला से अइसन जनात बा कि बाल्मीकि कृत रामायण के-दखिनी पाठ, गौड़िय पाठ आ गौरेसियो अउर पच्छिमोत्तरी तीन पाठ हो गइल बा।

एह पाठन में 'दक्खिनी पाठ'—गुजराती प्रेस आ निर्णय सागर प्रेस बम्बई के विशेष प्रचलित बा। २ रा गौड़िय पाठ—गौरेसियो (पेरिस) आ कलकत्ता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संस्कृत सिरिज में आ ३ रा पच्छिमोत्तरी पाठ दयानन्द विद्यालय(लाहौर)संस्करण में विशेष समानता बा बाकी प्रधानता बा दक्षिनिए पाठ के। विदेश के कुछ विद्वानन का मतानुसार रामायण पहिले मोहंखरी रूप में रहे आ बाद में लिखा— इल। ई बात भारतीय संस्कृति का अनुकूल नइखे बुझात। रामायण रचना काल में कुछ विद्वान लोगन के विचार नीचे दिहल जात बा:—

विद्वान	समय	रचना
सर विलियम जोन्स	२०२४ ई० स० पूर्व	खड़ग वि० प्रेस पटना से प्रकाशित पुस्तक स्व०-शिव नंदन सहाय जी का 'संत तुलसीदास' में।
श्री ग्रेशियो	१३०० श० ई० पूर्व	जर्मन ओरियन्टल जर्नल रामायण भाग-१०।
श्री श्लोगेल	११ श.ई० पूर्व	जर्मन ओ० जर्नल भाग-३ पन्ना ३७९।
श्री ?च० याकोबी	५ श.ई० पूर्व	डच रामायण पन्ना १०।
श्री सी० वी० वैद्य	२ श.ई० पूर्व	द रिड्ल आव द रामायण पन्ना (२०-५)
श्री एम विन्टर नित्स	१ श० ई० पूर्व	हिस्ट्री इन्डियन लिटरेचर भाग-१ पन्ना (५००-५१७)
श्री मेकडानल्ड	५०० वर्ष पूर्व	हिस्ट्री संस्कृत लिटरेचर पन्ना ३०६।

श्री जी० टी० ह्वीलर आ डा० वेबर साहब के मतानुसार रामायण पर यूनानी आ बौध प्रभाव बा। उहां सब का ई भ्रम एह से हो गइल जे युनानी लेखक आ चीनी यात्री फाहियान रामायण के वरणन नइखन कइले। ई भ्रम रस्सी में सांप के भावना बा काहें जे युनानी लोग भारत का पहिरन, हथिहार, रीति रिवाज, उपज हवा-पानी प्रदेश पहाड़ आ नदी ओदी के हाल लिखले वाड़न! फाहियानो वौद्ध मठ, वौद्ध भिक्षुक आ बौद्ध विहार आदि के विशेष रूप से वरणन कइले बाड़न जवना से ऊ अधिक प्रभावित रहन। हँ, एक ठहर 'यवन' शब्द पर भी शंका बा जवना का बारे में खुद श्लोगेल साहेब लिख देले बाड़न कि ई शब्द भारत वर्ष का पच्छिम प्रदेशन का जातिन में प्रयोग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होत रहे आ बाद में युनानिन खातिर लिखाए लागल एह से ई साफ हो जात बा कि रामायण के रचना प्राचीन ह आ एह पर युनानी छाप नइखे।

समय का लेखा जोखा से आदि कवि बाल्मीकि मुनि आ रामायण रचइता बाल्मीकि मुनि का विषय में पहिलहीं कुछ चर्चा कर दिहल बा। महाभारत में भी बाल्मीकि जी के एक ठहर वरणन आइल बा जे आदि कवि से दोसरे बानी। प्रचलित बाल्मीकि रामायण आ मानस वगैरह में वाल्मीकि जी से भगवान राम का बन गमन में भेंट बा। जइसे :—

इति सीतांच रामश्च लक्ष्मश्च कृतांजली।
अभिगम्यांश्रमं सर्वे वाल्मीकिभिवादन ॥१६॥
(बालमीकि दक्षिणात्य पाठ)

देखत बन सर सैल सुहाए, बालमीकि आश्रम प्रभु आए।
सुचि सुन्दर आश्रम निरखि हरखे राजिव नैन।
सुनि रघुबर आगमन मुनि, आगे आयउ लेन
(मानस अयो० १२४)।

वाल्मीकि रामायणो में एगो बड़ विचित्र कथा बा। तमसा का दक्खिन भाग में उहां के आश्रम बा जहां उहां से राम कथा के सार नारद जी सुनवले बानीं। बालमीकि जी ओहिजे 'श्लोक' के रचना कइले बानीं आ ब्रह्माजी का आदेशानुसार रामायण के श्लोक वद्ध कइले बानीं जवन लव आ कुश का सुने के मिलल बा।

महाभारत में एक ठहर बाल्मीकि जी के पहिला जीवन बटमार के बतावल बा। अनुशासन पर्व में कथा बा कि बाल्मीकि जी अपनहीं महाराज युधिष्ठिर से कहले बानीं कि विवाद में हमरा के मुनि लोग ब्रह्मघाती वह दिहलन आ अतना कहल कि हमरा खातिर भयानक पाप हो गइल। हम भगवान शंकर के शरण लिहलीं आ उहां का हमरा के ई कह के पाप मुक्त कर देलीं जे 'तोहार यश उत्तम होखी'।

अध्यात्म रामायण में कथा बा कि हम शुद्राचरण अपनाइ लेले रहीं। धनुष वाण लेले बटोहिन के दबकाइ के दाम पइसा भा लुगो फाटा उतरवाइ लेत रहीं। एक बेर मुनिजन से भेंट भइल। जसहीं ओह लोग के ओर बढ़लीं तवले उहां सब हाथ उठा के कहलीं जे जतना रूप में रावां परिवार के पेट पोसत बानीं, ओह अनरकम के पाप परिवारो पाई कि अपने अकेल भोगब?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाप के भागी बने से परिवार पराइ चलल । मुनिजन दया कइ के हमरा के 'मरा' जाप के उपदेश दिहलीं। हमरा जप करत ढेर दिन बितल त उहां सबके फिर दर्शन मिलल। हमरा तन पर देवंकांड़ि जमा होगइलि रहे। ओह से बहरिअइला पर उहां सब कहलीं जे अपने के नया चोला पवलीं आ समस्त पाप परा गइल। अब अपनेका बाल्मीकि ऋषि हो गइलीं।

कृतिवासी रामायण में सात मुनिन का स्थान पर ब्रह्माजी आ नारद जी से भेंट बतावल बा। उहां बाल्मीकि मुनि के पहिलका नाम रत्नाकर बतावल बा आ पुत्र च्यवन ऋषि जी के। कृतवासी रामायण पन्ना २ पर ई प्रसंग आइल बा। गोस्वामी तुलसी दास का मतानुसार—

उलटा नाम जपा हरि जाना, बाल्मीकि भए ब्रह्म समाना।

महाभारत में भगवान राम।

महाभारत में भगवान राम के व्यापक वरणन बा। वाल्मीकि मुनि का विषय में भी बड़ा रोचक प्रसंग बाटे। उहां के ऋषि, तपसी का अलावे द्रोण-पर्व १४३-८५ में कवि रुप में बानीं। जइसे :—

'अपिचायं पुरा: गीत श्लोको बाल्मीकिना भुवि'।

महाभारत में चार स्थानन पर राम कथा के निजगुत प्रसंग आइल बा जवना में 'रामोपख्यान' के विशेष महत्व बा। बन पर्व में भीम हनुमान संवाद बा। उहां हनुमान जी राम कथा के सार तत्व भीम सेन से सुनवले बानीं। द्रोण पर्व आ शान्ति पर्व में सोलह राजा लोगन के कथा बा जवना में भगवान रामो के कथा प्रसग बा : अभिमन्यु बध का बाद महाराज युधिष्ठिर बेकल हो गइल बानीं। उहां के महा भयावन शोक हरे खातिर ब्यास जी राम कथा सुनवले बानीं। भगवान राम का एगारह हजार साल राज शासन, रामगुण आ महिमा के रोचक बरणन उहां आइल बा। कथा का अन्त में परतोख दिहल बाइ कि ओइसनों प्रतापी आ लोक प्रिय महा पुरुष के शरीर छूट गइल आ जे संसार में आई से सब एक दिन जरूर जाई।

महाभारत में रामोपख्यान के श्री गणेश बा द्रोपदी जी का दुर्दशा से, राजा युधिष्ठिर का अपना दुर्भाग पर हाहाकार कइ के अधीर हो गइला पर। हाय, हाय करतउहांकाहले बानी कि का हमरो ले केहू अधिक अभागा हो सकेला? एही प्र मारकण्डे मुनि उहां के रामायण सुनवलें बानीं। बाल्मीकि रामायण आ महाभारत का रामोपख्यान पर देश विदेश के विद्वान लोगन के बड़ा निठाह तर्क बा। एह दूनों में बाइ त थोरही अन्तर। कुछ लोग इहो बिन घाले के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिश कइले बाड़ जे कहां का अन्तर बाटे रामायण आ रामोपख्यान में। सातो ांड का अन्तर के ठुमकारे रूप इहां दिहम जा रहल बा।

रामोपख्यान बाल कांड

चारो भाइन राम लखन वगैरह के जन्म कथा बा. बाकी राजा दशरथ ा पुत्रेष्ठि यग्य के वरणन नइखे। दानव दल से हदसि के देव दल त्रान ातिर हुँचलल बा ब्रह्माजी का दरबार में। ब्रह्मा जी का उपदेश से विष्णू बल ातिर देव गण बनरी आ भलुनी से सम्पर्क स्थापित कइले बानीं। ीताजी भूमिजा ना होइ के राजा जनक के खास पुत्री बानी। भगवान राम ा पत्नी सीता का अभावे अउर कवनों भाई का स्त्री के नाम नइखे।

अयोध्या - चवंतीस श्लोकन में कथा बा। अत्रि मुनी भा गुह के चर्चा इखे। केकयी जी का एकई बरदान मिलल बा। मंथरा गंध्रर्वी दुंदुभी के अव-ार बाड़ी।

बनकांड—अगस्त जी, विराध सुतीक्ष आ शवरी प्रसग छोड़ दिहल बा।

किष्किन्धा— राम सुग्रीव मिताई खातिर भगवान राम का पवरुख रीक्षा के बरणन नइखे। बालि आ सुग्रीव का एकही बेर लड़ाई भइल बा।

सुन्दर कांड— अपना चाचा के हाल हनुमान जी अपने कहले बानी रामो-ख्यान का रचइत के एह से छुआछूत नइखे। त्रिजटा सीता जी के तोख त कहले बाड़ो कि भगवान राम सुग्रीव से मिताई कइ के जल्दिए आवेवाला नीं।

लंका कांड—३२३ श्लोकन में बा। रावण सभा, भगवान राम के ायामंच सिर आ रावण सुग्रीव युद्ध प्रसंग नइखे। समुद्र पर धनुष तानल, ामरावण लड़ाई भा लखन लाल का शक्ति लागे के कथा नइखे, कुंभकरण का रण बा लखन लाल जी से। माया से राम लखन के उत्पत्ति बा जवन भ्रम िटाइ के भगवान राम ब्रह्मास्त्र से रावण के अइसन भस्म कर देले बानीं जे ाखो नापता बा। सीता जी का अग्निओं परीक्षन के कवनों चर्चा नइखे।

उत्तर कांड—रावण आ कुंभ करण के माता पुष्पोत्कटा बाड़ी, विभीषण ी की माता मालिनी आ खर अउर सूपनेखा के माता बाड़ी 'राका'। भगवान ाम का अयोध्या लवटलो के रोचक कथा बा।

बौद्ध ग्रंथन में भगवान राम।

प्राचीन बौद्ध साहित्य में तीन 'जातक कथा' बा जवना में बोधि सत्वे गवान राम रूप बानीं। बोह तीन जातक कथा में दशरथ जातक के विशेष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रधानता बा। 'जातकठवराणन' कह के जे प्रसंग दिहल बा से ५ वीं श० के एगो सिंहली पुस्तक के पाली अनुवाद ह। दशरथ जातक कथा एगो किसान के पिता शोक से मुक्ति दिलावे खातिर भगवान बुद्ध सुनवले बानीं। कथा अइसे बा, :—

एक समय बाराणसी में राजा दशरथ जी राज करत रहीं। राजा का बड़की रानी से राम, लखन आ सीता तीन सन्तान रहन। रानी के शरीरान्त हो गइला पर राजा फिर एगो दोसर, बिबाह कर लिहलीं जेकरा से भरत लाल के जन्म भइल। राजा से एह रानी का एगो माँग पूरा कर देवे के वरदान रहे। भरत जी सात साल के भइलीं त उहां का राज तिलक के माँग रानी का ओर से भइल। राजा दशरथ का ई इचिको भर ना सोहात रहे आ रानी का तगादा तड़ातड़ दिनोराती होखे लगल। राजा पहिली रानी का सन्तान लोग से सुनवलीं कि भयानक खटपट के भय बा इहां। एही से हम कहत बानी कि अच्छा होइत जे तुहन लोग बारह साल बन में बिताइए के बाराणसी लवटि के राज करिह।

जोतिषी लोग बारहे साल अउर आयु राजा के बतवले रहीं। राजा का कहला पर राम, लखन आ सीता बन में चल गइलन। साथ में कुछ अउर लोग भी चलल रहे तेकरा के लवटाइ के उहां सब हिमालय में आश्रम बना के बसेड़ ले लिहलीं।

राजा दशरथ का रानी के कोहनाइल आ डंभाइल देखला का अलावे ठोन-हंच आ ठेकरहजा से रोज ठोकरिआत रहे के पड़ल। नव साल बाद राजा के मरण भइल आ साथे साथ रानी का राजगद्दी के सपनो सनठि गइल।

भरत लाल जी चतुरंगिनी सेना का साथ भगवान से भेंट करे गइलीं। सब के कुछ दूर एनहीं छोड़ के भरत जी अकेले भगवान राम से भेंट कइलीं। दुनों भाइन का प्रेम मिलन का बाद भरत जी पिता मरण के हाल सुनवलीं। भरत लाल जी सनेस सुना के शोक से निजहीं रोवे लगलीं, बाकी भगवान राम का आँखिन में इचिको भर लोर ना लउकल।

साँझ का बेरा लखन लाल आ सीता जी आश्रम पर अइलीं। ऊ दुनों आदमी पिता मरन सुन के अछुधाह होइ के रोवे लागल। भगवान राम ओह लोग के शोक से मुक्त करे खातिर एह माटी का तन के मरम सज से छिनगा दिहलीं जवना से लखन लाल आ सीता जी का मानुस तन रूप माटी का घइला के सदेह रूप लउकला का साथ ही शोको दूर हो गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भरत लाल जी भगवान राम से वाराणसी लवट चले के आग्रह कइलीं। वाराणसी आइ के राज हवेखे के रहे, बाकी पिता भक्ति का सामने राज भोग के मोल कानी कउड़ियो के ना रहे। राम भरत का बीच लोंघड़े लागलि राज-सत्ता उहां कनकट मेंटा मतिन जे एक युग में ब्रह्मरस के परमानन्द बन गइल बा। कुछ देर तक दुनों भाइन में राज सत्ता के डगरउअल का बाद भगवान राम आपन पादुका भरत लाल जी के दे दिहलीं। भरत लाल जी पादुका के माथे चढ़ा के लखन लाल, सीता जी आ सेना का साथ वाराणसी पहुँचलीं। राज सिंहासन पर पादुका रख के प्रशासन चले लागल। पादुका में दइवी शक्ति रहे जवना से प्रशासन में तनिको विटेव परला पर पादुका आपस में खड़बड़ा उठत रहन आ भूल सुधार होते मातर सब ठेकरहजा ठप। पिता के आदेश पूरा कइ के तवे भगवान राम वन से राजधानी में पाँव रखले बानीं।

अनामक जातक—चीनी रामायण सरस्वती बिहार ग्रंथ माला ८ (१९३८) के वरनन। कथा बा कि बोधि सत्व एक समय में एगो नामी राजा रहीं। समय पाइ के उहां के ममो जी राज पा गइलीं। बोधि सत्व सरब गुण सम्पन्न एगो आदर्श प्रजा पालक रहीं आ मामाजी ठीक एकरा उल्टा। मामाजी दान, न्याय, समता आ स्नेह के सदेह सत्तुर रहीं। बोधि सत्व के सात्विक गुन आ नेक नामी मामाजी का कपार का सिंध मतिन अखड़त रहे। भगिना के राजो हड़पे खातिर उहां का खउराखापट लगा देवे पर उतारू हो गइलीं। एहजुग का गद्दी लूट का हुल्लड़, हड़ताल, हड़प, झड़प झूठ, फरेब, घेराव नारा बाजी, प्रदर्शन आ अनसनो से अनकठ गद्दी हड़पन पेंच लगवलीं मामाजी। भगिनों के सेनानायक सहज चलविधर ना रहन। दुनो दल में भइलि सरिआइ के दमचउअल आ दलकि उठल धरती से आसमान तक जान छोड़ के। ओह अभाग का अगलग्गी में प्रलय नाचे लगल महाकाल भतिन लँगटे। बोधि सत्व का महा पाप जनाइल राज लोभ खातिर प्रजा लोग के रक्तपात कराबल। राजा रानी राज छोड़ के चल दिहलन जंगल में। मामा जी के गोटी लाल भइलि, चटपट राज मचौट के मोट हो गइलीं। उहां का पीव में जीभ बुड़ावे वाला नेतन अस बेपरवाह रहीं बाकी जीवन में इचिके सुख भा संतोष ना।

राजा रानी के बन में बास रहे। ओही नियरा समुद्र में एगो खल नाग रहत रहन। एक दिन राजा कंद मूल फल खातिर गइले तवलक ले नाग भेख बदल के रानी के ले भगलन। समुद्र में जाए के रट रहे तवना का अगर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कगर बड़ा ऊंच पहाड़ रहे आ ओही खोराक में एगो पक्षी रहत रहन जेकरा राजा से पड़ोसी के स्नेह रहत रहे। ऊ पक्षी आपन पंख पसार के नाग के रोके से खोटी ना कइलन, बाकी नाग उनकर एगो पंख नोच के उन्हें नीचे गिरा दिहलन।

फल मूल लेइ के राजा आश्रम पर पहुँचलन त उहां केहु कते ना। राजा धनुष बाण लेइ के रानी का खोज में निकललन। भटकत भुलात जब एगो नदी का नियरा पहुँचलन त उहां उदास होइ के एगो बानर बइठल रहन। पूछापेख भइला पर बानर बतवलन जे हम राजा रहीं, हमार चाचा राजपाट मचोट के हमें दुरदुरा दिहलन। ओहिजे नर आ बानर का मिताई भइलि आ एक दोसरा के बल देवे के प्रन भी। दोसरे दिन बानर राजा का चचा भतीजा में भइल भिड़न्त। वोधि सत्व का बान सराहते चचादल के तरवा चटकल आ चटपट चल दिहल लोग आ भतीजा के दल चहेट के फिर कानी से चानी हो गइल।

बानर राज के आज्ञा भइल जे सुलाख जल्दी लग जाए के चाहीं। बानर लोग वन के कोन-कोन आ पहाड़ो के खोह खोरका झाँक झुंक लिहलन। अन्त में ओही घाही पंछी से असली रानी का भुलइका के भेद मिलल। बानरी सेना का समुद्र पँवरे में कठिनाई परति रहे। एह असकस में इन्द्र महाराज के सबल सहयोग मिलल। उहों का एगो छोटहने बानर के रूप धइ के निजगुतो जुगुति बतला दिहलीं नाग के नकिआवे खातिर। बानर लोग अपना उठावे भर के ढोका ढुकुर समुद्र में डाल के नाग लोक तक निठाह राह बना दिहलन। सड़क तेयार होते बानरी सेना होहकार वान्ह के नाग राज पर टूट पडलि।

निसइल नाग बिखिधर फुफकार छोड़ के बानर लोग के बेकल कइ दिहलन। बानरी सेना के बूटी देइ के छोटन्का बानर सब दुख पीरा दूर भगा दिहलन। बुतात दिया मतिन एगो लमहर लाफ छोड़लन नागराज। आन्ही, पानी आ बनउरी भहरइला का साथ बीहड़ बिजुरी चमके लागलि अकास में। छोटका बानर गतहीं राजा से सनगिया दिहलन जे नागे बिजुरी वन के घटा बन्हले बाड़न। राजा बान संधान के अस निसाना लिहलन जे वेचारू नाग भराइ के भुरकुस हो गइलन।

छोटका बानर का जुक्ति से रानी के मुक्ति मिललि। एने नाग के बिनास भइल ओते ममो के माटी लागि गइलि अनासहीं। राजा आ रानी राजधानी आइल लोग। राजा का संदेह भइल जे अतना दिन तक रानी हमरा से अलग पराया ठहर ठहरल रहलोहा। रानी बात समझ गइली आ चटपट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहली जे सांच में कभी आंच लगवे ना कइल; ना लागी। ऊ कहली कि हम पुरइन पात अस पवित्र बानीं। हमरा जल में रहला से हमरा पर जल कबो ना ठहर सके। जौ हमर बात साँच होखी त धरती दरक जइहन। अतना कहते मातर धरती के छाती धड़ाक से फाट गइल। रानी के बचन साँच निकसल आ राजा के सब संदेह दूर हो गइल। राजा आ रानी का प्रभाव से सब केहू अपना धर्मानुसार विहार करे लागल।

कथा का अंत म बोधि सत्व कहले बानी कि हम राजा रहीं आ गोपा रानी रहलीं। देवदत्त मामा का रूप में रहन आ महाराज इन्द्र छोटका बन्दर के रूप धारन कइले रहन। जनता जनार्दन का कल्याण खातिर बोधि सत्व आ रानी का हृदय में मंगलमय कामना रहे एही से बिपति के रात बितला पर विमल बिहान भइल। ई कथा भगवान बुद्ध से बुद्ध भिक्षु समाज सुनले बा। (क्रमशः)

—०—

बिहार स्टेट कोआपरेटिव बैंक लि०, पटना

स्वाधीनता दिवस के पावन पर्व पर बिहार के सभी नागरिकों तथा अपने जमाकर्त्ताओं का हार्दिक अभिनन्दन करता है। जमा पर बैंक निम्नलिखित दर से सूद देता है।

चालू खाता	—	४½ प्रतिशत
सेविंग्स बैंक	—	४½ प्रतिशत
मुद्दत खाता	—	७½ प्रतिशत

शाखाएं :—बाँकीपुर, न्यू सेक्रेटारियट, मुसल्लहपुर हाट, न्यू मार्केट और कङ्कड़बाग (पटना), बिस्टोपुर और गोलमुरी (जमशेदपुर) बिहार।

जे० चरण — सचिव
ए० के० वर्मा — प्रबन्ध निदेशक
मथुरा प्रसाद सिंह — अध्यक्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीत

★

कवनि साँवरिया आइलि खँसि जूरा में
तरइन के फूल रे!
अँइठलि, इतरालि फिरे
केकर जग-जीत के
हँसि-हँसि मुसुकालि-झरे
इमिरित - रस - प्रीत के
झूम छनन पायल-सुर परलि अइल
हियरा के कूल रे!
कवनि साँवरिया आइलि खँसि जूरा में
तरइन के फूल रे!
चन्दा अगराइल, कसि
अपना अँकवार में
ढरकलि मधु गागरि
जग बूड़ल रस-धार में
निरखि रहलि धरती बा, सुधि अपना
तन-मन के भूल रे!
कवनि साँवरिया आइलि खँसि जूरा में
तरइन के फूल रे!

—रामवृक्ष राय 'विधुर'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुंठा

—परमेश्वर दुबे शाहाबादी

डाकपिउन हमरा हाथ में चिट्ठी दे के चलि गइल बा। ई चिट्ठी निरंजन के ह। अभी ऊ ड्यूटी से लौटल नइखन। चिट्ठी पर हम सरसरी निगाह दउरावत बानी। ई निरंजन के मतारी लिखवले बाड़ी—"सोसती सीरी सर्वोपमा जोग माई के तरफ से बबुआ के आशीर्वाद! बबुआ के मालूम कि तोहरा के देखे के हमार बाया छछनता। इहे नू कहाला माई जीव गाई अस पूत के जीव कसाई अस। तू कवे लिखल कि हम लगले आइब बाकी अइल ना। बबुआ हो तू अपना नान्ह-बार से अलग रहे लगब तब बुझाई। हमरा कहला के गिरहि पारि ल। अबकी फगुआ में जरूर आव। रोपेया पइसा के जरूरत होखे त लिखिह।""तोहार साथी संघतिया लोग गाँवे-घरे ना जाय? ओह लोग के देखि के तोहरा साध ना लागे?""।"—का साध लागी? निरंजन के साथी त हमहूँ हईं। गाँवे जाये के बात जब हमरा सोझा आवेला त हमार पथरी काँपि जाला। बकरी के मन कसाई खानों में जाये से ओतुना ना घबरात होई जतुना हमार गाँवे जाये से।

सामने के दिवाल प नजरि जाता। कोना में देखतानी अपने बनावल जाला में मकरा फँसि गइल बा। हाथ-पाँव मारता बाकी पार नइखे पावत।—मन करता कि जाके सुमेसरा के गोली मारि दीं। चाचा ह कि हमरा परिवार के जमदूत?—सोझे रसातल पहुँचावे वाला""कवनों हाल से ई जाला टूट जाई त मकरा सपाट चउकस दिवाल मे लागि जाई आराम पाई। सोंचतानी कि बगल में राखल झाड़ू उठा के एकरा के उबारि दीं। बाकी कुकुर के पोंछि कमाची के माने के बा? तनिके देर में फिर उहे काम शुरू क दी।"""" तोहार साथी-संघतिया लोग गाँवे-घरे ना जाय?'—आरे गाँवे-घरे का जवह होखे जाई? एही से कहाला कि लरिकाई में शादी-बिआह ना करे के। बाकी के सुनता, मोंछि प ताव आ जाता। अब उन्हुका अस कोई हइए नइखे दुनियाँ में।—अब त घर में दल-दल भरल बा। गरदम भर डूबल बाड़ त अब काहे आँख में लोर नाचता? भोग—करज के दलदल, गरज के दलदल, मरज के दलदल""दल""द""ल।

जब हमार बिआह होखे लागत त राम प्रवेश भइया बाबूजी के समुझावत कहलन—काका, दू-दू गो लइकन के शादी-बिआह कइल-तोहार हीक ना भरल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हा ? हती-हती लइकन के गरदन में फाँसी के रसरी काहे के बान्हताड़ ? अभी तोहरो हाथ सकेत बा—लइका चेतंग हो जइहें स त बिआह करिह—तले ई कुछ पढ़ि-लिख भी जाई, त बाबूजी आपन दर्शन झारत रहन—'जेकरा करम में जतुना होई ओतुना पढ़वे करी। बबुआ हम आपन करतव करतानी। शादी-बिआह क देत बानी, लोटी-पोटी लोग—के जाने रामजी बुझि दसु।'—तले सुमेसर चाचा (अब चाचा कहे में भी घीन बरता) आगि में घीव देले—'चल हो, मानु ना मानु हम तोर मेहमान—चलल बाड़े सीख देवे। दू अच्छर कवलेज में पढ़ि ना लेले—जज हो गइले। के कहल हा तोहरा से कि इन्हिकर हाथ सकेत बा ? हम कवना दिन-रात खातिर बानी ?'—फिर चाचा दिन-रात कामे अइलें. हमरा गर्दन में ढोल वन्हा गइल आ रामोजी खूब बुझलें—तीने साल में तीन बेटी।

बिआह भइल, गहना गइल बाकी मेहरारू राम झमकवली ना। ऊहाँ से आइल आ चाचा घरे धरा गइला—उन्हुके पइसा से बनल जे रहे। ई त खैर ठीके भइल—अइसन बनवाकर मेहरारू के गहना—बानर के हाथे नरियर ! ना बोले के लूर ना बइठे के सहूर। उन्हुका के पाइ के जे मन में घाव भइल से त खैर बाहर आ गइला से कुछ हद तक भरा गइल, बाकी ऊ जे घर से आके भउजी लोग जवरे बाजी लगवली, लरिकन के टलिअवली ओह लोग के समुन्दर भरे खातिर जे खदान खोनाइल, ओकरा के भरे में बाहर रहि के भी हमनी के तीनों भाई पानी-पानी बानी जा ! सुमेसर चाचा सभ मलहथि लेले—खूँख क देले आ तबो जब पेट ना भरल त त इजलास देखा देले। लोग बाग बात चलाई त कहिहें—"गोतिया आ दाल गलवले के मोल ह। हम का जानत रहीं कि ई हइँसे घंइचटाही करिहें ? तीन-तीन गो लरिका कमाताड़े स। एह लोग के नियति साफ रहित त........"—अब दोसर तीसर दुआर धँगाता।

निरंजन के चिट्ठी हमरा हाथ में बा।—पिछिला साल फगुआ में गाँवें गइल रहीं। कतुना ललक रहे ?—गाँव के माटी, गाँव के लोग, साथी-सँघतिया, भाई-बाबू जी - मन में आवे कि एके कुलांच में गाँवें पहुँच जाईं बुझाय जे गाड़ी चलते नइखे। बाकी गाँव, जब गाँव के लगे पहुँचनी, बंहरिए रहीं तले देखनी गाँव हमरा के दइँत अस आँखि तड़ेरले देखत रहे। बुझाय कि काँचे माँस चबा जाई। हम हिम्मत हरनी ना, कुछ दूर बढ़नी त रामधनी चाचा भेंटा गइले ! सर समाचार भइल। कहले—'बबुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम कहिए से सोचत रहीं कि तू फगुआ में अइब त भेंट करबि—चार पाँच साल हो गइल—बाबूजी तोहार दू सौ रोपेया ले ले रहन''''अच्छा चल, दुआर प हम भेंट करबि।'—हमार त होसे उड़ि गइल। गोड़ मन-मन भर के भारी हो गइल। डेग बढ़वे ना करे। दुआर प पहुँचनी त देखनी तीन-चार गो रामधनी चाचा लोग पहिलहीं से जुमल रहे। हम केहू से बोलनी ना। बाबूजी रहलन बाकी उन्हुको से प्रणाम-पाती कइल हमरा नागवार लागल। बाबूजी शर्बत में नीबू गारत रहन—बाप रे. सभ रस निचोड़ा गइल बाकी तबो वोकलस के फुर्सत कहाँ रहें? अन्तिम बूँद तक निचोड़ लेला के बादो संतोष ना भइल त तिरस्कार के नजर से देखत कसि के फेंकि देलें।''''''निरजन के चिट्ठी हमरा हाथ में बा।—जवना मवेशी से रस मिलेला, ओकरे दाना पानी के इन्तजाम ठीक से होला। धोवल-पोंछल चुचुकारल जाले; दू लात सहलो जाला। बाकी सूखला मवेशी के त अलग-मार अस मूठी भर पेटाढ़ी फेंकल भी जायज ना बुझाय। घरे पहुँचे के पहिलहीं हमार मनिआर्डर चलि आइल रहे, बाकी गरम तावा अस घर के परिस्थिति में ऊ दू बूँद पानी के समान रहे जवन तनिके में छाँय क के मिट गइल।—माइयो चिड़चिड़ाह हो गइल बिया। कवनों बात में खुनसाइल आम बात हो गइल बा।''''कमाची बान्हि के डांड़ सोझ करे के कोशिश कइल जाता, बाकी कमाचियो टूटि जाता—धरनि तगड़ा ना रही त बड़ेर कइसे थाम्ही? कुछ पूँजी लगा के पुरनकी दोकान के फिर से चलावे के क बे कोशिस भइल, बाकी जे भी लागल ऊ रात-दिन कामे आवे वाला लोग के उधारी पधारी में अमा गइल। त अब हम का करीं?—गाँव के साथी संघतियन से भी सुबहित मिलि ना पवनी। मन मकरा अस तड़फत रहे। जे आकी बाकी रहे ऊ श्रीमती जी के बनल सुभाव रात खा पूरा क देलसि—आ हमार फगुआ लत्रटि के एहिजे बीतल।''''निरंजन के चिट्ठी हमरा हाथ में बा। फेरू हमार नजरि चिट्ठी प जाता—"हमरा कहला के गिरह पारि ल, अबकी फगुआ में जरूर आव।" ना''''। अब घरे जाये के कवनो जरूरत नइखे—अनियासे हमरा मुँह से निकलता आ हम देखतानी निरंजन के चिट्ठी चार टुकड़ा होके हमरा पैर के नीचे बिखरि गइल बा। दिमाग के एगो झटका लागता—मुँह बवा जाता, सोझे निरजन ड्यूटी से आके मुसुकात फाटल चिट्ठी के टुकड़ा हमरा पैर के पास से उठा रहल बाड़न।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक सीमित, पटना—१

बिहार राज्य के कृषक बन्धुओ !

स्मरण रखें :—

बिहार राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक

सीमित, बैंक रोड, पटना—१

फोन नं० :—२१८६७ २६४६६
२२५८२,२४३४४

ग्राम :—लैंड बैंक

प्रगति पर एक दृष्टि

(लाख में)

		३०-६-१९६६	३१-५-७३
(१)	हिस्सा पूँजी	७६-१९	२९३-७२
(२)	रिजर्व एवं अन्य निधि	०३१	१०-८९
(३)	सिंकिंग फण्ड इनवेस्टमेन्ट	३१-७२	३०९-५०
(४)	चालू डिबेंचर	३७६ १९	३३४२-६१
(५)	वितरित ऋण	५६५-९२	३५९६-२८
(६)	शाखाओं की संख्या	४८	८७

यह बैंक बिहार राज्य में दीर्घकालीन कृषि ऋण के वितरण का मुख्य स्त्रोत है। यह अपनी ८७ शाखाओं के माध्यम से राज्य में कृषकों को दीर्घकालीन ऋण प्रदान करता है।

यह बैंक ७ से १० वर्षों के लिए ९½ रुपया सैकड़ा सालाना सूद की दर पर कूप, नल कूप, ट्रैक्टर, पावरटिलर, पम्पिंग सेट एव अन्य कृषि संयत्र, भूमि सुधार, रेहन मुक्ति के लिए ऋण देता है।

अपनी बचत को बैंक के फिक्स्ड डिपोजिट में जमा कर निम्नलिखित सूद प्राप्त करें :—

१ वर्ष के लिए ७%
२ वर्ष के लिए ७½%

तपेश्वर सिंह
अध्यक्ष

दिनेश्वर प्र० चौधरी
प्रबंध निदेशक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देहाती जोंक

सैयद हुसैन 'पीड़ित'

पात्र—परिचय :—

चउधरी—पहिले के जमीन्दार जेकर ठाट-बाट आ धाक गाँव में आजो जमीन्दारे अइसन बा।

गनेस—शहर में नोकरी करेवाला एगो समुझदार युवक।

सिधारी—सिधुआ किसान। गनेस के बड़ भाई)।

पथलुआ के माई—सिधारी के झगड़ालू मेहर।

पथलू—सिधारी के लइका।

भगत—ओही गाँव के एगो किसान, सिधारी के दोस।

धन्नू—चउधरी के बूढ़ नोकर।

झलक — १

(सबेर के पहर। सामने पुरान मकान के पटडेहर पर लकड़ी के कसीदा काढ़ल खम्भा लउकता। ओटा के नीचे से जाये-आवे के एगो एक पएरिया रहतो बा। पर्दा उठला पर चउधरी जी आराम कुर्सी पर बइठल एक हाथे से अपन झबड़ा मोंछ सरिआवत लउकतारन दोसरका हाथ से तीन सुपटावत। कुर्सी के बगल में एगो चउकी धएल बा। गनेस एक पएरिया राहता से गुजरतारन।)

चउधरी—हई के जाता हो ?

गनेस—हम हई चउधरी जी, गनेस। पाँव लागीले !

चउ०—खश रहऽ, खुश रहऽ ! का हो गनेस ! कहिमा अइल हऽ बंगाल से ? दलनिए भएल हम भटमटात बानीं कि के चलल जात बा भाई जूता मचमचावत। ई त केहू बहरवांसुए बुझाता। आव, चढ़ जा ऊपरा।

गनेस—अइला त घाट-बाढ़ एक हप्ता हो गएल चउधरी जी··· (कहत-कहत ओटा पर चढ़ जात बारन।)

चउ०—बोलऽ ! एक हप्ता होय जा रहल बा आ ईहो ने सोचल ह कि तनी चल के चउधरी जी से भेंटो-मुलकात त कऽलीं। हे-हो ! रुपइया चाहें जहाँ कमा, आग लागी त बुताई गाँवे-जवार।

गनेस—का कहीं चउधरी जी, घरे अएला पर लोग फुरसते ने लेवे-देवे। अब देखीं ने, संपरत-संपरत रउआ से आखिर ओरहन सुनला पड़बे कएल···।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चउ०—ओरहन त देवे करब। आज चाहे जे हो जा लोगन, मानेला पड़तवऽ कि पलायेल-पोसायेल बारऽ लोग हमरे घर से। तोहर बाप झपसी, अहा! ओइसन करवदाज हमरा फेर ने मिलल, ने मिली। कहेला ने पड़ी कि हई करऽ आ हउ करऽ! अपना मन से सब चीज जोगावत रहिहन। बनल-बिगरल देखत रहहिन। कहला पर ने पतिअइवऽ. उनका के खाय दिआए त इहाँ लिबिर-छिबिर खा के सतुआ बान्ह लेस तोहरा लोग खातिर। कहस—मालिक! लइकावासऽ पला-पोसा जइहंनसऽ त राउरे नू टहल-टिकोढ़ा करिहंनसऽ। (रोअलालेंखा) ऊ त बाबू जी के हाथे उनकर मउअत लिखल रहे. एह से कुठावां चोट लाग गएल बेचारू के!''''बइठऽ ने! खार काहे बारऽ?

गनेश—ठीक बानीं, का होई! भिनसहरे के निकलल बानीं। अबहीं नश्तो-पानी ने भएलह। अहथिर से बात होई।

चउ०—अहथिर? अहथिर त मउअते भएला पर अदमी होई गनेस। अरे इहो अपने घर ह। (पुकारल लेंखा) धनुआ! धनुआ!

धन्नू—(आवत) हँ मालिक, अइलीं।

चउ०—देख त गनेस ला कुछ जलखई''''

गनेस—(बीचे में कांटके) ना! ना! रहे दीं चउधरी जी। तनिके में का हो जाई। हम बइठ जात बानीं। (चउकी पर बइठ जात बारन)

चउ०—अच्छा त रहे दे बाकी तू भीतरी कहाँ गायब रह तारस? इहाँ सामने बइठे के चाहीं, कौनो चीज के दरकार लागी त जुमावे के होई!'''हँ, त गनेस कहां गएल रल ह भोरहीं?

गनेस—का कहीं चउधरी जी! रउरा से का परदा बा। कुछ पइसवा फरकत हइक त चाहत बानीं कि कवनों पठंगे धरादीं। भइया के दू-चार बिगहा जोते खाय ला हो जतइंन। हमरा कवन, आगे नाथ ने पीछे पगहा'''

चउ०—हेव रहऽ, हेव रहऽ; तू कतना पढ़ल बार हो?

गनेस—दसवां पढ़ के छोड़ देलीं।

चउ०—कारखाना में मिसतिरी नू बार?

गनेस—जी हँ।

चउ०—कतना मिल जाले?

गनेस—इहे तीन-साढ़े तीन सै।

चउ:—तब जे तू लत्ता बान्ह के कोढ़िया बनल बारऽ से काहे?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गनेस—हम समझनीं ने, रउरा का कहे के चाहत बानीं।

चउ०—अबहीं ने समुझबऽ बबुआ ! समुझबऽ तब जब समुझे लायक ने रहबऽ। हाथ के गुड्डी आकास धली।

गनेस—का मतलब ?

चउ० – (रेघा के) "भाई में भाई भरथ अइसन भाई, तेकरो तेजले रघुराई हो....." अच्छा मतलब उतलब सब जायदऽ, ई बतावऽ कि तोरा जमीने नू चाहीं ?

गनेस—हँ लवगराह मिले तऽ....

चउ०—गोंयरा त ?

गनेस—नेकी आ पूछ-पूछ !

चउ०—अच्छा त तोरा घर तर के हउ दुकठवा कइसन रही ?

गनेस—का कहत बानीं चउधरी जी ! हमरा त अपना कान पर बिसवासे नइखे होत। जवना ला बाबू जी जिनगी-भर गुलामी कइलन....ऊ आज रउरा अपने से....? सूरज पछिम कइसे उगतारन ?

चउ०—सिरिफ तोहरा खातिर। ने त जमीन्दारी चलियो गएला पर चउधरी के खरची नइखे घटल कि जमीन बेचब।

गनेस—कुछ दाम-काम ?

चउ०—दाम-काम तोहरा से का करे के बा रे पागल ! काल्ह तइयार रहऽ सहर चले खातिर। तू हूं का जनबऽ कि....बाकी बात हमरे-तोहरे।

गनेस—बहुत अच्छा-बहुत अच्छा, पांव लागी !

(चल जात बारन)

चउ०—खुश रहऽ ! (थोड़की देर चुप्पी फेर) धनुआ !

धन्नू—मालिक !

चउ० – मछरी मरले बारस कि ने कबहूँ ?

धन्नू—लरिकाईं में त ढेर बेर मालिक।

चउ०—मछरी मारेला बंशी में का लगावल जाला ?

धन्नू—चारा।

चउ०—आ रघवा बूड़ार खातिर ?

धन्नू—एगो छोट मछरी के जिअरा....

चउ० –ह....ह....ह....ह.... (ठहाका मारके हँसतारन)

(पर्दा गिरता)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झलक—२

खपरैल घर के अगिला भाग। साँझ के बेरा। सूरुज लुकझुक लुकझुक करता। सामने के दुआरी का आगे थोरका सहन जे में एक ओरि नाद-खूँटा, दोसरा ओर खोंप आ फूस के टाटी-पलानी। परदा उठला पर पाँच बरसा 'पथलुआ' खेलता। एक ओर से थाकल-खेदायेल गनेस झोरी-लेले आवत बारन।

पथलुआ—(तोतराह बोली में खुशी से) ताता अइलन ताता! छपला से ताता अइलन'''' (अंगुरी ध के लिपट जाता)

गनेस अंगुरी छोड़ पथलू, अलग हट! हमरा काहे दो कवनो बात नीक नइखे लागत।

पथ—नें''''नें''''नें, मिठाई द, मिठाई दऽ•••

गस०—देह छोड़! मिठाई ने ले आवे सकलीं ह। काल्ह हाट से किना देब।

पथ०—नें''''नें'''नें'''' एही वेर किन दऽ''''ऊँ''''ऽऽ•• (रोये के नकल)।

गनेस—अच्छा चुप रह, किनाई।

पथ —धुठ्ठो ठगतारऽ''''हमला के पइसे दे दऽ'''।

गनेस—पइसा अबहीं नइखे पथलुआ! बात काहे नइखस मानत?

पथ०—हवऽ पइसा पातिक में। लेके थेत लिखावे गएल रलहऽ लाथ कलतारऽ''''।

गनेस—उँहूह,''''जरला पर काहे खोरतारस''''? धोती छोड़बे कि ने तें?

पथ०—ने छोलब! ने छोलब'''

गनेस—अरे''''रे'''रे'''' (तलमलाये लागतारन) अब ररै नू गिरल रनीह (एक चटकन मारत) भाग सूअर!

पथ०—(रोये लागत बा)।

पथलू के माई—(भीतर से बहरी आवत) ई ठीक काम ने कइलऽह गनेस! लइका कइसन रोअत-रोअत बेदम भइल बा। बाप रे बाप! बाबू हमर•••सोनवा हमर••• चुप रह'''चुप रह••• (बीच-बीच में पथलू लम्बा-लम्बा साँस लेके हिटकता) देखऽत पाँचो अंगुरी के छाप गाल पर उखर गएल बा। तोहरा के एही करेला खिया-खिया के साँढ़-लेंखा मोटवले बानीं?

गणेश—भउजी! जबान सम्हार ने त ठीक ने होई। पथलुआ का हमर लइका नइखे?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पथ० के माई—आ…हा…हा…हा… ! बड़ा चलल बारन लइकावाला कहाये। चेंट से एगो कानी कउड़ी ने निकललहऽ आ हमार लइका नइखे ? दुर-दुर ! रे तोरा हरदी लागित तबनू जनते लइका के दरद ! च्…च्…च्…च्…चुप रह-चुप रह सुगवा हमर ! आवे द बाबू के एकरा जुआनी में आग धनकवा दीहीले।

गनेस—भउजी ! अब बरदास्त से फाजुल भइल जाता। आगे एक्को सबद बोललू त हाथ छोड़ देब।

प० के मा०—हाथ छोड़ऽ अपना भाई पर जे पोस-पाल के पंखा तर बइठे लायक क देलन—अपने त चरखा बिदोर घाम में काल्हो जरलन, आजो जरऽलन। दू बिगहा उनका नाँव से खेत ने लिखा देलऽ बुझ तारऽ कि करमदाता हो गइनीं। जा, निकलऽ घर में से इहाँ तोहर केहू नखवऽ…।

गनेस—अच्छा, ठीके बा ! अब तोहरा के हम का समझाईं। कहल बा औरत के नाक ने रहित त गूह खाइत। अफसोस बा कि हम भइया के अबहीं ले आराम ने दे सकलीं। आगे सूरज भगवान अनेआव करिहंन। (झोड़ी फेंक के हाली-हाली जेने से आएल रहस ओनही लवट जात बारन।)

पथ० के मा०—गइलन मुँह लुका के ! अब उनका भीरी कबहूँ ने नू जइबे ?

पथलू—(हिटकत) नेऽऽ… ।

पथ० के मा०—चल अंगना ! चउधरी ठीके कहत रहस—गनेसवा अब अपने से दाना टूंगे लागल। ऊ जै दिन बा भाई भउजाई के पिंजड़ा में तै दिन।

(दुआरी माहे पथलुआ के ले ले भीतरी जात बारी। थोड़की देर चुप्पी फेर दूर से नजदीक आवत बैल के घन्टी आ बीच-बीच में हाँके के आवाज। दोसरका ओर से सिधारी कान्ह पर हर आ हाथ में पैना लेलहीं घूसत बारन आ हर पटक के चिचिआये लागतारन।)

सिधारी—पथलू ! ए पथलुआ !!

(झनाक् सेन केवारी खोलके लोटा में पानी लेले पथलुआ के माई निकलत बारी) काहे ! काहे ! तोहर ठोर काहे लटकल बा पथलुआ के माई ?

पथ० के मा०—पथलुआ के फरहर-फुलहल देख के !

सिधा०—हूँऽ ! आ गनेस कहाँ गएल ?

पथ० के मा०—मरे सिराये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिधा०—(खिसिया के) हई देख पैना पथलुआ के माई आ गाभी छोड़ के तनी सीध मने बात कर। तूँ का का आज कइले बाड़ू से सब हम भगत भाई से सुनके आवत बानीं। कहाँ ले भाई आएल ह थाकल-खेदायल त धउड़ के एक लोटा पानी दीहित त लइका के बात ला गाँव गरजवले बा। हे भगवान! कहा लखऽ हमरा करम में ई कलही नार? अब पता ने गनेस केने गएल। के जानी कवना अफसोस में मन छोर कइले रलखऽ कि ई दूनो मातारी-बेटा बिढ़नी-लेंखा अझुरा गइलन हस। टोला-महल्ला त एकरा से आजिजे रहेला, भाइयो से जरादूर करवलक। हमरा के ई थीर होके ने रहे दी। लोटा छीन के फेंक देत बारन) ले जो अपन लोटा पापी। (लोटा ढिलमिला के पानी भभक जात बा) आ खा सऽ मातारी-बेटा अपने। (हाली-हाली चली देत बारन) (दूर जात आवाज में हम भाई के पिठी ने छोड़ सकी '''ने छोड़ सकीं''''

झलक—३

रास्ता। एक ओर से सिधारी झोंकाह चलल जात बारन : दोसरा ओर से मनोहर काँख तर किताब जँतले आवत बारन। दुराहुत गाड़ी के सीटी आ खुले के आवाज सुनाता।

मनोहर—का हो सिधारी काका! केने धउरल जात बारऽ हकासल-पिपासल?

सिधारी—ओने टिसनवा-कावर गनेस के देखलऽ?

मनो०—आवऽ हेने लगे आवऽ। अब त गाड़ियों खुल गएल। एतना देरी से कहाँ रलहऽ? गनेस चा त कलकता लत्रट गइलन।

सिधा०—आँय? रोकलहऽ ने तनीं?'''

मनो०—कोसिस त बहुत कइली ह बाकी दू गोरबा ने नू बन्हाय!

सिधा०—(कपार पीटत) हाय रे करम! हाय रे करम! हमर मेहर जे ने करावे।

मनो०—अब कपारे पीटला से का होई काका! अचके में जाने के वजेह पूछलीं ह त हई हे चिट्ठी थम्हा गइलन ह। (जेबी में से निकाल के चिट्ठी देवे चाहत बारन)

सिधा०—(अफसोस के लम्बा साँस लेत) पढ़ऽ जा चिट्ठी हो मनोहर! अब बाकिये का रहल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनं०—सुनऽ ने ! (चिट्ठी बाँचत बारन)
गनेस के तरफ से भइया-भउजी के प्रणाम। पथलू के शुभ आशीष। हम काम पर बापिस लवट जात बानीं। भउजी के मरिह मत। ई उनकर गलती नइखे, गलती बा उनका सुभाव आ समझदारी के। बात अतने रहे कि कचहरी में चउधरी जी जबरदस्ती कोला वाला जमीन पर खाली हमरे नाँव चढ़वावे देलन। एही अफसोस से कि अबहीं ले त खरीदायेल जमीन पर खाली भइया के नाँव लिखववनी, अब कवना मुँह एहपर अपन नाँव चढ़े के बात कहब, भीतरे कूढ़त रहीं कि पथलुआ के दुलार जवून बुझायेल आ हम एक चमेटा ओके मार देलीं। फेर त भउजी का-का कहले होइहन से मालूमे होतवऽ। मरली ने सब सत कहली। वादा होई त लवटब। फूँक-फूँक के पाँव रखिह। काहे दो हमनी के निमन दिन बइठे ने पावता तले केहू उड़ावे ला तइयार बा····: जादे माफी।

सिधा०—फार दे चिट्ठी मनोहर, फार दे। सब पढ़ावल-लिखावल माटी कर देलक गनेसवा। भला जनानी बात ला हइसे मउगा-नियर भागला केहू ?

(कहत-कहत सुसुके लागतारन।)

झलक—४

जगह—पहिलकी झलकवाली। गर्मी के जरा-जरी दुपहरिया में चउधरी जी चउकी पर सूतल 'खर्र···खर्र···' करतारन धनुआ तिले उनकर गोर जाँतता तिले पंखा हाँकता आ कबो-कबो खूदे अउँधा-अउँधा गिरे लागता। भगत गमछी से फूटल कपार बन्हले हड़बड़ायेल पहुँचतारन।

भगत—चउधरी जी ! चउधरी जी ! आरे उठीं चउधरी जी।

चउधरी—(बड़बड़ायेल नियर) ऊँऽ···ऽ ····

भगत—चउधरी जी, ए चउधरी जी ! तनी आँख त खोलीं !

चउ०—(अँगुआयल) ऊँय ? के हरदंगा कइले बा ? नोन-हराम।

भगत—हम भगत बानीं चउधरी जी, तिलकुट भगत।

चउ०—ऊँऽऽ···· ! भगत बारऽ ? त कहाँ चललहऽ ए जराजरी दुपहरिया में ?

भगत—बड़ा गड़बड़ी हो गइल खेत पर ! उठीं ने तनीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चउ०—(जम्हाई लेत-अंगुरी पुटकावत) ऊ''''ह''''हा एतना हरबरायेल काहे बार ? (चिहा के) आरे गमछा से कपार बन्हले बारऽ?

भगत—खेत पर सिधारी साथे मार हो गएल चउधरी जी ! का कहीं''''हम तऽ'''

चउ० —(उठ के बइठइत) रहऽ रहऽ तनी मुँह धोलीं । धनुआ !

धन्नू—जी मालिक !

चउ.—एक लोटा पानी ले अइहे तऽ ।

धन्नू—अच्छा मालिक !

चउ०—हूंऽ त ई कपार फूटलवहऽ सिधरिया के लाठी से ? काहे जगरनाथ ने रलन ह खेत पर, का रे धनुआ ?

धन्नू—(पानी रखत, छोटका मालिक होइहें सरकार बाकी डीठार कइसे जास ?

चउ०—से त ठीके बा । ई कल्यान लवह कि ओकर छोटका भइआवा चल गएल ने त हइसे ठार होखे बतिअवतऽ ने । (कुल्ली गलाली करत) अच्छा ई कहऽ खेत केकरा दखल में बा ?

भगत—हमरा, आउर केकरा ?

चउ०—आ सिधारी का करत बारन ?

भगत—ऊ चढ़ावत होइहन देह पर हरदी-चूना । बाकी चउधरी जी दरोगा जी के कइसे दो पता चल गइल, ऊ त कुछ सुनते नइखन । खिड़की के राहता से धावल आवत बानीं । दोहाई सरकार के, ओ भेड़ियन से जान बक्सावल जाव ।

चउ०—(मुँह-हाथ पोंछत) ओह पाटी के कुछ टूटियो-फूट गएलह का ?

भगत—जी''''जी ! दरोगा जी कहत बारन-एह पर खून करे के कोरशिश वाला दफा लागू होई !

चउ०—बात त बढ़ गलवऽ भगत ! हम त भीतरमार के इसारा कइले रनीहं आ तू अपने अपन खरचा के गोर क ले लऽ ।

भगत—अब रउरे जान छोड़ाईं । हम दोसरा के नइखीं जानत ।

चउ०—ठीक बा । हम त अकिले नू खटायेब । रोपेआवा के हम का करीं ? आ अब त कुछ खरच-बरच क केदरोगा जी से केस दबवा—वहीं में भलाई बा !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगत—जेमें हमर जान बाँच जाय भाई-बाप। ई जमीन लेके त हम निमन फँसलीं।

चउ०—हम का जानत रनींह कि जगरनाथ तोरा कन लिख देले बारन ने त हम सिघारी कन ने नू लिखतीं। ई सब अनजाने में हो गयल बा। बाकी एगो चालाकी कइले बानीं, जमीन पर अकेले गनेस के नाँव बा। दारोगा जी से कहेला होई कि सिघारी केऽ बारन खेत पर जाये वाला? त वहूँ...

भगत—तवहूँ का चउधरी जी?

चउ० तत्काल डेढ़-दू सै के चक्कर त लागले चाहता....

(तवले दूर से आवत मरद-मेहरारू के रोआई सुनाता)

धन्नू—(एक ओर अँखिआ के) मालिक! सिधारीं आ सिधारी बो पहुँचहीं चाहता लोग....!

चउ०—भगत! तू जे ले आयेल होखऽ से देदऽ आ जल्दी हेह पारे निकल जा। हम दारोगा जी के मना लेब। भनकिह मत कि चउधरी जी कन आयेल रलहऽ। अब एह लोग के कुछ उल्टा-सीधा तोहरा ला समुझावहीं के पड़ी। हम वे मतलब के परेशान होत रहीले गँवई झगरा में, बाका का करीं? लोग के कुछो होई धरना देवे लागी....

धन्नू—(फेर देख के, काहे कि रोआई नजदीक आवत जाता मालिक, मालिक, सिधारी के देह त लहू-लुहान भइल बा। ओह-हो...! बेचारू के बड़ मार बजरल बुझाता। कइसे सिपाही स भगत के गिलफतार ने कइले हँसऽ।

भगत—(पेंठा से रोपेआ काढ़त) हई सै रोपेआ धरीं चउधरी जी! आउर जो लागे त लगायेब जे में कोतवाली से जान बाँचो सरकार!

चउ०—अच्छा, जा! देखिह खेत दखल ने होय आ हँ? कुछ आउर के बनबस करिह।

(भगत एक ओर से झटकल मागत बारन दोसरका ओर से सिधारी आ उनकर मेहर रोअत चिल्लात आवत बा लोग। सिधारी के कपड़ा सब खून से सराबोर बुझाता।)

पथलू के मा०—(रो-रो के) चउधरी जी हो चउधरी जी! कहिया के बएर सधवलींह हो चउधरी जी!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चउ०—चुप रह रे पगली ! चुप रह। उहूंह ? कएगो घाव लाग गएल बा बेचारू के ? खून से सराबोर बारन'''''। बइठ जा सिधारी बइठ जा। अफसोस ! गनेसवा ने रहल नै तऽ वकलोइया झार दीत भगत के। भला बताईं हेः गईं बलजोरी कएल जाला ?

सिधा०—(कँहर-कँहर के) चउधरी जी ! भगत कहत बारन कि राउर छोटका भाई से ऊ जमीन पहिलहीं लिखवा चुकल बारन। का ई बात ठीक वा ?

चउ० —हो सकेला जगरनाथ बिना हमरा से पूछले ई गलती कर देले होखस नऽकन लरिकन के का बतावल जाव'''? मनलीं कि ऊहो आधा के पटीदार बारन, बाकी हमरा से कह नू देवल जाला, ना तऽ हम दोबारा लिखे के गल्ती ने नू करतीं। एहिला बेचारू के सब गत हो गएल ''' च्'''च् '''च्''''च्'''बाकी तूहूँ त एगो गलती कर देले वाड़ सिधारीं !

सिधारी—हम कवन गलती कर देले बानीं चउधरी जी !

पथ० के मा०—हमर चीज केहू लूटे आई त हम रोकब ने ? पसेना के कमाई बा चउधरी जी, फरी ने भगत के !

च०—से त सब ठीके बा। बाकी कानून त तोहरा लोग के ने मानी काहे कि जमीन गनेस अपना नाँवे लिखववले बारन।

सिधा०—जगरनाथ बाबू राउर आपन बारन कि पराया चउधरी जी ?

चउ०—अपन त जरूर बारन, बाकी हम कतनो चिल्लायेब कनून त उनका के पराया मान के आधा जमीन भगत के दिआइये दी।

सिधा०—बाकी ई सब केकरा गलती से भएल चउधरीजी कि हमनी बेकसूर जी के साथे घून '''

चउ०—होनी बलवान ह सिधारी ! एके बेर तोहरा सब आफत आ गएल। गनेस अलग भगलन, जमीन के झंझट खड़ा हो गएल बाकी अब त जे सामने बा—ओकर मोकवला हँस-रो के करही के पड़ी।

सिधा०—(रोअल लेखा) हमरा त कुछ नइखे बुझात चउधरी जी कि हम का करीं'''?

चउ०—करे ला का बा ? अब त बात आगे बढ़ गलवऽ, पाछे गोर हटवला से धोखा होई। सुनली हं थाना उतर आयल बा।''''तब कुछ दे-ले के दरोगा जी से मन-मोताबिक रिपोट लिखवा लेवे ला होई आ हँ, चलऽ लगलहीं केस फायल करा दीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिधा०—केस ! चउधरी जी, केस के मूरी-पोंछ त हम आज ले ने जनलीं।
पथ० के मा०—सुनीले-ओह में आदमी दुहा जाले !
चउ०—दुहा ने कपार जाले। आरे नइखऽ एको किता लड़ले ते से नू हउआ बुझाथवऽ आ ए में कुछ जान बा ? दे-ले के थाना के मिला लिआईं फेर एक दू तारीख में त डीगिरिये बा।
सिधा०—हम खेती-गिरहथी देखब कि मोकदमा देखब चउधरी जी ! दोसर कवनो उपाय करीं !
पथ० के मा०—हमनी असगरूआ बानीं। गनेस के कमाई गएले दाखिल बूझब।
चउ०—तब त जमीन आज जाएला होतवऽ। भगता के सवाँग के सहारा बा त तोहरा कानून के सहारा लेवहीं ला होई ने त हम जो जमीन दिआइयो दीं त कल्ह गनेस-नियर हमगो जगरनाथ बेफाँट होके अर जइहन आ हमरा झूकेला होई। आ....तोहरा के रामजी कमी कवना बात के देले बारन ? पाँच-पाँच बिगहा खास तोहरा नाँव से जमीन हवऽ। एक-दू कट्ठा में त फूँक के ताप जइबऽ भगत के !
जा, जा लोग घरे आ कपड़ा जरा के सब घाव लाठ दऽ; हमहूँ आ रहल बानीं खेत पर। जीव जाँत के कुछ दछिना निकाल दऽ।
पथ० के मा०—(जाते-जाते) जे में भगत के सान टूटे मालिक !
चउ०—हँ रे ! कहल बा खिसा कि—''जेकर रंथ भगवाने हाँकस ओ अरजुन के कवन डर ?''

(सिधारी, मेहर साथे लंगड़ात चल जात बारन)
(थोड़की देर चुप्पी)

चउ०—(आहते से) धनुआ ! देख तऽ गइलन सँ ?
धन्नू—(झँखिआवत) हँ मालिक ! ऊ का जात बारन लोग।
चउ०—अजगर करे ने चाकरी पंछी करे ने काम,
दास मलूका कह गए सबके दाता राम।
हा....हा....हा....हा.... (ठहाका मार के हँसी) बड़ा ढेर दिन पर शिकार भेंटायेलह धनुआ !
धन्नू—ऊहो गुदगर-गुदगर !
चउ०—अब देख ने सब गुदा कइसे बात के बात में चउधरी कन खिचा आवता। दू कट्ठा जमीन के ए कंटा में दूनों जना के सब जमीन ने हथिया लीं त हमरो नाम जोरावर चउधरी ने।
धन्नू—देखब का कवनो अरिको मालिक ? अब त रउरे सेवा में केस सब पाक गइली सऽ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चउ०—एहू में कम दिमाग भिरावे के नइखे पड़त धन्नू ! पहिले तँ भाई-भाई में झगड़ा होय त अपनहीं दउरल आवे लोग आ बइठल-बइठल केहू के पचास डँरली, केहू के सै। दूनो जना के गरमी ठंढा भएल-अपना में ताव आयल। बाकी अब त जमीन्दारी गएला से मकर-जाला गढ़ेला पड़ता....।

धन्नू—सुनी ले मालिक कि बुरबक के धन होखी त चालाक भूखे काहे मरी ? कमाए वाला मूस के बिअर कोर के आ समुन्दर के हलफो गिनके कुछ कमाइये लेवे ला। फरक ई हे बा कि अब बखरा लगावे आला वनरवा के बिलइयन में झगरो लगावेला पड़ता....।

चउ०—आज सगून हो गइल। काल्ह से पैरवी में दूनों तरफ से रोज तर माल। सरवेटवा के वकालत ठप्प हलक। उहो टुकटुका जतइक। दोसरका वकील ऊ अपना सार के रखली।

धन्नू—कहहीं गिराई घीव गिरी अपने थरिया।

चउ०—ने रे बुरवक ! लड्डू लरे-झिल्ले झरे.... ।

[दूनों के साथे-साथे हँसी]

(परदा गिरता।)

घोषणा-पत्र

प्रकाशन स्थान—पटना।

प्रकाशन की नियत कालिता—त्रैमासिक।

संपादक का नाम —पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय।

राष्ट्रीयता—भारतीय, पता—सालिमपुर अहरा, पटना—३

मुद्रक का नाम—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय।
राष्ट्रीयता—भारतीय।

पता—सालिमपुर अहरा, पटना—३
प्रकाशक का नाम—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय।
राष्ट्रीयता—भारतीय।
पता—संचालक, भोजपुरी परिवार, पटना—३

समाचार-पत्र के मालिकों और कुल पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक शेयर वाले का नाम और पता—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय।

मैं पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय इसके द्वारा घोषित करता हूं कि ऊपर दिये गये ब्यौरे जहाँ तक मेरी जानकारी और विश्वास है सही हैं।

ह०—पाण्डेय नर्मदेवर सहाय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रीय बचत निदेशालय, वित्त विभाग, बिहार, पटना

स्वतन्त्रता दिवस के पावन अवसर पर :

बिहार के सभी नागरिकों तथा अल्प बचत प्रतिभूतियों एवं खाते में जमाकर्त्ताओं का अभिनन्दन करता है।

राष्ट्रीय बचत सुरक्षा प्रतिभूतियाँ एवं खाते में धन लगावें। इनमें आपकी और राष्ट्र की उन्नति निहित है।

प्रतिभूतियों एवं खाते में जमा पर निम्नलिखित दर से सूद मिलता है :—

	प्रतिभूतियाँ एवं खाते		सूद की दर
(क)	डाक-घर बचत बैंक खाता	—	5% प्रतिवर्ष
(ख)	बन्द जमा दो वर्षों के लिए	—	$4\frac{1}{2}$% प्रतिवर्ष
(ग)	एक वर्षीय डाक-घर सावधि जमा	—	6% प्रतिवर्ष
(घ)	दो वर्षीय डाकघर सावधि जमा	—	7% प्रतिवर्ष
(ङ)	तीन वर्षीय डाक-घर सावधि जमा	—	7% प्रतिवर्ष
(च)	पाँच वर्षीय डाकघर सावधि जमा	—	$7\frac{1}{4}$% प्रतिवर्ष
(छ)	पाँच वर्षीय आवर्त्त जमा	—	$6\frac{3}{4}$% प्रतिवर्ष
(ज)	पाँच वर्षीय बढ़ने वाली सावधि जमा	—	$4\frac{3}{4}$% प्रतिवर्ष
(झ)	सात वर्षीय राष्ट्रीय बचत पत्र (चतुर्थ निर्गम)	—	$7\frac{1}{2}$% प्रतिवर्ष

(छ + ज) इस योजना के अन्तर्गत यह सुविधा दी गयी है कि यदि जमाकर्त्ता 24 महीने तक लगातार 5 रुपये एवं 10 रुपये जमा करता है और इस बीच में जमाकर्त्ता की मृत्यु हो जाती है तो उनके नामांकन को पूरा रुपया मिलेगा।

याद रखें :—

बचत

जीने की एक राह है।

राष्ट्रीय बचत निदेशालय,
वित्त विभाग, बिहार, पटना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गरदनिआ पासपोर्ट

—डा० सुवतेश्वर तिवारी 'बेसुध'
पी० एच० डी० (चतुरी चाचा)

आपन परोसिआ मियाँ हरफन मौला के जब अनगुतहें दुआर पर हाजिर देखलीं त बड़ा अचरज भइल। अबहीं पनरहो दिन ना भइल मियाँ साहब हमसे कहि के गइलन कि हम पाकिस्तान जा रहल बानी, आ आजु देखत बानी कि फजीरहीं-फजीरहीं ऊ बैरन लिफाफा का नीअर वापिस आ के हाजिर बाड़न।

अचरज से पूछलीं—मियाँ जी, बुझात बा कि एह बेरी डहरिये में से लवटि आवे के परल हवे। केवनों दिक्कत आ गइल हवे का?

दिक्कत केवना बाति के हो सकेला भला। आजु विज्ञान का जुग में दूरी के सवाले का बा? जब आदमी चंदरमा पर चाय पीए के तैयारी कई रहल बा त हमनी का हिन्दुस्तान आ पाकिस्तान का बीच आवे जाये में महीनन टाइम लगा दीहीं जा ई कहाँ ले जायज बाटे?—मिआँ जी अपना दाढ़ी पर हाथ सुहरावत कहलन।

मियाँ हरफन मौला के जूता के दोकान पाकिस्तान में बाटे। ओइजा उनकर भाई दोकान पर रहेलन। जब हिन्दुस्तान आ पाकिस्तान के बटवारा भइल त भाई के पाकिस्तान में जूता का दोकानि पर छोड़ि के अपने मियां हरफन मौला आ के इहवाँ अपना घर दुआर आ खेती बाड़ी के देख भाल करे लगलन। साल भर आ छ महीना पर जब मन करेला त पाकिस्तान में जा के अपना भाई से भेंट मुलाकात कर आवे लन। अब अपना इहाँ बिआह सादी परेला त ऊहो लोग महीना दू महीना खातिर एहू जा आ जालन। हामां सूमा खातिर परदेस गइल पहाड़ बाटे बाकिर हरफन मौला खातिर पाकिस्तान में खाइल आ अचवल खेलवाड़ बाटे।

हम अचरज से पूछली—मियांजी, विज्ञान भलहीं तरक्की कइले बाटे बाकिर एक देस से दोसरा मुलुक में जाए खातिर पासपोर्ट जे लेबे के परेला ऊ एतना जल्दी कहाँ से मिल सकेला। लखनऊ आ दिल्ली धउरत-धउरत गोड़ के पनहीं खिआ जाला तब जाके त पासपोर्ट मिलेला। सरकारी लाल फाइल के फीता एतना फरफंदी हेला कि ओमें दरखास अझुराइ के महीनवन से बंधंड़िआत रहेले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त तूं कइसन पासपोर्ट बनवावे ल मौलाना ? तनी हमरो के देखइत— हम अचरज से पूछलीं।

हमार पासपोर्ट त गरदनियाँ पासपोर्ट नू होला मालिकार। ना ओमे फोटू के जरूरत पड़ेला ना केवनों साटिकफिटिक के जरूरत पड़ेला। —मियां हरफन मौला कहलन।

बिना फोटो के—हम चिहाइ के पूछलीं। तब का सबूत रही कि तूंही ऊ आदमी हउव ?

ओमे सबूत के कवनों जरूरत बाटे। कागज के हरिअरकी लोट ओकरा खातिर सबसे बड़ सबूत बाटे मलिकार। फोटू त हमार साढ़े तीन हाथ के सजगे देहिये रहेले। कागजी फोटू के केवन काम रही ?—मियाँ हरफत मौला कहलन।

ऊ हे पइसा देके सीमा पर जा के पासपोर्ट बनवा के मजे से चलि जालीं केहू के केवनों रोक टोक नइखे। चाहे जेतना दिन जेवन मुलुक में रहे के मन होखो केहू पूछे वाला नइखे। सरकारी पासपोर्ट लेके त जा त पाछ लागल बीस गो जाँच परताल चोंहपी आ मिआदि का भीतर वापस ना चलि जाईं, त तेरह गो जाँच परताल चोंहपी, आ मिआदि का भीतर वापस ना चलि जाईं, त तेरह गो जबाव सवाल। एह फजीहत बिना केवन अकाज होत बा।

—मियाँ हरफन मौला आपन काबिलियत के मोहर देत कहलन—

त पासपोर्ट खातिर लखनऊ आ दिल्ली गइला के केवन काम बा, मलिकार ? इहे त हमनी का हिन्दुस्तानी लोगन के गलती बाटे। मरज कहीं बा आ इलाज कहीं अलग होखत बा। हम त कबो पास पोर्ट खातिर कबहूं लखनऊ आ दिल्ली ना जालीं। गोइंठा में घीव सुखवला से का फायदा बा ? गरदनिया पासपोर्ट के नाम हम आजुए पहिली बेरि मियां हरफन मौला का मुंह से सुनले रहलीं। सुनि के हँसी आ गइल। हरफन मौला कहलन— आप झूठ समुझत बानी मलिकार ! हम खुदा कसम बिलकुल साच कहत बानी। जहाँ पर हिन्दुस्तान आ पाकिस्तान के सीमा बाटे ओइजा खाली गरदनिया पासपोर्ट से रोज आवा जाहो होखे ले। अगर गरदनिया पासपोर्ट ना रहित त ठेकान बा कि दूनों देसन का लोगन का केतना तबाही होखित ?

हम इतमिनान से आ के मियां हरफन मौला का कगरी बइठ गइलीं। मौला के त आदति बतिआवे के चाहीं। उनका बात के लरि टूटि ना सकेला। ऊ कहल शुरू कइलन—मलिकार जहाँ हिन्दुस्तान आ पाकिस्तान के सीमा मिलत बा ओइजा के लोगो एक दूसरा से रोज मिलत रहेलन। गोली आ बनूक त खाली अखबार में छापे खातिर निकसेला। दूनों सिवान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर जगहे जगह सिपाही तैनात बाड़न। जब एइजा के लोगन का पाकिस्तान जाए के होला त ऊ लोग हिन्दुस्तान का सीमा वाला गाँव में जा के डेरा दे देला। सिपाही से राति बिरात बातचीत कइ लिहल जाला। दूनों ओर का सिपाहिन के टेंट गरमाइ दिहल जाला। राति खानी हिन्दुस्तानी सिपाही हमनीं के गरदनिआइ के पाकिस्तानी सीमा में खदेरि आवला आ बोलत जाला—खबरदार जे एने कदम बढ़इहा। चाहत रहलन हां कि चुपे चुपे हिन्दुस्तान में घुस जाईं। नइखन जानत कि एइजा इनहूँ ले चल्हाक आदमी पड़ल बाड़न। पाकिस्तानी सिपाही मुस्करात बोली कि तोहरा ना नूँ बिना पासपोर्टं के जाए के चाहीं। हमनीं का मुंड़िआइ के आपन डहरि धरवि जा।

ई हे हाल ओने से आवे का बेरि होला। आवे का बेरि पाकिस्तानी सिपाही गरदनिआइ के हिन्दुस्तानी सीमा में कइ जाईं आ धिरवत जाईं कि खबरदार बिना पासपोर्ट के एने फाल जनि बढ़इहा।

मियां हरफन मौला के ई गरदनियां पासपोर्ट हम ना कह सकेलीं कि कहां ले सही बा, बाकिर अगर सीमा पर एह तरे के लापरवाही नइखे होखत त कइसे देस में रोज घुसपैठिहन के संख्या बढ़त जात बा। विदेसन के चोरी के माल रेडियो, घड़ी, कलम ठेंकान नइखे कि केतना देस में बिका रहल बा। ई गरदनिया पासपोर्टं के माया ना हवे त का हवे?

पनघट के किनारे

चल रे सजन, पनघट के किनारे।
रुपवा के बतिया से चमके अँगनवाँ,
देखि के सुरतिया लजात दरपनवाँ,
चलत चलत संग चनवाँ भी हारे।

छम–छम बाजे तोरो गोड़वा के पायेल,
जात रहगिरवा करेजवा के घायेल,
गोड़वा के सड़िया दगरिया बहारे॥

भरि के गगरिया कमरिया प धइले,
सोरहो सिंगार ऊ मनवाँ से कइले,
पनियाँ के बुनवाँ के हथवाँ से झारे।

विशेश्वर प्रसाद मिश्र 'आढ़त'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत का रूर-बिहार

उद्योगेच्छुओं को आमंत्रित करता है

जैसा कि सुविदित है, बिहार विद्युत और खनिज संसाधनों से समृद्ध है। अतः स्वभावतः बिहार में किसी औद्योगिक परियोजना की स्थापना करना हमेशा लाभदायी होता है। अनुकूल वातावरण और सस्ती श्रमशक्ति के अतिरिक्त राज्य सरकार द्वारा उद्योगेच्छुओं को निम्नलिखित विभिन्न सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं :

० उद्योगेच्छुओं को औद्योगिक क्षेत्रों में ९९ वर्षों के लीज पर बिजली, संचार; पानी तथा दूसरी सुविधाओं युक्त विकसित भू-खंड (प्लाट) और औद्योगिक प्रांगणों में छूट वाले किराये पर शेड आवंटित किये जाते हैं।

०० उद्योगपतियों को परियोजना रपट पर अनुदान (सबसिडी) सरकारी खरीदगियों में प्राथमिकता युक्त व्यवहार, कर-राहत, मोटी वित्तीय सहायता जैसे अन्य बढ़ावे दिये जाते हैं।

००० सहरसा, चम्पारण, दरभंगा, भागलपुर, संथाल परगना, पलामू जैसे पिछड़े जिलों में उद्योग अरम्भ करने के लिए पन्द्रह प्रतिशत अनुदान (सबसिडी) दिया जाता है।

०००० शिक्षित बेरोजगारों के लिए विशेष रोजगार स्कीम के अंतर्गत औद्योगिक इकाइयों को १२ ५०० रु० तक 'सीड' या 'मार्जिन' धन और तकनीशियनों को प्राथमिकता दी जायगी।

००००० बेरोजगार अभियंताओं और डिप्लोमाधारकों को स्टाइपेंड समेत तकनीकी जानकारी और प्रशिक्षण सुविधाएँ दी जाती हैं।

०००००० बिहार में लघु और पूरक उद्योगों का जाल बिछा देने के लिए राज्य सरकार ने आदित्यपुर, राँची, बोकारो और पटना में चार औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकरण स्थापित किये हैं।

००००००० विस्तृत सूचना के लिए निम्नांकित से सम्पर्क स्थापित करें : (१) अपर उद्योग निदेशक, राँची (२) संयुक्त उद्योग निदेशक, पटना (३) उप-उद्योग निदेशक, मुजफ्फरपुर (४) उपउद्योग निदेशक, तिलकामांझी, भागलपुर (५) प्रबन्धक निदेशक—आदित्यपुर औद्योगिक प्राधिकरण जमशेदपुर।राँची। देशरत्न मार्ग, पटना (६) पथप्रदर्शन सेल, नया सचिवालय, पटना १५।

उद्योग निर्देशक, बिहार द्वारा प्रचारित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारे कारे बदरा

उमड़ल नेहिया अस चलि आवैं कारे कारे बदरा।
सगरी गोरियन के तरसावैं कारे कारे बदरा।
कान पकरि कै चान सुरुज के एहर ओहर टहरावैं
पुरुवा पछुआ के झलुआ पर झूलैं, झूमर गावैं
आँखिया बिजुरी कै चमकावैं कारे कारे बदरा।
देखि पिआसल धरती दउड़ल सागर से चलि आवैं
चढ़ि के परबत पर दानी बनि इमिरित धार बहावैं
छतिया धरती कै जुड़वावैं कारे कारे बदरा।
पहिले बन्नर घुड़की देलैं, तड़पैं भूत भगावैं
ओहू से जब नाहीं मानैं बज्जर मार गिरावैं
पूजा बाबा अस करवावैं कारे कारे बदरा।
ताल तलैया ऊसर बाङर गड़ही गोड़ धोवावैं
हरियर कंचन से धरती कै अंङवा खूब सजावैं
अंचरा सतरंगो फहरावैं कारे कारे बदरा।

—राममूर्ति नारायण सिंह शास्त्री

का का किनवइब ?

बाबू जी हमके मेलवा में का का किनवइब ?
मीरवा हेमरा सेमवा गइल
संगे संगे दिदिया गइल
चल ना तूं बइठल-बइठल कब ले बतिअइब ?
बाबू जी हो मेला में पिपिहरी किनवइह
फुकौना किनवइह आ झुनझुना किनवइह
आ पोही दींने कहल गेना ना किनवइब ?
माई कहलस अपना के जूता किनवइह
दिदिया के गूहे के तू फीतो किनवइह
आ खाये के मिठाई कहना नू किनवइब ?
कहत रहे दिदिया तोहके किछु ना किनाई
हम त लेइब पइसा तोहके किछु ना दिआई
त दिदिया के कह किछु ना नू किनवइब ?
मेलवा में माई के तू लूगा किनवइह
एगो नाहि बाबू जी हो दूगो किनवइह
माई खातिर कह ना तूं का का किनवइब ?

नगेंद्र सिंह 'शांत'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक-परिचय

वाणी के सुमन (हिन्दी भोजपुरी मिलल कविता) रचयिता, चन्द्रदीप पाण्डेय एम० ए०, डिप-एड, साहित्य विशारद, प्रधानाध्यापक, सहुली पब्लिक हाई स्कूल, सारण प्र०. भक्त मंडल गहुआरीं समाधि आश्रम, बड़हड़िया पथ, सीवान। दाम—मुफ्त । छपाई सफाई साधारण; पन्ना ६५।

'वाणी के सुमन' में लेखक अपना गुरु के प्रशस्ति-गान कइले बाड़े। गुरु के महिमा आ चमत्कार के भीं बरनन बा। एक आध गो कविता भोजपुरी में भी बा। भक्ति रस से सराबोर गुरु के महिमा के बखान करत ई किताब भक्तन खातिर बड़ा काम के बा। हिन्दी में भक्ति-साहित्य के भंडार में एकर स्थान मिली। पाण्डेय जी विद्वान आ भक्त हृदय हवीं। हलखोरी बाबा एक परम सन्त रहीं। कविता 'पूजा के फूल' के रूप में परम सन्त के समर्पित बाड़ीसन जे आलोचना समीक्षा के परे ह। एह प्रशस्ति-गान खातिर पाण्डेय जी पर बाबा के असीम कृपा होई। पा० न० स०

सुलोचना (खण्ड काव्य हिन्दी) रच० उत्क्रान्तिवादी डा० स्वर्ण किरण। प्र० मिथिलेश प्रकाशन, आरा (बिहार)। पन्ना – ५६। छपाई सफाई-साधारन नीक। दाम–२) रु०। प्रकाशक से किताब मिली।

पराक्रमी मेघनाद के स्त्री नाग कन्या सुलोचना पर हिन्दी में ई खण्ड-काव्य लिखाइल बा। स्वर्ण किरण जी के प्रतिभा आ विद्वत्ता का बारे में अब कुछ कहे के नइखे। हर साल इहाँ का एगो किताब प्रकाशित कराईला। सुलोचना के चरित्र के एगो नया परिवेश लिखनिहार देले बाड़े। पुरान चरित्र के नया रूप दिहल कवनो आसान काम ना ह। प्रो० सीता राम 'प्रभास' का शब्दन में "सुलोचना चिंतन शीला है। इसकी समर्पण शीलता, कुंठाहीनता, कर्त्तव्य परायणता, दृष्टि निर्मलता एवं क्रान्ति दर्शिता एक भास्वर आलोक पुंज है।" सुलोचना के चरित्र के राष्ट्रीय रूप देके एगो नमूना खड़ा क देले बाड़े विद्वान लेखक। ऐसन किताब लिखला खातिर स्वर्ण किरण जी प्रशंसा के पात्र बाड़े। पा० न० स०

चकोह (भोजपुरी कविता-संग्रह) ले० श्रद्धानन्द पाण्डेय। प्र० (रचना प्रकाशन, बलिया। प्रथम संस्करण) वितरण अनेक जगह से जे में भोजपुरी परिवार पटना–३ भी बा। पन्ना ५०। छपाई साधारण दाम १)।

चकोह कवि के ३३ कवितन के संग्रह ह। शुरू में भोजपुरी भाषा का संबध में अंग्रेजी आ हिन्दी में भूमिका बा। तवज्जुब होला कि अधिकतर संग्रह में भूमिका हिन्दी में रहेला। ऐसन ना चाही। भूमिकाकार भोजपुरी ना लिखि सके त ओकर उल्था भोजपुरी में क देवे के चाहीं। कवितन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मथेला बड़ा नीमन बा वोइसही विषय भी नीमन। भोजपुरी भाषा के काव्य भंडार में एगो सुन्दर कला जोड़ाइल। हर तरह से संग्रह सुन्दर बा।

जवानी के जगाइला (२० भोजपुरी कवितन के संग्रह) कवि-श्री सिपाही सिंह 'श्रीमन्त' प्र० भोजपुरी संस्थान, २ ईष्ट गार्डिनर रोड, पटना-१ प्र० काल पहिला जून १९७३, पन्ना ४८, जिल्ददार, दाम—दू रुपया। छपाई, सफाई सुन्दर।

श्रीमन्त जी भोजपुरी साहित्य के उन्नायनकन में से हईं। लड़िकाइएँ से साहित्य-सेवा के भाव मन में जागल। एह संग्रह में २० कवितन के संग्रह बा। जैसे जवानी के मस्ती के इयादि कबहीं पुरान ना होले, वोइसहीं पुरान कवितन का भइला पर भी नये जोस के रस मिलता। संग्रह में जवानी के जगाइले, आँधी, जिनगी के गीत, विहान, कोइलर बोले लगली ना, दान खून के माँगता, कुछ कविता भाषा, भाव, शैली का विचार से उच्च कोटि के बाड़ीसन। कवि के दावा बा कि पुरान भइला का बावजूद एह संग्रह के अधिका कविता आजो ओह मकसद खातिर ओतने ताजा बा। संग्रह भोजपुरी साहित्य का भंडार में एगो नीमन चीजु आइल। कवि वधाई के पात्र बानी। पां० न० स०

सनेस (भोजपुरी सामयिक संकलन) स०सं० पं० दीप नारायण मिश्र, रामचन्द्र गुप्ता, राजेन्द्र प्रसाद। प्रकाशक-सनेस पत्रिका परिवार, रेशम कोठी, बीरगंज, (नेपाल) पन्ना ६३। दाम १) सफाई-छपाई साधारण नीके कहाई।

भोजपुरी पत्रिका 'सनेस' नेपाल से निकलेला। बुझात नइखे कि ई पत्रिका मासिक ह कि अवसर प्रधान। नव वर्ष अंक एगो भाव मन में देता फिर वर्ष १, अंक ४ से मालूम होता कि ई मासिक ह। एकरा के साफ क देबे के चाहीं। कतने विद्वान का मुँह से सुनलीं कि भोजपुरी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के जोग बा। 'सनेस' के सम्पादक-मंडल नेपाल से भोजपुरी के एह संकलन के निकालि के एह बात के पक्का क देले। सनेस' का विद्वानन के सहजोग बा। कविता, कहानी, नाटक के प्रकाशन सुन्दर भइल बा। अधिकतर भोजपुरी के ठेठ भासा के इस्तेमाल कइला से चीजु अउरि निखरी। नेपाल का गढ़ में भोजपुरी के झंडा गाड़ि के, धाजा फहरवला खातिर संपादक-मंडल समूचा भोजपुरी संसार के धन्यवाद के पात्र बाड़े। भोजपुरी का प्रचार-प्रसार में एह पत्रिका से बड़हन मदत मिली। भगवान करसु एह पत्रिका के जिनगी बढ़े आ भोजपुरी के सनेस घर घर पहुँचावे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में पुरहर कामयाबी हासिल होखो। नेपाल के भोजपुरी भाइन के ई हिथाव देखि के केकर मन उन्हन लोग के प्रशंसा ना करी आ धन्यवाद ना दी ? पा० न० स०

किरण बाँसुरी (हिन्दी कविता-संग्रह) ले० परमेश्वर राय 'राजेश' प्रका० समकालीन प्रकाशन सी० १४/१६०-बी—२ सत्याग्रह मार्ग वाराणसी प्र० काल १९६२। पन्ना १०२। दाम ५) । सजिल्द, छपाई-सफाई सुन्दर।

ई कविता संग्रह कवि के ५१ कवितन के संग्रह ह। कवि उत्तरकालीन छायावादी कवि-मंडली के बुझातारे। कवितन में प्रकृति-प्रेम के चित्रण नीक भइल बा। प्रकृति में आध्यात्मिक सत्ता आ परमतत्त्व के भी विचार मिलता। कल्पना आ भावुकता से कवितन के भाव भरल बा। प्रेम के अनेक रूप, देश खातिर श्रद्धा के भाव, मानव-सम्बन्ध के अभिव्यक्ति इत्यादि अनेक कविता उच्च कोटि के बाड़ी सन। कवितन में भाव सहज आ मन के मोहे वाला बा। डा० शम्भू नाथ सिंह का शब्दन में "कुल मिला कर कवि 'राजेश, एक सफल कवि प्रतीत होते हैं।" पा० न० स०

डँहकत पुरवइया (भोजपुरी उपन्यास) ले० अरुण मोहन 'भारवि', अरुणोदय प्रकाशन, डुमरी कोठी, बक्सर, जि० भोजपुर प्र० का० १९७३ ई०, पन्ना १९२, दाम ३) रु०, छपाई-सफाई साधारन।

डँहकत पुरवइया, 'भारवि' के लिखल पहिलका उपन्यास ह। साहित्य में खूब मँजइला का बाद उपन्यास लिखे के चाहीं। उपन्यास में पुरुबी रहन-सहन आ पछिमी चालढाल के मिलल जुलल एगो तस्बीरि लेखक खिंचले बाड़े। देश भगति, तेयाग, भ्रष्टाचार वगैरह के जमाना का मुताबिक नीमन व्यंग बा। किताब लिखे में काफी मिहनत बुझाता। बाकी पहिलके कोशिश में लेखक के सचाई झलकाइ के उत्साह आ राह देखावे के चाहीं। भाई रामेश्वर जी के कहनाम कि "भारवेरर्थ गौरवम्", भारवि खातिर ओतने सटीक बा, आ डा० स्वर्ण किरण नियर समुझदार विद्वान के कहनाम कि भारवि के पहिला बाकी बेजोड़ उपन्यास ह, से हम सहमत नइखीं। अगर 'भारवि' के कवि सम्राट भारवि से मिलान कइल जाई आ इ उपन्यास बेजोड़ कहाई त भोजपुरी में आगा अब का लिखाई ? हम त कवनों विद्वान ना हईं। बाकी हम अतने कहबि कि भोजपुरी संक्रान्तिकाल से गुजर रहलि बा। कलम का नोख पर हमनी का तनीं लगाम ना देबि त मामिला बिगड़ी, बनी ना।

'भारवि' के ऐसन उपन्यास लिखला खातिर बहुत धन्यवाद। उपन्यास साहित्य में एगो अउरि किताब जुटलि इ कम महातम के बात बा ? पा० न० स०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ए तुलसो के राम !

मँहगाई के ताड़िका—
भारत के जनता के,
बूढ़ चाहे लइका के
दे रहलि बा ताड़ना।
भ्रष्टाचार के मारीच आ सुबाहु—
जमा लेले बा आपन दखल
मंत्री आ सन्त्री पर अफसर आ
कलर्क पर
लील रहल बा इन्सानियत के
बन के राहु।
एह दीन-दशा से तूंही सकताड़
उबार
ए विश्वामित्र के राम !
देश के हर जवान-लइका में,
छात्र, शिक्षक, नेता में
बढ़ रहल असंतोष फइलता
अनुशासन हीनता,
चारों तरफ नाच रहल भारत में
दीनता।
सवारथ के आन्हीं में,
डूब रहल ईमान के नाव
घाटे प, किनारे में।
मन्त्रीपद पावे खातिर,
कुरसी के लालच में—
एमेले एम. पी. बिकात बाड़न
बैल बिकालन स जइसे बैलहट्टा में।
ईंची सा बाति खातिर भाई
गला काट रहल—
अपना 'भरत सम भाई' के,
आज के प्रगतिशील नेतन के
नजर में—
तूं रहल ह लमहर मूरख
जे कहला पर बाप के
आपन हिस्सा के राजपाट
चल देल छोड़ि चउदह बरिस
खातिर बनवास।
ए दशरथ के राम !
भारत के हर कोना-अँतरा में
भरल बा सीता के सिसकी
भारत के सीमा पर
राछछन के पहरा बा,
आ, देश के आंगन में
दुस्मन के कालनेमि
ध्येय निष्ठ हनुमान के बझावे खातिर
साधु का भेस में, टोह लगा
बइठल बा।
सत्य, अहिंसा, पंचशील के
(अश्वमेध के) घोड़ा—
चीन में बन्हाइल बा,
हजारन वर्गमील जमीन ओकरा
पंजा तर दबाइल बा,
हिम्मत होखे त छोड़ाव घोड़ा
देश के सँवार काम !
ए बालमीकि के राम !

—अरुणमोहन 'भारवि'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक कें विचार

एही अंक से 'अँजोर' के १४ वाँ बरिस शुरू होई। अब तक 'अँजोर' भोजपुरी साहित्य का उन्नयन में, साजे सँवारे में जे काम कइलस ऊ सब का सोझा बा। अबहीं ले इहे कोरसिस रहल कि भोजपुरी साहित्य के स्तर नीचा ना होखे पावो। बराबर ई भान रहेला कि भोजपुरी के कवनो अंग के रूप के सामने ले आवे में ढिलाई ना होय।

जे लेखक, कवि, पाठक आ गाहक भाई लोग 'अँजोर' के दीया बाती जरा के अँजोर करे में साथ दिहल बोह सभ लोगन के 'अँजोर' बड़ा आभार मानता। आगे भी सभकर दुलार, प्यार, छोह सहयोग अइसहीं मिलत रही एकर आसरा बा। पा० न० स०

भोजपुरी के प्रगति

एने भोजपुरी साहित्य-संसार में बहुते आलसीपन देखाई देता। लिखात-पढ़ात भी कवनो उत्साही ढंग से नइखे होत। जहाँ तहाँ कवि गोष्ठी, कवि-सम्मेलन होत रहे उहो अब नइखे होत। अइसन ना चाहीं। भोजपुरी का आन्दोलन में ढीलापन ना आवे के चाहीं। पा० न० स०

बाबू कुँअर सिंह के विजय-दिवस

२३ अप्रील के साँझि खानी ७ बजे लाल बहादुर शास्त्री नगर, पटना में कालोनी के नागरिक लोगन का ओर से वीरवर बाबू कुँअर सिंह के विजय-दिवस समारोह बड़ा धूमधाम आ उत्साह के साथ मनावल गइल। समारोह के स्वागताध्यक्ष शिवनन्दन बाबू (अधीक्षण अभियन्ता), पर्यटन निदेशक उमानाथ बाबू आ विधान सभा सदस्य शंकर नाथ विद्यार्थी जी एह मोका पर बाबू साहेब के बल-बउसाव, राष्ट्र प्रेम, कुरबानी आ दबंग सुभाव के जिकिर करत उनका प्रति सरधा के फूल चढ़ावल लोग।

समारोह के बड़हन आकर्षण रहे एगो विराट आ शानदार कवि-सम्मेलन जवन राति ९ बजे से महाकवि प्रभात जी के अध्यक्षता में शुरू भइल। कवि सम्मेलन के आतमा भोजपुरी रहे। आयोजक हम अपने रहलीं। पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय एकर संचालन कइलीं। बनारस से श्री चन्द्र शेखर मिश्र, बगसर से विप्र जी आ किरण जी, छपरा से सर्वश्री प्रो० प्रभुनाथ सिंह, एम० एल० ए०, सतीश्वर सहाय 'सतीश' आ श्री राघव शरण मिश्र 'मुहद्दुब्बर'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ अनिरूद्ध, देवघर से रामशंकर 'पंकज' आ स्थानीय विद्वान आ साहित्यकार लोगन में सर्वश्री पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, अशान्त, गोपीवल्लभ, श्री राम पाण्डेय (सम्पादक 'योगी') अविनाशचन्द्र विद्यार्थी, सीताराम चन्द्र शरण 'राम', परमानन्द पाण्डेय, 'चकोर', तैयब हुसेन 'पीड़ित' एकरा में भाग ले के समारोह के सफल वनवलन। कविता के दौर ३ वजे भोर तक जमि के चलल। पण्डाल अन्त-अन्त तक श्रोता लोगन से ठचाँठच भरल रहि गइल। कहनिहार आ सुननिहार में हाकाहाकी लागि गइल, केहू अकुताए के नाँव ना ले। शास्त्रीनगर के नागरिक लोगन के उत्साह आ साहित्य-मर्मज्ञता सराहे जोग रहे। बाबू कुँअर सिंह पर विप्र जी आ मिश्र जी के काव्य लोग बड़ा पसन से सुनल।

ठीक ओकरा दोसरे दिन, आने २४ एप्रील के शास्त्री विद्या मन्दिर का आँगन में विद्वत् परिषद् आ अभिभावक समिति का ओर से एगो छोटहने मगर सुव्यवस्थित आ सजल-धजल कवि-सम्मेलन के आयोजन प्रभात जी के अध्यक्षता में भइल। उद्घाटन कइलीं बिहार के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री महामाया बाबू। भाग लेवे वाला कवि लोग रहे सर्वश्री हरेन्द्रदेव नारायण, हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय', चन्द्र शेखर मिश्र, रामचन्द्र शर्मा किशोर', डा० बजरंग वर्मा, परमानन्द पाण्डेय आ सत्यनारायण। महामाया बाबू अपना उद्घाटन भाषण के सिलसिला में कहलन कि आधुनिक साहित्यकार लोगन के समाज आ ओकर समस्या के प्रति चौकस रहे के चाहीं। एह ललकार के जवाब बिटुराइल कवि लोग अपना कविता से दीहल, अइसन अइसन चीज लोग पेश कइल जवना से महामाया बाबू के भी परतीत हो गइल कि आज के साहित्यकार पलायन वादी नइखे बलुक समाज के सुख दुख में हाथ बँटावे वाला आ काल (युग) के आँखि में आँखि मिलावे वाला बा।

२७ अप्रील के लंगट सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर में बिहार विश्वविद्यालय का ओर से बाबू कुँअर सिंह के विजय दिवस मनावल गइल। एह मोका पर एगो भव्य कवि सम्मेलन भी भइल, जवना के अध्यक्षता पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय जी कइलीं। अपना अध्यक्षीय भाषण में उहाँ का हिन्दी के छत्रजाधारी भोजपुरिया विद्वान लोगन से निहोरा कइलीं कि ऊ लोग हिन्दी आ भोजपुरी के बीच दीवाल ढाहे के कोशिश करसु आ एह तरह के कवनों भरम मन में ना राखाउ कि भोजपुरी के बढ़न्ती से हिन्दी के कवनो तरह के घाटा हो जाई। उहाँ का बतवलीं कि हिन्दी अगर गंगा वाड़ी त लोक भाषा उनकर सहायक नदी वाड़ी सन। हिन्दी के भण्डार तबे भरी जब ओकर सहायक लोकभासा कुल्हि समृद्ध होइहें सन।

कवि सम्मेलन खूब नीके तरे जमल। बनारस से श्री चन्द्र शेखर मिश्र, धीरेन्द्र प्रसाद सिन्हा 'धवल' आ तैयब हुसेन 'पीड़ित', छपरा से सतीश्वर सहाय' सतीश' आ अनिरुद्ध आ स्थानीय लोगन में प्रो० प्रभुनाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिंह, डा० रिपुसूदन, शान्ति 'सुमन' एह कवि सम्मेलन में भाग लिहल लोग। मंच आ पंडाल के शोभा आ व्यवस्था सराहे जोग रहे। समारोह सोरहो आने सफल रहल।

बाबू कुँअर सिंह के विजय-दिवस समूचा भारतवर्ष खातिर एगो गौरव के चीज बा। भोजपुरी क्षेत्र में त ई हर साल जगहे-जगह मनावल जाला, (हालाँकि जवना मात्रा में मनावल जाला, ओकरा से हमरा सन्तोष नइखे), बाकिर गैर-भोजपुरी क्षेत्र में भी, देश भर में ई समारोह धूमधाम से मनावल जाय ऊ दिन देखे के साध हमरा बराबर रहेला। —धवल

सम्मान

१३-५-७३ सिंहभूमि जिला भोजपुरी समाज, जमशेदपुर (आदित्यपुर) का ओर से नेपाल से प्रकाशित 'सनेस' के सम्पादक, पं० दीपनारायण मिश्र अध्यक्ष, भोजपुरी समाज नेपाल आ भोजपुरी उन्नायक पं० गणेश चौबे जी के साहित्यिक सम्मान भइल। अइसन सम्मान त होखही के चाहीं। एह से साहित्य के सम्मान होला। पा० न० स०

मगही पर बज्रपात

बिहार में लोक-भाषा-साहित्य के झंडा उठवनिहारन मधे अँगुरी पर गनाये जोग नाँव का आगा 'स्वर्गीय' लिखत करेज अँइठा गइल हा। देहि-धाजा का हिसाव से शास्त्री जी के अबहीं कम से कम पचीस बरिस ले ठाढ़ रहे के चाहत रहल हा। पटना जिला के दूर देहात में रहि के उहां का संस्कृत, हिन्दी आ मगही के अध्ययन-मनन कइलीं, मगही भाषा पर अपना अनमोल शोध प्रबन्ध से पी०एच० डी० के उपाधि पवलीं आ मातृभाषा के मुँह उजियार राखे खातिर हरदम अलख जगावत अइलीं।

साधारन धोती-कुरुता का भेस में हालाहाली उनुका गुन-गरोह के थाह-पता पावल मोसकिल रहल हा बाकी जब बोले खातिर ठाढ़ होइहें भा लिखे बइठिहें त, सरस्वती उनुकर साथ ना छोड़िहें। भोजपुरी आ मगही के सम्मिलित मंच खातिर हमरा उनुका लगले बतकही होखे के रहे, जे अभागबस अब हो ना सकी। २६ जुलाई ७३ के उहाँ के पटना बड़ा अस्पताल में लकवा का बेमारी से सरग-वास हो गइल। 'भोजपुरी परिवार' में हिन्दी-मगही के सुप्रसिद्ध कबि श्री मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश' का अध्यक्षता में एगो शोक-सभा भइल जवना में स्व० शास्त्री जी के व्यक्तित्व पर पुरहर प्रकाश डालल गइल। परम पिता दिवंगत आतमा के अपना में साटि के शांति देसु आ मगही-मंडल का सँवागन में स्व० शास्त्री जी के मनकामना पुरावे खातिर बल-बउसाव के बढ़न्ती करसु 'अँजोर' आ 'भोजपुरी परिवार' के ईहे निहोरा बा। —विद्यार्थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर्यटकों का आकर्षण केंद्र बिहार

पाटलिपुत्र के प्राचीन राजनगर, नालंदा के विश्वविख्यात विद्यालय तथा राजगृह की भव्य दीवारों के भग्नावशेष, ससराम स्थित शेरशाह का मकबरा, वैशाली, अरेराज और लौरिया नन्दनगढ़ के अशोक स्तम्भ, बोधगया, देवघर, पारसनाथ और पावापुरी के प्राचीन मन्दिर और पटना सिटी के सिक्ख गुरुद्वारा को अवश्य देखें।

राजगृह के गर्म-जल झरनों में स्नान करना तथा छोटानागपुर के जलप्रपात, मनोरम पहाड़ियों, झीलों और जंगलों के प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन करना न भूलें।

जमशेदपुर, हटिया (राँची), सिन्दरी, धनबाद, पंचेत, मैथन, तिलैया तथा बरौनी के सुविख्यात औद्योगिक परिदर्शन करें।

पटना, राजगृह, गया, राँची और मुज्फ्फरपुर में टूरिस्ट यान तथा उत्तम कोटि की आरामदेह मोटर गाड़ियाँ भी सुलभ हैं।

राजगीर, वैशाली, नेतरहाट (पलामू) और हजारीबाग में पर्यटकों के आवास की सुविधा के लिए उत्तम कोटि के आरामदेह टूरिस्ट बंगलों की स्थापना पर्यटन विभाग द्वारा की गयी है।

विशेष जानकारी के लिए पर्यटक सूचना केन्द्र, मजहरुल हक पथ, पटना के दूरभाषा यंत्र संख्या २५२९५ से सम्पर्क स्थापित करें।

पर्यटन विभाग, बिहार द्वारा प्रसारित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वस्थ सन्तान, सुखी सन्तान

स्वस्थ बच्चे घर में आनंद बिखेरते हैं

ऐसा तभी होगा

जब उनकी संख्या ज्यादा नहीं होगी

तब उन्हें अधिक दुलार, अच्छे कपड़े, अच्छी पढ़ाई

और

पौष्टिक भोजन मिलेंगे

हर बच्चा अपने मां-बाप से आशा करता है।

हर माता-पिता का कर्त्तव्य है कि वे उनकी यह

आशा पूरी करें

आज ही पास के परिवार नियोजन केन्द्र में जाकर

अपने परिवार को सीमित रखने के लिए डाक्टर से सलाह लें।

—राज्य परिवार नियोजन ब्यूरो,
बिहार द्वारा प्रकाशित

अँजोर के विज्ञापन दर

कभर के चौथा पन्ना	२००)
कभर के तीसरा पन्ना	१५०)
साधारण पन्ना	१२५)
आधा पन्ना	७५)
चौथाई पन्ना	५०)

अँजोर के सालाना चन्दा—४) डाकखर्च अलग। एक अंक के २)

मिलने के पता।

भोजपुरी परिवार पटना—३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार राज्य विद्युत बोर्ड

की

प्रगति एक नजर में,

	मार्च १९६६ तक	मार्च १९७१ तक	मार्च १९७२ तक	मार्च १९७३ तक
प्रतिष्ठापित संयंत्र-क्षमता (मेगावाट)	५६	४०८	४६८	५६८
उत्पादित बिजली (दशलक्ष किलोवाट घंटे)	१०७.८१	:१२७०.३०	१४३८.२०	१९५३.३४
विद्युतीकृत गाँवों की संख्या	३७९७	७९१३	८४१७	९१०९
ऊर्जायित पम्पों की संख्या	१०,५५६	६५,२६६	७३,३८२	९२,०४९

हमारी दृष्टि में कर्म ही पूजा, सेवा ही यंत्र, उपभोक्ता ही उपास्य,

सत्य ही आदर्श और परम्परा तथा संस्कृति ही

हमारी अक्षय शक्ति है।

जनसम्पर्क पदाधिकारी, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड द्वारा प्रसारित

हुंकार प्रेस, न्यू मार्केट पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.